प्रकाशक—
दुर्गादत्त सरावगी
२ राजा वडमन्ट स्ट्रीट,
कलकत्ता।

पुस्तक मिलनेका पता—
सेठ जोखीराम जगन्नाथ
२, राजा वडमन्ट स्ट्रीट,
कलकत्ता।

मुद्रक—
दुलीचन्द परवार
जवाहर प्रेस
१६।१।१ हरीसन रोड
कलकत्ता।



स्वर्गीय श्री शिवभगवानजी सरावगी

स्वर्गीय पूज्य भ्राता

श्री शिव भगवानजी सरावगी

—: के :—

स्मृतिमें

सादर

समर्पित

प्रकाशक के दो शब्द।

सज्जनो।

यद्यपि हमारी समाजमें पूजा पाठकी पुस्तकोंकी कमी नहीं है परंतु इस विषयकी अनेक छोटी २ अलग २ प्रकाशकोंकी पुस्तकें होनेके कारण पाठकोंको असुविधायें रहती थीं एवं आजकल भी प्रायः देखा जाता है कि हमारे भाई पूजा करते हुये वीच-वीचमें पुस्तकोंकी खोजमे रहा करते है। इस असुविधाको दूर करनेके हेतु यह सग्रह तैयार कराया गया है ताकि पूजा-पाठ करनेमे आत्मोपयोगी, उत्साहवर्धक एवं रुचिकर हो।

हमारे पूज्य पिता श्रीजगन्नाथजीको तीर्थयात्राके समय सुसंग्रहित पूजा-पाठकी पुस्तकोंका अभाव-सा प्रतीत हुआ, उस समय उनके हृदयमें इस तरहका क्रमानुसार संग्रह छपाकर वितीर्ण करनेके सद्भाव उत्पन्न हुये, उन्हींकी आज्ञानुसार यह "श्रीजैन पूजापाठ संग्रह" छपाकर प्रकाशित किया जा रहा है।

हमारे मित्र श्रीयुत पं० कस्तूरचंदजी छावड़ा "विशारद" ने अपने व्यापारिक कार्यका नुकसान सहकर भी इस संग्रहका अल्प समयमे सम्पादन किया है इसके लिये हम उन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हैं, तथा जवाहर प्रेसके संचालकोंने इस संग्रहको शीघ्र छाप देनेमे पूरा सहयोग दिया है जिससे कि इसको हम समयपर भेंट कर सके, इसके लिये हम उन्हें भी धन्यवाद दिये विना नहीं रह सकते।

अन्तमें निवेदन है कि आप इस संग्रहको विनय पूर्वक उपयोगमें लावें और त्रुटियां रह गईं हो उनके लिये क्षमा करें।

२९-८-४१ दुर्गादत्त सरावगी

सम्पादकीय

पाठको !

हमने अब तक जिन ग्रंथोंका निःस्वार्थ भावसे सम्पादन किया है, उनसे जैन साहित्यका प्रचार होना ही हमारा मुख्य उद्देश्य रहा है। आप लोगोंने सच्चा जिनवाणी संग्रहको देखा' ही होगा, इसका इतना प्रचार है कि शायद ही कोई जैनीका घर हो जहां सच्चा जिनवाणी संग्रहकी प्रतिया न हों।

इस पुस्तकमें पूजायें प्रायः क्रम बद्ध रख दी गई हैं तथा बीच-बीचमे आवश्यकीय नोट देकर इस संग्रहको उपयोगी और सरल बना दिया है ताकि साधारण पढ़े-लिखे व्यक्ति भी इसके सहारे बड़ी सुगमतासे पूजा-पाठ कर सकें, नवीन अप्रकाशित पूजायें सम्मिलित करके इस संग्रहको और भी उपयोगी बना दिया है।

बाबू दुर्गादत्तजी सरावगीने इस पुस्तकको प्रकाशित कर विना मूल्य वितरण करनेकी उदारता दिखाई है तथा श्रीयुत राजमलजी भाभरीने संग्रह करनेमें काफी सहयोग दिया है इसके लिये हम दोनों महानुभावोंको हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

इस संग्रहमें हमने कुछ लेखकों एवं प्रकाशकोंकी पुस्तकोंसे जो पूजा पाठ लिये हैं इसके लिये हम उनका आभार मानते हुये धन्यवाद देते हैं।

हमें पूर्ण विश्वास है कि पाठक हमारे उत्साहको बढ़ायंगे, और जो भी त्रुटि रह गई हो उसके लिए क्षमा करेंगे।

कस्तूरचन्द छाबड़ा।

विषय-सूची।

शास्त्र पूजा विधान

दीप मालिका विधान

श्री जिनेन्द्राय नमः



श्री जैन पूजापाठ संग्रह

मंगलाचरण

दोहा

श्रीमत वीर जिनेन्द्र को, बार बार शिर नाय।
संग्रह पूजापाठ को, करूं स्व-पर सुखदाय ॥१॥

दर्शन पाठ

दर्शनं देव देवस्य, दर्शनं पापनाशनं।
दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनं ॥१॥
दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वंदनेन च। न
चिरं तिष्ठते पापं. छिद्रहस्ते यथोदकम् ॥२॥
वीतरागमुखं दृष्ट्वा, पद्मरागसमप्रभं। अनेक
जन्मकृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति ॥३॥ दर्शनं

जिन सूर्यस्य संसारध्वान्तनाशनं । वोधनं चि-
त्तपद्मस्य, समस्तार्थप्रकाशनं ॥४॥ दर्शनं जिन
चन्द्रस्य, सद्धर्मामृतवर्षणं। जन्मदाहविनाशाय,
वर्धनं सुखवारिधेः ॥५॥ जीवादितत्वं प्रतिपा-
दकाय, सम्यक्त्वमुख्याष्टगुणार्णवाय । प्रशांत-
रूपाय दिगंवराय, देवाधिदेवाय नमो जिनाय
॥६॥ चिदानन्दैकरूपाय, जिनाय परमात्मने ।
परमात्मप्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः ॥७॥
अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणंमम । त-
स्मात्कारुण्यभावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर ! ॥८॥
नहि त्राता नहि त्राता, नहि त्राता जगत्त्रये ।
वीतरागात्परो देवो, न भूतो न भविष्यति ॥
९॥ जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्दिने
दिने । सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु सदामेऽस्तु भवे
भवे ॥१०॥ जिनधर्मविनिर्मुक्तो, मा भवच्चक्र-
वर्त्यपि । स्याच्चेटोऽपि दरिद्रोऽपि, जिनधर्मा-
नुवासितः ॥११॥ जन्मजन्मकृतं पापं, जन्म-

कोटिभिरर्जितं। जन्ममृत्युर्जरारोगं, हन्यते जिनदर्शनात् ॥१२॥ अद्याभवत्सफलता नयनद्वयस्य, देव ! त्वदीयचरणांबुजवीक्षणेन। अद्य त्रिलोकतिलकप्रतिभाषते मे, संसारवारिधिरयं चुलुक प्रमाणम् ॥१३॥

पंच मंगल

पणविवि पंच परमगुरु, गुरु जिन शासनो।
सकलसिद्धिदातार सु विघनविनाशनो॥
सारद अरु गुरु गौतम सुमति प्रकाशनो।
मंगल कर चउ-संघहि पापपणासनो॥

पापहिपणासन गुणहि गरुवा; दोष अष्टादश—रहिउ।
धरिध्यान करमविनाश केवल; ज्ञान अविचल जिन लहिउ।
प्रभु पञ्चकल्याणक विराजित, सकल सुर नर ध्यावहीं।
त्रैलोकनाथ सु देव जिनवर, जगत मङ्गल गावहीं॥१॥

१—गर्भकल्याणक

जाके गरभकल्याणक धनपति आइयो।
अवधिज्ञान—परवान सु इंद्र पठाइयो॥

रचि नव बारह जोजन, नयरि सुहावनी ।
कनकरयणमणिमंडित, मंदिर अति वनी ॥
अति वनी पौरि पगारि परिखा, सुवन उपवन सोहये ।
नरनारि सुन्दर चतुर भेख सु, देख जनमन मोहये ॥
तहं जनकगृह छहमास प्रथमहिं, रतनधारा बरसियो ।
पुनि रुचिकवासिनि जननि-सेवा करहिं सबविधि हरसियो ॥२॥

सुरकुंजरसम कुंजर, धवल धुरंधरो ।
केहरि-केशरशोभित, नख सिखसुन्दरो ॥
कमलाकलस-न्हवन, दुइ दाम सुहावनी ।
रविससि मंडल मधुर, मीन जुग पावनी ॥
पावनि कनक घट जुगमपूरण, कमलकलित सरोवरो ।
कल्लोलमालाकुलितसागर, सिंहपीठ मनोहरो ॥
रमणीक अमरविमान फणिपति-भुवन रविछवि छाजई ।
रुचि रतनरासि दिपंत, दहन सु तेजपुंज विराजई ॥३॥

ये सखि सोरह सुपने सूती सयनहीं ।
देखे माय मनोहर. पश्चिम रयनहीं ॥
उठि प्रभात पिय पूछियो, अवधि प्रकाशियो ।
त्रिभुवनपति सुत होसी. फल तिहँ भासियो ॥

भासियो फल तिहिं चित दंम्पति परम आनन्दित भये।
छहमासपरि नवमास पुनि तहं, रैन दिन सुखसों गये॥
गर्भावतार महंत महिमा, सुनत सब सुख पावहीं।
भणि 'रूपचन्द' सुदेव जिनवर जगत मङ्गल गावहीं॥३॥

२—जन्मकल्याणक

मतिश्रुत अवधिविराजित, जिन जब जनमियो।
तिहुंलोक भयो छोभित, सुरगन भरमियो॥
कल्पवासि घर घंट, अनाहद बज्जियो।
जोतिषघर हरिनाद, सहज गल गज्जियो॥
गज्जियो सहजहिं संख भावन, भुवन सबद सुहावने।
वितरनिलय पटु पटह बज्जहिं, कहत महिमा क्यों बने॥
कंपित सुरासन अवधिबल जिन-जनम निहचैं जानियो।
धनराज तब गजराज मायामयी निरमय आनियो॥५॥
जोजन लाख गयंद, वदन सौ निरमये।
वदन वदन वसुदंत, दंत सर संठये॥
सरसर-सौ पनवीस, कमलिनी छाजहीं।
कमलिनी कमलिनी कमल पचीस विराजहीं॥
राजहीं कमलिनी कमलऽठोतर सो मनोहर दल बने।
दल दलहि अपछर नटहिं नवरस, हाव भाव सुहावने॥

मणि कनककिंकणि वर विचित्र सु अमरमण्डप सोहये।
घन घंट चँवर धुजा पताका, देखि त्रिभुवन मोहये ॥६॥
तिहिं करि हरि चढि आयउ सुरपरिवारियो।
पुरिहि प्रदच्छन दे त्रय, जिन जयकारियो॥
गुप्तजाय जिन-जननिहिं, सुखनिद्रा रची।
मायामई सिसु राखि तौ, जिन आन्यो सची॥
आन्यो सची जिनरूप निरखत, नयन तृपति न हूजिये।
तब परम हरषित हृदय हरिने सहस लोचन [1]पूजिये॥
पुनि करि प्रणाम जु प्रथम इन्द्र, उछंग धरि प्रभु लीनऊ।
ईशान इन्द्र सु चंद्र छवि सिर, छत्र प्रभुके दीनऊ ॥७॥
सनतकुमार माहेन्द्र, चमर दुइ ढारहीं।
शेस शक्र जयकार, शबद उच्चारहीं॥
उच्छवसहित चतुरविधि, सुर हरषित भये।
जोजन सहस निन्यानवै, गगन उलंघि गये॥
लँघिगये सुरगिर जहाँ पाडुक वन विचित्र विराजहीं।
पांडुक शिला तहँ अर्द्धचन्द्र समान, मणि छवि छाजहीं।
जोजन पचास विशाल दुगुणायाम, वसु ऊँची गनी।
वर अष्ट-मंगल-कनक कलशनि सिंहपीठ सुहावनी ॥८॥

१-पूजिये अर्थात् सहस्र नेत्र बनाकर पूजा की।

रचि मणिमंडप शोभित, मध्य सिंहासनो ।
थाप्यो पूरब मुख तहँ, प्रभु कमलासनो ॥
बाजहिं ताल मृदंग, वेणु वीणा घने ।
दुंदुभि प्रमुख मधुरधुनि, अवर जु बाजने ॥
बाजने बाजहिं सची सब मिलि, धवल मङ्गल गावहीं ।
पुनि करहिं नृत्य सुरांगना सब, देव कौतुक धावहीं ।
भरि छीरसागर जल जु हाथहिं, हाथ सुरगिरि ल्यावहीं ।
सौधर्म अरु ईशान इन्द्र सु कलश ले प्रभु न्हावहीं ॥९॥

वदन उदर अवगाह, कलशगत जानिये ।
एक चार वसु जोजन, मान प्रमानिये ॥
सहस-अठोतर कलसा, प्रभुके सिर ढरै ।
पुनि सिंगार प्रमुख, आचार सबै करै ॥
करि प्रगट प्रभु महिमा महोच्छव, आनि पुनि मातहिं दयो ।
धनपतिहि सेवा राखि सुरपति, आप सुरलोकहिं गयो ।
जनमाभिषेक महंत महिमा, सुनत सब सुख पावहीं ।
भणि 'रूपचन्द' सुदेव जिनवर जगतमङ्गल गावहीं ॥१०॥

३—तपकल्याणक

श्रमजलरहित सरीर. सदा सब मलरहिउ ।
छीर वरन वर रुधिर, प्रथम आकृति लहिउ ॥

प्रथम सार संहनन, सरूप विराजहीं।
सहज सुगंध सुलच्छन, मंडित छाजहीं॥

छाजहिं अतुलबल परम प्रिय हित, मधुर वचन सुहावने।
दस सहज अतिशय सुभग मूरति, बाललीक कहावने॥
आबाल काल त्रिलोकपति मन, रुचिर उचित जु नित नये।
अमरोपनीत पुनीत अनुपम सकल भोग विभोगये॥११॥

भवतन-भोग-विरत्त, कदाचित चित्तए।
धन जोबन पिय पुत्त, कलत्त अनित्तए॥
कोउ न सरन मरनदिन, दुख चहुंगति भर्यो।
सुखदुख एकहि भोगत, जिय विधिवसिपर्यो॥

पर्यो विधिवसि आन चेतन, आन जड़ जु कलेवरो।
तन असुचि परतैं होय आस्रव, परिहरेतैं संवरो।
निरजरा तपबल होय समकित,-बिन सदा त्रिभुवन भम्यो।
दुर्लभ विवेक बिना न कबहू, परम धरमविषै रम्यो॥१२॥

ये प्रभु बारह पावन, भावन भाइया।
लौकांतिक वर देव, नियोगी आइया॥
कुसुमांजलि दे चरन, कमल सिर नाइया।
स्वयंबुद्ध प्रभु थुतिकर, तिन समुझाइया॥

समुझाय प्रभुको गये निजपुर, पुनि महोच्छव हरि कियो।
रुचिरुचिर चित्र विचित्र सिविका,-करसु नंदन बन लियो।
तहँ पंचमुठ्ठी लोंच कीनों, प्रथम सिद्धनि थुति करी।
मंडिय महाव्रत पंच दुद्धर सकल परिगह परिहरी ॥१३॥

मणिमयभाजन केश परिट्ठिय सुरपती।
छीरसमुद-जल खिपकरि, गयो अमरावती ॥
तपसंयमबल प्रभुको, मनपरजय भयो।
मौनसहित तप करत, काल कछु तहँ गयो ॥
गयो कछु तहँ काल तपबल, रिद्धि वसुविधि सिद्धिया।
जसु धर्मध्यानबलेन खयगय, सप्त प्रकृति प्रसिद्धिया।
खिपि सातवे गुण जतनविन तहँ, तीन प्रकृति जु बुधि बढिउ।
करि करण तीन प्रथम सुकलबल, खिपकसेनी प्रभु चढ़िउ ॥१४॥

प्रकृति छतीस नवें-गुण, थान विनासिया।
दसवें सूक्ष्मलोभ, प्रकृति तहँ नासिया ॥
सुकल ध्यानपद दूजो, पुनि प्रभु पूरियौ।
बारहवें-गुण सोरह, प्रकृति जु चूरियौ ॥
चूरियौ त्रेसठ प्रकृति इहविधि, घातियाकरमनितणी।
तप कियो ध्यानपर्यन्त बारह-विधि त्रिलोकसिरोमणी।
निःक्रमणकल्याणक सु महिमा, सुनत सब सुख पावहीं।

भणि 'रूपचंद' सुदेव जिनवर, जगत मंगल गावहीं ॥१५॥

४—ज्ञानकल्याणक

तेरहवें गुण-थान सयोगि जिनेसुरो।
अनंतचतुष्टयमंडिय, भयो परमेसुरो॥
समवसरन तब धनपति, बहुविधि निरमयो।
आगमजुगति प्रमान, गगनतल परिठयो॥
परिठयो चित्र विचित्र मणिमय, सभामण्डप सोहये।
तिहिंमध्य बारह बने कोठे, कनक सुरनर मोहये।
मुनि कलपबासिनि अरजिका पुनि ज्योति भौमि-भवनतिया।
पुनि भवनव्यंतर नभग सुरनर पसुनि कोठे बैठिया ॥१६॥

मध्यप्रदेश तीन, मणिपीठ तहां बने।
गंधकुटी सिंहासन, कमल सुहावने॥
तीन छत्र सिर सोहत त्रिभुवन मोहए।
अंतरीच्छ कमलासन, प्रभुतन सोहए॥
सोहये चौसठ चमर ढरत, अशोकतरुतल छाजए।
पुनि दिव्यधुनि प्रतिसबदजुत तहँ, देव दुंदभि बाजए।
सुरपहुपवृष्टि सुप्रभामण्डल, कोटि रवि छवि छाजए।
इमि अष्ट अनुपम प्रातिहारज, वर विभूति विराजए ॥१७॥
दुइसे जोजनमान सुभिच्छ चहूं दिसी।

गगनगमन अरु प्राणी, वध नहिं अहनिसी ॥
निरुपसर्ग निराहार, सदा जगदीशए।
आनन चार चहूंदिसि, सोभित दीसए ॥
दीसय असेस विसेस विद्या, विभव वर ईसुरपना।
कायाविवर्जित सुद्ध फटिक समान तन प्रभुका बना ॥
नहिं नयनपलकपतन कदाचित, केस नख सम छाजहीं।
ये घातियाछयजनित अतिशय, दस विचित्र विराजहीं ॥१८॥
सकल अरथमय मागधि-भाषा जानिए।
सकल जीवगत मैत्री-भाव बखानिए ॥
सकलरितुज फलफूल, वनस्पति मन हरै।
दरपनसम मनि अवनि, पवन गतिअनुसरै ॥
अनुसरै परमानंद सबको, नारि नर जे सेवता।
जोजन प्रमान धरा सुमार्जहिं, जहां मारुत देवता।
पुनिकरहिं मेघकुमार गंधोदक सुवृष्टि सुहावनी।
पदकमलतर सुर खिपहिकमलसु धरणि ससिसोभा बनी ॥१९॥
अमलगगनतल अरु दिसि, तहँ अनुहारहीं।
चतुरनिकाय देवगण, जय जयकारहीं ॥
धर्मचक्र चलै आगैं, रविजहँ लाजहीं।
पुनि भृंगार-प्रमुख वसु मंगल राजहीं ॥

राजहीं चौदह चारु अतिशय, देव रचित सुहावने।
जिनराज केवलज्ञानमहिमा, अवर कहत कहा बने।
तब इन्द्र आय कियो महोच्छव, सभा सोभा अति बनी।
धर्मोपदेश दियो तहां, उचरिय वानी जिनतनी ॥२०॥

छुधातृषा अरु रोग, रोष असुहावने।
जनम जरा अरु मरण, त्रिदोष भयावने ॥
रोग सोग भय विस्मय, अरु निद्रा घनी।
खेद स्वेद मद मोह, अरति चिंता गनी ॥
गनिये अठारह दोष तिनकरि रहितदेव निरंजनो।
नव परम केवललब्धिमंडिय सिवरमनि-मनरंजनो।
श्रीज्ञानकल्याणक सुमहिमा, सुनत सब सुख पावहीं।
भणि 'रूपचंद' सुदेव जिनवर, जगत मंगल गावहीं ॥२१॥

५—निर्वाणकल्याणक

केवलदृष्टि चराचर, देख्यो १जारिसो।
भव्यनि प्रति उपदेस्यो, जिनवर २तारिसो ॥
भवभयभीत भविकजन, सरणै आइया।
रत्नत्रयलच्छन सिवपंथ लगाइया ॥

१—जारिसो—जैसा। २—तारिसो—तैसा।

लगाइया पंथ जु भव्य पुनि प्रभु तृतिय सकल जु पूरियो।
तजि तेरवां गुणथान जोग अजोगपथपग धारियो।
पुनि चौदहें चौथे सुकलबल बहत्तर तेरह हती।
इमि घाति वसुविध कर्म पहुंच्यो, समयमें पंचमगती ॥२२॥

लोकसिखर तनुवात,-बलयमहँ संठियो।
धर्मद्रव्यविन गमन न जिहि आगैं कियो॥
नयनरहित मूषोदर, अंवर जारिसो।
किमपि हीन निजतनुतैं, भयो प्रभु तारिसो॥

तारिसो पर्जय नित्य अविचल, अर्थपर्जय छनछयी।
निश्चयनयेन अनंतगुण, विवहार नय वसुगुणमयी।
वस्तुस्वभाव विभावविरहित, सुद्ध परिणति परिणयो।
चिद्रूपपरमानंद मंदिर, सिद्ध परमातम भयो ॥२३॥

तनुपरमाणू दामिनिपर, सब खिरगए।
रहे शेस नखकेश-रूप, जे परिणए॥
तब हरिप्रमुख चतुरविधि, सुरगण शुभ सच्यो।
मायामयि नखकेश रहित, जिनतनु रच्यो॥

रचि अगरचंदन प्रमुख परिमल, द्रव्य जिन जयकारियो।
पदपतित अगनिकुमार मुकुटानल, सुविध संस्कारियो।
निर्वाण कल्याणक सु महिमा, सुनत सब सुख पावहीं।

भणि 'रूपचंद' सुदेव जिनवर, जगत मंगल गावहीं ॥२४॥

मैं मतिहीन भगतिवस, भावन भाइया।
मंगल गीतप्रबंध, सु जिनगुण गाइया॥
जो नर सुनहिं बखानहिं सुर धरि गावहीं।
मनवांछित फल सो नर, निहचै पावहीं॥
पावहीं आठों सिद्धि नवनिधि, मन प्रतीत जो लावहीं।
भ्रम भाव छूटैं सकल मनके निजस्वरूप लखावहीं।
पुनि हरहिं पातक टरहिं विघन सु होंहिं मंगल नितनये।
भणि 'रूपचंद' त्रिलोकपति, जिनदेव चउसंघहिं जये॥२५॥

जलाभिषेक वा प्रक्षालन पाठ

प्रक्षाल करते समय बोलना।

जय जय भगवंते सदा, मंगल मूल महान।
वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, नमौं जोरि जुगपान॥

ढाल मंगलकी, छंद अडिल्ल और गीता।

श्रीजिन जगमें ऐसो को बुधवंत जू।
जो तुम गुणवरननि करि पावै अंत जू॥

इंद्रादिक सुर चार ज्ञानधारी मुनी।
कहि न सकै तुम गुणगण हे त्रिभुवनधनी॥

अनुपम अमित तुमगणनिवारिध, ज्यों अलोकाकाश है। किमि धरैं हम उर कोषमैं सो अकथगुणमणिराश है॥ पै जिनप्रयोजन सिद्धि की तुम नाममैं ही शक्ति है। यह चित्तमें सरधान यातैं नाम ही मैं भक्ति है॥१॥ ज्ञानावरणी दर्शन आवरणी भने। कर्ममोहनी अंतराय चारों हने॥ लोकालोक विलोक्यो केवल ज्ञानमैं। इंद्रादिकके मुकुट नये सुरथानमैं।
तब इंद्र जान्यो अवधि तैं, उठि सुरनयुत बंदत भयो। तुम पुन्यको प्रेर्यो हरी ह्वै मुदित धनपतिसौं चयो॥ अब वेगि जाय रचौ समवस्रति सफल सुरपदको करौ। साक्षात् श्री अरहंतके दर्शन करौ कल्मष हरौ॥२॥ ऐसे वचन सुने सुरपतिके धनपती। चल आयो ततकाल मोद धारै अती॥ वीतराग छवि दे-

खि शब्द जय जय चयो। दे परदच्छिना वार बार बंदत भयो॥ अति भक्ति भीनो नम्र-चित ह्वै समवशरण रच्यौ सही। ताकी अनू-पम शुभगतीको, कहन समरथ कोउ नहीं॥ प्राकार तोरण सभामंडप कनक मणिमय छा-जही। नगजडित गंधकुटी मनोहर मध्यभाग विराजही॥३॥ सिंहासन तामध्य बन्यौ अद्भुत दिपै। तापर वारिज रच्यो प्रभा दिनकर छिपै॥ तीनछत्र सिर शोभित चौसठ चमरजी। म-हाभक्तियुत ढोरत है तहां अमरजी॥ प्रभु तरन तारन कमल ऊपर, अन्तरीक्ष विराजिया। यह वीतरागदशा प्रतच्छ विलोकि भविजन सुख लिया। मुनि आदि द्वादश सभाके भवि-जीव मस्तक नायकैं। बहुभांति वारंबार पूजैं, नमैं गुणगण्ण गायकैं॥४॥ परमौदारिक दिव्य देह पावन सही। क्षुधा तृषा चिंता भय गद दूपण नहीं॥ जन्म जरा मृति अरति शोक

विस्मय नसे। राग रोष निद्रा मद मोह सबै खसे॥ श्रमविना श्रमजलरहित पावन अमल ज्योतिस्वरूपजी। शरणागतनिकी अशुचिता हरि, करत विमल अनूपजी॥ ऐसे प्रभुकी शांतिमुद्राको न्हवन जलतैं करैं।'जस' भक्ति-वश मन उक्तितैं हम भानु ढिग दीपक धरैं॥ ५॥ तुमतौ सहज पवित्र यही निश्चय भयो। तुम पवित्रता हेत नहीं मज्जन ठयो॥ मैं मलीन रागादिक मलतैं ह्वै रह्यो। महामलीन तनमैं वसुविधिवश दुख सह्यो॥ बीत्यो अनंतो काल यह मेरी अशुचिता ना गई। तिस अशुचिता-हर एक तुम ही भरहु बांछा चित ठई॥ अब अष्टकर्म विनाश सब मल रोषरागादिक हरौ। तनरूप कारागेहतैं उद्धार शिववासा करौ॥६॥ मैं जानत तुम अष्टकर्म हरि शिव गये। आवा-गमन विमुक्त रागवर्जित भये॥ पर तथापि मेरो मनोरथ पूरत सही। नयप्रमानतैं जानि

महा साता लही ॥ पापाचरण तजि न्हवन करता चित्तमैं ऐसे धरूं। साक्षात श्रीअरहंतका मानों न्हवन परसन करूं ॥ ऐसे विमल परिणाम होते अशुभ नसि शुभबंध तैं। विधि अशुभ नसि शुभबंधतैं ह्वै शर्म सब विधि तासतैं ॥ ७ ॥

पावन मेरे नयन, भये तुम दरसतैं। पावन पानि भये तुम चरननि परसतैं ॥ पावन मन ह्वै गयो तिहारे ध्यानतैं। पावन रसना मानी, तुम गुण गानतैं ॥ पावन भई परजाय मेरी, भयौ मैं पूरणधनी। मैं शक्तिपूर्वक भक्ति कीनी, पूर्णभक्ति नहीं बनी ॥ धन धन्य ते बड़भागि भवि तिन नीव शिवघरकी धरी। वर क्षीरसागर आदि जलमणि कुंभभरि भक्ति करी ॥८॥

विघनसघन-वनदाहन-दहन प्रचंड हो। मोह-महातमदलन प्रबल मारतण्ड हो ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश, आदि संज्ञा धरो। जगविजयी जमराज नाश ताको करो ॥ आनन्दकारण दुखनिवा-

रण, परममंगल मय सही। मोसो पतित नहिं और तुमसो, पतित तार सुन्यौ नहीं ॥ चिंतामणी पारस कल्पतरु, एकभव सुखकार ही। तुम भक्तिनवका जे चढ़ैं ते, भये भवदधि पार ही ॥ ६ ॥

दोहा—

तुम भवदधितैं तरि गये, भये निकल अविकार
तारतम्य इस भक्तिको, हमैं उतारो पार ॥१०॥

॥ इति हरजसराय कृत अभिषेक पाठ ॥

नित्य नियम पूजा

पूजन प्रारम्भ करनेके समय नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़ कर नीचे लिखा विनय पाठ बोल कर पूजा प्रारम्भ करना चाहिये।

विनय पाठ दोहावली

इह विधि ठाडो होयके, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्मजु आठ ॥१॥

अनंत चतुष्टयके धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्तिबधूके कंथ तुम, तीन भुवनके राज़ ॥२॥
तिहुं जगकी पीड़ाहरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्वके शिवसुखके करतार ॥३॥
हरता अघअंधियारके, करता धर्मप्रकाश।
थिरतापद दातार हो, धरता निजगुण रास ॥४॥
धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरणसरोजको, नावत तिहुंजग भूप ॥५॥
मैं वंदौं जिनदेवको, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबंधके छेदने, और न कछू उपाव ॥६॥
भविजनकों भवकूपतैं, तुमही काढनहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुणभंडार ॥७॥
चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगतमें भविजनको शिवगैल ॥८॥
तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रताको धरै, विष निरविषता थाय ॥९॥
चक्रीखगधरइंद्रपद, मिलैं आपतैं आप।

अनुक्रमकर शिवपद लहैं, नेमसकल हनि पाप।१०।
तुमबिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जलबिन मीन।
जन्मजरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ॥११॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव ।
अंजनसे तारे प्रभू, जय जय जय जिनदेव ।१२।
थकी नाव भवदधिविषै, तुम प्रभु पार करेय ।
खेवटिया तुम हो प्रभू, जय जय जय जिनदेव।१३।
रागसहित जगमें रुल्यो, मिले सरागी देव ।
वीतराग भेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव ॥१४॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान ।१५।
तुमको पूजैं सुरपती, अहिपति नरपति देव ।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करनलग्यो तुम सेव।१६।
अशरणके तुम शरण हो, निराधार आधार ।
मैं डूबत भवसिंधुमें खेओ लगाओ पार ॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान ।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजैं आप समान।१८।

तुमरी नेक सुदृष्टितैं, जग उतरत है पार ।
हाहा डूब्यो जात हौं,नेक निहार निकार ॥१६॥
जो मैं कहहूं औरसों, तो न मिटै उरझार ।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार ॥२०॥
बंदों पाचौं परमगुरु, सुर गुरु बंदत जास ।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश ।२१।
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय ।
शिवमग साधक साधु नमि रच्यो पाठ सुखदाय ।२२

पूजा प्रारम्भ

ओं जय जय जय । नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु। णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरीयाणं । णमो उवज्झायाणं, णमोलोए सव्वसाहूणं ॥१॥ ओं ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना) चत्तारि मंगलं—अरहंतमंगलं, सिद्धमंगलं, साहूमंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा—अ-

रहंतलोगुत्तमा सिद्धलोगुत्तमा, साहूलोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मोलोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंतसरणं पव्वज्जामि, सिद्धसरणं पव्वज्जामि, साहुसरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मोसरणं पव्वज्जामि॥ ओं नमोऽर्हते स्वाहा।

(यहा पुष्पांजलि क्षेपण करना)

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते॥१॥
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स वाह्याभ्यंतरे शुचिः॥२॥
अपराजितमंत्रोऽयं सर्वविघ्नविनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः॥३॥
एसो पंचणमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं॥४॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं॥५॥

कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीनिकेतनं।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं ।६।
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी भूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥७॥

(पुष्पांजलि)

पंचकल्याणकका अर्घ

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घ-कैः। धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहं यजे ॥१॥

ओं ह्रीं श्री भगवानके गर्भजन्मतपज्ञान निर्वाण पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

पंचपरमेष्ठीका अर्घ

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घ-कैः। धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिन-इष्टमहं यजे ॥२॥

ओं ह्रीं श्री अरहंत सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

यदि अवकाश हो, तो यहांपर सहस्रनाम पढ़कर दश

अर्घ देना चाहिये। नहीं तो नीचे लिखा श्लोक पढ़कर एक अर्घ चढ़ाना चाहिये।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः। धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाम अहं यजे ॥३॥

ओं ह्रीं श्रीभगवज्जिनसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल

श्रीमज्जिनेंद्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं स्याद्वादनायक मनंतचतुष्टयार्हं। श्रीमूलसंघ सुदृशां सुकृतैक हेतुर्जैनेंद्रयज्ञविधिरेष मयाऽभ्यधायि ॥१॥ स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिनपुंगवाय, स्वस्ति स्वभावमहिमोदयसुस्थिताय। स्वस्ति प्रकाशसहजोर्जितदृङ्मयाय, स्वस्ति प्रसन्नललिताद्भुतवैभवाय॥२॥ स्वस्त्युच्छलद्विमलबोधसुधाप्लवाय, स्वस्ति स्वभावपरभावविभासकाय, स्वस्ति त्रिलोकविततैकचिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकालसकलायतविस्तृताय ॥ ३ ॥ द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं, भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः।

आलंबनानि विविधान्यवलंब्यवल्गन्, भूतार्थ-यज्ञपुरुषस्य करोमि यज्ञं ॥४॥ अर्हत्पुराणपुरु-षोत्तमपावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक-एव। अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवलबोध वह्नौ, पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ॥५॥

ओं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसंभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनंदनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयांसः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनंतः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशांतिः।
श्रीकुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।

श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

(पुष्पाजलि क्षेपण)

इति जिनेन्द्र स्वस्तिमङ्गलविधानं।

नित्याप्रकंपाद्भुतकेवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय शुद्धबोधाः। दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥१॥

यहांसे प्रत्येक श्लोकके अंतमे पुष्पाजलि क्षेपण करना चाहिये।

कोष्ठस्थधान्योपममेकबीजं संभिन्नसंश्रोतृपदानुसारि। चतुर्विधं बुद्धिवलं दधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥२॥ संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादनघ्राणविलोकनानि। दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥३॥ प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः। प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥४॥ जंघावलिश्रेणिफलांबुतंतुप्रसूनबीजांकुर चारणाह्वाः। नभोंऽगणस्वैरविहारिणश्च स्वस्ति क्रि-

यासुः परमर्षयो नः ॥५॥ अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि। मनोवपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥६॥ सकामरूपित्ववशित्वमैश्यं प्राकाम्य मंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः। तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥७॥ दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः। ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥८॥ आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषंविषादृष्टिविषंविषाश्च। सखिल्ल विड्जल्लमलौषधीशाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥९॥ क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः। अक्षीणसंवासमहानसाश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥१०॥

इति परमर्षिस्वस्तिमंगलविधानं।

देवशास्त्रगुरु भाषा पूजा

अडिल्ल छन्द।

प्रथमदेव अरहंत सुश्रुत सिद्धांतजू। गुरुनिरग्रंथ महन्त मुकतिपुरपंथजू। तीन रतन जग मांहि सो ये भवि ध्याइये। तिनकी भक्तिप्रसाद परमपद पाइये ॥१॥ दोहा—

पूजौं पद अरहंतके पूजौं गुरुपदसार।
पूजौं देवी सरस्वती, नितप्रति अष्टप्रकार ॥१॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह। अत्रावतरावतर, संवौषट् आह्वाननं। ओं ह्रीं देवशास्त्र गुरुसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः स्थापनं। ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

गीता छन्द।

सुरपति उरगनरनाथ तिनकर, बन्दनीक सुपदप्रभा। अति शोभनीक सुवरण उज्ज्वल, देखि छवि मोहित सभा॥ वर नीर क्षीरसमुद्रघट भरि अग्रतसु बहुविधि नचूं। अरहंत श्रुतसिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं ॥१॥ दोहा—

मलिन वस्तु हरलेत सब, जल स्वभाव मलछीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥१॥
ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व०॥१॥

जे त्रिजग उदर मँझार प्राणी, तपत अति दुद्धर खरे। तिन अहितहरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे॥ तसु भ्रमर लोभित घ्राण पावन सरस चंदन घसि सचूं। अरहंत०॥ दोहा–

चंदन शीतलता करै, तपत वस्तु परवीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥२॥
ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व० ॥२॥

यह भवसमुद्र अपार तारण,-के निमित्त सुविधि ठई। अति दृढ़ परमपावन जथारथ भक्तिवर नौका सही॥ उज्ज्वल अखंडित सालि तंदुल पुंज धरि त्रयगुण जचूं। अरहंत०॥ दोहा–

तंदुल सालि सुगंध अति, परम अखंडित बीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥३॥
ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्निर्वपामीति स्वाहा॥

जे विनयवंत सुभव्य उर अंबुज प्रकाशनभान हैं। जै एक मुख चारित्र भाषत त्रिजगमाहिं प्रधान हैं। लहि कुंद कमलादिक पहुप, भव भव कुवेधनसों बचूं। अरहंत० ॥ दोहा—

विविधभांति परिमलसुमन, भ्रमर जास आधीन।
जासों पूजौं परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ॥४॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व० ॥४॥

अतिसबल मदकंदर्प जाको क्षुधाउरग अमान है। दुस्सह भयानक तासु नाशनको सु गरुड़ समान है॥ उत्तम छहों रसयुक्त नित, नैवेद्य करि घृतमें पचूं। अरहंत० ॥ दोहा—

नानाविधि संयुक्तरस, व्यंजनसरस नवीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥५॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व० ॥५॥

जे त्रिजगउद्यम नाश कीने, मोहतिमिर महाबली। तिहि कर्मघाती ज्ञानदीपप्रकाशजोति प्रभावली॥ इह भांति दीप प्रजाल कंचनके

सुभाजनमैं खचूं। अरहंत० ॥ दोहा—
स्वपरप्रकाशक जोति अति, दीपक तमकरि हीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥६॥
ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व० ॥६॥
जो कर्म-ईंधन दहन अग्निसमूह सम उद्धत लसै। वर धूप तासु सुगंधताकरि, सकल परिमलता हंसै॥ इहभांति धूप चढाय नित भवज्वलनमाहिं नहीं पचूं। अरहंत० ॥ दोहा—
अग्निमांहि परिमलदहन, चंदनादि गुणलीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥७॥
ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्व० ॥७॥
लोचन सुरसना घ्रान उर, उत्साहके करतार है। मो पै न उपमा जाय वरणी, सकलफल गुणसार है॥ सो फल चढावत अर्थपूरन, परम अमृतरस सचूं। अरहंत० ॥ दोहा—
जे प्रधान फल फलविषैं, पंचकरण-रस लीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥८॥
ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूं। वर धूप निरमल फल विविध, बहु जनम के पातक हरूं॥ इहि भांति अर्घ चढ़ाय नित भवि करत शिवपंकति मचूं। अरहंत० ॥ दोहा— वसुविधि अर्घ संयोजके, अति उछाह मन कीन। जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥६॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽनर्घपदप्राये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

अथ जयमाला।

देवशास्त्रगुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार।
भिन्न भिन्न कहुं आरती, अल्प सुगुण विस्तार॥

पद्धरि छन्द।

कर्मनकी त्रेसठ प्रकृति नाशि, जीते अष्टादश दोषराशि। जे परम सुगुण हैं अनंत धीर, कहवतके छयालिस गुण गँभीर॥२॥ शुभ समवशरण शोभा अपार, शतइंद्र नमत कर सीस धार। देवाधिदेव अरहंतदेव, वंदौं मनवचतन करि सु सेव॥३॥ जिनकी ध्वनि ह्वै ओंकाररूप, निर अक्षरमय महिमा अनूप। दश अष्ट

महाभाषा समेत, लघुभाषा सात शतक सुचे-
त ॥४॥ सो स्याद्वादमय सप्तभंग, गणधर गूंथे
बारह सुअंग। रवि शशि न हरै सो तम हराय,
सो शास्त्र नमों बहु प्रीतिल्याय ॥५॥ गुरु आ-
चारज उवभाय साधु, तन नगन रतनत्रयनि-
धि अगाध। संसारदेह वैराग धार, निरवांछि
तपैं शिवपद निहार ॥६॥ गुण छत्तिस पच्चिस
आठबीस, भवतारन तरन जिहाज ईस। गुरु
की महिमा वरनी न जाय, गुरुनाम जपों मन
वचनकाय ॥७॥

सोरठा—

कीजै शक्ति प्रमान, शक्ति बिना सरधा धरै।
द्यानत सरधावान, अजर अमरपद भोगवै ॥८॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

श्री जिनके परसाद तैं सुखी रहे सब जीव।
यातैं तन मन वचन तैं सेवो भव्य सदीव॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्।

तीस चौबीसीका अर्घ

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ करमें नवीना है। पूजतां पाप छीना है, भानुमल जोर कीना है। दीप अढ़ाई सरस राजै, क्षेत्र दश ता विषै छाजै। सातशत बीस जिन राजै, पूजतां पाप सब भाजै ॥१॥

ओं ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत दश क्षेत्रके विषैं तीस चौबीसीके सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

सूचना—आगे जिस भाईको निराकुलता हो, वह नीचे लिखे अनुसार बीस तीर्थंकरोंकी भाषा पूजा करै। यदि स्थिरता न हो तो इस पूजाके आगेमें जो अर्घ लिखा है उसको पढ़कर अर्घ चढ़ा देवे।

श्रीविदेहत्तेत्र बीस तीर्थंकर भाषा-पूजा।

दीप अढ़ाई मेरु पन, अरु तीर्थंकर बीस।
तिन सबकी पूजा करूं, मनवचतन धरि सीस॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकराः! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकराः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत, ठः ठः स्थापनं। ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकराः! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट्, सन्निधिकरणम्।

इंद्र फणींद्र नरेंद्र वंद्य, पद निर्मल धारी।
शोभनीक संसार, सारगुण हैं अविकारी॥
क्षीरोदधि सम नीरसों (हो), पूजों तृषा निवार।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार॥
श्री जिनराज हो भव, तारणतरण जिहाज॥१॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्ममृत्यु विनाशनाय जलं०

(इस पूजामें बीस पुंज करना हो, तो इस प्रकार मंत्र बोलना)

ओं ह्रीं सीमंधर-जुगमंधर-बाहु-सुबाहु-संजातक-स्वयंप्रभ-ऋषभानन-अनंतवीर्य-सूरप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चंद्रानन-भद्रबाहु-भुजंगम-ईश्वर-नेमिप्रभ-वीरसेन-महाभद्र-देवयशोऽजितवीर्येति विंशतिविद्यमान तीर्थंकरेभ्यो जन्ममृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

तीनलोकके जीव, पाप आताप सताये।
तिनकों साता दाता, शीतल वचन सुहाये॥
बावन चंदनसों जजूं (हो) भ्रमन-तपत निरवार। सीमंधर० ॥२॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं०

(इसके स्थानमे यदि इच्छा हो, तो बड़ा मंत्र पढ़ै)

यह संसार अपार महासागर जिनस्वामी।

तातैं तारे बड़ी भक्ति-नौका जगनामी ॥
तंदुल अमल सुगंधसों (हो) पूजों तुम गुण-
सार। सीमंधर० ॥३॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

भविक-सरोज-विकाश, निंद्यतमहर रविसे हो।
जति श्रावक आचार, कथनको, तुमही बड़े हो।
फूलसुवास अनेकसों (हो) पूजों मदन प्रहार।
सीमंधर० ॥४॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः कामवाणविध्वंशनाय पुष्पं०

काम नाग विषधाम, नाशको गरुड़ कहे हो।
क्षुधा महादव्ज्वाल, तासको मेघ लहे हो ॥
नेवज बहुघृत मिष्टसों (हो) पूजों भूखविडार।
सीमंधर० ॥५॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं०

उद्यम होन न देत, सर्व जगमांहिं भर्‍यो है।
मोह महातम घोर, नाश परकाश कर्‍यो है ॥
पूजों दीपप्रकाशसों (हो) ज्ञानज्योतिकरतार।
सीमंधर० ॥६॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं०

कर्म आठ सब काठ,–भार विस्तार निहारा।
ध्यान अगनि कर प्रकट, सरब कीनों निरवारा॥
धूप अनूपम खेवतैं (हो), दुःख जलैं निरधार।
सीमंधर० ॥७॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽष्टकर्मविध्वंशनाय धूपं०

मिथ्यावादी दुष्ट, लोभऽहंकार भरे हैं।
सबको छिनमें जीत जैनके मेरु खरे हैं॥
फल अति उत्तमसों जजों(हो)वांछितफलदातार।
सीमंधर० ॥८॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व०

जल फल आठों द्र्व, अरघकर प्रीति धरी है।
गणधर इंद्रनहूतैं, थुति पूरी न करी है।
द्यानत सेवक जानके (हो) जगतैं लेहु निकार।
सीमंधर० ॥९॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व०

अथ जयमाला।

सोरठा–ज्ञान सुधाकर चंद, भविकखेतहित मेघ हो। भ्रमतमभान अमंद, तीर्थंकर वीसों नमों॥

चौपाई १६ मात्रा।

सीमंधर सीमंधर स्वामी। जुगमंधर जुगमंधर नामी। बाहु बाहु जिन जगजन तारे। करम सुवाहु वाहुबल दारे॥१॥ जात सुजात केवलज्ञानं। स्वयंप्रभू प्रभु स्वयं प्रधानं। ऋषभानन ऋषि भानन दोषं। अनंतवीरज वीरजकोषं॥२॥ सौरीप्रभ सौरीगुणमालं। सुगुण विशाल विशाल दयालं। वज्रधार भव गिरिवज्जर हैं। चंद्रानन चंद्रानन वर हैं॥३॥ भद्रबाहु भद्रनिके करता। श्रीभुजंग भुजंगम भरता॥ ईश्वर सबके ईश्वर छाजैं। नेमिप्रभु जस नेमि विराजैं॥४॥ वीरसेन वीरं जग जानै। महाभद्र महाभद्र बखानै॥ नमों जसोधर जसधरकारी। नमों अजितवीरज बलधारी॥५॥ धनुष पांचसै काय विराजै। आयु कोडि पूरव सब छाजै॥ समवशरण शोभित जिनराजा। भवजलतारनतरन जिहाजा॥६॥ सम्यक रत्नत्रयनिधिदानी। लोकालोक प्रकाशक

ज्ञानी ॥ शतइन्द्रनिकरि वंदित सोहैं। सुरनर पशु सबके मन मोहैं ॥७॥ दोहा—

तुमको पूजैं वंदना, करै धन्य नर सोय।
'द्यानत' सरधा मन धरै, सो भी धरमी होय ॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

विद्यमान बीस तीर्थङ्करोंका अर्घ

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः। धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनराजमहं यजे ॥१॥

ओं ह्रीं श्री सीमंधरयुग्मंधरबाहुसुबाहुसंजातस्वयंप्रभऋषभानन अनन्तवीर्य सूर्यप्रभविशालकीर्तिवज्रधरचंद्रानन भद्रबाहुभुजंगमईश्वरनेमिप्रभवीरसेनमहाभद्रदेवयशअजितवीर्येति विंशतिविद्यमानतीर्थङ्करेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम चैत्यालयोंके अर्घ

कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान् नित्यंत्रिलोकीं गतान्। वंदे भावनव्यंतरान् द्युतिवरान् स्वर्गामरावासगान् ॥ सद्गंधाक्षतपुष्पदामचरुकैः

सद्दीपधूपैः फलैर्नैराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा दुष्कर्मणां शांतये ॥१॥

ओं ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयसंबंधिजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्व०

वर्षेषु वर्षांतरपर्वतेषु नंदीश्वरे यानि च मंदरेषु। यावंति चैत्यायतनानि लोके सर्वाणि वंदे जिन पुंगवानां ॥२॥ अवनितलगतानां कृत्रिमाकृत्रिमाणां वनभवनगतानां दिव्यवैमानिकानां ॥ इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां । जिनवरनिलयानां भावतोऽहं स्मरामि ॥३॥ जंबूधातकिपुष्करार्धवसुधाक्षेत्रत्रये ये भवांश्चन्द्रांभोजशिखंडिकण्ठकनकप्रावृड्घना भाजिनः ॥ सम्यग्ज्ञानचरित्रलक्षणधरा दग्धाष्टकर्मेन्धनाः । भूतानागतवर्तमानसमये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः ॥४॥ श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे, वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकररुचिके कुंडले मानुषांके । इष्वाकारंजनाद्रौ दधिमुखशिखरे व्यंतरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोकेऽभिवंदे भुवनमहितले यानि चैत्यालयानि ॥५॥ द्वौ कुंदेंदुतु-

षारहारधवलौ द्वाविंद्रनीलप्रभौ। द्वौ वंधूकसम-प्रभौ जिनवृषौ द्वौ च प्रियंगुप्रभौ। शेषाः षो-ड़श जन्ममृत्युरहिताः संतप्तहेमप्रभास्ते संज्ञा-नदिवाकराः सुरनुताः सिद्धिं प्रयच्छंतु नः ॥९॥

ओं ह्रीं त्रिलोकसंवंधि-कृत्याकृत्रिमचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्व०

इच्छामि भक्ति बोलते समय पुष्पांजलि क्षेपण करना

इच्छामि भंते चेइयभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेओ अहलोय तिरियलोय उड्ढलो-यम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि. तीसुवि लोयेसु भवणवासिय वाणविंतरजोयसियकप्पवासियत्ति चउविहा दे-वाः सपरिवारा दिव्वेण गंधेण दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण धुव्वेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण वासेण दिव्वेण ह्वाणेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति वंदंति णमस्संति। अहमवि इहसंतो तत्थसंताइ णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइग-मणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं॥

अथ पौर्वाह्लिक-माध्याह्लिक-आपराह्लिकदेववंद-नायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं श्रीपंचमहागुरुभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम् ॥

(इत्याशीर्वादः । पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरीयाणं । णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं। तावकायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

(यहां पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिये)

अथ सिद्धपूजा

ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिंदु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं ।
वर्गापूरितदिग्गतांबुजदलं तत्संधितत्त्वान्वितं ॥
अंतःपत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकार संवेष्टितं ।
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकंठीरवः ॥

ओं ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते । सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । ओं ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र तिष्ठ, तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । ओं ह्रीं श्रीसिद्ध चक्राधिपते ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

निरस्तकर्मसंबंधं, सूक्ष्मं नित्यं निरामयम्।
वन्देऽहं परमात्मानममूर्त्तमनुपद्रवम् ॥१॥

(यहां सिद्धयंत्रकी स्थापना करना)

जिनको विना द्रव्य चढ़ाये भाव पूजा करना हो, वे आगे भावाष्टक छपा है, उसको बोलकर करें। अष्टद्रव्यसे पूजा करने वालोंको भावपूजाका अष्टक नहीं बोलना चाहिये।

द्रव्याष्टक।

सिद्धौ निवासमनुगं परमात्म्यगम्यं हान्यादि
भावरहितं भववीतकायं। रेवापगावरसरोयमु-
नोद्भवानां, नीरैर्यजेकलशगैर्वरसिद्धचक्रं ॥१॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जन्ममृत्युविनाशनाय जलं।

आनंदकंदजनकं घनकर्ममुक्तं, सम्यक्त्वशर्मग-
रिमं जननार्ति वीतं। सौरभ्यवासितभुवं हरि-
चंदनानां, गंधैर्यजे परिमलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥२॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चं।

सर्वावगाहनगुणं सुसमाधिनिष्ठं, सिद्धं स्वरूप
निपुणं कमलं विशालं। सौगंध्यशालिवनशालि-
वराक्षतानां, पुंजैर्यजे शशिनिभैर्वरसिद्धचक्रम्॥३॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं०

नित्यंस्वदेहपरिमाणमनादिसंज्ञं, द्रव्यानपेक्षम-
मृतं मरणाद्यतीतम्। मंदारकुंदकमलादि वन-
स्पतीनां, पुष्पैर्यजे शुभतमैर्वरसिद्धचक्रम् ॥४॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं०

ऊर्ध्वस्वभावगमनं सुमनोव्यपेतं, ब्रह्मादिबीज-
सहितं गगनावभासम्। क्षीरान्नसाज्यवटकै रस
पूर्णगर्भै र्नित्यं यजे चरुवरैर्वर सिद्धचक्रम् ॥५॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं

आतंकशोकभयरोगमदप्रशांतं–निर्द्वंद्वभावधरणं
महिमानिवेशं। कर्पूरवर्तिबहुभिः कनकावदातै-
र्दीपैर्यजे रुचिवरैर्वरसिद्धचक्रम् ॥६॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोहांधकारविनाशनाय दीपं

पश्यन्समस्तभुवनं युगपन्नितांतं त्रैकाल्यवस्तु
विषये निविड़प्रदीपम्। सद्द्रव्यगंधघनसारवि-
मिश्रितानां धूपैर्यजे परिमलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥७॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं०

सिद्धासुरादिपतियक्षनरेंद्रचक्रै ध्येयं शिवं सकल-

भव्यजनैःसुवंद्यं नारिंगपूगकदलीफलनारिकेलैः
सोऽहं यजे वरफलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥८॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं०

गंधाढ्यं सुपयोमधुव्रतगणैः संगं वरं चंदनं।
पुष्पौघं विमलं सदक्षतचयं रम्यं चरुं दीपकं॥
धूपं गंधयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये।
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वांछितं॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं निर्वपामीति

ज्ञानोपयोगविमलं विशदात्मरूपं, सूक्ष्मस्वभा-
वपरमं यदनंतवीर्यं। कर्मौघकक्षदहनं सुखशस्य
वीजं वंदे सदा निरुपमं वरसिद्धचक्रम् ॥१०॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने महार्घं निर्व० स्वाहा॥

त्रैलोक्येश्वरवंदनीयचरणाः प्रापुः श्रियं शाश्वतीं
यानाराध्य निरुद्धचंडमनसः संतोऽपि तीर्थंकराः।
सत्सम्यक्त्वविबोधवीर्यविशदाऽव्याबाधताद्यैर्गु-
णैर्युक्तांस्तानिह तोष्टवीमि सततं सिद्धान्वि-
शुद्धोदयान् ॥.(पुष्पांजलिं)

अथ जयमाला।

विरागसनातनशांतनिरंश। निरामय निर्भय निर्मल हंस॥ सुधाम विबोधनिधान विमोह। प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ १ ॥ विदूरित संसृतिभाव निरंग। समामृतपूरित देव विसंग॥ अवंधकषाय विहीनविमोह। प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥२॥ निवारितदुष्कृतकर्मविपास। सदामल केवलकेलिनिवास॥ भवोदधिपारग शान्त विमोह। प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह॥३॥ अनंतसुखामृतसागर धीर। कलङ्करजोमलभूरिसमीर॥ विखंडितकाम विराम विमोह। प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥४॥ विकार विवर्जित तर्जितशोक। विबोधसुनेत्रविलोकितलोक॥ विहार विराव विरंग विमोह। प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥५॥ रजोमलखेदविमुक्त विगात्र। निरंतर नित्य सुखामृतपात्र॥ सुदर्शनराजित नाथ विमोह। प्रसिद्ध विशुद्ध सु-

सिद्धसमूह ॥६॥ नरामरवंदित निर्मल भाव। अनंत मुनीश्वरपूज्य विहाव ॥ सदोदय विश्वमहेश विमोह। प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥७॥ विदंभ वितृष्ण विदोष विनिद्र। परापर शंकरसार वितंद्र ॥ विकोप विरूप विशंक विमोह। प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥८॥ जरामरणोज्झित वीतविहार। विचिंतित निर्मल निरहंकार ॥ अचिंत्यचरित्र विदर्प विमोह। प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥९॥ विवर्ण विगंध विमान विलोभ। विमाय विकाय विशब्द विशोभ ॥ अनाकुल केवल सर्व विमोह। प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥१०॥ घत्ता—

असमसमयसारं चारुचैतन्यचिह्नं, परपरणति मुक्तं पद्मनंदींद्रवंद्यं। निखिलगुणनिकेतं सिद्धचक्रं विशुद्धं, स्मरति नमति यो वा स्तौति सोऽभ्येति मुक्तिं ॥११॥

ओं ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथाशीर्वादः । अडिल्लछन्द ।

अविनाशी अविकार परमरसधाम हो । समाधान सर्वज्ञ सहज अभिराम हो । शुद्धबोध अविरुद्ध अनादि अनंत हो, जगत शिरोमणि सिद्ध सदा जयवंत हो ॥१॥ ध्यान अगनिकर कर्म कलंक सबै दहे, नित्य निरंजनदेव सरूपी ह्वै रहे । ज्ञायकके आकार ममत्वनिवारिकैं, सो परमातम सिद्ध नमूं सिर नायके ॥२॥ दोहा—अविचलज्ञान प्रकाशतैं, गुण अनंतकी खान । ध्यान धरैं सो पाइये, परमसिद्ध भगवान ॥३॥ अविनाशी आनन्दमय, गुण पूरण भगवान । शक्ति हिये परमातमा, सकल पदारथ ज्ञान ॥४॥

इत्याशीर्वादः ।

सिद्धपूजाका भावाष्टक तथा भाषा द्रव्याष्टक ।

निजमनोमणिभाजनभारया, समरसैकसुधारसधारया ।
सकल बोधकलारमणीयकं, सहज सिद्धमहं परिपूजये ॥

मोहि तृषा दुख देत, सो तुमने जीती प्रभू ।

जलसे पूजूं मैं तोय, मेरो रोग निवारियो ॥

ओं ह्रीं णमो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिने (सम्मत्त, णाण, दंसण, वीर्यत्व, सुहमत्त, अवगाहनत्व, अगुरुलघुत्व, अव्याबाधत्व अष्टगुण सहिताय) जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सहजकर्मकलंकविनाशनैरमलभावसुवासितचन्दनै. ।
अनुपमानगुणावलिनायकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥

हम भव आतप मांहिं, तुम न्यारे संसारसे ।
कीज्यो शीतल छांह, चन्दनसे पूजा करूं ॥ चन्दनं

सहजभावसुनिर्मलतंदुलैः, सकल दोषविशालविशोधनैः ।
अनुपरोधसुवोधनिधानकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥

हम अवगुण समुदाय, तुम अक्षय गुणके भरे ।
पूजूं अक्षत ल्याय, दोष नाश गुण कीजियो ॥ अक्षतं

समयसारसुपुष्पसुमालया, सहजकर्मकरेण विशोधया ।
परमयोगवलेन वशीकृतं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥

काम अग्नि है मोहि, निश्चय शील स्वभाव तुम ।
फूल चढ़ाऊं मैं तोय, मेरो रोग निवारियो ॥ पुष्पं

अकृतवोधसुदिव्यनैवेद्यकैर्विहितजातजरामरणातकै ।
निरवधिप्रचुरात्मगुणालयं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥

मोहि क्षुधा दुख भूर, ध्यान खड्ग करि तुम हती।
मेरी बाधा चूर, नेवजसे पूजा करूं ॥ नैवेद्यं

सहजरत्नरुचिप्रतिदीपकैः, रुचिविभूतितमः प्रविनाशनैः ।
निरवधिस्वविकाशप्रकाशनैः, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥

मोह तिमिर हम पास, तुम पै चेतन ज्योति है।
पूजों दीप प्रकाश, मेरो तम निरवारियो ॥ दीपं

निजगुणाक्षयरूपसुधूपनैः, स्वगुणघातिमलप्रविनाशनैः ।
विशदबोधसुदीर्घसुखात्मकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥

अष्टकर्म बन जाल,मुक्ति मांहिं स्वामी सुख करो।
खेऊं धूप रसाल, अष्ट कर्म निरवारियो ॥ धूपं

परमभावफलावलिसम्पदा, सहजभावकुभावविशोधया ।
निजगुणास्फुरणात्मनिरंजनं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥

अन्तराय दुख टाल, तुम अनन्त थिरता लहीं ।
पूजूं फल दरशाय, विघ्न टाल शिवफल करो ॥ फलं

नेत्रोन्मीलिविकाशभावनिवहैरत्यन्तबोधाय वै ।
वार्गंधाक्षतपुष्पदामचरुकैः सद्दीप धूपैः फलैः ।
यश्चिंतामणिशुद्धभावपरमज्ञानात्मकैरर्चयेत् ।
सिद्धं स्वादुमगाधबोधमचलं सञ्चर्चयामो वयं ॥६॥

हममें आठों ही दोष, जजहूं अर्घ ले सिद्धजी।

दीज्यो बसु गुण मोय, करजोड़े सेवक खड़ा॥ अर्घं

इति सिद्धपूजा।

सोलह कारणका अर्घ

जल फल आठों द्रव्य चढ़ाय, 'द्यानत' वरत करों मन लाय। परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो॥ दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय। परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो॥१॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्धि, विनयसम्पन्नता, शीलव्रतेष्वनतीचार, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, संवेग, शक्तितस्त्याग, शक्तितस्तप, साधुसमाधि, वैयावृत्यकरण, अर्हंतभक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, आवश्यकापरिहानि, मार्गप्रभावना, प्रवचन वात्सल्य षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

पंचमेरुका अर्घ

आठ दरबमय अर्घ बनाय, द्यानत पूजौं श्री जिनराय। महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥ पांचों मेरु असी जिन धाम, सब प्रतिमाको करों प्रणाम। महा सुख होय, देखे

नाथ परम सुख होय ॥२॥

ओं ह्रीं पंचमेरु संबंधि अस्सी जिन चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

नंदीश्वर द्वीपका अर्घ

यह अरघ कियो निज हेत तुमको अरपत हों।
द्यानत कीनों शिव हेत भूमि समरपतु हों ॥
नंदीश्वर श्रीजिनधाम बावन पुंज करों। बसु
दिन प्रतिमा अभिराम आनंदभाव धरों ॥३॥

ओं ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणे द्वि पंचाशज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति०

दश लक्षण धर्मका अर्घ

आठों द्रव्य संवार, द्यानत अधिक उछाह सों।
भवाताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा ॥४॥

ओंह्रीं उत्तम क्षमा मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन, ब्रह्मचर्य दशलक्षणधर्मेभ्योऽर्घं निर्वपामीति०

रत्नत्रयका अर्घ

आठ द्रव्य निरधार. उत्तमसों उत्तम लिये।
जन्म रोग निरवार. सम्यकरतन त्रय भजों ॥५॥

ओं ह्रीं अष्टाग सम्यग्दर्शनाय, अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय, त्रयोदश प्रकार सम्यक्‌चारित्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

समुच्चयचौबीसी पूजा

वृषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम सुपास जिनराय। चंद पुहुप शीतल श्रेयांस नमि, वासुपूज्य पूजितसुरराय॥ विमल अनंत धर्मजस उज्ज्वल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय। मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्वप्रभु, वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् आह्वाननं। ओं ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठ स्थापनं। ओ ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्, सन्निधिकरणम्।

मुनिमनसम उज्ज्वल नीर, प्रासुक गंध भरा।
भरि कनककटोरी धीर दीनी धार धरा॥
चौवीसों श्रीजिनचंद, आनंदकंद सही।

पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही ॥२॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो जन्ममृत्युविनाशनाय जलं०

गोशीर कपूर मिलाय, केशर रंगभरी। जिनचर-
नन देत चढ़ाय, भवआताप हरी। चौबीसों०
ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं०

तंदुल सित सोमसमान, सुंदर अनियारे। मुकता
फलकी उनमान, पुंज धरों प्यारे॥ चौबीसों०
ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

वरकंज कदंब कुरंड, सुमन सुगंध भरे। जिन
अग्र धरों गुनमंड, कामकलंक हरे॥ चौबीसों०
ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो कामवाणविध्वंशनाय पुष्पं नि०

मनमोहनमोदक आदि, सुंदर सद्य बने। रसपू-
रित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने॥ चौ०
ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरातेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

तमखंडन दीप जगाय, धारों तुम आगैं। सब
तिमिर मोहक्षयजाय, ज्ञानकला जागै॥ चौ०
ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

दशगंध हुताशनमांहि, हे प्रभु खेवत हों। मिस

धूमकरम जरिजाहिं, तुमपद सेवत हों॥ चौ०

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं० नि० ॥७॥

शुचि पक्व सुरस फल सार, सब ऋतुके ल्यायो।
देखत दृगमनको प्यार, पूजत सुख पायो॥ चौ०

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० ॥८॥

जलफल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों। तुम
को अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों॥ चौ०

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व०

जयमाला। दोहा—

श्रीमत तीरथनाथपद, माथ नाय हित हेत।
गाऊं गुणमाला अवै, अजर अमरपद देत॥१॥

घत्ता।

जय भवतमभंजन जनमनकंजन, रंजन दिन-
मनि स्वच्छ करा। शिवमगपरकाशक अरिगन
नाशक, चौबीसों जिनराज वरा॥२॥

पद्धरि छन्द।

जय ऋषभदेव रिषिगन नमंत। जय अजित
जीत वसुअरि तुरंत। जय संभव भवभय क-

रत चूर। जय अभिनंदन आनंदपूर ॥३॥ जय सुमति सुमतिदायक दयाल। जय पद्मपद्म-दुतितनरसाल॥ जय जय सुपास भवपास-नाश। जय चंद चंद तनदुतिप्रकाश॥४॥ जय पुष्पदंत दुतिदंत सेत। जय शीतल शीतल-गुन निकेत॥ जय श्रेयनाथ नुतसहसभुज्ज। जय वासवपूजित वासुपुज्ज ॥५॥ जय विमल विमलपद-देनहार। जय जय अनंत गुनगन अपार॥ जय धर्म धर्म शिवशर्म देत। जय शांति शांति पुष्टी करेत ॥६॥ जय कुंथु कुंथ-वादिक रखेय। जय अर जिन वसु अरि क्षय करेय॥ जय मल्लि मल्ल हत मोहमल्ल। जय मुनि सुव्रत व्रतशल्ल दल्ल ॥७॥ जय नमि नित वासवनुत सपेम। जय नेमनाथ वृषचक्र नेम॥ जय पारसनाथ अनाथनाथ। जय वर्द्धमान शिवनगर साथ ॥८॥

छन्द घत्तानंद।

चौबीस जिनंदा आनंदकंदा पापनिकंदा सुख-

कारी। तिनपदजुगचंदा उदय अमंदा, वासव वंदा हितधारी ॥९॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घं निर्व० स्वाहा ॥

सोरठा—

भक्ति मुक्ति दातार, चौवीसों जिनराजवर।
तिनपद मनवचधार, जो पूजै सो शिव लहै ॥

(इत्याशीर्वादः। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

निर्वाणक्षेत्र पूजा

सोरठा—

परम पूज्य चौबीस, जिहँ जिहँ थानक शिव गये।
सिद्धभूमि निशदीस, मनवचतन पूजा करौं ॥१॥

ओं ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थङ्करनिर्वाणक्षेत्राणि ! अत्र अवतरत अवतरत, संवौषट् आह्वाननं। ओं ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत, ठः ठः स्थापनं। ओं ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि ! अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधिकरणं।

गीता छन्द।

शुचि क्षीरदधि सम नीर निरमल, कनकझा-

रीमें भरौं। संसार पार उतार स्वामी, जोरकर विनती करौं॥ सम्मेदगिर गिरनार चंपा, पावापुरि कैलासकों। पूजों सदा चौबीसजिन-निर्वाण भूमि निवासकों॥१॥

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो जलं निर्व०स्वाहा॥

केशर कपूर सुगंध चंदन सलिल शीतल विस्तरौं। भवतापको संताप मेटो, जोरकर विनती करौं सम्मेद० ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो चंदनं नि० ॥२॥

मोतीसमान अखंड तंदुल, अमल आनंदधरि तरौं। औगुन हरौ गुन करौ हमको, जोरकर विनती करौं॥ सम्मेद० ॥३॥

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थङ्करनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अक्षतान् नि० ॥३॥

शुभ फूलरास सुवासवासित, खेद सब मनकी हरौं। दुखधामकामविनाश मेरो जोरकर विनती करौं॥ सम्मेद० ॥४॥

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीथकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो पुष्पं नि० ॥४॥

नेवज अनेक प्रकार जोग, मनोग धरि भय

परिहरौं। यह भूखदूखन टार प्रभुजी, जोरकर विनती करौं ॥ सम्मेद० ॥५॥

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं नि० ॥५॥

दीपकप्रकाश उजास उज्ज्वल, तिमिरसेती नहिं डरौं। संशयविमोहविभरम तमहर, जोरकर विनती करौं ॥ सम्मेद० ॥६॥

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो दीपं नि० ॥६॥

शुभधूप परम अनूप पावन, भावपावन आचरौं। सव करमपुंज जलाय दीज्यौ, जोरकर विनती करौं ॥ सम्मेद० ॥७॥

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थङ्करनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो धूपं नि० ॥७॥

बहुफलमँगाय चढाय उत्तम, चारगतिसों निरवरों। निहचै मुकति फल देहु मोकौं जोरकर विनती करौं ॥ सम्मेद० ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो फलं नि० ॥८॥

जल गंध अक्षत पुष्प चरु फल, दीप धूपायन धरौं। 'द्यानत' करो निरभय जगतसों जोर कर विनती करौं ॥ सम्मेद० ॥९॥

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं नि० ॥६॥

अथ जयमाला।

श्रीचौवीसजिनेश, गिरिकैलाशादिक नमों।
तीरथ महाप्रदेश, महापुरुष निरवाणतैं ॥

चौपाई १६ मात्रा।

नमों ऋषभ कैलासपहारं। नेमिनाथ गिरनार निहारं॥ वासुपूज्य चंपापुर बंदौं। सनमति पावापुर अभिनंदौं ॥२॥ बंदौं अजितअजित-पददाता। बंदौं संभव भवदुखघाता॥ बंदौं अभिनंदन गणनायक। बंदौं सुमति सुमतिके दायक॥ बंदौं पदममुकति पदमाधर। बंदौं सुपास आशापासाहर॥ बंदौं चंद्रप्रभ प्रभुचंदा। बंदौं सुविधि सुविधिनिधि कंदा॥४॥ बंदौं शीतल अघतपशीतल। बंदौं श्रेयांस श्रेयांस महीतल॥ बंदौं विमल विमल उपयोगी। बंदौं अनंत अनंत सुखभोगी॥५॥ बंदौं धर्म धर्म-विस्तारा। बंदौं शांति शांतिमनधारा॥ बंदौं कुंथु कुंथु-रखवालं। बंदौं अर अरिहर

गुणमालं ॥६॥ बंदौं मल्लि काममलचूरन। बंदौं मुनि सुव्रत व्रतपूरन॥ बंदौं नमि जिन नमितसुरासुर। बंदौं पास पास भ्रमजगहर॥७॥ बीसों सिद्धभूमि जा ऊपर। शिखर सम्मेद महागिरि भूपर॥ एकबार बंदै जो कोई। ताहि नरकपशुगति नहिं होई॥८॥ नरगतिनृप सुरशक्र कहावै। तिहुंजग भोग भोगिशिव जावै॥ विघनविनाशक मंगलकारी। गुणविशाल बंदै नरनारी॥ ९॥

घत्ता—जो तीरथ जावै पाप मिटावै, ध्यावै गावै भगति करै। ताको जस कहिये संपति लहिये, गिरिके गुण को बुध उचरै॥१०॥

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थङ्करनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं नि० ॥१०॥

इत्याशीर्वाद।

सप्तऋषि पूजा

छप्पय।

प्रथम नाम श्रीमन्व दुतिय स्वरमन्व ऋषीश्वर।
तीसर मुनि श्रीनिचय सर्वसुन्दर चौथो वर॥

पंचम श्रीजयवान विनयलालस षष्ठम भनि।
सप्तम जयमित्राख्य सर्व चारित्रधाम गनि॥
ये सातों चारणऋद्धिधर, करूं तासपद्थापना।
मैं पूजूं मनवचकायकरि, जो सुख चाहूं आपना॥

ओं ह्रीं चारण ऋद्धिधर श्रीसप्तऋषीश्वर! अत्र अवतरत अवतरत सवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठतः तिष्ठतः ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक - गीता छन्द।

शुभतीर्थउद्भव जल अनूपम मिष्ट शीतल लायकैं। भवतृषा कंदनिकंदकारण, शुद्ध घट भरवायकैं॥ मन्वादिचारणऋद्धिधारक, मुनिन की पूजा करूं। ता करैं पातिक हरैं सारे, सकल आनन्द विस्तरूं॥१॥

ओं ह्रीं श्रीमन्व, स्वरमन्व, निचय, सर्वसुन्दर, जयवान, विनयलालस जयमित्र ऋषिभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

श्रीखंड कदलीनंद केशर, मंद मंद घिसायकैं। तसुगंध प्रसरित दिगदिगंतर, भरकटोरी लायकैं॥ मन्वादि०॥२॥

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो चंदनं नि०

अति धवल अक्षत खंड-वर्जित, मिष्ट राजन भोगके। कलधौत थारा भरत सुन्दर चुनित शुभ उपयोगके मन्वादि० ॥३॥

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो अक्षतान्०

बहुवर्णसुवरण सुमन आछे, अमल कमल गु-लाबके। केतकी चंपा चारु मरुआ, चुने निज कर चावके॥ मन्वादि० ॥४॥

ओं ह्रीं श्री मन्वादि चारण ऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो पुष्पं नि०

पकवान नानाभांति चातुर, रचित शुद्ध नये नये। सदमिष्टलाडूआदिभरबहु, पुरटके थारा लये॥ मन्वादि० ॥५॥

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो नैवेद्यं नि०

कलधौत दीपक जड़ित नाना, भरित गोघृत-सारसों। अति ज्वलितजगमगज्योतिजाकी, तिमिरनाशनहारसों॥ मन्वादि० ॥६॥

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो दीपं नि०

दिक्चक्र गंधित होत जाकर, धूप दश अंगी कहीं। सो लाय मनवचकाय-शुद्ध, लगायकर

खेऊं सही ॥ मन्वादि० ॥७॥

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो धूपं नि०

वर दाख खारक अमित प्यारे, मिष्ट चुष्ट चुनायकैं। द्रावड़ी दाड़िम चारु पुंगी, थाल भर भर लायकैं ॥ मन्वादि० ॥८॥

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो फलं नि०

जलगंधअक्षतपुष्पचरुवर, दीप धूप सु लावना। फल ललित आठों द्रव्यमिश्रित, अर्घ कीजे पावना ॥ मन्वादि० ॥९॥

ओं ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो अर्घं नि०

अथ जयमाला। छन्द त्रिभंगी।

वंदूं ऋषिराजा, धर्मजहाजा, निजपरकाजा, करत भले। करुणाके धारी, गगनविहारी, दुःख अपहारी, भरम दले ॥ काटत जमफंदा, भविजन वृंदा, करत अनंदा चरणनमें। जो पूजैं ध्यावैं मंगल गावैं, फेर न आवै भववनमें ॥१॥

छन्द पद्धरी।

जय श्रीमनु मुनिराजा महंत। त्रस थावरकी

रक्षा करंत ॥ जय मिथ्यातम नाशक पतंग। करुणारसपूरित अंग अंग ॥२॥ जय श्रीस्वर-मनु अकलंकरूप। पद्सेव करत नित अमर भूप ॥ जय पंच अक्ष जीते महान। तप तपत देह कंचनसमान ॥३॥ जय निचय सप्त तत्त्वा-र्थभास। तप-रमालनौं तनमैं प्रकाश ॥ जय विषयरोध संबोध भान : परणतिके नाशन अचल ध्यान ॥४॥ जय जयहि सर्वसुंदर द-याल। लखि इंद्रजालवत जगतजाल ॥ जय तृष्णाहारी रमण राम। निज परणतिमैं पायो विराम ॥५॥ जय आनंद्घन कल्याणरूप। क-ल्याण करत सबको अनूप ॥ जय मद नाशन जयवान देव। निरमद विरचित सब करत सेव ॥६॥ जय जयहि विनयलालस अमान। सब शत्रु मित्र जानत समान ॥ जय कृशित-काय तपके प्रभाव। छवि छटा उडति आनं-द दाय ॥७॥ जयमित्र सकल जगके सुमित्र। अनगिनत अधम कीने पवित्र॥ जय चंद्रवदन

राजीव-नैन। कबहूं विकथा बोलत न वैन॥
८॥ जय सातौं मुनिवर एकसंग। नित गगन-
गमन करते अभंग॥ जय आये मथुरापुरमँ-
झार। तहँ मरी रोगको अति प्रचार॥९॥ जय
जय तिन चरणनिके प्रशाद्। सब मरी देव-
कृत भई वाद्॥ जय लोक करैं निर्भय सम-
स्त। हम नमत सदा नित जोड़ हस्त॥१०॥
जय ग्रीषमऋतु परवत मँझार। नित करत
अतापन योगसार॥ जय तृषापरीषह करत
जेर। कहुं रंच चलत नहिं मनसुमेर॥११॥
जय मूल अठाइस गुणनधार। तप उग्र तपत
आनंद्कार॥ जय वर्षाऋतुमें वृक्षतीर। तहँ
अति शीतल झेलत समीर॥१२॥ जय शीत-
काल चौपटमँझार। कै नदी सरोवर तट वि-
चार॥ जय निवसत ध्यानारूढ़ होय। रंचक
नहिं मटकत रोम कोय॥१३॥ जय मृतका-
सन वज्रासनीय। गोदूहन इत्यादिक गनीय॥
जय आसन नाना भांति धार। उपसर्ग सहत

ममता निवार ॥१४॥ जय जपत तिहारो नाम कोय। लख पुत्र पौत्र कुलवृद्धि होय॥ जय भरे लक्ष अतिशय भंडार। दारिद्र तनों दुख होय छार ॥१५॥ जय चोर अग्नि डाकिन पिशाच। अरु ईति भीति सब नसत सांच॥ जय तुम सुमरत सुख लहत लोक। सुर असुर नवत पद देत धोक ॥१६॥

छन्द रोला।

ये सातों मुनिराज, महातप लछमी धारी।
परम पूज्य पद धरे, सकल जगके हितकारी॥
जो मन वच तन शुद्ध होय सेवै औ ध्यावै।
सो जन मनरंगलाल अष्टऋद्धिनकौं पावै॥१७॥

दोहा।

नमन करत चरनन परत, अहो गरीब निवाज।
पंच परावर्तननितैं, निरवारो ऋषिराज ॥१८॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादि चारण ऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो पूर्णार्घं नि०

व्रतोंका अर्घ

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः । धवलमंगलगानरवाकुले जिन गृहे जिनव्रत्तमहं यजे ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीभगवज्जिनभाषितव्रतेभ्यो अर्घ्यं निर्व० ॥१॥

समुच्चय अर्घ

प्रभूजी अष्ट दरव्यजु ल्यायो भावसों, प्रभू थां का हरष हरष गुण गाऊं महाराज, यो मन हरख्यो प्रभू थांकी पूजा जी रे कारणे ॥ प्रभू जी थांकी तो पूजा भवि जन नित करै, जाका अशुभ कर्म कटजाय महाराज । यो मन० ॥१॥ प्रभूजी थांकी तो पूजा भवि जीव जो करै, सो तो सुरग मुकतिपद पावै महाराज । यो मन० ॥२॥ प्रभूजी इन्द्र धरणेंद्रजी सब मिलि गाय, प्रभू का गुणांको पार न पाइया ॥ प्रभूजी थे छो जी अनन्ता जी गुणवान, थांने तो सुमर्‌यां संकट परिहरै । प्रभूजी थे छो जी साहिब तीनों लोकका, जिनराय मैं छूं जी निपट

अज्ञानी महाराज । यो मन० ॥३॥ प्रभूजी थां का तो रूपजी निरखन कारणे, सुरपति रचिया छै नयन हजार महाराज। यो मन० ॥४॥ प्रभूजी नरक निगोदमें भव भव में रुल्यो, जिनराय सहिया छै दुःख अपार महाराज। यो मन० ॥५॥ प्रभूजी अब तो शरणोजी थारो मैं लीयो, किस विध कर पार लगावो महाराज ॥ यो मन० ॥६॥ प्रभूजी म्हारो तो मनड़ो थांमेंजी घुल रह्यो, ज्यों चकरी बिच रेशमकी डोरी महाराज। यो मन० ॥७॥ प्रभूजी तीन लोक में है जिन बिम्ब कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय पूजस्यां, प्रभूजी जल चंदन अक्षत पुष्प नैवेद, दीप धूप फल अर्घ चढ़ाऊं महाराज, जिन चैत्यालय महाराज, सब चैत्यालय जिनराज ॥ यो मन० ॥८॥ प्रभूजी अष्ट द्रव्य जु ल्यायो बनाय, पूजा रचाऊं श्रीभगवानकी ॥९॥

ओं ह्रीं भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करै करावै भावना भावै श्रीअरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपा-

ध्यायजी सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोगकरणानुयोगचरणानुयोगद्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शन विशुद्धयादि षोडश कारणेभ्यो नमः। उत्तम क्षमादि दश लाक्षणिक धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक् चारित्रेभ्यो नमः। जलके विषै थलके विषै आकाशके विषै गुफाके विषै पहाड़के विषै नगर नगरी विषै ऊर्ध्वलोक मध्यलोक पाताललोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थङ्करेभ्यो नमः। पाच भरत पांचऐरावत दशक्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसीके सातसौ बीस जिनालयेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीपसम्बन्धि बावन जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरु सम्बन्धि अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेद शिखर कैलाश चंपापुर पावापुर गिरनार आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री मूलबद्री राजगृही शत्रुंजय तारंगा चमत्कार महावीर स्वामी आदि अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः।

ओं ह्रीं श्रीमंतं भगवन्तं कृपालसन्तं श्रीवृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बू द्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे ... . नाम्नि नगरे मासनामुत्तमे मासे ... .मासे शुभे पक्षे शुभ .... तिथौ ...वासरे मुनि आर्यिकानां श्रावक श्राविकानां क्षुल्लक क्षुल्लिकाना सकल कर्म क्षयार्थं (जलधारा) अनर्घपद प्राप्तये महार्घं सम्पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भाव पूजा वंदनास्तव समेतं श्रीपंचमहागुरु भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम् ॥

यहापर कायोत्सर्ग पूर्वक नौ बार णमोकार मन्त्र जपना चाहिये।

शांतिपाठ भाषा

शांतिपाठ बोलते समय पुष्प क्षेपण करते रहना चाहिये।

चौपाई १६ मात्रा।

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी। शीलगुणव्रत-संयमधारी॥ लखन एक सौ आठ विराजैं। निरखत नयन कमलदल लाजैं॥१॥ पंचम चक्रवर्ति पदधारी। सोलम तीर्थंकर सुखकारी॥ इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिन नायक। नमो शांतिहित शान्ति विधायक॥२॥ दिव्य विटप पुहुपनकी वरषा। दुन्दुभि आसन वाणी सरसा॥ छत्र चमर भामण्डल भारी। ये तुव प्रातिहार्य मनहारी॥३॥ शांति जिनेश शांति सुखदाई। जगतपूज्य पूजौं शिरनाई। परमशांति दीजे हम सबको। पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघको॥४॥

वसन्ततिलका ।

पूजैं जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके ।
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके ॥
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप ।
मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप ॥५॥

इन्द्रवज्रा

संपूजकोंको प्रतिपालकोंको । यतीनको औ यतिनायकोंको ॥ राजा प्रजा राष्ट्र सुदेशको ले । कीजै सुखी हे जिन शांतिको दे ॥६॥

स्रग्धरा छन्द ।

होवै सारी प्रजाको सुख बलयुत हो धर्मधारी नरेशा । होवै वर्षा समै पै तिलभर न रहै व्याधियोंका अन्देशा । होवै चोरी न जारी सुसमय वरतै हो न दुष्काल भारी । सारे ही देश धारैं जिनवर वृषको जो सदा सौख्यकारी ॥७॥

दोहा—

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज ।
शांति करो सब जगतमें, वृषभादिक जिनराज ॥

मन्दाक्रान्ता।

शास्त्रोंका हो पठन सुखदा लाभ सत्संगतीका।
सद्वृत्तोंका सुजस कहके, दोष ढांकूं सभीका॥
बोलूं प्यारे वचन हितके, आपका रूप ध्याऊं॥
तौलौं सेऊं चरण जिनके मोक्ष जौलौं न पाऊं॥

आर्य्या

तव पद मेरे हियमें, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में। तबलौं लीन रहौं प्रभु, जबलौं पाया न मुक्ति पद मैंने ॥१०॥ अक्षर पद मात्रासे, दूषित जो कछु कहा गया मुझसे। क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाहु भवदुःखसे॥११॥ हे जगबन्धु जिनेश्वर, पाऊं तव चरण शरण बलिहारी। मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मोंका क्षय सुबोध सुखकारी॥ १२॥

(परिपुष्पांजलि क्षेपण)

यहांपर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिये।

भजन।

नाथ! तोरी पूजाको फल पायो, मेरे यों नि-श्चय अब आयो॥टेक॥ मेंढ़क कमल पांखड़ी

मुखमें, वीर जिनेश्वर धायो। श्रेणिक गजके पगतल मूवो, तुरत स्वर्गपद पायो ॥ नाथ०॥ १॥ मैनासुन्दरी शुभमन सेती, सिद्धचक्र गुण गायो। अपने पतिको कोढ़ गमायो, गंधोदक फल पायो ॥ नाथ० ॥२॥ अष्टापदमें भरत नरेश्वर, आदिनाथ मन लायो। अष्टद्रव्यसे पूजा प्रभूजी, अवधिज्ञान दरशायो॥ नाथ०॥ ३॥ अंजनसे सब पापी तारे, मेरो मन हुलसायो। महिमा मोटी नाथ तुमारी, मुक्तिपुरी सुख पायो ॥ नाथ० ॥४॥ थकी थकी हारे सुर नर पति, आगम सीख जितायो। देवेंद्र कीर्ति गुरु ज्ञान मनोहर, पूजा ज्ञान बतायो॥ नाथ० ॥५॥

भाषा स्तुति।

तुम तरणतारण भवनिवारण, भविकमन आनन्दनो। श्रीनाभिनन्दन जगतवंदन, आदिनाथ निरंजनो ॥१॥ तुम आदिनाथ अनादि

सेऊँ सेय पदपूजा करू । कैलाश गिरिपर रिषभजिनवर, पद्कमल हिरदै धरू ॥२॥ तुम अजितनाथ अजीत जीते, अष्टकर्म महावली । यह विरद् सुनकर शरण आयो, कृपा कीज्यो नाथजी ॥ ३ ॥ तुम चंद्रवद्न सु चंद्रलच्छन चंद्रपुरि परमेश्वरो । महासेननंद्न, जगतवंद्न चंद्रनाथ जिनेश्वरो ॥ ४ ॥ तुम शांति पांचकल्याण पूजों, शुद्धमनवचकाय जू । दुर्भिक्ष चौरी पापनाशन, विघन जाय पलाय जू ॥५॥ तुम बालब्रह्म विवेकसागर, भव्यकमल विकाशनो । श्रीनेमिनाथ पवित्र दिनकर, पापतिमिर विनाशनो ॥६॥ जिन तजी राजुल राजकन्या, कामसेन्या वश करी । चारित्ररथ चढ़ि भये दूलह, जाय शिवरमणी वरी ॥७॥ कंदर्प दर्प सुसर्पलच्छन, कमठ शठ निर्मल कियो । अश्वसेननंद्न जगतवंद्न सकलसंघ मंगल कियो ॥८॥ जिनधरी बालकपणे दीक्षा, कमठमानविदारकैं । श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्रके पद, मैं नमों

शिरधारकैं ॥९॥ तुम कर्मघाता मोक्षदाता, दीन जानि दया करो। सिद्धार्थनंदन जगतवंदन, महावीर जिनेश्वरो ॥१०॥ छत्र तीन सोहैं सुर-नर मोहैं, वीनती अब धारिये। करजोड़ि सेवक वीनवैं प्रभु आवागमन निवारिये ॥ ११ ॥ अब होउ भव भव स्वामि मेरे, मैं सदा सेवक रहौं। करजोड़ यो वरदान मांगू, मोक्षफल जावत लहौं ॥१२॥ जो एक मांहीं एक राजै एक मांहि अनेकनो। इक अनेककी नहीं संख्या नमूं सिद्ध निरंजनो ॥१३॥

चौ०—मैं तुम चरणकमलगुणगाय। बहुविधि भक्ति करौं मनलाय॥ जनम जनम प्रभु पाऊं तोहि। यह सेवाफल दीजै मोहि ॥१४॥ कृपा तिहारी ऐसी होय। जामन मरन मिटावो मोय॥ बारबार मैं विनती करूं। तुम सेयां भवसागर तरूं॥१५॥ नाम लेत सब दुःख मिटजाय। तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय॥ तुम हो प्रभु देवनके देव। मैं तो करूं चरण

तव सेव ॥१६॥ जिन पूजा तैं सब सुख होय, जिन पूजा सम अवर न कोय। जिन पूजा तैं स्वर्ग विमान, अनुक्रम तैं पावै निर्वाण ॥१७॥ मैं आयो पूजनके काज। मेरो जन्म सफल भयो आज ॥ पूजा करके नवाऊं शीश। मुझ अपराध क्षमहु जगदीश ॥१८॥

दोहा।

सुख देना दुख मेटना, यही तुम्हारी बान।
मो गरीबकी वीनती, सुन लीज्यो भगवान ॥१९॥
पूजन करते देवकी, आदि मध्य अवसान।
सुरगनके सुख भोगकर, पावै मोक्ष निदान ॥२०॥
जैसी महिमा तुमविषैं, और धरै नहिं कोय।
जो सूरजमैं जोति है, नहिं तारागण सोय ॥२१॥
नाथ तिहारे नामतैं, अघ छिनमांहिं पलाय।
ज्यों दिनकर परकाशतैं, अंधकार विनशाय ॥२२॥
वहुत प्रशंसा क्या करूं, मैं प्रभु वहुत अजान।
पूजाविधि जानूं नहीं, सरन राखि भगवान ॥२३॥

इति भाषास्तुति।

विसर्जन

दोहा।

विन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय।
तुव प्रसाद तैं परमगुरु, सो सब पूरन होय॥१॥
पूजनविधि जानों नहीं, नहिं जानों आह्वान।
और विसर्जन हू नहीं, क्षमा करो भगवान॥२॥
मंत्रहीन धनहीन हूं, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरणकी सेव॥३॥
आये जो जो देवगन, पूजे भक्ति प्रमान।
ते सब जावहु कृपाकर, अपने अपने स्थान॥४॥

इत्याशीर्वादः।

आशिका लेनेका मन्त्र।

दोहा।

श्री जिनवरकी आशिका, लीजै शीस चढ़ाय।
भव भवके पातक कटे, दुःख दूर हो जाय॥१॥

—o—

आरती श्री पार्श्वनाथ स्वामी की।

(चाल, जय जगदीश हरे)

जय पारस देवा, स्वामी जय पारस देवा। सुर नर मुनि जन तुव चरणनकी करते नित सेवा॥ टेर॥ पौष बदी ग्यारस काशीमें आनन्द अति भारी, स्वामी आनन्द अति भारी। अश्वसेन वामा माता उर लीनों अवतारी॥ जय ॥१॥ श्याम-वरण नवहस्त काय पग-उरग लखन सोहै, स्वामी उरग लखन सोहै। सुरकृत अति अनूप पट भूषण सबका मन मोहै॥ जय० ॥२॥ जलते देख नाग नागिनको मंत्र नवकार दिया, स्वामी मंत्र नवकार दिया। हरा कमठका मान ज्ञानका भानु प्रकाश किया॥ जय० ॥३॥ मात पिता तुम स्वामी, मेरे आश करूं किसकी, स्वामी। आश करूं किसकी। तुम बिन दाता और न कोई शरण गहूं जिसकी॥ जय० ॥४॥ तुम परमातम तुम अध्यातम तुम अंतरयामी, स्वामी तुम अंतरयामी। स्वर्ग मोक्षके दाता तुम हो त्रिभुवनके स्वामी॥ जय० ॥५॥ दीनबंधु दुःखहरण जिनेश्वर! तुम ही हो मेरे, स्वामी तुम ही हो मेरे। दो शिवधामको वास दास, हम द्वार खड़े तेरे॥ जय० ॥६॥ विपद विकार मिटाओ मनका अर्ज सुनो दाता, स्वामी अर्ज सुनो दाता। सेवक द्वयकर जोड़ प्रभूके चरणों चित लाता॥ जय पारस० ॥ ७ ॥ इति।

❀ समाप्त ❀

पर्युषण पूजा-संग्रह

बृहत्-अभिषेक पाठ।



श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वादनायकमनंत चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघ सुदृशां सुकृतैक हेतु-
र्जैनेन्द्रयज्ञविधिरेषमयाभ्यधायि ॥१॥

पुष्पाञ्जलि क्षेपण।

सौगंध्यसंगतमधुव्रतझंकृतेन,
संवर्ण्यमानमिव गंधमनिंद्यमादौ।
आरोपयामि विबुधेश्वरवृन्दवंद्य,
पादारविंदमभिवंद्य जिनोत्तमानां ॥१॥

इसको पढ़कर अभिषेक करनेवालों को अंग में चंदन लगाना चाहिये।

नोट—अभिषेक पाठ प्रारंभ करने के पहले गर्भ और जन्म के दो मङ्गल बोलना चाहिये।

प्रोत्फुल्लनीलकुलिशोत्पलपद्मराग,
निर्जत्कर्प्रकरबंधसुरेन्द्रचापं।
जैनाभिषेक समयेंगुलिपर्वमूले,
रत्नांगुलीयकमहं विनिवेशयामि ॥२॥

इसको पढ़कर अभिषेक करनेवालों को मुद्रिका धारण करना चाहिये।

सम्यक् पिनद्धनवनिर्मलरत्नपंक्तिः,
रोचिद्बृहद्बलयजातबहुप्रकारं।
कल्याणनिर्मितमहं कटकं जिनेशं,
पूजाविधानललिते स्वकरे करोमि ॥३॥

इसको पढ़कर अभिषेक करनेवालों को हाथमें कंकण धारण करना चाहिये।

पूर्वं पवित्रतरसूत्रविनिर्मितं यत्,
प्रीतः प्रजापतिरकल्पयदंगसंगं।
सद्भूषणं जिनमहे निजकण्ठधार्य्यं,
यज्ञोपवीतमहमेष तदा तनोमि ॥४॥

इसको पढ़कर अभिषेक करनेवालों को यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये।

पुन्नागचंपकपयोरुहकिंकरात,
जातीप्रसूननवकेसरकुंदद्गधम् ।
देव ! त्वदीयपद्पंकजसत्प्रसादात,
मूद्र्धिन प्रणाममतिशेषकरं दधेऽहं ॥५॥

इसको पढ़ कर अभिषेक करनेवालों को शिरपर मुकुट धारण करना चाहिये।

कटकं च सूत्रत्रयकुंडलानि,
केयूरहारगजमुद्रितमुद्रिकां च ।
प्रालेयपाटं मुकुटस्वरूपं,
स्वस्ति क्रियामेखलकर्णपूर्णं ॥६॥

इसको पढ़ कर अभिषेक करनेवालों को कुंडल धारण करना चाहिये।

ये सन्ति केचिदिह दिव्यकुलप्रसूता,
नागाः प्रभूत वलदर्पयुता विवोधाः ।
संरक्षणार्थममृतेन शुभेन तेषां,
प्रक्षालयामि पुरतः स्नपनस्य भूमिं ॥७॥

ओं क्ष्रां क्ष्रीं क्ष्रूं क्ष्रौं क्ष्रः इसको पढ़ कर अभिषेक के लिये भूमि या चौकीका प्रक्षालन करे।

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः,
प्रक्षालितं सुरवरैर्यदनेकवारम्।
अत्युच्चमुद्यतमहं जिनपादपीठं,
प्रक्षालयामि भवसंभवतापहारि ॥८॥

जिस पर भगवान को विराजमान करे उस सिंहासनका प्रक्षालन करें।

श्रीशारदा सुमुख निर्गत बीजवर्णं,
श्रीमंगलीकवर सर्वजनस्य नित्यं।
श्रीमत्स्वयंक्षयति तस्य विनाश विघ्नं,
श्रीकारवर्ण लिखितं जिन भद्रपीठे ॥९॥

यह श्लोक पढ़कर सिंहासनपर श्रीकार लिखना चाहिये।

इंद्राग्निदंडधरनैर्ऋतपाशपाणि वायूत्तरेशशशिमौलिफणींद्रचंद्राः। आगत्य यूयमिह सानुचराः सचिह्नाः स्वं स्वं प्रतीच्छत बलिं जिनपाभिषेके ॥ १०॥

(नीचे लिखे मंत्रोंको पढ़कर क्रमसे दशदिकपालोंके लिये अर्घ चढ़ावे)

१ ओं आं क्रौं ह्रीं इन्द्र आगच्छ आगच्छ इन्द्राय स्वाहा।

२ ओं आं क्रौं ह्रीं अग्ने आगच्छ आगच्छ अग्नये स्वाहा ॥
३ ओं आं क्रौं ह्रीं यम आगच्छ आगच्छ यमाय स्वाहा।
४ ओं आं क्रौं ह्रीं नैॠत आगच्छ आगच्छ नैॠताय स्वाहा ॥
५ ओं आं क्रौं ह्रीं वरुण आगच्छ आगच्छ वरुणाय स्वाहा।
६ ओं आं क्रौं ह्रीं पवन आगच्छ आगच्छ पवनाय स्वाहा।
७ ओं आ क्रौं ह्रीं कुवेर आगच्छ आगच्छ कुवेराय स्वाहा।
८ ओं आ क्रौं ह्रीं ऐशान आगच्छ आगच्छ ऐशानाय स्वाहा ॥
९ ओं आ क्रौं ह्रीं धरणींद्र आगच्छ आगच्छ धरणींद्राय स्वाहा।
१० ओं आं क्रौं ह्रीं सोम आगच्छ आगच्छ सोमाय स्वाहा ॥

इति दिक्पाल मंत्राः।

अत्युग्रतारमौक्तिकचूर्णवर्णै-
भृंगारनालमुखनिर्गतचारुधारैः।
शीतैःसुगन्धिभिरतीव जलैर्जिनेन्द्र-
बिंबोत्सवस्नपनमेष समारभेऽहम् ॥११॥

पुष्पांजलि क्षेपण,

दध्युज्ज्वलाक्षतमनोहरपुष्पदीपैः,
पात्रार्पितैः प्रतिदिनं महतादरेण।
त्रैलोक्यमंगलसुखानलकामदाह-
मारार्तिकं तव विभोरवतारयामि ॥१२॥

दधि अक्षत पुष्प और दीप रकावीमें लेकर मंगलपाठ तथा

अनेक वादित्रोंके साथ भगवानकी आरती उतारनी चाहिये।

पुण्याहमद्य सुमहंति च मंगलानि,
सर्वे प्रहृष्टमनसश्च भवन्ति भव्याः।
पुण्योदकेन भगवंतमनंतकांति-
महंतिमुज्ज्वलतनुं परिवर्तयामि ॥१३॥

पुण्योदकावतरणम् ॥

नाथ ! त्रिलोकमहिताय दशप्रकाराः-
धर्माम्बुवृष्टिपरिषिक्तजगत्त्रयाय।
अर्घं महार्घगुणरत्नमहार्णवाय,
तुभ्यं ददामि कुसुमैर्विशदाक्षतैश्च ॥१४॥

(जहां भगवान हों वहां जाकर अर्घ चढ़ाना चाहिये)

जन्मोत्सवादिसमयेषु यदीयकीर्तिः,
सेन्द्राः सुराः प्रमदभारनताः स्तुवंति।
तस्याग्रतो जिनपतेः परया विशुद्ध्या,
पुष्पांजलिं मलयजातमुपाक्षपेहं ॥१५॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥ नीचे लिखा श्लोक बोलकर श्रीकार लिखित सिंहासन पर जिन विम्बकी स्थापना करना।

यः पांडुकामलशिलागतमादिदेव-

मस्नापयन् सुरवराः सुरशैलमूर्ध्नि ।
कल्याणमीप्सुरहमक्षततोयपुष्पैः,
संभावयामि पुर एव तदीयबिंबम् ॥१६॥

ओं ह्रीं श्रीअरहंतदेव ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्, सन्निधिकरणम्।

सत्पल्लवार्चितमुखान्कलधौतरूप्यान्,
ताम्रारकूटघटितान्पयसा सुपूर्णान्।
संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्,
संस्थापयामि कलशान् जिनवेदिकांते ॥१७॥

चार दिशाओंमें जलसे पूर्ण स्वस्तिक लगे हुये कलश-स्थापन करना चाहिये

आभिः पुण्याभिरद्भिः परिमल बहुलेनामुना चंदनेन. श्रीदृक् पेयैरमीभिः शुचिसदल चयै रुद्गमै रेभिरुद्धैः। हृद्यै रेभिर्निवेद्यै र्मख भवनमिमं दीपयद्भिः प्रदीपैः. धूपैः प्रायोभिरेभिः पृथुभिरपि फलै रेभिरीशं यजामि ॥१८॥

ओं ह्रीं श्री परमदेवाय श्रीअर्हत्परमेष्ठिने अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दूरावनम्रसुरनाथकिरीटकोटी-
संलग्नरत्नकिरणच्छविधूसरांघ्रिम्।
प्रस्वेदतापमलमुक्तमपि प्रकृष्टै-
र्भक्त्या जलैर्जिनपतिं बहुधाभिषिंचे ॥१६॥

ओं ह्रीं श्री भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादि वीर पर्यन्तं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं जिनाभिषेकसमये आद्ये आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे ···· नाम्नि नगरे मासानां मासोत्तमे ······ मासे ····· पक्षे ····· पर्वणि शुभ ····· तिथौ ······ वासरे मुनि आर्यिकाणां क्षुल्लक क्षुल्लिकानां श्रावक श्राविकानां सकलकर्म क्षयार्थं जलेनाभिषिंचेति स्वाहा ॥

यह मंत्र पढ़कर भगवानके ऊपर शुद्ध जलकी धारा देनी चाहिये।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः। धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ॥

ओं ह्रीं श्री वृषभादिवीरांतेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति०

उत्कृष्टवर्णनवहेमरसाभिराम,
देहप्रभावलयसंगमलुप्तदीप्तिम्।
धारां घृतस्य शुभगंधगुणानुमेयां,
वन्देऽर्हतां सुरभिसंस्नपनोपयुक्ताम् ॥

गाथा—जो घियकंचणवण्णदुइ जिणण्हावे धरि-भाव, सो दुग्गयगइ अवहर जम्मनदुक्कइ-पाइ ॥

ऊपर लिखा पूरा मंत्र बोलकर मंत्रमें "जलेनाभिषिंचे" की जगह "घृतेनाभिषिंचे" बोलकर घृतके कलश से स्नान करना चाहिये। पीछे "उदक चंदन" आदि बोलकर अर्घ चढ़ाना चाहिये।

संपूर्णशारदशशांकमरीचिजाल-
स्यंदैरिवात्मयशसामिव सुप्रवाहैः।
क्षीरैर्जिनाः शुचितरैरभिषिंच्यमानाः,
संपादयन्तु मम चित्तसमीहितानि ॥

गाथा—दुद्धहि जिणवर जो ण्हवइ मुत्ताहलधव-लेण। सो संसार न संभवइ मुच्चइ पावमलेण ॥

ऊपर लिखा पूरा मंत्र बोलकर मंत्रमे "जलेनाभिषिंचे" की जगह "क्षीरेणाभिषिंचे" बोलकर दुग्धके कलशसे अभिषेक करना चाहिये। पीछे "उदकचंदन" आदि बोलकर अर्घ चढ़ाना चाहिये।

नोट—इस पंचम कालमें घृत दुग्ध दही इक्षुरस सर्वौषध आदि शुद्ध नहीं मिलते हैं इसलिये पवित्र जलसे ही अभिषेक करना चाहिये।

दुग्धाब्धिवीचिपयसंचितफेनराशि-
पांडुत्वकांतिमवधारयतामतीव।
दृध्ना गता जिनपतेः प्रतिमां सुधारा,
सम्पाद्यतां सपदि वांछितसिद्धये नः ॥

गाथा—दुद्धम्भडाम्भड उत्तरइ दडवडदहीपडंत।
भवियह मुच्चइ कलिमलह जिणदिट्ठ उवीसंत ॥

ऊपर लिखे मन्त्रमें "जलेनाभिषिंचे" की जगह 'दृध्ना' पढ़ कर दही के कलश से अभिषेक करना चाहिये, पीछे "उदक-चन्दन" आदि बोलकर अर्घ चढ़ाना चाहिये।

भक्त्याललाटतटदेशनिवेशितोच्चैः,
हस्तैश्च्युताः सुरवराऽसुरमर्त्यनाथैः।
तत्कालपीलितमहेक्षुरसस्य धारा,
सद्यः पुनातु जिनबिम्बगतैव युष्मान् ॥

ऊपर लिखे मंत्रमे 'जलेनाभिषिंचे" की जगह 'इक्षुरसे नाभिषिंचे' पढ़ कर इक्षुरस के कलश से अभिषेक करना चाहिये, पीछे "उदकचंदन" बोल कर अर्घ चढ़ाना चाहिये।

संस्नापितस्य घृतदुग्धदधीक्षुवाहैः,
सर्वाभिरौषधिभिरर्हतमुज्ज्वलाभिः।
उद्वर्तितस्य विदधाम्यभिषेकमेला-

कालेयकुंकुमरसोत्कटवारिपूरैः ॥

गाथा—रसदुद्धद्हो पाणीय जो जिणवर ण्हावे।

भव संकल तोडेविकरि अचल सुक्ख पावेइ ॥

ऊपर लिखे मंत्रमें "जलेनाभिषिंचे" की जगह 'सर्वौषधे नाभिषिंचे' पढ़कर सर्वौपधिके कलशसे अभिषेक करना चाहिये पीछे "उदक चंदन" बोलकर अर्घ चढ़ाना चाहिये।

द्रव्यैरनल्प घनसारचतुःसमाद्यै-

रामोदवासितसमस्तदिगंतरालैः।

मिश्रीकृतेन पयसा जिनपुंगवानां,

त्रैलोक्यपावनमहं स्नपनं करोमि ॥

ऊपर लिखे मंत्रमें 'जलेनाभिषिंचे'की जगह 'सुगन्धजलेन' पढ़कर केशर कर्पूगादि सुगधित पदार्थों से वनाये जल के कलश से अभिषेक करना चाहिये। पीछे "उदक चन्दन" आदि बोल कर अर्घ चढ़ाना चाहिये।

इष्टैर्मनोरथशतैरिव भव्यपुंसां,

पूर्णैः सुवर्णकलशैर्निखिलैर्वसानैः।

संसारसागरविलंघनहेतुसेतु-

माप्लावये त्रिभुवनैकपतिं जिनेन्द्रम् ॥

श्रीमन्नीलोत्पलामोदैराहूता भ्रमरोत्कटैः।

गंधोदकैर्जिनेन्द्रस्य पादाभ्यर्चनमारभे ॥

यहापर ऊपर लिखा पूरा मन्त्र बोलकर बाकी बचे हुये समस्त कलशों से भगवान का अभिषेक करना चाहिये।

मुक्तिश्री वनिताकरोदकमिदं पुण्यांकुरोत्पादकं,
नागेंद्रत्रिदशेंद्रचक्रपदवी राज्याभिषेकोदकं।
सम्यग्ज्ञानचरित्रदर्शनलता संवृद्धि संपादकं,
कीर्तिश्रीजयसाधकं तव जिन! स्नानस्य गंधोदकं॥
निर्मलं निर्मलीकरणं पावनं पापनाशनम्।
जिनगंधोदकं वंदे चाष्टकर्मविनाशकम्॥

इस को पढ़कर गंधोदक अपने अंगमे लगाना चाहिये।

पूजा प्रारभ्यते।

अथाष्टकम्।

सद्गंधतोयैः परिपूरितेन,
श्रीखंडमाल्यादिविभूषितेन।
पादाभिषेकं प्रकरोमि भूत्यै,
भृंगारनालेन जिनस्य भक्त्या॥

ओं ह्रीं चतुर्विंशतिजिनवृषभादिवीरांतेभ्यो जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥

काश्मीरपंकहरिचंदनसारसांद्र-
निस्पंदनादिरचितेन विलेपनेन।
अभ्याजसौरभतनौ प्रतिमां जिनस्य,
संचर्चयामि भवदुःखविनाशनाय॥ चंदनं॥

तत्कालभक्तिसमुपार्जितसौख्यवीज,
पुण्यात्मरेणुनिकरैरिव संगलब्धिः।
पुंजीकृतैः प्रतिदिनं कमलाक्षतोघैः,
पूजां करोति रचयामि जिनाधिपानां॥ अक्षतम्॥

अंभोजकुंदवकुलोत्पलपारिजात,
मंदारजातविदलं नवमल्लिकाभिः।
देवेन्द्रमौलिविरजीकृतपादपीठं,
भक्त्या जिनेश्वरमहं परिपूजयामि॥ पुष्पं॥

अत्युज्वलं सकललोचनचारुहार,
नानाविधां कृतनिवेद्यमनिंद्यगंधं।
आघ्रायमाण रमणीयसि हेमपात्रं,
संस्थापितं जिनवराय निवेदयामि॥ नैवेद्यं॥

निःश्वज्वलस्थिरशिखाकलिकाकलापैः,

माणिक्यरश्मिशिखराणिविडंबयद्भिः ।
सर्वाभिरुज्ज्वलविशालतरावलोकै-
र्दीपैर्जिनेंद्रभवनानि यजे त्रिसंध्यं ॥ दीपम् ॥
कर्पूरचंदनतरुष्कसुरेन्द्रदारु-
कृष्णागरुप्रभृतिचूर्णविधानसिद्धिं ।
नासाक्षिकंठमनसां प्रियधूमवर्ति-
र्धूपैर्जिनेन्द्रमभितो बहुभिः क्षपेऽहम् ॥ धूपं ॥
वर्णेन जातिनयनोत्सवमावहन्ति,
यानि प्रियाणि मनसो रससंपदा च ।
गंधेन सुष्ठु रमयंति च यान्ति नाशं,
तैस्तैः फलैर्जिनपते विंदधामि पूजां ॥ फलं ॥
एवं यथाविधिमनागपि यः सपर्या-
मर्हस्तव स्तवपुरस्सरमातनोति ।
कामं सुरेन्द्रनरनाथसुखानि भुक्त्या,
मोक्षं तमप्यभयनंदि पदं स याति ॥
ओं ह्रीं चतुर्विंशति जिन वृषभादि वीरान्तेभ्योर्घ्यं ।
वृषभोऽजितनामा च संभवश्चाभिनन्दनः ।
सुमतिः पद्मभासश्च सुपार्श्वो जिनसत्तमः ॥१॥

चन्द्राभः पुष्पदन्तश्च शीतलो भगवान्मुनिः।
श्रेयांश्च वासुपूज्यश्च विमलो विमलद्युतिः॥२॥
अनन्तो धर्मनामा च शांतिः कुन्थुर्जिनोत्तमः।
अरश्च मल्लिनाथश्च सुव्रतो नमितीर्थकृत्॥३॥
हरिवंशसमुद्भूतोऽरिष्टनेमिर्जिनेश्वरः।
ध्वस्तोपसर्गदैत्यारिः पार्श्वो नागेन्द्रपूजितः॥४॥
कर्म्मान्तःकृन्महावीरः सिद्धार्थकुलसंभवः।
एते सुरासुरौघेण पूजिता विमलत्विषः॥५॥
पूजिता भरताद्यैश्च भूपेन्द्रैर्भूरिभूतिभिः।
चतुर्विधस्य संघस्य शांतिं कुर्वन्तु शाश्वतीं॥६॥
जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिः सदाऽस्तु मे।
सम्यक्त्वमेव संसारवारणं मोक्षकारणम्॥७॥

(पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना)

श्रुते भक्तिः श्रुते भक्तिः श्रुते भक्तिः सदाऽस्तु मे।
सज्ज्ञानमेव संसारवारणं मोक्षकारणम्॥८॥

(पुष्पांजलि क्षेपण करना)

गुरौ भक्तिर्गुरौ भक्ति गुरौ भक्तिः सदाऽस्तु मे।
चारित्रमेव संसारवारणं मोक्षकारणम्॥९॥

(पुष्पाजलि क्षेपण करना)

जयमाला

श्रीमत्श्रीजिनराजजन्मसमये इन्द्रोतिहर्षायमान्।
इन्द्राणीपरिवारभृत्यसहितो देवांगनां नृत्यवान्॥
नानागीतविनोदमंगलविधौ पूजार्थमादाय स,
जलगंधाक्षतपुषपचारुचरुभिर्दीपैश्च धूपैः फलैः॥

छंद

जन्म जिनराजको जबहिं जिन जानियो इन्द्रधरणिंद सुर सकल अकुलानियो। देवदेवांगना चलियउ जयकारती। सचिय सुरपति सहित करहिं जिन आरती ॥२॥ साजि गजराज हरि लक्ष योजन तनौ, वदनसतवदन प्रतिदंतवसु सोहनौ। सजलभरिपूर प्रतिदंत सर सोहती। सचियसुरपति सहित करहिं जिन आरती ॥३॥ सरहि सर पंच द्वै इक कमलिनी बनी, तासु प्रति कमल पच्चीस शोभा बनी। कमलदल एकसौ आठ विस्तारतीं। सचिय० ॥४॥ दलहिं दल अपछरा नाचही

भावसों, करहिं सांगीत जयकार सुर रागसौं।
ताग्रतत थेइ थेइ करति पगढारती। सचिय०
॥५॥ तासु करि बैठि हरि सकल परिवारसौं,
देहिं परदछिना जिनहिं जयकारसों। आनि-
कर सचिय जिननाथ उद्धारती ॥ सचि० ॥६॥
आनि पांडुकशिला पूर्वमुख थापि जिन, करहिं
अभिषेक जो इन्द्र उत्साहसों। अधिक तिन
देखि प्रभु कोटि छवि वारती ॥ सचि० ॥७॥
योजन आठ गंभीर कलसा बनौ, चारि चौ-
ड़ाइमुख एक जोजन तनौ। सहस्र अठोतर-
सौ कलश शिर ढारती ॥ सचिय० ॥८॥ छत्रम-
णिखचित ईशान शिर ढारती, सनतमाहेन्द्र
दोऊ चमर शिर ढारती। देवदेवी सुपुष्पांजली
डारती ॥सचि० ॥९॥ जल सुचंदन अक्षतपुष्प
चरुलै धरै। दीप अरु धूप फल अर्घ पूजा करै।
पांडुका और नीराजना वारती। सचि० ॥१०॥
कियो सिंगार सब अंग सम्माजकौ, आनि

मातहिं दियौ फेरि जिनराजकौ। तृप्त नहिं होत दृग रूप नीहारती॥ सचि०॥११॥ ताल मिरदंगध्वनिसप्तस्वरबाजही। नृत्य तांडव करत इन्द्र अति छाजही। करन उत्साह सौं जिन सुपगढारती॥ सचि०॥१२॥ भव्यजनलोक जन्ममोहोत्सव करैं, आगिले जन्मके सकल पातक हरैं। भक्तिजिनराजकी पारउत्तारती। सचिय सुरपति सहित करहिं जिन आरती॥१३॥

घत्ता—जिणवर वर माता, माननीया सुरेन्द्रैः।
स जयति जिनराजा, लालचन्दं विनोदी॥

ओं ह्रीं श्रीवृषमादितीर्थङ्करेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्व०

इत्याशीर्वादः।

नव तिलक।

पूजाकरनेवाले को प्रथम नव तिलक करना चाहिये।

अडिल्ल।

शिखा शीस की जानि, ललाट सु लीजिये।
कंठ, हृदय अरु कान, भुजा गनि लीजिये।
कूंख, हाथ अरु नाभि, सरस शुभ कीजिये।
तव जिनवर को जजो, तिलक नव कीजिये॥१॥

देव शास्त्रगुरुपूजा संस्कृत।

पूजा प्रारम्भ करते समय पेज नं० १९ में छपा हुआ विनय पाठ बोलना चाहिये।

ओं जय जय जय। नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु।

छन्द-आर्या

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरीयाणं। णमो उवज्झायाणं, णमोलोये सव्वसाहूणं ॥ १ ॥ ओं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना) चत्तारि मंगलं-- अरहंतमंगलं, सिद्धमंगलं, साहूमंगलं केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-- अरहंतलोगुत्तमा, सिद्धलोगुत्तमा, साहूलोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मोलोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरहंतसरणं पव्वज्जामि, सिद्धसरणं पव्वज्जामि, साहुसरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मोसरणं पव्वज्जामि। ओं नमोऽर्हते स्वाहा।

(यहां पुष्पांजलि क्षेपण करना)

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितोदुःस्थितोऽपिवा।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १ ॥
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स वाह्याम्यंतरे शुचिः ॥२॥
अपराजितमंत्रोऽयं सर्वविघ्नविनाशनः। मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ॥ ३ ॥ एसो पंच-णमोयारो सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिंपढमं होइ मंगलं ॥ ४ ॥ अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः। सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ॥ ५ ॥ कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीनिकेतनं । सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं ॥ ६ ॥ विघ्नौघाः प्रलयं यांति शाकिनी भूतपन्नगाः। विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥७॥

(पुष्पांजलि)

यहा पर जिन सहस्र नाम पढ़कर दश अर्घ चढ़ाना चाहिये।

भगवज्जिनसेनाचार्यकृतं

श्रीजिन-सहस्रनाम स्तोत्रं।

स्वयंभुवे नमस्तुभ्यमुत्पाद्यात्मानमात्मनि ।
स्वात्मनैव तथोद्भूतवृत्तये चिंत्यवृत्तये ॥१॥
नमस्ते जगतांपत्ये लक्ष्मीभर्त्रे नमो नमः ।
विदांवर नमस्तुभ्यं नमस्ते वदतांवर ॥२॥
कामशत्रुहणं देवमामनंति मनीषिणः ।
त्वामानमत्सुरेन्मौलिभामालाभ्यर्चितक्रमम् ॥३॥
ध्यानदुर्घणनिर्भिन्नघनघातिमहातरुः ।
अनंतभवसंतानजयोप्यासीरनंतजित् ॥४॥
त्रैलोक्यनिर्जयाव्याप्तदुर्दर्पमतिदुर्जयं ।
मृत्युराजं विजित्यासीज्जन्ममृत्युं जयो भवान् ॥५॥
विधूताशेषसंसारो बंधुर्नो भव्यबांधवः ।
त्रिपुरारिस्त्वमीशोसि जन्ममृत्युजरांतकृत् ॥६॥
त्रिकालविजयाशेषस्वभेदात् त्रिविधोच्छिदं ।
केवलाख्यं दधच्चक्षुस्त्रिनेत्रोसि त्वमीशिता ॥७॥

त्वामंधकांतकं प्राहुर्मोहांधासुरमर्द्दनात् ।
अर्द्धं तेनारयो यस्मादर्धनारीश्वरोस्युत ॥८॥
शिवः शिवपदाध्यासाद्द दुरितारिहरो हरः ।
शंकरः कृतशं लोके संभवस्त्वं भवन्मुखे ॥६॥
वृषभोसि जगज्ज्येष्ठः गुरुर्गुरु गुणोदयैः ।
नाभेयो नाभिसंभूतोरिक्ष्वाकुकुलनंदनः ॥१०॥
त्वमेकः पुरुषस्कंधस्त्वं द्वे लोकस्य लोचने ।
त्वं त्रिधाबुधसन्मार्गस्त्रिज्ञस्त्रिज्ञानधारकः ॥११॥
चतुःशरणमांगल्यमूर्तिस्त्वं चतुरः सुधीः ।
पंचब्रह्ममयो देवः पावनस्त्वं पुनीहि मां ॥१२॥
स्वर्गावतारिणे तुभ्यं सद्योजातात्मने नमः ।
जन्माभिषेकवामाय वामदेव नमोस्तु ते ॥१३॥
सुनिःक्रांताय घोराय परं प्रशममीयुषे ।
केवलज्ञानसंसिद्धावीशानाय नमोस्तु ते ॥१४॥
पुरुस्तत्पुरुपत्वेन विमुक्तपदभागिने ।
नमस्तत्पुरुपावस्थां भावनार्णवविश्रते ॥१५॥
ज्ञानावरणनिर्हास नमस्तेनंतचक्षुपे ।

दर्शनावरणोच्छेदान्नमस्ते विश्वदर्शिने ॥१६॥
नमो दर्शनमोहादिक्षायिकामलदृष्टये।
नमश्चारित्रमोहघ्ने विरागाय महौजसे ॥१७॥
नमस्तेनंतवीर्याय नमोनंतसुखाय ते।
नमस्तेनंतलोकाय लोकालोकविलोकिने ॥१८॥
नमस्तेनंतदानाय नमस्तेनंतलब्धये।
नमस्तेनंतभोगाय नमोनंताय भोगिने ॥१९॥
नमः परमयोगाय नमस्तुभ्यमयोनये।
नमः परमपूताय नमस्ते परमर्षये ॥२०॥
नमः परमविद्याय नमः परमवच्छिदे।
नमः परमतत्वाय नमस्ते परमात्मने ॥२१॥
नमः परमरूपाय नमः परमतेजसे।
नमः परममार्गाय नमस्ते परमेष्ठिने ॥२२॥
परमर्द्धिजुषे धाम्ने परमज्योतिषे नमः।
नमः पारेतमः प्राप्तधाम्ने ते परमात्मने ॥२३॥
नमः क्षीणकलंकाय क्षीणबंध नमोस्तु ते।
नमस्ते क्षीणमोहाय क्षीणदोषाय ते नमः ॥२४॥

नमः सुगतये तुभ्यं शोभनागतमीयुषे ।
नमस्तेतींद्रियज्ञानसुखायानिन्द्रियात्मने ॥२५॥
कायबंधननिर्मोक्षादकायाय नमोस्तुते ।
नमस्तुभ्यमयोगाय योगिनामपि योगिने ॥२६॥
अवेदाय नमस्तुभ्यमकषायाय ते नमः ।
नमः परमयोगींद्रवन्दितांघ्रिद्वयाय ते ॥२७॥
नमः परमविज्ञान नमः परमसंयम ।
नमः परमदृग्दृष्टपरमार्थाय ते नमः ॥२८॥
नमस्तुभ्यमलेश्याय शुक्ललेश्यांशकस्पृशे ।
नमो भव्येतरावस्थाव्यतीताय विमोक्षणे ॥२९॥
संज्ञासंज्ञिद्वयावस्थाव्यतिरिक्तामलात्मने ।
नमस्ते वीतसंज्ञाय नमः क्षायिकदृष्टये ॥३०॥
अनाहाराय तृप्ताय नमः परमभाजुषे ।
व्यतीताशेषदोषाय भवाब्धेः पारमीयुषे ॥३१॥
अजराय नमस्तुभ्यं नमस्तेऽतीत जन्मने ।
अमृत्यवे नमस्तुभ्यमचलायाक्षरात्मने ॥३२॥
अलमास्तां गुणस्तोत्रमनंतास्तावका गुणाः ।

त्वन्नामस्मृतिमात्रेण परमं शं प्रशास्महे ॥३३॥
एवं स्तुत्वा जिनं देवं भक्त्यापरमया सुधीः।
पठेदष्टोत्तरं नाम्नां सहस्रं पापशांतये ॥३४॥

इति प्रस्तावना, पुष्पांजलि क्षेपण।

प्रसिद्धाष्टसहस्रेद्धलक्षणस्त्वं गिरां पतिः।
नाम्नामष्टसहस्रेण त्वां स्तुमोभीष्टसिद्धये ॥१॥
श्रीमान्स्वयंभूर्वृषभः शंभवः शंभुरात्मभूः।
स्वयंप्रभः प्रभुर्भोक्ता विश्वभूरपुनर्भवः ॥२॥
विश्वात्मा विश्वलोकेशो विश्वतश्चक्षुरक्षरः।
विश्वविद्विश्वविद्येशो विश्वयोनिरनीश्वरः ॥३॥
विश्वदृश्वा विभुर्धाता विश्वेशो विश्वलोचनः।
विश्वव्यापी विधिर्वेधाः शाश्वतो विश्वतोमुखः॥४॥
विश्वकर्मा जगज्ज्येष्ठो विश्वमूर्तिर्जिनेश्वरः।
विश्वदृक् विश्वभूतेशो विश्वज्योतिरनीश्वरः ॥५॥
जिनो जिष्णुरमेयात्मा जगदीशो जगत्पतिः।
अनंत चिदचिंत्यात्मा भव्यबंधुरबंधनः ॥६॥
युगादिपुरुषो ब्रह्मा पंचब्रह्ममयः शिवः।

परः परतरः सूक्ष्मः परमेष्ठी सनातनः ॥७॥
स्वयंज्योतिरजोऽजन्मा ब्रह्मयोनिरयोनिजः।
मोहारिविजयीजेता धर्मचक्री दयाध्वजः ॥८॥
प्रशांताररिनंतात्मा योगी योगीश्वरार्चितः।
ब्रह्मविद्ब्रह्मतत्त्वज्ञो ब्रह्मे्द्याविद्यतीश्वरः ॥९॥
शुद्धो बुद्धः प्रबुद्धात्मा सिद्धार्थः सिद्धशासनः।
सिद्धः सिद्धांतविद्ध्येयः सिद्धसाध्यो जगद्धितः ॥
सहिष्णुरच्युतोनंतः प्रभविष्णुर्भवोद्भवः।
प्रभूष्णुरजरोऽजर्यो भ्राजिष्णुर्धीश्वरोऽव्ययः।११।
विभावसुरसंभूष्णुः स्वयंभूष्णुः पुरातनः।
परमात्मा परंज्योतिस्त्रिजगत्परमेश्वरः ॥१२॥

इति श्रीमदादिशतम् ॥१॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः। धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाम अहं यजे ॥१॥

ओं ह्रीं भगवज्जिनस्य श्रीमदादिशतनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति०

दिव्य भाषापतिर्दिव्यः पूतवाक्पूतशासनः।

पूतात्मा परमज्योतिधर्माध्यक्षो दमीश्वरः ॥१॥
श्रीपतिर्भगवानर्हन्नरजाविरजाः शुचिः ।
तीर्थकृत्केवली शांतः पूजार्हः स्नातकोऽमलः ॥२॥
अनंतदीप्तिर्ज्ञानात्मा स्वयंबुद्धः प्रजापतिः ।
मुक्तः शक्तो निराबाधो निष्कलो भुवनेश्वरः ॥३॥
निरंजनो जगज्ज्योतिर्निरुक्तोक्तिर्निरामयः ।
अचलस्थितिरक्षोभ्यः कूटस्थः स्थाणुरक्षयः ॥४॥
अग्रणीर्ग्रामणीर्नेता प्रणेता न्यायशास्त्रकृत् ।
शास्ता धर्मपतिर्धर्म्यो धर्मात्मा धर्मतीर्थकृत् ॥५॥
वृषध्वजो वृषाधीशो वृषकेतुर्वृषायुधः ।
वृषो वृषपतिर्भर्ता वृषभांको वृषोद्भवः ॥६॥
हिरण्यनाभिर्भूतात्मा भूतभृद्भूतभावनः ।
प्रभवो विभवो भास्वान् भवो भावो भवान्तक ।७।
हिरण्यगर्भः श्रीगर्भः प्रभूतविभवोद्भवः ।
स्वयंप्रभुः प्रभूतात्मा भूतनाथो जगत्प्रभुः ॥८॥
सर्वादिः सर्वदृक् सार्वः सर्वज्ञः सर्वदर्शनः ।
सर्वात्मा सर्वलोकेशः सर्ववित्सर्वलोकजित् ॥९॥

सुगतिः सुश्रुतः सुश्रुक् सुवाक् सूरिर्बहुश्रुत।
विश्रुतः विश्वतः पादो विश्वशीर्षः शुचिश्रवा।१०॥
सहस्रशीर्षः क्षेत्रज्ञःसहस्राक्षः सहस्रपात्।
भूतभव्यभवद्भर्ता विश्वविद्या महेश्वरः ॥११॥

इति दिव्यादिशतम् ॥ २ ॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकै श्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः। धवल मंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाम अहं यजे ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीभगवज्जिनस्य दिव्यादिशतनामेभ्योऽर्घं ॥ २ ॥

स्थविष्ठःस्थविरो जेष्ठ पृष्ठःप्रेष्ठो वरिष्ठधीः।
स्थेष्ठो गरिष्ठो वंहिष्ठः श्रेष्ठानिष्ठोगरिष्ठगीः॥१॥
विश्वभृद्विश्वसृट् विश्वेट् विश्वभुग्विश्वनायकः।
विश्वाशीर्विश्वरूपात्मा विश्वजिद्विजितांतकः।२॥
विभवो विभयो वीरो विशोको विजरो जरन्।
विरागो विरतोऽसंगो विविक्तो वीतमत्सरः॥३॥
विनेयजनताबंधुर्विलीनाशेष कल्मषः।
वियोगो योगविद्विद्वान्विधातासुविधिःसुधीः॥४॥

क्षांतिभाक्पृथिवीमूर्तिः शांतिभाक्सलिलात्मकः।
वायुमूर्तिरसंगात्मा वह्निमूर्तिरधर्मधृक् ॥५॥
सुयज्वा यजमानात्मा सुत्वा सुत्रामपूजितः।
ऋत्विग्यज्ञपतिर्यज्ञो यज्ञांगममृतं हविः ॥६॥
व्योममूर्तिरमूर्तात्मा निर्लेपो निर्मलोऽचलः।
सोममूर्तिः सुसौम्यात्मा सूर्यमूर्तिर्महाप्रभः ॥७॥
मंत्रविन्मंत्रकृन्मंत्री मंत्रमूर्तिरनंतकः।
स्वतंत्रस्तंत्रकृत्स्वांतः कृतांतांतः कृतांतकृत् ॥८॥
कृती कृतार्थः सत्कृत्यः कृतकृत्य कृतक्रतुः।
नित्यो मृत्युञ्जयो मृत्युरमृतात्मामृतोद्भवः ॥६॥
ब्रह्मनिष्ठः परंब्रह्म ब्रह्मात्मा ब्रह्मसंभवः।
महाब्रह्मपतिर्ब्रह्मेट् महाब्रह्मपदेश्वरः ॥१०॥
सुप्रसन्नः प्रसन्नात्मा ज्ञानधर्मदमप्रभुः।
प्रशमात्मा प्रशांतात्मा पुराणपुरुषोत्तमः ॥११॥

इति स्थविष्ठादिशतम् ॥३॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकै श्चरुसुदीपसुधूपफला-
र्घकैः। धवल मंगलगानरवाकुले जिनगृहे

जिननाम अहं यजे ॥३॥

ओं ह्रीं श्रीभगवज्जिनस्य स्थविष्ठादि शतनामेभ्योऽर्घं ॥३॥

महाशोकध्वजोऽशोकः कः स्रष्टापद्मविष्टरः।
पद्मेशः पद्मसंभूतिः पद्मनाभिरनुत्तरः ॥१॥
पद्मयोनिर्जगद्योनिरित्यः स्तुत्यः स्तुतीश्वरः।
स्तवनार्हो हृषीकेशो जितजेयः कृतक्रियः ॥२॥
गणाधिपो गणज्ज्येष्ठो गण्यः पुण्यो गणाग्रणीः।
गुणाकरो गुणांभोधिर्गुणज्ञो गुणनायकः ॥३॥
गुणाकरी गुणोच्छेदी निर्गुणः पुण्यगीर्गुणः।
शरण्यः पुण्यवाक्पूतोवरेण्यः पुण्यनायकः ॥४॥
अगण्यः पुण्यधीर्गण्यः पुण्यकृत्पुण्यशासनः।
धर्मारामो गुणग्रामः पुण्यापुण्यनिरोधकः ॥५॥
पापापेतो विपापात्मा विपाप्मा वीतकल्मषः।
निर्द्वंद्वो निर्मदःशान्तो निर्मोहो निरुपद्रवः ॥६॥
निर्निमेषो निराहारो-निःक्रियो निरुपप्लवः।
निष्कलङ्को निरस्तैनानिर्धूतांगो निराश्रयः ॥७॥
विशालो विपुलज्योतिरतुलोऽचिंत्यवैभवः।

सुसंवृतः सुगुप्तात्मा सुव्रत्सुनयतत्ववित् ॥८॥
एकविद्यो महाविद्यो मुनिः परिवृढ़ः पतिः ।
धीशो विद्यानिधिः साक्षी विनेता विहतांतकः ॥९॥
पिता पितामहःपाता पवित्रः पावनो गतिः ।
त्राता भिषग्वरो वर्यो वरदः परमः पुमान् ॥१०॥
कविः पुराणपुरुषो वर्षीयान्वृषभः पुरुः ।
प्रतिष्ठः प्रसवा हेतुर्भुवनैकपितामहः ॥११॥

इति महाशोकध्वजादिशतम् ॥४॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकै श्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः । धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाम अहं यजे ॥४॥

ओं ह्रीं श्रीभगवज्जिनस्य महाशोकध्वजादिशतनामेभ्योऽर्घं ॥

श्रीवृक्षलक्षणः श्लक्ष्णो लक्षण्यः शुभलक्षणः ।
निरक्षः पुंडरीकाक्षः पुष्कलःपुष्करेक्षणः ॥१॥
सिद्धिदः सिद्धसंकल्पः सिद्धात्मा सिद्धिसाधनः ।
बुद्ध बोध्यो महाबोधिर्वर्धमानो महर्द्धिकः ॥२॥
वेदांगो वेदविद्वेद्यो जातरूपो विदांवरः ।

वेदवेद्यः स्वयंवेद्यो विवेदो वदतांवरः ॥३॥
अनादिनिधनो व्यक्तो व्यक्तवाग्व्यक्तशासनः।
युगादिकृद्युगाधारो युगादिर्जगदादिजः ॥४॥
अतींद्रोऽतींद्रियो धींद्रो महेंद्रोऽतींद्रियार्थदृक्।
अनिंद्रियोऽहमिंद्राच्यों महेंद्रमहितो महान्॥५॥
उद्भवः कारणं कर्त्ता पारगो भवतारकः।
अग्राह्यो गहनं गुह्यं परार्घ्यं परमेश्वरः ॥६॥
अनंतर्द्धिरमेयर्द्धिरचिंत्यर्द्धिः समग्रधीः।
प्राग्र्यः प्राग्रहरोऽभ्यग्र्यः प्रत्यग्रोग्र्योऽग्रिमोग्रजः॥
महातपा महातेजा महोदर्को महोदयः।
महायशो महाधामा महासत्त्वो महाधृतिः ॥८॥
महाधैर्यो महावीर्यो महासंपन्महाबलः।
महाशक्तिर्महाज्योतिर्महाभूतिर्महाद्युतिः ॥९॥
महामतिर्महानीतिर्महाक्षांतिर्महोदयः।
महाप्राज्ञो महाभागो महानंदो महाकविः ॥१०॥
महामहामहाकीर्तिर्महाकांतिर्महावपुः।
महादानो महाज्ञानो महायोगो महागुणः ॥११॥

महामहपतिः प्राप्तमहाकल्याणपंचकः।
महाप्रभुर्महाप्रातिहार्याधीशो महेश्वरः ॥१२॥

इति श्रीवृक्षादि शतम् ॥५॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः। धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाम अहं यजे ॥५॥

ओं ह्रीं श्री भगवज्जिनस्य श्रीवृक्षादि शतनामेभ्यो अर्घ्यं ॥५॥

महामुनिर्महामौनी महाध्यानी महादमः।
महाक्षमो महाशीलो महायज्ञो महामखः ॥१॥
महाव्रतपतिर्मह्यो महाकांतिधरोऽधिपः।
महामैत्रीमयोऽमेयो महोपायो महोदयः ॥२॥
महाकारुण्यको मंता महामंत्री महायतिः।
महानादो महाघोषो महेज्यो महसांपतिः ॥३॥
महाध्वर धरो धुर्यो महौदार्यो महेष्टवाक्।
महात्मा महसांधाम महर्षिर्महितोदयः ॥४॥
महाक्लेशांकुशः शूरो महाभूतपतिर्गुरुः।
महापराक्रमोऽनंतो महाक्रोधरिपुर्वशी ॥५॥
महाभवाब्धिसंतारिर्महामोहाद्रिसूदनः।

महागुणाकरः क्षांतो महायोगीश्वरः शमी ॥६॥
महाध्यानपतिर्ध्याता महाधर्मा महाव्रतः।
महाकर्मारिहात्मज्ञो महादेवो महेशिता ॥७॥
सर्वक्लेशापहः साधुः सर्वदोषहरो हरः।
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा शमात्मा प्रशमाकरः॥८॥
सर्वयोगीश्वरोऽचिंत्यः श्रुतात्मा विष्टरश्रवाः।
दांतात्मा दमतीर्थेशो योगात्मा ज्ञानसर्वगः ॥९॥
प्रधानमात्मा प्रकृतिः परमः परमोदयः।
प्रक्षीणबंधः कामारिः क्षेमकृत्क्षेमशासनः ॥१०॥
प्रणवः प्रणयः प्राणः प्राणदः प्रणतेश्वरः।
प्रमाणं प्रणिधिर्दक्षो दक्षिणोध्वर्युरध्वरः ॥११॥
आनंदो नंदनो नंदो वंद्योऽनिंद्योऽभिनंदनः।
कामहा कामदः काम्यः कामधेनुररिंजयः ॥१२॥

इति महामुन्यादि शतम् ॥६॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः। धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाम अहं यजे ॥६॥

ओं ह्रीं श्री भगवज्जिनस्य महामुन्यादि शतनामेभ्यो अर्घ्यं० ॥६॥

असंस्कृतः सुसंस्कारः प्राकृतो वैकृतांतकृत् ।
अन्तकृत्कांतगुः कांतश्चिंतामणिरभीष्टदः ॥१॥
अजितो जितकामारिरमितोऽमितशासनः ।
जितक्रोधो जितामित्रो जितक्लेशो जितांतकः २॥
जिनेन्द्रः परमानंदो मुनींद्रो दुंदुभिस्वनः ।
महेन्द्रवंद्यो योगींद्रो यतींद्रो नाभिनंदनः ॥३॥
नाभेयो नाभिजो जातः सुव्रतो मनुरुत्तमः ।
अभेद्योऽनत्ययोऽनाश्वानधिकोधिगुरुः सुधी ॥४॥
सुमेधा विक्रमी स्वामी दुराधर्षो निरुत्सुकः ।
विशिष्टः शिष्टभुक्शिष्टः प्रत्ययः कामनोऽनघः ॥५॥
क्षेमी क्षेमंकरोऽक्षय्यः क्षेमधर्मपतिः क्षमी ।
अग्राह्यो ज्ञाननिग्राह्यो ध्यानगम्यो निरुत्तरः ॥६॥
सुकृती धातुरिज्यार्हः सुनयश्चतुराननः ।
श्रीनिवासश्चतुर्वक्त्रश्चतुरास्यश्चतुर्मुखः ॥७॥
सत्यात्मा सत्यविज्ञानः सत्यवाक्सत्यशासनः ।
सत्याशीः सत्यसंधानः सत्यः सत्यपरायणः ॥८॥
स्थेयान्स्थवीयान्नेदीयान्दवीयान्दूरदर्शनः ।

अणोरणीयाननणुर्गुरुराद्योगरीयसां ॥९॥
सदायोगः सदाभोगः सदातृप्तः सदाशिवः ।
सदागतिः सदासौख्यः सदाविद्यः सदोदयः ॥१०॥
सुघोषः सुमुखः सौम्यः सुखदः सुहितः सुहृत्।
सुगुप्तो गुप्तिभृद्गोप्ता लोकाध्यक्षो दमीश्वरः ११।

इति असंस्कृतादि शतम् ॥७॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः । धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाम अहं यजे ॥७॥

ओं ह्रीं श्री भगवज्जिनस्य असंस्कृतादि शतनामेभ्यो अर्घ्यं० ॥७॥

बृहन्बृहस्पतिर्वाग्मी वाचस्पतिरुदारधीः ।
मनीषी धिषणो धीमांच्छेमुषीशो गिरांपतिः ॥१॥
नैकरूपो नयस्तुंगो नैकात्मा नैकधर्मकृत् ।
अविज्ञेयोऽप्रतर्क्यात्मा कृतज्ञः कृतलक्षणः ॥२॥
ज्ञानगर्भो दयागर्भो रत्नगर्भः प्रभास्वरः ।
पद्मगर्भो जगद्गर्भो हेमगर्भः सुदर्शनः ॥३॥
लक्ष्मीवांस्त्रिदशाध्यक्षो दृढीयानिन ईशिता ।

मनोहरो मनोज्ञांगो धीरो गंभीरशासनः ॥४॥
धर्मयूपो दयायागो धर्मनेमिर्मुनीश्वरः।
धर्मचक्रायुधो देवः कर्महा धर्मघोषणः॥५॥
अमोघवागमोघाज्ञो निर्मलोऽमोघशासनः।
सुरूपः सुभगस्त्यागी समयज्ञः समाहितः ॥६॥
सुस्थितः स्वास्थ्यभाक्स्वस्थो नीरजस्को निरुद्धवः।
अलेपो निष्कलंकात्मा वीतरागो गतस्पृहः ॥७॥
वश्येंद्रियो विमुक्तात्मा निःसपत्नो जितेंद्रियः।
प्रशांतोऽनंतधामर्षिमंगलं मलहानघः ॥८॥
अनीदृगुपमाभूतो दृष्टिर्दैवमगोचरः।
अमूर्त्तो मूर्तिमानेको नैको नानैकतत्त्वदृक् ॥९॥
अध्यात्मगम्यो गम्यात्मा योगविद्योगिवंदितः।
सर्वत्रगः सदाभावी त्रिकालविषयार्थदृक् ॥१०॥
शंकरः शंवदो दांतो दमी क्षांतिपरायणः।
अधिपः परमानंदः परात्मज्ञः परात्परः ॥११॥
त्रिजगद्वल्लभोऽभ्यर्च्यस्त्रिजगन्मंगलोदयः।
त्रिजगत्पतिपूजांघ्रिस्त्रिलोकाग्रशिखामणिः ॥१२॥

इति बृहदादि शतम् ॥८॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः। धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाम अहं यजे ॥८॥

ओं ह्रीं श्री भगवज्जिनस्य वृहदादि शतनामेभ्योऽर्घ्यं० ॥८॥

त्रिकालदर्शी लोकेशो लोकधाता दृढव्रतः।
सर्वलोकातिगः पूज्यः सर्वलोकैकसारथिः ॥१॥
पुराणपुरुषः पूर्वः कृतपूर्वाङ्गविस्तरः।
आदिदेवः पुराणाद्यः पुरुदेवोऽधिदेवता ॥२॥
युगमुख्यो युगज्येष्ठो युगादिस्थितिदेशकः।
कल्याणवर्णः कल्याणः कल्यः कल्याणलक्षणः ॥
कल्याणः प्रकृतिर्दीप्तः कल्याणात्मा विकल्मषः।
विकलंकः कलातीतः कलिलघ्नः कलाधरः ॥४॥
देवदेवो जगन्नाथो जगद्बंधुर्जगद्विभुः।
जगद्धितैषी लोकज्ञः सर्वगो जगदग्रजः ॥५॥
चराचर गुरुर्गोप्यो गूढात्मा गूढगोचरः।
सद्योजातः प्रकाशात्मा ज्वलज्ज्वलनसप्रभः ॥६॥
आदित्यवर्णो भर्माभः सुप्रभः कनकप्रभः।
सुवर्णवर्णो रुक्माभः सूर्यकोटिसमप्रभः ॥७॥

तपनीयनिभस्तुंगो बालार्काभोऽनलप्रभः ।
संध्याभ्रबभ्रुर्हेमाभस्तप्तचामीकरच्छविः ॥८॥
निष्टप्तकनकच्छायः कनत्कांचनसन्निभः ।
हिरण्यवर्णः स्वर्णाभः शातकुंभनिभप्रभः ॥६॥
द्युम्नभाजातरूपाभो दीप्तजांबूनदद्युतिः ।
सुधौतकलधौतश्रीः प्रदीप्तो हाटकद्युतिः ॥१०॥
शिष्टेष्टः पुष्टिदः पुष्टः स्पष्टः स्पष्टाक्षरक्षमः ।
शत्रुघ्नोप्रतिघोऽमोघः प्रशास्ता शासिता स्वभूः ॥
शांतिनिष्ठो मुनिज्ज्येष्ठः शिवतातिः शिवप्रदः ।
शांतिदः शांतिकृच्छांतिः कांतिमान्कामितप्रदः १२
श्रेयोनिधिरधिष्ठानमप्रतिष्ठः प्रतिष्ठितः ।
सुस्थितः स्थावरः स्थाणुः प्रथीयान्प्रथितः पृथुः।१३।

इति त्रिकालदर्श्यादिशतम् ॥६॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः । धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाम अहं यजे ॥६॥

ओं ह्रीं श्री भगवज्जिनस्य त्रिकालदर्श्यादिशतनामेभ्योऽर्घ्यं ॥६॥

दिग्वासा वातरशनो निर्ग्रंथेशो निरंबरः ।

निष्किंचनो निराशंसो ज्ञानचक्षुरमोमुहः ॥१॥
तेजोराशिरनंतौजा ज्ञानाब्धिः शीलसागरः।
तेजोमयोऽमितज्योतिर्ज्योतिमूर्तिस्तमोपहः ॥२॥
जगच्चूडामणिर्दीप्तः सर्वविघ्नविनायकः।
कलिघ्नः कर्मशत्रुघ्नो लोकालोकप्रकाशकः ॥३॥
अनिद्रालुरतंद्रालुर्जागरूकः प्रभामयः।
लक्ष्मीपतिर्जगज्ज्योतिर्धर्मराजः प्रजाहितः ॥४॥
मुमुक्षुर्बंधमोक्षज्ञो जिताक्षो जितमन्मथः।
प्रशांतरसशैलूषा भव्यपेटकनायकः ॥५॥
मूलकर्त्ताखिलज्योतिर्मलघ्नो मूलकारणः।
आप्तो वागीश्वरः श्रेयांछ्रायसोक्तिर्निरुक्तवाक् ६॥
प्रवक्ता वचसामीशो मारजिद्विश्वभाववित्।
सुतनुस्तनुनिर्मुक्तः सुगतो हतदुर्नयः ॥७॥
श्रीशः श्रीश्रितपादाब्जो वीतभीरभयंकरः।
उत्सन्नदोषा निर्विघ्नो निश्चलो लोकवत्सलः ८॥
लोकोत्तरो लोकपतिर्लोकचक्षुरपारधीः।
धीरधीर्बुद्धसन्मार्गः शुद्धः सूनृतपूतवाक् ॥९॥

प्रज्ञापारमितः प्राज्ञो यतिर्नियमितेंद्रियः।
भदंतो भद्रकृद्भद्रः कल्पवृक्षो वरप्रदः ॥१०॥
समुन्मूलितकर्मारिः कर्मकाष्ठाशुशुक्षणिः।
कर्मण्यः कर्मठः प्रांशुर्हेयादेयविचक्षणः ॥११॥
अनंतशक्तिरच्छेद्यस्त्रिपुरारिस्त्रिलोचनः।
त्रिनेत्रस्त्र्यंबकस्त्र्यक्षः केवलज्ञानवीक्षणः ॥१२॥
समंतभद्रः शान्तारिर्धर्माचार्यो दयानिधिः।
सूक्ष्मदर्शी जितानंगः कृपालुर्धर्मदेशकः ॥१३॥
शुभंयुः सुखसाद्भूतः पुण्यराशिरनामयः।
धर्मपालो जगत्पालो धर्मसाम्राज्यनायकः ॥१४॥
इति दिग्वासादिशतं ॥१०॥ इत्यष्टाधिक सहस्रनामावली ॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः। धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाम अहं यजे ॥

ओं ह्रीं श्री भगवज्जिनस्य दिग्वासादिशतनामेभ्योऽर्घ्यं० ॥१०॥

धाम्मांपते तवामूनि नामान्यागमकोविदैः।
समुच्चितान्यनुध्यायन्पुमान्पूतस्मृतिर्भवेत् ॥१॥
गोचरोऽपि गिरामासां त्वमवाग्गोचरो मतः।

स्तोता तथाप्यसंदिग्धं त्वत्तोऽभीष्टफलं लभेत् ॥२॥
त्वमतोऽसि जगद्बंधुस्त्वमतोऽसि जगद्भिषक्।
त्वमतोऽसि जगद्धाता त्वमतोऽसि जगद्धितः ॥३॥
त्वमेकं जगतां ज्योतिस्त्वं द्विरूपोपयोगभाक्।
त्वं त्रिरूपैकमुक्त्यंगं सोत्थानंतचतुष्टयः ॥४॥
त्वं पंचब्रह्मतत्त्वात्मा पंचकल्याणनायकः।
षड्भेदभावतत्त्वज्ञस्त्वं सप्तनयसंग्रहः ॥५॥
दिव्याष्टगुणमूर्तिस्त्वं नवकेवललब्धिकः।
दशावतारनिर्धार्यो मां पाहि परमेश्वर ! ॥६॥
युष्मन्नामावलीदृब्धाविलसत्स्तोत्रमालया।
भवंतं वरिवस्यामः प्रसीदानुगृहाण नः ॥७॥
इदं स्तोत्रमनुस्मृत्य पूतो भवति भाक्तिकः।
यः सपाठं पठत्येनं स स्यात्कल्याणभाजनं ॥८॥
ततः सदेदं पुण्यार्थी पुमान्पठति पुण्यधीः।
पौरुहूतीं श्रियं प्राप्तुं परमामभिलाषुकः ॥९॥
स्तुत्वेति मघवा देवं चराचरजगद्गुरुं।
ततस्तीर्थविहारस्य व्यधात्प्रस्तावनामिमां ॥१०॥

स्तुतिः पुण्यगुणोत्कीर्तिः स्तोता भव्यः प्रसन्नधीः। निष्ठितार्थो भवांस्तुत्यः फलं नैश्रेयसं सुखं ११॥ यः स्तुत्यो जगतां त्रयस्य न पुनः स्तोता स्वयं कस्यचित्। ध्येयो योगिजनस्य यश्च नितरां ध्याता स्वयं कस्यचित्॥ यो नेतॄन् नयते नमस्कृतिमलं नंतव्यपक्षेक्षणः। स श्रीमान् जगतां त्रयस्य च गुरुर्देवः पुरुः पावनः ॥१२॥ तं देवं त्रिदशाधिपार्चितपदं घातिक्षयानन्तरं। प्रोत्थानंतचतुष्टयं जिनमिमं भव्याब्जनीनामिनं॥ मानस्तंभविलोकनानतजगन्मान्यं त्रिलोकीपतिं। प्राप्ताचिन्त्यवहिर्विभूतिमनघं भक्त्या प्रवन्दामहे ॥ १३ ॥

इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

इसके बाद २५ वे पेजसे २७ व पेज तक छपा हुआ 'स्वस्ति-मंगल' बोलकर देवशास्त्रगुरु पूजा आरंभ करना चाहिये।

देवशास्त्रगुरु पूजा।

सार्वः सर्वज्ञनाथः सकलतनुभृतां पापसंतापहर्ता, त्रैलोक्याक्रांतकीर्तिः क्षतमदनरिपुर्घाति-

कर्मप्रणाशः। श्रीमान्निर्वाणसंपद्वरयुवतिकरा-
लीढकंठैः सुकंठैर्दे वेंद्रैर्वंद्यपादो जयति जिन-
पतिः प्राप्तकल्याणपूजः ॥१॥

जय जय जय श्रीसत्कांतिप्रभो जगतां पते!
जय जय भवानेव स्वामी भवांभसि मज्जतां।
जय जय महामोहध्वांतप्रभातकृतेऽर्चनं।
जय जय जिनेश त्वं नाथ प्रसीद करोम्यहम्॥२॥

ओं ह्रीं भगवज्जिनेंद्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् (इत्याह्वाननं)
ओं ह्रीं भगवज्जिनेंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ. ठ.। (इतिस्थापनं)
ओं ह्रीं भगवज्जिनेंद्र! अत्र मम सन्निहितानि भव भव। वषट्

देवि श्रीश्रुतदेवते भगवति! त्वत्पादपंकेरुह;
द्वंद्वे यामि शिलीमुखत्वमपरं भक्त्यामया प्रा-
र्थ्यते। मातश्चेतसि तिष्ठ मे जिनमुखोद्भूते
सदा त्राहि मां, दृग्दानेन मयि प्रसीद भवतीं
संपूजयामोऽधुना ॥३॥

ओं ह्रीं जिनमुखोद्भूतद्वादशांगश्रुतज्ञान। अत्र अवतर अवतर,
संवौषट्।

ओं ह्रीं जिनमुखोद्भूतद्वादशांगश्रुतज्ञान। अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ.ठः।

ओं ह्रीं जिनमुखोद्भूतद्वादशांगश्रुतज्ञान ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

संपूजयामि पूज्यस्य पादपद्मयुगं गुरोः।
तपः प्राप्तप्रतिष्ठस्य गरिष्ठस्य महात्मनः ॥४॥

ओं ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुसमूह ! अव अवतर अवतर। सं०
ओं ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्यसाधुसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः
ओं ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

देवेंद्रनागेंद्रनरेंद्रवंद्यान् शुंभत्पदान् शोभितसारवर्णान्। दुग्धाब्धिसंस्पर्धिगुणैर्जलोघैर्जिनेंद्रसिद्धांतयतीन् यजेऽहम् ॥१॥

मलिन वस्तु उज्ज्वल करै, यह स्वभाव जलमांय। जलसे जिन पद पूजिये क्षत कलंक मिट जाय॥ नीर बुझावै अग्निको, तृपा रोग नहिं जाय। तृषारोग प्रभु तुम हरो, यातैं पूजूं पांय॥

ओं ह्रीं परब्रह्मणेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तये अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्गुणसहिताय अर्हत्परमेष्ठिने जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥

ओं ह्रीं जिनमुखोद्भूतस्याद्वादनयगर्भितद्वादशांगश्रुतज्ञानाय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रादिगुणविराजमानाचार्योपाध्याय

सर्वसाधुभ्यो जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

प्रत्येक श्लोकके आगे उपरोक्त मंत्र पूरा बोलकर चंदन अक्षतादि द्रव्य चढ़ाना चाहिये।

ताम्यत्त्रिलोकोदरमध्यवर्तिसमस्तसत्वाहितहारिवाक्यान्। श्रीचंदनैर्गंधविलुब्धभृंगैर्जिनेंद्रसिद्धांतयतीन् यजेऽहम् ॥२॥

तपत वस्तु शीतल करैं, चंदन शीतल आप। चन्दनसे पूजा करूं, मिटै मोह संताप ॥ चंदन शीतलता करै, भवाताप नहिं जाय। भवाताप प्रभु तुम हरो, यातैं पूजूं पाय ॥

ओं ह्रीं ···संसारतापविनाशनायं चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अपारसंसारमहासमुद्रप्रोत्तारणे प्राज्यतरीन् सुभक्त्या। दीर्घाक्षतांगैर्धवलाक्षतौघैर्जिनेंद्रसिद्धांतयतीन् यजेऽहम् ॥३॥

तन्दुल धवल पवित्र अति, नाम सु अक्षत तास। अक्षत सों जिन पूजिये, अक्षय गुण परकास ॥ अक्षय अक्षय मैं कहूं, सो अक्षय पद नाथ। महा अक्षय पद तुम लियो, यातैं पूजूं पाय ॥

ओं ह्रीं ·····अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

विनीतभव्याब्जविबोधसूर्यान्वर्यान् सुचर्याकथनैकधुर्यान्। कुंदारविंदप्रमुखैः प्रसूनैर्जिनेंद्रसिद्धांतयतीन् यजेऽहम् ॥४॥

पुष्प चाप धर पुष्प सर, धारी मनमथ वीर। यातैं पूजा पुष्पकी, हरै मदनकी पीर। कामबाण पुष्पे हरो, सो तुम जीते राय। यातैं मैं पायन पडूं, मदन काम नशि जाय॥

ओं ह्रीं .....कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कुदर्पकंदर्पविसर्प्पसर्प्पप्रसह्यनिर्णाशनवैनतेयान्। प्राज्याज्यसारैश्चरुभी रसाढ्यैर्जिनेंद्रसिद्धांतयतीन् यजेऽहं॥५॥

परम अन्न नैवेद्य विधि, क्षुधाहरण तन पोष। जे पूजैं नैवेद्य सों मिटै क्षुधादिक रोग॥ भोजन नाना विधि किये, मूल क्षुधा नहिं जाय। क्षुधारोग प्रभु तुम हरो, यातैं पूजूं पाय॥

ओं ह्रीं......क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्वस्तोद्यमांधीकृतविश्वविश्वमोहांधकारप्रतिघातदीपान्। दीपैः कनत्कांचनभाजनस्थैर्जिनेंद्रसिद्धांतयतीन् यजेऽहं॥६॥

आपापर देखे सकल, निशिमें दीपक जोत। दीपक सो जिन पूजिये निर्मल ज्ञान उद्योत॥ दीप शिखा घटमे वसै, ज्ञान घटा घट सांय। ढूढ़त डोलै कर्मको, कृत कलंक मिट जाय॥

ओं ह्रीं... मोहांधकारविनाशनाय दीप निर्वपामीति स्वाहा।

दुष्टाष्टकर्मेन्धनपुष्टजालसंधूपने भासुरधूमके-

तून्। धूपैर्विधूतान्यसुगंधगंधैर्जिनेंद्रसिद्धांतय-
तीन् यजेऽहं ॥७॥

पावक दहै सुगन्धको, धूपचढ़ावै सोय। खेवत धूप जिनेशको, अष्टकर्म क्षय होय॥ जब धूपायनमे लगे, ध्यान अग्निकर वीर। कर्म काठिया खेइये, त्रिभुवन पति गम्भीर॥

ओं ह्रीं ... अष्टकर्मदहनाय धूप निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुभ्यद्विलुभ्यन्मनसाप्यगम्यान् कुवादिवादाऽ-
स्खलितप्रभावान्। फलैरलं मोक्षफलाभिसारै-
र्जिनेंद्रसिद्धांतयतीन् यजेहम् ॥८॥

जो जैसी करनी करै, सो तैसा फल लेय। फल पूजा महाराजकी, निश्चय शिव फल देय॥ फल फल याते कहत हैं ये फल वे फल नांय। महा मोक्षफल तुम लियो, यातैं पूजू पाय॥

ओं ह्रीं ....मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्वारिगंधाक्षतपुष्पजातैर्नैवेद्यदीपामलधूपधू-
म्रैः। फलैर्विचित्रैर्घनपुण्ययोगान्जिनेंद्रसिद्धांत-
यतीन् यजेऽहं ॥९॥

जलधारा चंदन घसौं, अक्षत पुष्प नैवेद्य। दीप धूप फल अर्घयुत, ये पूजा वसु भेव॥ ये जिनपूजा अष्ट विधि, कीजे कर शुचि अंग। प्रति पूजा जलधार सु, दीजै धार अभंग॥

ओं ह्रीं ... अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ये पूजां जिननाथशास्त्रयमिनां भक्त्या सदा कुर्वते, त्रैसंध्यं सुविचित्रकाव्यरचनामुच्चारयंतो नराः। पुण्याढ्या मुनिराजकीर्तिसहिता भूत्वा तपोभूषणास्ते भव्याः सकलावबोधरुचिरां सिद्धिं लभन्ते पराम् ॥१॥

(पुष्पाजलि क्षेपण करना)

वृषभोऽजितनामा च संभवश्चाभिनंदनः।
सुमतिः पद्मभासश्च सुपार्श्वो जिनसत्तमः ॥१॥
चंद्राभः पुष्पदंतश्च शीतलोभगवान्मुनिः।
श्रेयांश्च वासुपूज्यश्च विमलो विमलश्रुतिः ॥२॥
अनंतो धर्मनामा च शांतिः कुंथुर्जिनोत्तमः।
अरश्च मल्लिनाथश्च सुव्रतो नमिर्नाथकृत ॥३॥
हरिवंशसमुद्भूतोऽरिष्टनेमिर्जिनेश्वरः।
ध्वस्तोपसर्ग दैत्यारिः पार्श्वो नागेंद्रपूजितः ॥४॥
कर्मान्तःकृन्महावीरः सिद्धार्थकुलसंभवः।
एते सुरासुरौघेण पूजिता विमलत्विषः ॥५॥
पूजिता भरताद्यैश्च भूपेंद्रैर्भूरिभूतिभिः।

चतुर्विधस्य संघस्य शांतिं कुर्वंतु शाश्वतीं ॥६॥
जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिः सदाऽस्तु मे।
सम्यक्त्वमेव संसारवारणं मोक्षकारणं ॥७॥

(पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना)

श्रुते भक्तिः श्रुते भक्तिः श्रुते भक्तिः सदाऽस्तु मे।
सज्ज्ञानमेव संसारवारणं मोक्षकारणं ॥८॥

(पुष्पाजलिम्)

गुरौ भक्तिर्गुरौ भक्तिर्गुरौ भक्तिः सदाऽस्तु मे।
चारित्रमेव संसारवारणं मोक्षकारणं ॥९॥

(पुष्पांजलिम्)

देव जयमाला प्राकृत।

वत्ताणुट्ठाणे जणधणुदाणे पइपोसिउ तुहु खत्तधरु। तुहु चरण विहाणे केवलणाणे तुहु परमप्पउ परमपरु ॥१॥ जय रिसहरिसीसर णमियपाय। जय अजिय जियंगमरोसराय ॥ जय संभव संभवकयवियोय। जय अहिणंदण णंदिय पओय ॥२॥ जय सुमइ सुमइसम्मयपयास, जय पउमप्पह पउमाणिवास ॥ जय ज-

यहि सुपास सुपासगत्त। जय चंद्प्पह चंदाहवत्त ॥३॥ जय पुप्फयंत दंतंतरंग। जय सीयल सीयलवयणभंग॥ जय सेय सेयकिरणोहसुज्ज। जय वासुपुज्ज पुज्जाण पुज्ज ॥४॥ जय विमल विमलगुणसेढिठाण। जय जयहि अणंताणंतणाण। जय धम्म धम्मतित्थयर संत। जय सांति सांति विहियायवत्त ॥५॥ जय कुंथु कुंथुपहुअंगिसदय। जय अर अर माहर विहियसमय॥ जय मल्लि मल्लि आदामगंध। जय मुणिसुव्वयसुव्वयणिबंध॥६॥ जय णमि णमियामरणियरसामि। जय णेमि धम्मरहचक्कणेमि। जय पास पासछिंदणकिवाण। जय वड्ढमाण जसवड्ढमाण ॥७॥

घत्ता—इह जाणिय णामहिं दुरियविरामहिं परहिंवि णमिय सुरावलिहिं। अणहणहिं अणाइहिं समिय कुवाइहिं पणविवि अरहंतावलिहिं॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घं निव०

शास्त्र जयमाला प्राकृत।

संपइसुहकारण कम्मवियारण भवसमुद्दता-
रणतरणं। जिणवाणि णमस्समि सत्तिपया-
समि सग्गमोक्खसंगमकरणं ॥ १ ॥ जिणंद-
मुहाओ विणिग्गयतार। गणिदविगुंफिय गंथ-
पयार॥ तिलोयहिमंडण धम्मह खाणि। सया-
पणमामि जिणिंदहवाणि ॥ २ ॥ अवग्गह ईह
अवाय जु एहि। सुधारण भेयहिं तिण्णि सएहिं।
मई छत्तीस बहुप्पमुहाणि। सया पणमामि जि-
णिंदह वाणि ॥३॥ सुदं पुण दोण्णि अणेयप-
यार। सुवारहभेय जगत्तयसार॥ सुरिंदणरिं-
दसमुच्चिय जाणि। सयापणमामि जिणिंदह-
वाणि ॥४॥ जिणिंदगणिंदणरिंदह रिद्धि। पया-
सइ पुण्ण पुराकिउलद्धि॥ णिउग्गुपहिल्लउ एहु
वियाणि। सया पणमामि जिणिंदह वाणि ॥५॥
जु लोय अलोयह जुत्ति जणेइ। जु तिण्णिवि-
कालसरूव भणेइ॥ चउग्गइ लक्खण दुज्जउ
जाणि। सयापणमामि जिणिंदह वाणि ॥६॥

जिणिंद्चरित्तविचित्त मुणेइ। सुसावयधम्मह जुत्ति जणेइ ॥ णिउग्गु वि तिज्जउ इत्थु वियाणि। सया पणमामि जिणिंद्ह वाणि ॥७॥ सुजीव अजीवह तच्चह चक्खु। सुपुण्ण विपाव विबंध विमुक्खु॥ चउत्थुणिउग्गुविभासिय णाणि। सया पणमामि जिणिंद्हवाणि॥८॥ तिभेयहिं ओहिविणाणविचित्तु। चउत्थुरिजोविउलं मइउत्तु ॥ सुखाइय केवलणाण वियाणि। सया पणमामि जिणिंद्हवाणि ॥६॥ जिणिंद्ह णाणु जगत्तय भाणु। महातमणासिय सुक्खणिहाणु ॥ पयच्चउ भत्तिभरेण वियाणि। सया पणमामि जिणिंद्ह वाणि॥१०॥ पयाणि सुबारहकोडि सयेण। सुलक्ख तिरासिय जुत्ति भरेण ॥ सहस अट्ठावण पंच वियाणि। सया पणमामि जिणिंद्ह वाणि ॥११॥ इक्कावण कोडिउ लक्ख अठेव। सहसचुलसीदियसा छक्केवं। सढाइगवीसह गंथपयाणि। सया पणमा-

मि जिणिंदह्वाणि ॥१२॥

घत्ता—इह जिणवरवाणि विशुद्धमई । जो भवियण णियमण धरई । सो सुरणरिंद संपइ लहई । केवलणाण वि उत्तरई ॥१३॥

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादनयगर्भितद्वादशांगश्रुतज्ञानायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

गुरु जयमाला प्राकृत ।

भवियह भवतारण, सोलहकारण, अज्जवितित्थयरत्तणहं । तवकम्म असंगइ दयधम्मंगइ पालवि पंच महव्वयहं ॥१॥ वंदामि महारिसि सीलवंत । पंचेंद्रियसंजम जोगजुत्त । जे ग्यारह अंगह अणुसरंति । जे चउदह पुव्वह मुणि थुणंति ॥२॥ पादाणु सारवर कुट्ठबुद्धि । उप्पण्ण जाह आयासरिद्धि ॥ जे पाणाहारी तोरणीय । जे रुक्खमूल आतावणीय ॥३॥ जे मोणिधाय चंदाहणीय । जे जत्थत्थवणि णिवासणीय ॥ जे पंचमहव्वय धरणधीर । जे समिदिगुत्ति पालणहि वीर ॥४॥ जे वड्ढहिं देहविरत्तचित्त ।

जे रायरोसभयमोहचित्त ॥ जे कुगइहि संवरु विगयलोह। जे दुरियविणासणकामकोह ॥५॥ जे जल्लमल्लतिणलित्त गत्त। आरंभपरिग्गह जे विरत्त ॥ जे तिण्णकाल बाहर गमंति। छट्ठट्ठम दसमउ तउ चरंति ॥६॥ जे इक्कगास दुइगास लिंति। जे णीरसभोयण रइ करंति ॥ ते मुणिवर बंदउं ठियमसाण, जे कम्मडहइ वर सुक्कझाण ॥७॥ बारहविहसंजम जे धरंति। जे चारिउ विकहा परिहरंति ॥ बावीस परीषह जे सहंति। संसारमहण्णउ ते तरंति ॥८॥ जे धम्मबुद्धि महियलि थुणंति। जे काउस्सग्गोणिसि गमंति ॥ जे सिद्धविलासणि अहिलसंति। जे पक्खमास आहार लिंति ॥९॥ गोदूहण जे वीरासणीय। जे धणुहसेज वज्रासणीय ॥ जे तववलेण आयास जंति। जे गिरि गुहकंदर विवरथंति ॥१०॥ जे सत्तु मित्त समभाव चित्त। ते मुनिवर वंदउं दिढचरित्त ॥ चउवीसह गंथह

जे विरत्त। ते मुनिवर वंदउं जगपवित्त ॥११॥ जे सुज्झाणिज्झा एकचित्त। वंदामि महारिसि मोखपत्त॥ रयणत्तयरंजिय सुद्धभाव। ते मुणिवर वंदउं ठिदिसहाव ॥१२॥

घत्ता—जै तपसूरा. संजमधीरा. सिद्धवधू अणुराईया। रयणत्तयरंजिय. कम्महगंजिय, ते ऋषिवरमय झाईया ॥

ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रादिगुणविराजमानाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा। इत्याशीर्वाद'।

तीस चौबीसी पूजा

अडिल्ल छंद।

पांच भरत शुभ क्षेत्र, पांच ऐरावते,
आगत नागत वर्त्तमान जिन शास्वते।
सो चौवीसी तीस जजौं मन लायके,
आह्वानन विधि करूं वार त्रय गायके ॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिदशक्षेत्रस्थ सप्तसतविंशतिजिनेन्द्रा अत्रावतरावतर, संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं॥

अथाष्टक ।

(चाल रेखता)

नीर दधि क्षीरसम लायो, कनकके भृंग भर-
वायो । जरा-मृतु रोग संतायो, अबै तुम चर्ण
ढिंग आयो ॥ द्वीप ढ़ाई सरस राजे, क्षेत्र दश
ता विषैं छाजे । सात शत बीस जिन राजै,
पूजते पाप सब भाजै ॥१॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिदशक्षेत्रके सातसौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो जलं०

सुरभि जुत चंदनं लायो, संग करपूर घसवा-
यो । धार तुम चरण ढरवायो, भव आताप
नसवायो ॥ द्वीप ढाई० ॥२॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिदशक्षेत्रके सातसौ बीस जिनेंद्रेभ्यो चदं०

चंद सम तंदुलं सारं, किरण मुक्ता जु उनहारं ।
पुंज तुम चरण ढिंग धारं, अखैपद काजके
कारं ॥ द्वीप ढाई० ॥३॥

ओं ह्रीं पचमेरुसम्वंधिदशक्षेत्रके सातसौ बीस जिनेंद्रेभ्यो अक्षतं०

पुष्प शुभ गंध जुत सोहे, सुगंधित तास मन
मोहे । जजत तुम मदन छय होवे, मुक्ति पुर

पलकमें जोवे ॥ द्वीप ढाई० ॥४॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधिदशक्षेत्रके सातसौ वीस जिनेंद्रेभ्यो पुष्पं०

सरस व्यंजन लिया ताजा, तुरत बनवाइया खाजा। चरण तुम जजों महाराजा, क्षुधा दुख पलकमें भाजा ॥ द्वीप ढाई० ॥५॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधिदशक्षेत्रके सातसौ वीस जिनेंद्रेभ्यो नैवेद्यं०

दीप तम नाशकारी है, सरस शुभ ज्योतिधारी है। होय दशदिश उजारी है, धूम्र मिस पाप जारी है ॥ द्वीप ढाई० ॥६॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधिदशक्षेत्रके सातसौ वीस जिनेंद्रेभ्यो दीपं०

सरस शुभ धूप दशअंगी, जराऊं अग्निके संगी। कर्मकी सेन चतुरंगी, चरण तुम पूजते अंगी। द्वीप ढाई० ॥७॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधिदशक्षेत्रके सातसौ वीस जिनेंद्रेभ्यो धूपं०

मिष्ट उत्कृष्ट फल ल्यायो, अष्ट अरि दुष्ट नसवायो। श्री जिन भेंट करवायो, कार्य मन वांछितो पायो ॥ द्वीप ढाई० ॥८॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधिदशक्षेत्रके सातसौ वीस जिनेंद्रेभ्यो फलं

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ कर मैं नवीना है। पूजते पाप छीना है, 'भानमल' जोड़ि कीना है ॥ द्वीप ढाई० ॥६॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधिदशक्षेत्रके सातसौ बीस जिनेंद्रेभ्यो अर्घं०

अथ प्रत्येक अर्घ (अडिल्ल छन्द)

आदि सुदर्शन मेरु तनी दक्षिण दिशा,
भरत क्षेत्र सुखदाय सरस सुंदर बसा।
तिहँ चौबीसी तीन तने जिनरायजी,
बहत्तरि जिन सर्वज्ञ नमों शिरनायजी ॥१॥

ओं ह्रीं सुदर्शनमेरुके दक्षिणदिशाके भरतक्षेत्रसम्बन्धि तीनचौबीसीके बहत्तरि जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

ताहि मेरु उत्तर ऐरावत सोहनो,
आगत नागत वर्त्तमान मनमोहनो।
तिहँ चौबीसी तीन तने जिनरायजी.
बहत्तरि जिन सर्वज्ञ नमों शिरनायजी ॥२॥

ओं ह्रीं सुदर्शनमेरुके उत्तरदिशाके ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धि तीनचौबीसीके बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

कुसुमलता छन्द।

खंड धातुकी विजय मेरुके दक्षिण दिशा भरत

शुभ जान, तहाँ चौवीसी तीन विराजै आगत नागत अरु वर्त्तमान। तिनके चरण कमलको निशदिन अर्घ चढ़ाय करूं उर ध्यान, इस संसार भ्रमणतैं तारो अहो जिनेश्वर करुणावान ॥३॥

ओं ह्रीं धातुकीखंडकी पूर्वदिश विजयमेरुके दक्षिणदिशभरतक्षेत्र सम्वन्धी तीनचौवीसीके वहत्तरि जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं निर्व० ॥३॥

इसी दीपकी प्रथम शिखरके उत्तर ऐरावत जो महान। आगत नागत वर्त्तमान जिन वहत्तरि सदा शास्वते जान॥ तिनके चरण कमलको निशदिन अर्घ चढ़ाय करूं उर ध्यान। इस संसार भ्रमणतैं तारो अहो जिनेश्वर करुणावान ॥४॥

ओं ह्रीं धातुकीखंडकी पूर्वदिश विजयमेरुके उत्तरदिश ऐरावतक्षेत्र सम्वन्धी तीनचौवीसीके वहत्तरि जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं निर्व० ॥४॥

चौपाई छंद।

खंड धातु गिर अचल जुमेरु, दक्षिण तास भरत वहु घेर। तामें चौवीसी त्रय जान, आगत नागत अरु वर्तमान ॥५॥

ओं ह्रीं धातुकीखंडकी पश्चिमदिश अचलमेरुके दक्षिणदिश भरत क्षेत्रसम्वन्धी तीनचौवीसीके वहत्तरि जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं नि०॥५॥

अचलमेरु उत्तर दिश जाय, ऐरावत शुभ क्षेत्र बताय। तामें चौबीसी त्रय जान, आगत नागत अरु वर्त्तमान ॥६॥

ओं ह्रीं धातुकीखंडकी पश्चिमदिश अचलमेरुके उत्तरदिश ऐरावतक्षेत्रसम्बंधी तीनचौबीसीके बहत्तरि जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं० ॥६॥

सुन्दरी छंद।

द्वीप पुष्करकी पूरव दिशा, मंदिर मेरुकी दक्षिण भरत सा। ता विषैं चौबीसी तीन जू, अर्घ लेय जजों परवीन जू ॥७॥

ओं ह्रीं पुष्करद्वीपकी पूर्वदिश मंदिरमेरुकी दक्षिणदिश भरतक्षेत्र सम्बन्धी तीनचौवीसीके वहत्तरि जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं नि० ॥७॥

गिर सुमंदिर उत्तर जानियो, क्षेत्र ऐरावत सु बखानियो। ता विषैं चौवीसी तीन जू. अर्घ लेय जजों परवीन जू ॥८॥

ओं ह्रीं पुष्करद्वीपकी पूर्वदिश मंदिरमेरुकी उत्तरदिश ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धी तीनचौवीसीके वहत्तरि जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं नि० ॥८॥

पद्धरि छन्द।

पश्चिम पुष्कर गिर विद्युतमाल, ता दक्षिण

भरत बन्यो रसाल। तामें चौवीसी है जु तीन,
वसु द्रव्य लेय पूजों प्रवीन ॥९॥

ओं ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीपकी पश्चिमदिश विद्युन्मालीमेरुके दक्षिणदिश भरतक्षेत्रसम्बन्धी तीनचौवीसीके बहत्तरि जिनेन्द्रेभ्योअर्घं०

याही गिरके उत्तर जु ओर, ऐरावत क्षेत्र तनी
सु ठौर। तामें चौवीसी है जु तीन, वसु द्रव्य
लेय पूजों प्रवीन ॥१०॥

ओं ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपकी पश्चिमदिश विद्युन्मालीमेरुके उत्तरदिश ऐरावतक्षेत्रसम्बन्धी तीनचौवीसीके बहत्तरि जिनेंद्रेभ्यो अर्घं०

कुंडलिया छन्द।

द्वीप अढाईके विषै, पांच मेरु हितदाय।
दक्षिण उत्तर तासुके, भरत ऐरावत भाय॥
भरत ऐरावत भाय एक क्षेत्रके मांहीं।
चौवीसी है तीन तीन दशहीके मांहीं।
दशों क्षेत्रके तीस. सातसौ वीस जिनेश्वर।
अर्घ लेय करजोर जजों 'रविमल' मन शुधकर ११

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धी दशक्षेत्र विषैं तीसचौवीसीके सातसौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

जयमाला

दोहा—चौबीसी तींसो तनी, पूजा परम रसाल।
मन वच तनसों शुद्धकर अब वरनों जयमाल॥

पद्धरि छन्द।

जय द्वीप अढाईमें जु सार, गिर पंचमेरु उन्नत अपार। ता गिर पूरव पश्चिम जु और, सुभ क्षेत्र विदेह बसे जु ठौर॥१॥ ता दक्षिण क्षेत्र भरत सुजान, है उत्तर ऐरावत महान। गिर पांच तने दश क्षेत्र जोय, ताको वर्णन सुनि भव्य लोय॥२॥ जो भरत तनों वरनन विशाल, तैसो ही ऐरावत रसाल। इक क्षेत्र बीच वि-जयार्द्ध एक, ता ऊपर विद्याधर अनेक॥३॥ इक क्षेत्र तने षट षंड जान, तहाँ छहों काल व-रते समान। जो तीन कालमैं भोग भूमि, दश जाति कल्पतरु रहे झूमि॥४॥ जब चौथो काल लगै जु आय, तब कर्मभूमि वरते सुआय। जब तीर्थंकरको जनम होय, सुर लेय जजैं गिर मेरु सोय॥५॥ बहु भक्ति करें सब देव

आय, ता थेई थेई थेई तान लाय। हरि तांडव नृत्य करे अपार, सब जीवन मन आनंदकार ॥६॥ इत्यादि भक्ति करिके सुरिंद, निज थान जाय युत देव वृन्द। या विधि पांचों कल्यान जोय, हरि भक्ति करे अति हरष होय ॥७॥ या काल विषे पुन्यवंत जीव, नर जन्म धार शिव लहै अतीव। सब त्रेसठ पुरुष प्रवीन जोय, सब याही काल विषे जु होय ॥८॥ जब पंचम काल करै प्रवेश, मुनि धर्म तनों नहिं रहे लेस। विरले कोई दक्षिण देश माहिं, जिनधर्मी जन बहुते जु नाहिं ॥९॥ जब आवत है षष्टम जु काल, दुखमें दुख प्रगटे अति कराल। तब मांसभक्षी नर सर्व होय, जहाँ धर्म नाम नहिं सुनै कोय ॥१०॥ याही विधिसे षटकाल जोय, दश क्षेत्रन में इकसार होय। सब क्षेत्रनमें रचना समान, जिनवानी भाख्यो सो प्रमान ॥११॥ चौबीसी है इक क्षेत्र तीन, दश क्षेत्र तीस जानों प्रवीन।

आगत नागत जिन वरतमान, सब सात सतक अरु बीस जाने ॥१२॥ सब ही जिनराज नमों त्रिकाल, मोहि भव वारिधितें ल्यो निकाल। यह वचन हियेमें धारि लेव, मम रक्षा करो जिनेन्द्र देव ॥१३॥ रविमलकी विनती सुनो नाथ, मैं पांय पड़ूं जुग जोरि हाथ। मन वांछित कारज करो पूर, यह अरज हियामें धरि हजूर ॥१४॥

घत्ता—शत सात जु बीसं श्री जगदीशं आगत नागत बरततु है। मन वच तन पूजे सुध मन हूजे सुरग मुक्ति पद धारत है ॥

ओं ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत दशक्षेत्रके विषैं तीसचौवीसीके सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

पूजाकारकी प्रार्थना।

दोहा।

संवत शत उगनीसके, ता ऊपर शनि आठ।
पौष कृष्ण तृतीया गुरु, पूरण कीना पाठ ॥१॥
अक्षरमात्राकी कसर, बुधजन शुद्ध करेहिं।
अल्पबुद्धि मो जानके, दोष नाहिं मम देहिं ॥२॥

पढ्यो नहीं व्याकरण मैं, पिङ्गल देख्यो नाहिं।
जिनवाणी परसादतैं, उमग भई घट माँहिं ॥३॥
मान बड़ाई ना चहूं, चहूं धर्मको अंग ।
नितप्रति पूजा कीजियो, मनमें धार उमंग ॥४॥

इत्याशीर्वादः ।

विद्यमान विंशति जिनपूजा संस्कृत ।

पूर्वापरविदेहेषु, विद्यमान जिनेश्वरान् ।
स्थापयाम्यहमत्र, शुद्धसम्यक्त्वहेतवे ॥१॥

ओंह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकराः अत्र अवतरत अवतरत संवौषट्
ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकराः अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।
ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकराः अत्र मम सन्निहिता भवत भवत । वषट् ।

कर्पूरवासितजलैर्भृतहेमभृंगैः,
धारात्रयं ददतु जन्मजरापहानि ।
तीर्थंकराय जिनविंशविहरमानैः,
संचर्चयामि पदपंकजशांतिहेतोः ॥१॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्ममृत्युविनाशनाय जलं०
(इस पूजामें यदि [illegible] करना हो तो इस प्रकार मंत्र बोलै)

ओं ह्रीं सीमंधर-युग्मंधर-बाहु-सुबाहु-संजात स्वयंप्रभ-ऋषभानन-अनंतवीर्य-सूरप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर -चन्द्रानन-चन्द्रबाहु-भुजंगम-ईश्वर-नेमिप्रभ-वीरसेण-महाभद्र-देवयशो-ऽजितवीर्येति विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्व०

काश्मीरचंदनविलेपनमग्रभूमि,
संसारतापहरचूरि करोमि नित्यं। तीर्थं० ॥२॥

ओंह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं०

अखंडअक्षत सुगंधसुनम्रपुंजे-
रक्षयपदस्य सुखसंपतिप्राप्तहेतोः। तीर्थं० ॥३॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्०

अंभोजचंपकसुगंधसुपारजातैः,
कामैर्विध्वंसनकरोम्यहं जिनाय। तीर्थं० ॥४॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं०

नैवेद्यकैःशुचितरैर्घृ तपक्वखंडैः,
क्षुधादिरोगहरिदोषविनाशनाय। तीर्थं० ॥५॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारागविनाशनाय नैवे०

दीपैःप्रदीपितजगस्त्रयरश्मिपुंजे-
दूरीकरोति तममोहविनाशनाय। तीर्थं० ॥६॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनायं दी०

कर्पूरकृष्णागुरुचूर्णरूपै-
धूपैः सुगंधकृतसारमनोहराणि । तीर्थं० ॥७॥
ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्योऽष्टकर्मविध्वंशनाय धूपं०

नारिंगदाड़िममनोहरश्रीफलाद्यैः,
फलं अभीष्टफलदायकप्राप्तमेव । तीर्थं० ॥८॥
ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं०

जलस्यगंधाक्षतपुष्पचारुभि, र्दीपस्यधूपफलमि-
श्रितमर्घपात्रैः । अर्घ करोमि जिनपूजनशांति-
हेतोः, संसारपूर्णां कुरुसेविकानां ॥९॥
ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं नि०

जयमाला

दीप अढाई मेरु पुनि, तीर्थंकर हैं वीस ।
तिनको नित प्रति पूजिये, नमों जोरिकर सीस १॥

सवैया इकतीसा ।

सीमंधर आदि जिन राजत विदेह मांही, पां-
चसै धनुष वपु धारे भगवंत हैं । कोटि पूर्व
आयु जान अनंतज्ञान दर्शवान, सुख है अनंत
जाके वीरजअनंत हैं ॥ सिंहासन आसन पे

आप श्री विराजमान, खिरै तिहुं काल वाणी सुने सब संत हैं। अब हैं वरतमान ध्यावें नित इन्द्र आन, मैं हूं बंदूं बीस जिन शिव तिय कंत हैं॥ १॥

प्रथम सीमंधर स्वामि, युगमंधर त्रिभुवनधनिये। बाहु सुबाहु जिनंद, सेवहिं सुखसंपति धनिये॥२॥ संजात स्वयंप्रभुदेव, ऋषभानन गुण गाइये। अनंतवीर्यजीकी सेव, मनवांछित फल पाइये॥३॥ सूरप्रभु सुविशाल, वज्राधर जिन वंदिये। चंद्रानन चंद्रवाहु, देखत मन आनंदिये॥४॥ वीरसेन जयवंत, ईश्वर नेमीश्वर कहिये। भुजंगवाहु भगवंत, तारण भव जलते कहिये॥५॥ देव यशोधरराय, महाभद्र जिन वंदिये। अजितवीर्यजीको तेज, कोटि दिवाकर ज्यों दिपिये॥६॥

घत्ता—ये बीस जिनवर संग प्रभुके, सेव तुमरी कीजिये। ये बीसौं वंदन करै सेवक, मन

वांछित फल लीजिये ॥७॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो महार्घं निर्व०

इत्याशीर्वाद.। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।



अकृत्रिम चैत्यालय पूजा

आठ किरोड़ रु छप्पन लाख। सहस सत्याण-व चतुशत भाख॥ जोड इक्यासी जिनवर थान। तीनलोक आह्वान करान ॥१॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयानि अत्र अवतरत अवतरत संवौषट्। अत्र तिष्ठत तिष्ठत। ठःठः। अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट्

क्षीरोदधिनीरं उज्ज्वल क्षीरं, छान सुचीरं भरि भारी। अति मधुर लखावन, परम सु पावन, तृषा बुझावन गुण भारी॥ वसुकोटि सु छप्पन लाख सत्ताणव, सहस चारसत इक्यासी। जिनगेह अकीर्तिम तिहुंजग भीतर, पूजत पद ले अविनाशी ॥१॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुः शतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो जलं निर्व०

मलयागिर पावन, चंदन बावन, तापबुझावन घसि लीनो। धरि कनक कटोरी, द्वै करजोरी, तुमपद ओरी चित दीनो ॥ वसु० ॥२॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुः शतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो चंदनं निर्व०

बहुभांति अनोखे, तंदुल चोखे, लखि निरदोखे हम लीने। धरि कंचनथाली, तुमगुणमाली, पुंजविशाली करदीने ॥ वसु० ॥३॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुः शतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो अक्षतान् निर्व०

शुभ पुष्प सुजाती, है बहुभांती, अलि लिपटाती लेय वरं। धरि कनकरकेबी, करगह लेबी, तुमपद जुगकी भेट धरं ॥ वसु० ॥४॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुः शतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो पुष्पं निर्व०

खुरमा जु गिंदोडा, बरफी पेडा, घेवर मोदक

भरि थारी। विधिपूर्वक कीने, घृतपयभीने खंड मैं लीने, सुखकारी ॥ वसु० ॥५॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो नैवेद्यं निर्व०

मिथ्यात महातम, छाय रह्यो हम. निजभव परणति, नहिं सूझै। इहकारण पाकैं दीप सजाकैं, थाल धराकैं हम पूजैं ॥ वसु० ॥६॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो दीपं निर्व०

दशगंध कुटाकैं, धूप बनाकैं, निजकर लेकैं धरि ज्वाला। तसु धूम उडाई, दशदिश छाई, बहु महकाई, अति आला ॥ वसु० ॥७॥

ओंह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो धूपं निर्व०

बादाम छुहारे, श्रीफल धारे, पिस्ताप्यारे, द्राख वरं। इन आदि अनोखे लखि निरदोखे, थापलजोखे, भेट धरं ॥ वसु० ॥८॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो फलं निर्व०

जल चंदन तंदुल कुसुम रु नेवज, दीप धूप फल, थाल रचौं । जयघोष कराऊं, बीन बजाऊं, अर्घ चढाऊं खूब नचौं ॥ वसु० ॥६॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुः शतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं निर्व०

प्रत्येक अर्घ । चौपाई ।

अधोलोक जिन आगमसाख । सात कोड़ि अरु बहतर लाख ॥ श्रीजिनभवनमहा छवि देइ । ते सब पूजौं वसुविध लेइ ॥१॥

ओं ह्रीं अधोलोकसंबंधिसप्तकोटिद्विसप्ततिलक्षाकृत्रिम श्रीजिन-चैत्यालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति०

मध्यलोकजिनमंदिरठाठ। साढे चारशतक अरु आठ ॥ ते सब पूजौं अर्घ चढ़ाय। मनवचतन त्रयजोग मिलाय ॥२॥

ओंह्रींमध्यलोकसंबंधिचतुःशताष्टपंचाशत् श्रीजिनचैत्यालयेभ्योर्घ्यं

अडिल्ल छन्द :

ऊर्ध्वलोकके मांहिं भवनजिनजानिये ।
लाखचुरासी सहस सत्याणव मानिये ॥

तापै धरि तेईस जजौं शिर नायकैं।
कंचन थाल मझार जलादिक लायकैं॥

ओं ह्रीं ऊर्ध्वलोकसंबंधिचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्त्रत्रयोविंशति श्रीजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं० ॥३॥

वसुकोटि छप्पनलाख ऊपर, सहस सत्याणव मानिये। सतच्यारपै गिनले इक्यासी, भवन जिनवर जानिये॥ तिहुंलोक भीतर सासते, सुर असुर नर पूजा करैं। तिन भवनको हम अर्घ लेकैं, पूजि हैं जगदुख हरैं॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्त्रचतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो पूर्णाऽर्घ्यं निर्व०

दोहा।

अब वरणों जयमालिका सुनो भव्य चितलाय।
जिनमंदिर तिहुंलोकके, देहु सकल दरसाय १।

पद्धरि छन्द।

जय अमल अनादि अनंत जान। अनिमित जु अकीर्तम अचल थान॥ जय अजय अखंड अरूपधार। षटद्रव्य नहीं दीसै लगार॥ २॥
जय निराकार अविकार होय। राजत अनंत

परदेश सोय ॥ जै शुद्ध सुगुण अवगाह पाय। दशदिशामांहि इहविध लखाय ॥३॥ यह भेद अलोकाकाश जान। ता मध्य लोक नभ तीन मान ॥ स्वयमेव बन्यो अविचल अनंत। अविनाशि अनादि जु कहत संत ॥४॥ पुरुषा अकार ठाढो निहार। कटि हाथ धारि द्वै पग पसार॥ दच्छिन उत्तरदिशि सर्व ठौर। राजू जु सात भाख्यो निचोर ॥५॥ जय पूर्व अपरदिश घाटबाधि। सुन कथन कहूं ताको जु साधि॥ लखि श्वभ्रतलैं राजू जु सात। मधिलोक एक राजू रहात ॥६॥ फिर ब्रह्मसुरग राजू जु पांच। भूसिद्ध एक राजू जु सांच॥ दश चार ऊंच राजू गिनाय। षट् द्रव्य लये चतुकोण पाय॥७॥ तसु वातवलय लपटाय तीन। इह निराधार लखियो प्रवीन॥ त्रसनाड़ी तामधि जान खास। चतुकोन एक राजू जु व्यास ॥८॥ राजू उतंग चौदह प्रमान। लखि स्वयंसिद्ध रचना

महान ॥ तामध्य जीव त्रस आदि देय। निज थान पाय तिष्ठैं भलेय ॥९॥ लखि अधोभाग मैं श्वभ्रथान। गिन सात कहे आगम प्रमान। षट थानमांहिं नारकि वसेय। इक श्वभ्रभाग फिर तीन भेय ॥१०॥ तसु अधोभाग नारकि रहाय। फुनि ऊर्ध्वभाग द्वय थान पाय ॥ वस रहे भवन व्यंतर जु देव। पुर हर्म्य छजै रचना स्वमेव ॥११॥ तिंह थान गेह जिनराज भाख। गिन सातकोटि वहतरि जु लाख। ते भवन नमों मन वचन काय। गति श्वभ्रहरन हारे लखाय ॥१२॥ पुनि मध्यलोक गोला अकार। लखि दीप उदधि रचना विचार ॥ गिन असंख्यात भाखे जु संत। लखि संभुरमन सब के जु अंत ॥१३॥ इक राजुव्यासमें सर्व जान। मधिलोक तनों इह कथन मान ॥ सबमध्यदीप जंबू गिनेय। त्रयदशम रुचिकवर नाम लेय ॥१४॥ इन तेरहमें जिनधाम जान। शतचार

अठावन है प्रमान ॥ खग देव असुर नर आय आय । पद पूज जांय शिर नाय नाय ॥१५॥ जय उर्ध्वलोकसुर कल्पवास । तिहं थान छजैं जिन भवन खास ॥ जय लाख चुरासीपै लखे-य । जय सहससत्याणव और ठेय ॥१६॥ जय बीसतीन फुनि जोड़ देय । जिनभवन अकीर्तम जान लेय ॥ प्रतिभवन एक रचना कहा-य । जिनबिंब एकसत आठ पाय ॥१७॥ शत पंच धनुष उन्नत लसाय । पद्मासनयुत वर ध्यान लाय ॥ शिर तीनछत्र शोभित विशाल। त्रय पादपीठ मणिजड़ित लाल ॥१८॥ भामं-डलकी छवि कौन गाय । फुनि चँवर ढुरत चौसठि लखाय ॥ जय दुंदुभिरव अद्भुत सु-नाय । जय पुष्पवृष्टि गंधोदकाय ॥१९॥ जय तरु अशोक शोभा भलेय । मंगल विभूति रा-जत अमेय । घट तूप छजै मणिमाल पाय । घटधूम्र धूम दिग सर्व छाय ॥२०॥ जयकेतु-

पंक्ति सोहै महान। गंधर्वदेवगन करत गान॥ सुर जनमलेत लखि अवधि पाय। तिहँ थान प्रथम पूजन कराय॥२१॥ जिनगेहतणो वरनन अपार। हम तुच्छबुद्धि किम लहत पार॥ जय देव जिनेसुर जगत भूप। नमि 'नेम' मंगै निज देहुरूप॥ २२॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं निर्व०

दोहा।

तीनलोकमें सासते, श्रीजिनभवन विचार।
मनवच तनकरि शुद्धता पूजों अरघ उतार॥

तिहुं जग भीतर श्रीजिनमंदिर, बने अकीर्त्तम अति सुखदाय। नरसुर खग करि वंदनीक जै तिनको भविजन पाठ कराय॥ धनधान्यादिक संपति तिनके, पुत्रपौत्र सुख होत भलाय॥ चक्री सुर खग इन्द्र होयके, करम नाश शिवपुर सुख थाय॥२४॥

इत्याशीर्वादः।

वृहत् सिद्धचक्र पूजा भाषा।

दोहा।

परम ब्रह्म परमातमा, परम जोति परमीस।
परमनिरंजन परमपद, नमों सिद्ध जगदीस॥

ओं ह्रीं श्री णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिन्! अत्र अवतरावतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। परि पुष्पाजलिं क्षिपेत्॥

अथाष्टकं। सोरठा।

मोहि त्रषा दुख देय, सो तुमने जीती प्रभू।
जलसौं पूजों तोहि, मेरो रोग मिटाइयो॥

ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जलं निर्व०

हम भव आतप माँहि, तुम न्यारे संसार तैं।
कीजे सीतल छांह, चंदन सों पूजा करौं॥२॥

ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यो चंदनं निर्व०

हम औगुण समुदाय, तुम अक्षय सब गुणभरे।
पूजौं अक्षत ल्याय, दोष नास गुण कीजिये ३॥

ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अक्षतं निर्व०

काम अग्नि है मांहि, निरभै शील सुभाव तुम।

द्यानत मनवचकायसौं, नमौं सिद्धगुणखान॥८॥

ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यो ज्ञानावरणी कर्मविनाशनाय अर्घं निर्व०

दर्शनावरणी नाशक सिद्ध जयमाला

दोहा।

जैसे भूपति दरशको, होन न दे दरवान।
तैसे दरश आवरणको, देखन देहु सुजान॥१॥

चौपाई।

जाकै उदै आंख नहिं होई, चक्षु दर्शनावरणी सोई। नहिं मुख नाक फरस मुख करनं, उदै अचक्षु दर्शनावरणं॥२॥ अवधि दर्श परमान विलोकै, अवधि दर्शनावरणी रोकै। केवल लोकालोक निहारै, केवल दर्श आवरण निवारै॥३॥ निद्रा उदै सबै तन सोवै, थोरी नींद सुरत कछु होवै। प्रचला बलसौं आंख खुली है, अर्द्ध मुदी सी अर्द्ध खुली है॥४॥ निद्रा निद्रा उदै वखानी, पलक उघार सकै नहिं प्राणी। प्रचला प्रचला उदै कहावै, लार बहै मुख अंग

चलावै ॥५॥ उठै चलै बोलै सुध नाहीं, जोर विशेष बढ़ै तन मांही। काम प्रचंड तास तैं होवै, स्त्यानगृद्धि निद्रा जो सोवै ॥६॥

दोहा।

दरशन आवरणी हतै, केवल दर्शन रूप।
द्यानत सिद्ध नमौं सदा, अमल अचल चिद्रूप ॥७॥

ओं ह्रीं णमो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिभ्यो दर्शनावरणी कर्मविनाशनाय अर्घं निर्व० ॥२॥

वेदनी कर्मनाशक सिद्ध जयमाला

सोरठा।

शहद मिली असिधार, सुखदुख जीवनको करै।
कर्मवेदनी सार, साता असाता देत हैं ॥१॥

चौपाई छंद।

पुन्नी कनक महलमें सोवै, पापी राह परो दुख रोवै। पुन्नी वांछित भोजन खावै, पापी मांगै टूक न पावै ॥ २ ॥ पुन्नी जरी जवाहर सोभै, पापी फाटे कपड़े ओढै। पुन्नी कंचन थार कटोरा, पापीके कर प्याला खोरा ॥३॥ पुन्नी गज

पर चढ़ चालंता, पापी नंगे पग धावंता। पुन्नी के शिर छत्र फिरावै, पापी सीस बोझ ले धावै ॥४॥ पुन्नी हुकुम जगत पर होई, पापी बात सुनै नहिं कोई। पुन्नी भवन दरब नित आवै, पापी धन देखत नहिं पावै ॥५॥ पुन्नीको सब देखन जावै, पापी जनको मुंह न लगावै। पुन्नी कबही रोग न आवै, पापीको नित व्याधि सतावै ॥६॥ पुन्नी शीलरूप जुत नारी, पापी लहै न कानी कारी। पुन्नीके सुत करै कमाई, पापी तरसै होय दुखदाई ॥७॥ पुन्नी वस्तु गई फिर आवै, पापीके करसे गिर जावै। पुन्नी षटरितुके सुख भोगैं, पापी महा दुखी अति रोवै ॥८॥

सोरठा।

पुंन्य पाप दोऊ डार, कर्म वेदनी वृक्षके।
सिद्ध जलावन हार, द्यानत निर बाधा करो ॥९॥

ओंहीं णमों सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यो वेदनीकर्मविनाशनायअर्घं०

मोहनी कर्मनाशक सिद्ध जयमाला

दोहा।

जैसे मदिरा पानतैं, सुधबुध सबै भुलाय।
तैसे मोहनीकर्म उदै, जीव गहिल होजाय॥१॥

चौपाई।

दरसन मोह तीन परकारं; नास करै सम्यक गुण सारं। मिथ्या जुरी उदै जब आवै; धर्म मधुर रस मूल न आवै॥२॥ मिश्र भाव सिखरिनी समख्यातं; एक समै सम्यक मिथ्यातं। सम्यक प्रकृति मिथ्यात सतावै, चल मल शीतल दोष उपजावै॥३॥ चारित्र मोह पच्चीस प्रकारं; जो मेटै सम्यक आचारं। क्रोध मान माया अरलोभं; चारौं चार चारविध शोभं॥४॥ अनंतानुबंधी चौकड़िया; जिनने निरमल समकित हरिया। अप्रत्याख्यानी चऊ भाखै; श्रावक व्रत विध वश कर राखै॥५॥ प्रत्याख्यान चौकरी सोई; जाके उदय न मुनिव्रत होई। सो संज्वलन चतुष्क बखानी; यथाख्यात पावै

नहिं प्राणी ॥ ६ ॥ हास्य उदै तैं हांसी ठाने; रतिके उदै जीव रति मानै। अरति उदय तैं कछु न सुहावै, शोक उदै सेती बिल लावै ॥७॥ भयतैं टरे जुगुप्स गिलानं; पुरुष भाव तिन पावक जानं। गोसे की पावक सम नारी; षंढ फजावा अगनि निहारी ॥८॥

दोहा।

अट्ठाईसों मोहकी, तुम नाशक भगवान।
अटल शुद्ध अवगाहना, नमों सिद्धगुणखान ॥९॥

ओंह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्योमोहनीकर्मविनाशनाय अर्घं०

आयुकर्म नाशक सिद्ध जयमाला

सोरठा।

जैसे नरको पांव, दियो काठमें थिर रहै।
तैसे आयु स्वभाव, जियको चहुंगति थिति करै १॥

चौपाई।

नरक आयुतैं नरक लहे हैं; तेतिस सागर तहाँ रहे हैं। गाढ़ा करि आरेसों चीरें; कोल्हू मांहि डारकै पैरें ॥२॥ वैतरनी दुर्गंध नहावै; पुतरी

अगनि मांहि गलावै। सूली देहिं कड़ाई तावै; साल्मली तल मांहि सुवावै ॥ ३ ॥ शीश तलै कर गिरिसैं डारे; नीचे वज्र मुष्टि सौं मारे। भूख प्यास तप सीत सहारी; पंच प्रकार सहै दुख भारी ॥४॥ पशुकी आयु करै पशु काया; बिना विवेक सदा बिललाया। जन्म वैर जिय तैं दुख पावै; बांध मारको कोन चलावै ॥५॥ मानुष आयु धरै नर तेई; इष्ट विजोग लहै दुख तेई। धन संपतिको सदा भिखारी; प्रभुता मांहि पचै संसारी ॥ ६ ॥ देव आयुतैं देव कहाया; परका विभौ देख खुनसाया। मरन चिन्ह लख अति दुख दानी; इम चारौं गति भटकै प्राणी ॥७॥

दोहा।

द्यानत चारौं आयुके; तुम नासक भगवान।
अटलशुद्ध अवगाहना; नमौं सिद्ध गुणखान ॥८॥

ओंह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यो आयुकर्मविनाशनाय अर्घं

नामकर्मनाशक सिद्ध जयमाला।

दोहा।

चित्रकार जैसे लिखे; नाना चित्र अनूप।
नामकर्म तैसे करै; चेतनके बहु रूप ॥१॥

चौपाई।

गतिको उदय चहूं गति जानी; जाति पंचइन्द्री सब प्राणी। आनुपूरवी गति ले जाई; दो विहाय दो चाल बताई ॥२॥ पंचगहीर पंचविध काया; तनधन पंच पंच दृढ़ लाया। बँधै सघन सो पंच संघातं, अंग उपंग तीन ही गातं ॥ ३ ॥ बरण पंच तन रंग बखानैं; पांचौं ही तिनके रस जानै। गंध दोय तन मांहि कहे हैं; आठ फरस तन मांहि लहे हैं ॥ ४ ॥ षट संठान देह आकारं; हाड़ छह भेद संहनन धारं। उड़ै गड़ै न अगुरु लघु काया; स्वास उस्वास नाक सुर गाया॥५॥ निज दुख दे उपघात शरीरं; तनपर घात करै पर पीरं। चंद्र विंब जिय देह उद्योतं; भानुविंब जिय

आतप होतं ॥६॥ थावर उदै सुथिर न चलै है; त्रसके उदैतें चलै हलै हैं। परयापत पूरी जब होई; खिरे बीच अपरयापति सोई ॥७॥ थिर के उदै सुथिर तन गाया, अथिर उदैते कंपै काया। तन प्रत्येक जिय एक भनंतं; साधारण तन जीव अनंतं ॥८॥ मारै मरे रहे आधारं; दीसै अर लोकनिमें सारं। बादर जीया चहूं पसरंतं; सूक्ष्म जीव इत तै विपरीतं ॥९॥ सुभ कै उदै होय शुभ काया; असुभ उदै तन असुभ बताया। शुभग उदै भागका पूरा; अशुभ उदै अभाग हजूरा ॥१०॥ सुस्वर उदय कोकिला वानी; दुस्वर गर्दभ ध्वनि सम जानी। आदर तैं बहु आदर पावै; उदय अनादरतैं न सुहावै ॥११॥ जसके उदय सुजस जग मांहिं; अजस उदय अपजस जग मांहिं। थान प्रमान दुविधा निर्मानं; तीर्थंकर है पुन्य प्रधानं ॥१२॥

दोहा।

ब्यालीस अर तिरानवै; तथा एकसौ तीन।

द्यानत सो प्रकृति हरी; सिद्ध अमूरति लीन॥१३॥

ओंह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नामकर्मविनाशनाय अर्घं०

गोत्रकर्मनाशक सिद्ध जयमाला

दोहा।

ज्यों कुम्हार छोटो वड़ौ; भांडौ घड़ा जनेय।
गोत्रकर्म त्यों जीवको; ऊंच नीच कुल देय॥१॥

चौपाई।

नीच गोत पसु नर्क निहारं; ऊंच गोत सब देव कुमारं। मनुष मांहि दो गोत बखानैं; नीच गोत सब शूद्र प्रवानै॥२॥ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य मझारं; मद्य मांस जो करे अहारं। जो पंचनितें बाहिर होई; नीच गोत्र कहिये नर सोई॥३॥ परगुणको औगुण करि भाखै; निज औगुणको गुण अभिलाषै। परको निंदै आप बड़ाई; बांधै नीच गोत्र दुखःदाई॥४॥ नीच गोत्रको मुनिव्रत नाहीं; क्योंकर जाय मुकति के मांही। नीच काज तज ऊंच सम्हारै; दया धरम कर आतम तारै॥५॥

सोरठा।

उंच नीच दो गोत; नास अगुरु लघु गुरु भये।
द्यानत आतम जोत; सिद्ध शुद्ध बंदौं सदा ॥६॥

ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यो गोत्रकर्मविनाशनाय अर्घं०

अंतरायकर्मनाशक सिद्ध जयमाला

दोहा।

भूप दिलावै दर्वको; भंडारी दे नाहिं।
होन देय नहिं संपदा; अंतराय जगमांहि ॥१॥

चौपाई।

छिती वस्तु दे सकै न प्राणी; दान अंतराय विध जानी। उद्यम करै न होय कमाई; लाभ अंतराय दुखदाई ॥२॥ भोजन त्यार खान नहिं पावै; भोग अंतराय जव आवै। पट भूषण है पहिरत नाहीं; उपभोग अंतरायकी छाहीं ॥३॥ तन वर पोखै बल नहिं होई; वीर्य अंतराय है सोई। इह अंतराय ई है विवहारी: निश्चय वात सुनो मति धारी ॥४॥ मिथ्याभाव त्याग सो दानं; समताभाव लाभ परधानं। आतमीक

सुख भोग संजोगं; अनुभौभ्यास सदा उपभोगं ॥५॥ ध्यान ठानकै कर्म विनासै; सो बीरज निज भाव प्रकासै। पांचौं भाव जहां नहिं लहिये; निश्चै अंतराय सो कहिये ॥६॥

दोहा।

अंतराय पांचौं हतै, प्रगट्यौ सुबल अनंत।
द्यानत सिद्ध नमौं सदा, ज्यों पाऊं भव अंत ॥७॥

ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अंतरायकर्मविना० अर्घं०

आठ करमनाशक सिद्ध जयमाला

सोरठा।

आठ करमको नाश, आठों गुण परगट भयो।
सिद्ध सदा सुखरास, करौं आरती भावसौं ॥१॥

चौपाई।

ज्ञानावरणी कर्म विनासै, लोकालोक ज्ञान परकासै। दरसन आवरनी छय कीनी, दुःख सुगुण परजय लख लीनी ॥२॥ कर्म वेदनी नास गया है, निरबाधा गुण प्रगट भया है। मोह कर्म नासा दुखकारी, निर्मल छायक दरसन-

धारी ॥३॥ आयु कर्म थिति सर्व विनासी, अवगाहन गुण अटल प्रकाशी। नामकर्म जीता जग नामी, चेतन जोत अमूरति स्वामी ॥४॥ गोतकर्म घाता वरवीरं, सिद्ध सुगुरु लघु गुण गंभीरं। अंतराय दुखदाय हरा है, बल अनंत प्रकाश करा है ॥५॥ जा पद मांहि सर्वपद छाजै, ज्यों दर्पण प्रतिबिंब विराजै। राग न दोष मोह न भावै, अजर अमर अब अचल सुहावै ॥६॥ जाके गुण सुर नर सब गावे, जाको जोगीश्वर नित ध्यावे। जाकी भगति मुकति पद पावै, सो शोभा किह भांति बतावै ॥७॥ ये गुण आठ थूल हम भाखे, गुण अनंत निज मनमें राखे। सिद्धनकी थुति को कर जाने, या मिस सो शुभ नाम बखाने ॥८॥

सोरठा।

बहु विध नाम बखान, परमेश्वर सबही भजें।
ज्योंका त्यों सरधान, द्यानत सेवैं ते वड़े ॥९॥

ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मविनाशनाय अर्घं०

मत्तगयंद सवैया।

ध्यान हुताशनमें अरि ईंधन झोंक दियो रिपु रोक निवारो, शोक हरयो भवि लोकनको वर केवल ज्ञान मयूख उघारी। लोक अलोक विलोक भये शिव, जन्म-जरामृत पंक पखारी, सिद्धन थोक बसैं शिवलोक तिन्हैं पगधोक त्रिकाल हमारी॥ १॥ तीरथ नाथ प्रणाम करैं तिनके गुण वर्णनमें बुधिहारी, मोम गयो गलि मूस मंझार रह्यो तहं व्योम तदाकृति धारी। लोकगहीर नदीपति नीर गये तरितीर भये अविकारी, सिद्धन थोक बसैं शिवलोक तिन्हैं पगधोक त्रिकाल हमारी॥ २॥

इत्याशीर्वाद.।

सोलहकारण पूजा।

अडिल्ल

सोलहकारण भाय तीर्थंकर जे भये,
हरषे इन्द्र अपार मेरुपर ले गये।
पूजा करि निज धन्य लखो वहु चावसों,
हम हूँ षोडश कारण भावें भावसों॥

ओं ह्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भवत-भवत वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकम् ।

कंचन झारी निर्मल नीर, पूजूं जिनवर गुण गंभीर, परम गुरु हो, जै जै नाथ परम गुरु हो । दर्शन विशुद्ध भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय, परम गुरु हो, जै जै नाथ परम गुरु हो ।

ओंह्रीं दर्शनविशुद्धि १, विनयसम्पन्नता २, शीलव्रतेष्वनतीचार ३, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग ४, संवेग ५, शक्तितस्त्याग ६, शक्तितस्तप ७, साधुसमाधि ८, वैयावृत्यकरण ९, अर्हद्भक्ति १०, आचार्यभक्ति ११, बहुश्रुतभक्ति १२, प्रवचनभक्ति १३, आवश्यकापरिहाणि १४, मार्गप्रभावना १५, प्रवचनवात्सल्य १६, इति षोडशकारणेभ्यो नमः जलं ॥ १ ॥

चंदन घसों कपूर मिलाय, पूजूं श्रीजिनवरके पाय । परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥ दर्शन० ॥२॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो चंदनं ।

तन्दुल धवल अखंड अनूप, पूजूं जिनवर तिहुं जगभूप। परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥ दरशविशुद्धि० ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अक्षतं नि०

फूल सुगन्ध मधुप गुंजार, पूजूं जिनवर जग आधार। परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो॥ दरशवि० ॥४॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो पुष्पं०

सद नेवज वहु विधि पकवान, पूजूं श्रीजिनवर गुणखान। परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो॥ दरशवि० ॥ ५॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो नैवेद्यं

दीपक ज्योति तिमिर क्षयकार, पूजूं श्रीजिन केवलधार। परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो॥ दरशवि० ॥ ६॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो दीपं०

अगर कपूर गन्ध शुभ खेय, श्री जिनवर आगे महकेय। परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो॥ दरशवि० ॥ ७॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो धूपं निर्व०

श्रीफल आदि वहुत फल सार, पूजूं जिन वांछितदातार। परमगुरु हो, जय जय नाथ

परमगुरु हो ॥ दरशवि० ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोड़शकारणेभ्यो फलं निर्व०

जल फल आठों द्रव्य चढ़ाय, 'द्यानत' बरत करो मनलाय। परमगुरु हो , जय जय नाथ परमगुरु हो ॥ दरशवि० ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोड़शकारणेभ्यो अर्घं०

सोलह अंगोंके १६ अर्घ।

सवैया तेईसा

दर्शन शुद्ध न होवत जो लग तो लग जीव मिथ्याती कहावे, काल अनंत फिरो भवमें महादुःखनको कहुं पार न पावे। दोष पचीस रहित गुण अम्बुधि सम्यकदर्शन शुद्ध ठरावै, ज्ञान कहे नर सोहि बड़ो मिथ्यात्व तजे जिन मारग ध्यावै ॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै नमः अर्घं ॥ १ ॥

देव तथा गुरुराय तथा तप संयम शील व्रतादिक धारी, पापके हारक कामके छारक शल्य निवारक कर्म निवारी। धर्मके धीर कषायके

भेदक पंच प्रकार सँसारके तारी, ज्ञान कहे विनयो सुखकारक भाव धरो मन राखो विचारी॥

ओं ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै नमः अर्घं ॥ २॥

शील सदा सुखकारक है अतिचार विवर्जित निर्मल कीजे, दानव देव करें तसु सेव विषानल भूत पिशाच पतीजे। शील वड़ो जगमें हथियार जु शीलको उपमा काहेकी दीजे, ज्ञान कहे नहिं शील वरावर तातें सदा दृढ़ शील धरीजे॥

ओं ह्रीं शीलव्रतभावनायै नमः अर्घं ॥ ३॥

ज्ञान सदा जिनराजको भाषित आलस छोड़ पढ़े जो पढ़ावे, द्वादस दोउ अनेक हुं भेद सुनाम मती श्रुति पंचम पावे। चार हुं भेद निरन्तर भाषित ज्ञान अभीक्षण शुद्ध कहावे, ज्ञान कहे श्रुत भेद अनेक जु लोकालोक हि प्रगट दिखावे॥

ओं ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै नमः अर्घं ॥ ४॥

भ्रातन तातन पुत्र कलत्रन संयम सज्जन ए

सब खोटो, मन्दिर सुन्दर काय सखा सबको इहको हम अन्तर मोटो। भाउके भाव धरी मन भेदन नाहिं संवेग पदारथ छोटो, ज्ञान कहे-शिव-साधनको जैसो साहको काम करे जु बणोटो॥

ओं ह्रीं संवेगभावनायै नमः अर्घं॥ ५॥

पात्र चतुर्विध देख अनूपम दान चतुर्विध भावसुं दीजे, शक्ति समान अभ्यागतको अति आदरसे प्रणिपत्य करीजे। देवत जे नर दान सुपात्रहिं तास अनेकहिं कारण सीजे, बोलत ज्ञान देहि शुभ दान जु भोग सुभूमि महासुख लीजे॥

ओं ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै नमः अर्घं॥ ६॥

कर्म कठोर गिरावनको निज शक्ति समान उपोषण कीजे, बारह भेद तपे तप सुन्दर पाप जलांजलि काहे न दीजे। भाव धरो तप थोर करी नर जन्म सदा फल काहे न लीजे, ज्ञान

कहे तप जे नर भावत ताके अनेकहिं पातक छीजै ॥

ओं ह्रीं शक्तितस्तपभावनायै नमः अर्घं ॥ ७ ॥

साधुसमाधि करो नर भावक पुण्य बड़ो उपजे अघ छीजे, साधुकी संगति धर्मको कारण भक्ति करे परमारथ भीजे। साधुसमाधि करे भव छूटत कीर्ति छटा त्रैलोकमें गाजे, ज्ञान कहे यह साधु बड़ो गिरिश्रृङ्ग गुफा बिच जाय बिराजे।

ओं ह्रीं साधुसमाधिभावनायै नमः अर्घं ॥ ८ ॥

कर्मके योग व्यथा उदई मुनि पुंगव कुन्तस-भेषज कीजे, पीत कफान लसास भगन्द्र तापको सूल महागद छीजे। भोजन साथ बनायके औषध पथ्य कुपथ्य विचारके दीजे, ज्ञान कहे नित ऐसी वैय्या-वृत्य करे तस देव पतीजे ॥

ओ ह्रीं वैयावृत्यकरणभावनायै नमः अर्घं ॥ ९ ॥

देव सदा अरिहन्त भजो जेई दोष अठारा किये अति दूरा, पाप पखाल भये अति निर्मल कर्म कठोर किये चकचूरा। दिव्य अनन्त

चतुष्टय शोभित घोर मिथ्यान्ध निवारण सूरा, ज्ञान कहे जिनराज अराधो निरन्तर जे गुण मन्दिर पूरा ॥

ओं ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै नमः अर्घं ॥ १० ॥

देवत ही उपदेश अनेक सु आप सदा परमारथ धारी, देश विदेश विहार करें दश धर्म धरें भव पार उतारी। ऐसे अचारज भाव धरी भज सो शिव चाहत कर्म निवारी, ज्ञान कहे गुरु भक्ति करो नर देखत हो मनमाहिं विचारी।

ओं ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै नमः अर्घं ॥ ११ ॥

आगम छन्द पुराण पढ़ावत साहित तर्क वितर्क बखाने, काव्य कथा नव नाटक पूजन ज्योतिष वैद्यक शास्त्र प्रमाने। ऐसे बहुश्रुत साधु मुनीश्वर जो मनमें दोउ भाव न आने, बोलत ज्ञान धरी मनसा न जु भाग्य विषेशतें जानहीं जाने।

ओं ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै नमः अर्घं ॥ १२ ॥

द्वादस अंग उपांग सदागम ताकी निरंतर

भक्ति करावे, वेद् अनूपम चार कहे तस अर्थ भले मन माहिं ठरावे। पढ़ वहु भाव लिखो निज अक्षर भक्ति करी वड़ि पुजा रचावे, ज्ञान कहे जिन आगम भक्ति करो सद् वुद्धि वहु-श्रुत पावे॥

ओं ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनायै नम. अर्घं ॥ १३ ॥

भाव धरे समता सव जीवसु स्तोत्र पढ़े मुख से मनहारी, कायोत्सर्ग करे मन प्रीतसुं वंद्न देव तणों भव तारी। ध्यान धरी मद दूर करी दोउ वेर करे पड़कम्मन भारी, ज्ञान कहे मुनि सो धनवन्त जु द्र्शन ज्ञान चरित्र उधारी।

ओं ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै नमः अर्घं ॥ १४ ॥

जिन पूजा रचो परमारथसूं जिन आगल नृत्य महोत्सव ठाणों, गावत गीत वजावत ढोल मृदंगके नाद् सुधांग वखाणो। संग प्रतिष्ठा रचो जल जातरा सद्गुरुको साहमोकर आणो, ज्ञान कहे जिनमार्ग प्रभावना भाग्य विशेषसुं

ज्ञानहिं जाणो ॥

ओं ह्रीं मार्गप्रभावनाभावनायै नमः अर्घं ॥ १५ ॥

गौरव भाव धरी मनसे मुनि पुङ्गवको नित वत्सल कीजे, शीलके धारक भव्यके तारक तासु निरंतर स्नेह धरीजे। धेनु यथा निज बालकके अपने जिय छोड़ि न और पतीजै। ज्ञान कहे भवि लोक सुनो जिन वत्सल भाव धरे अघ छीजे ॥

ओं ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै नमः अर्घं ॥ १६ ॥

जाप—ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यै नमः, ओं ह्रीं विनयसम्पन्नतायै नमः, ओं ह्रीं शीलव्रताय नमः, ओं ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगाय नमः, ओं ह्रीं सम्वेगाय नमः, ओं ह्रीं शक्तितस्त्यागाय नमः, ओं ह्रीं शक्तितस्तपसे नमः, ओं ह्रीं साधुसमाध्यै नमः, ओं ह्रीं वैयावृत्यकरणाय नमः, ओं ह्रीं अर्हद्भक्त्यै नमः, ओं ह्रीं आचार्यभक्त्यै नमः, ओं ह्रीं बहुश्रुतभक्त्यै नमः, ओं ह्रीं प्रवचनभक्त्यै नमः, ओं ह्रीं आवश्यकापरिहाण्यै नमः, ओं ह्रीं मार्गप्रभावनायै नमः ओं ह्रीं प्रवचनवत्सलत्वाय नमः ॥ १६ ॥

जयमाला दोहा

षोड़श कारण जे करै, हरै चतुर गति वास।

पाप पुण्य सब नास कै, ज्ञान भानु परकास॥

चौपाई

दर्श विशुद्ध धरे जो कोई, ताको आवागमन न होई। विनय महा धारे जो प्राणी, शिव वनिताकी सखी बखानी ॥ २ ॥ शील सदा दृढ़ जो नर पाले, सो औरनकी आपद् टाले। ज्ञान अभ्यास करे मन माहीं, ताके मोह महातम नाहीं ॥ ३ ॥ जो संवेग भाव विस्तारै, स्वर्ग मुक्ति पद् आप निहारै। दान देइ मन हर्ष विशेषै, इह भव यश परभव सुख देखै ॥ ४ ॥ जो तप तपै खपै अभिलाषा, चूरे कर्म शिखरगुरु भाषा। साधुसमाधि सदा मन लावै, तिहुं जग भोग भोगि शिव जावै ॥५॥ निश दिन वैयावृत्य करैया, सो निश्चय भवनीर तरैया। जो अरहन्त भक्ति मन आनै, सो जन विषय कषाय न जानै ॥ ६ ॥ जो आचारज भक्ति करै हैं, सो निरमल आचार धरै हैं। बहुश्रुतवन्त

भक्ति जो करई, सो नर संपूरण श्रुत धरई ॥ ७ ॥ प्रवचन भक्ति करै जो ज्ञाता, लहै ज्ञान परमानन्द दाता। षट् आवश्य काल जो साधै, सोई रत्नत्रय आराधै ॥ ८ ॥ धर्म प्रभाव करे जो ज्ञानी, तिन शिव मारग रीति पिछानी। वात्सल अंग सदा जो ध्यावै, सो तीर्थंकर पदवी पावै ॥ ६ ॥

दोहा

ये ही षोड़श भावना, सहज धरै व्रत जोय।
देव इन्द्र नागेन्द्र पद, 'द्यानत' शिव पद होय॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अर्घं निर्वपामीति

सवैया तेईसा

सुन्दर षोडशकारण भावना निर्मल चित्त सुधारक धारै, कर्म अनेक हने अति दुर्धर जन्म जरा भय मृत्यु निवारै। दुःख दरिद्र विपत्ति हरै भव सागरको पर पार उतारै, ज्ञान कहे यही षोड़शकारण कर्म निवारण सिद्धि सुधारै॥

इत्याशीर्वादः।

पंचमेरु पूजा।

गीता छन्द।

तीर्थंकरोंके न्हवन जलतैं, भये तीरथ सर्वदा।
तातैं प्रदच्छन देत सुरगन, पंचमेरनकी सदा॥
दो जलधि ढाईदीपमें सब, गनत मूल विराजहीं।
पूजों असी जिनधाम प्रतिमा, होंहिं सुख दुख भाजहीं॥ १॥

ओं ह्रीं पचमेरुसम्बंधिजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूहअत्राव-तरावतर। संवौषट्। ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमासमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ.ठः। ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधि जिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह। अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्

अथाष्टक। चौपाई आंचलीवद्ध (१५ मात्रा)

सीतल मिष्ट सुवास मिलाय। जलसौं पूजौं श्रीजिनराय। महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥ पांचों मेरु असी जिनधाम। सब प्रतिमाको करों प्रनाम। महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय॥१॥

ओं ह्रीं सुदर्शनमेरु, विजयमेरु, अचलमेरु, मदिरमेरु, विद्यु-

न्मालीमेरु, पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो जन्मजरा-
मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

जल केसर करपूर मिलाय। गंधसों पूजौं श्री जिनराय। महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ पांचों० ॥२॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो चंदनं निर्व०

अमल अखण्ड सुगंध सुहाय। अच्छतसौं पूजौं जिनराय। महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ पांचों० ॥३॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधिजिनचैत्यालयस्थजिन बिम्बेभ्यो अक्षतान्०

बरन अनेक रहे महकाय। फूलनसों पूजौं जिनराय। महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ पांचों० ॥४॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्व०

मनवांछित बहु तुरत बनाय। चरुसों पूजौं श्री जिनराय। महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ पांचों० ॥५॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्व०

तमहर उज्ज्वल जोति जगाय। दीपसों पूजौं

श्रीजिनराय। महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥ पांचों० ॥६॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्व०

खेऊं अगर परिमल अधिकाय। धूपसों पूजौं श्रीजिनराय। महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥ पांचों० ॥७॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो धूपं नि०

सुरस सुवर्ण सुगंध सुहाय। फलसौं पूजौं श्री जिनराय। महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ पांचों० ॥८॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिंबेभ्यो फलं नि०

आठ दरवमय अरघ बनाय। 'द्यानत' पूजौं श्रीजिनराय। महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥ पांचों० ॥९॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिंबेभ्यो अर्घं नि०

जयमाला। सोरठा।

प्रथम सुदर्शन स्वामि, विजय अचल मंदर कहा।
विद्युन्माली नाम, पंचमेरु जगमें प्रगट ॥१०॥

वेसरी छन्द।

प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै। भद्रशाल बन भू-पर छाजै। चैत्यालय चारों सुखकारी। मन-वचतन कर वंद्ना हमारी ॥२॥ ऊपर पांच श-तक पर सोहै। नंद्नवन द्खत मन मोहै॥ चैत्या० ॥३॥ साढ़े बासठ सहस उंचाई। वन सुमनस शोभै अधिकाई॥ चै० ॥४॥ ऊंचो जोजन सहस छत्तीसं। पांडुकवन सोहै गिरि सीसं॥ चै० ॥५॥ चारों मेरु समान बखानो। भूपर भद्रसाल चहुं जानो॥ चैत्यालय सोलह सुखकारी। मनवचतनकर बंद्ना हमारी ॥६॥ ऊंचे पांच शतक पर भाखे। चारों नन्द्नवन अभिलाखे। चैत्यालय सोलह सुखकारी। मन वचतन कर बंद्ना हमारी ॥७॥ साढ़े पचपन सहस उतंगा। वन सौमनस चार बहुरंगा। चैत्यालय सोलह सुखकारी। मनवचातन कर बंद्ना हमारी ॥८॥ उच्च अट्ठाइ्स सहस वता-ये। पांडुक चारों बन शुभ गाये। चैत्यालय

सोलह सुखकारी। मनवचतन कर वंदना हमारी ॥९॥ सुर नर चारन वंदन आवैं। सो शोभा हम किम मुख गावैं। चैत्यालय अस्सी सुखकारी। मनवचतन कर वंदना हमारी ॥१०॥

दोहा।

पंचमेरुकी आरती, पढ़ै सुनै जो कोय।
'द्यानत' फल जानैं प्रभू, तुरत महासुख होय ॥११॥

ओं ह्रींपंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिंबेभ्यो अर्घं निर्व०

नंदीश्वर द्वीप (अष्टान्हिका) पूजा

अडिल्ल छन्द।

सरब परबमें बड़ो अठाई परब है।
नन्दीश्वर सुर जांहि लिये वसु दरब है॥
हमें सकति सो नांहि इहां करि थापना।
पूजों जिनगृह प्रतिमा है हित आपना ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपेद्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमासमूह! अत्र अवतर अवतर, संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

कंचन मणिमय भृंगार, तीरथ नीर भरा ।
तिहुं धार दई निरवार, जामन मरन जरा ॥
नंदीश्वर श्रीजिनधाम, बावन पुंज करों ।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंदभाव धरों १॥

ओं ह्रीं मासोत्तमे मासे ...मासे शुभे शुक्लपक्षे अष्टाह्निकायां महामहोत्सवे नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे एक अंजनगिरि चार दधिमुख आठ रतिकर प्रतिदिशि तेरह तेरह बावन जिन चैत्यालयेभ्यो जन्म जरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

भवतपहर शीतल वास, सो चन्दन नाहीं ।
प्रभु यह गुन कीजे सांच, आयो तुम ठाहीं ॥
नंदी० ॥२॥

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेपूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरेचंदनं निर्व०

उत्तम अक्षत जिनराज, पुंज धरे सोहैं । सब
जीते अक्षसमाज, तुम सम अरु को है। नं० ३॥

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेपूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे अक्षतान् निर्व०

तुम काम विनाशक देव, ध्याऊं फूलन सौं ।
लहि शील लच्मी एव, छूटूं सूलनसौं ॥ नं० ४॥

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे पुष्पं निर्व०

नेवज इन्द्रियबलकार, सो तुमने चूरा। चरु
तुम ढिग सोहै सार, अचरज है पूरा॥ नं० ॥५॥
ओं ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे नैवेद्यं निर्व०

दीपककी ज्योति प्रकाश, तुम तन मांहिं लसै।
टूटै करमनकी राश, ज्ञानकणी दरसै॥ नं० ॥६॥
ओं ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे दीपं निर्व०

कृष्णागरुधूप सुवास, दशदिशि नारि वरे। अति
हरषभाव परकाश, मानों नृत्य करे॥ नं० ॥७॥
ओं ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे धूपं निर्व०

बहुविधफल ले तिहुंकाल, आनन्द राचत हैं।
तुम शिवफल देहु दयाल, सो हम जाचत हैं॥
नंदी० ॥ ८ ॥
ओं ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे फलं निर्व०

यह अर्घ कियो निज हेतु, तुमको अरपत हों।
'द्यानत' कीनो शिवहेत, भूप समरपत हों॥
नंदी० ॥९॥
ओं ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे अर्घं निर्व०

जयमाला, दोहा।

कार्तिक फागुन साढ़के, अंत आठ दिनमांहि।
नंदीश्वर सुर जात हैं, हम पूजैं इह ठाहिं॥१॥

छन्द।

एकसौ त्रेसठ कोड़ि जोजन महा। लाख चौ-
रासिया एकदिशिमें लहा॥ आठमों द्वीप नं-
दीश्वरं भास्वरं। भौन बावन्न प्रतिमा नमों सु-
खकरं॥२॥ चारदिशि चार अंजनगिरी राजहीं।
सहस चौरासिया एकदिशि छाजहीं। ढोलसम
गोल ऊपर तले सुन्दरं॥ भौन०॥३॥ एक इक
चार दिशि चार शुभ बावरी। एक इख लाख
जोजन अमल जलभरी॥ चहुंदिशा चार बन
लाख जोजन वरं॥ भौन०॥४॥ सोल वापीन
मधि सोल गिरि दधिमुखं। सहस दश महा
जोजन लखत हीं सुखं॥ बावरी कौन दोमां-
हि दो रतिकरं॥ भौन०॥५॥ शैल बत्तीस इक
सहस जोजन कहे। चार सोलै मिले सर्व बा-
वन लहे॥ एक इक सीसपर एक जिनमंदिरं॥

भौन० ॥६॥ बिंव अठ एकसौ रतनमय सोह ही। देव देवी सरव नयन मन मोहही॥ पांचसै धनुष तन पद्मआसन परं। भौन० ॥७॥ लाल नख मुख नयन स्याम अरु स्वेत हैं। स्याम रंग भौंह सिर केश छवि देत हैं। वचन बोलत मनों हंसत कालुपहरं। भौन० ॥८॥ कोटिशशि भानुदुति तेज छिप जात है। महा वैराग्य परिणाम ठहरात है॥ वयन नहिं कहैं लखि होत सम्यकधरं। भौन० ॥९॥

सोरठा।

नन्दीश्वर जिनधाम, प्रतिमा महिमा को कहै।
'द्यानत'लीनों नाम, यहै भगति सब सुख करै॥

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे पूर्णाऽर्घ्यं निर्व०

दशलक्षण धर्म पूजा।

अडिल्ल

उत्तम छिमा मारदव आरजव भाव है।
सत्य शौच संजम तप त्याग उपाव है॥

आकिंचन ब्रह्मचरज धरम दश सार है ।
चहुंगति दुखतैं काढ़ि मुकति करतार है ॥१॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्रावतरावतर । संवौषट्

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

सोरठा ।

हेमाचलकी धार, मुनिचित सम शीतल सुरभि ।
भवआताप निवार, दसलक्षण पूजौं सदा ॥१॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्यादिदशलक्षणधर्माय जलं नि० ॥१॥

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा ।
भवआताप निवार, दसलक्षण पूजौं सदा ॥२॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय चंदनं नि० ॥२॥

अमल अखंडित सार, तंदुल चंद्र समान शुभ ।
भवआताप निवार, दसलक्षण पूजौं सदा ॥३॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षतान् नि० ॥३॥

फूल अनेक प्रकार, महकैं ऊरधलोक लों ।
भवआताप निवार, दसलक्षण पूजौं सदा ॥४॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय पुष्पं नि० ॥ ४ ॥

नेवज विविध निहार, उत्तम षटरस संजुगत॥
भवआताप निवार, दसलक्षण पूजौं सदा॥५॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय नैवेद्य नि० ॥ ५ ॥

बाति कपूर सुधार, दीपक जोति सुहावनी।
भवआताप निवार, दसलक्षण पूजौं सदा॥६॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय दीपं नि० ॥ ६ ॥

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता।
भवआताप निवार, दसलक्षण पूजौं सदा॥७॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय धूपं नि० ॥ ७ ॥

फलकी जाति अपार, घ्राण नयन मनमोहनो।
भवआताप निवार, दसलक्षण पूजौं सदा॥८॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय फलं नि० ॥ ८ ॥

आठों दरव संवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों।
भवआताप निवार, दसलक्षण पूजौं सदा॥९॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अर्घं नि० ॥ ९ ॥

अंग पूजा।

सोरठा।

पीडैं दुष्ट अनेक, बांध मार बहु विधि करैं।
धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजै प्रीतमा ॥१॥

चौपाई मिश्रित गीताछन्द।

उत्तम छिमा गहो रे भाई। इहभव जस पर-
भव सुखदाई ॥ गाली सुनि मन खेद न
आनो। गुनको औगुन कहै अयानो ॥ कहिहै
अयानोवस्तु छीने, बांध मार बहुविधि करै।
घरतैं निकारै तन विदारै, वैर जो न तहां धरै ॥
तैं करम पूरव किये खोटे, सहै क्यों नहिं
जीयरा। अतिक्रोध अगनि बुझाय प्रानी,
साम्यजल ले सीयरा ॥ १ ॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

मान महाविषरूप, करहिं नीचगति जगतमें।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्रानी सदा ॥२॥

उत्तम मार्दवगुन मन माना। मानकरनको कौन
ठिकाना। वस्यो निगोदमाहिंतैं आया। दमरी

रूकन भाग विकाया ॥ रूकन विकाया भाग वशतैं, देव इकइन्द्री भया। उत्तम मुआ चांडाल हुआ, भूप कीड़ोंमें गया ॥ जीतव्य-जोवन-धन-गुमान, कहा करे जल बुदबुदा। करि विनय बहुगुन बड़े जनकी, ज्ञानका पावै उदा

ओ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

कपट न कीजै कोय, चौरनके पुर ना बसे।
सरल सुभावी होय, ताके घर वह संपदा ॥३॥

उत्तम आर्जवरीति बखानी। रञ्चक दगा बहुत दुखदानी। मनमें होय सो वचन उचरिये। वचन होय सो तनसौं करिये ॥ करिये सरल तिहुंजोग अपने, देख निरमल आरसी। मुख करै जैसा लखै तैसा, कपट प्रीति अंगारसी ॥ नहिं लहै लछमी अधिक छलकरि, करमबंध विशेषता। भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहिं देखता ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कठिन वचन मति बोल, पर निन्दा अरु झूठ

तज। सांच जवाहर खोल, सतवादी जगमें सुखी ॥ ४ ॥ उत्तम सत्यवरत पालीजै। पर विश्वासघात नहिं कीजै। सांचे झूठे मानुष देखो। आपन पूत स्वपास न पेखो ॥ पेखो तिहायत पुरुष सांचेको, दरब सब दीजिये। मुनिराज श्रावककी प्रतिष्ठा, सांचगुन लख लीजिये॥ ऊँचे सिंहासन बैठि बसुनृप, धरमका भूपति भया। वसु झूठसेती नरक पहुंचा, सुरगमें नारद गया ॥४॥

ओं ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

धरि हिरदै संतोष, करहु तपस्या देहसौं। शौच सदा निरदोष, धरम बड़ो संसारमें ॥५॥ उत्तम शौच सर्व जग जानो। लोभ पापको बाप बखानो। आसा फांस महा दुखदानी। सुख पावै सन्तोषी प्रानी ॥ प्रानी सदाशुचि शील जप तप, ज्ञानध्यानप्रभावतैं। नित गंगजमुन समुद्र न्हावे अशुचिदोष सुभावतैं॥ ऊपर अमल मल भर्यो भीतर, कौन विध घट शुचि कहैं।

बहु देह मैली सुगुनथैली, शौचगुन साधू लहैं ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय छहों प्रतिपाल, पचेंन्द्री मन वश करो। संजमरतन संभाल, विषयचोर बहु फिरत है ॥ ६ ॥ उत्तम संजम गहु मन मेरे। भवभवके भाजैं अघ तेरे। सुरग नरकपशुगतिमें नाहीं। आलस हरन करन सुख ठाहीं ॥ ठाहीं पृथ्वी जल अग्नि मारुति, रूंख त्रस करुना धरो। सपरसन रसना घ्रान नैना, कानमन सब बस करो ॥ जिस बिना नहिं जिनराज सीझे, तू रुलो जग कीचमें। इक घरी मत विसरो करो नित, आयु जममुख बीचमें ॥६॥

ओं ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप चाहैं सुर राय, करमशिखरको वज्र है। द्वादशविधि सुखदाय, क्यों न करै निज सकतिसम ॥ ७ ॥ उत्तम तप सब माहिं बखाना। करमशिखरको वज्र समाना। बस्यो अनादि

निगोद मंझारा। भूविकलत्रय पशुतन धारा ॥ धारा मनुष तन महादुर्लभ, सुकुल आयु निरोगता। श्रीजैनवानी तत्वज्ञानी, भई विषयपयोगता ॥ अति महादुरलभ त्याग विषय, कषाय जो तप आदरै। नरभव अनूपम कनक घरपर, मणिमयी कलसा धरै ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं उत्तमतपधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दान चार परकार, चार संघको दीजिये।
धन बिजली उनहार, नरभवलाहो लीजिये ॥८॥

उत्तम त्याग कह्यो जग सारा। औषधि शास्त्र अभय आहार। निहचै रागद्वेष निरवारै। ज्ञाता दोनों दान संभारै ॥ दोनों संभारै कूप जलसम, दरब घरमें परिनया। निज हाथ दीजे साथ्र लीजे खाय खोया बह गया। धनि साध शास्त्र अभयदिवैया, त्याग राग विरोधको। बिन दान श्रावक साध दोनों, लहै नाहीं बोधको ॥

ओं ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह चौबिस भेद. त्याग करैं मुनिराजजी।
तिसनाभाव उछेद. घटती जान घटाइये ॥८॥
उत्तम आकिंचन गुण जानो। परिग्रह चिन्ता
दुखही मानो। फांस तनकसी तनमें सालै।
चाह लंगोटीकी दुख भालै। भालै न समता
सुख कभी नर. बिना मुनि मुद्रा धरैं। धनि
नगनपर तन नगन ठाडे. सुर असुर पायनि
परैं॥ घरमांहि तिसना जो घटावे. रुचि नहीं
संसारसौं। बहु धन बुरा हू भला कहिये. लीन
पर उपगारसौं ॥६॥
ओं ह्रीं उत्तमआकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शीलवाड़ि नौ राख, ब्रह्मभाव अन्तर लखो।
करि दोनों अभिलाख, करहु सफल नर भव
सदा ॥ १० ॥ उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ।
माता बहिन सुता पहिचानौ। सहैं बानवर्षा
बहु सूरे। टिकैं न नयन बान लखि कूरे॥
कूरे तियाके अशुचितनमें, कामरोगी रति करैं।
बहु मृतक सड़हिं मसानमाहीं, काक ज्यों

चोंचें भरैं ॥ संसारमें विषबेल नारी, तजि गये जोगीश्वरा। 'द्यानत' धरम दशपैड़ि चढ़िके, शिवमहलमें पग धरा ॥ १०॥

ओं ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला दोहा।

दशलच्छन बन्दौं सदा, मनवांछित फलदाय।
कहों आरती भारती, हमपर होह सहाय ॥१॥

बेसरी छंद।

उत्तम छिमा जहां मन होई। अन्तर बाहर शत्रु न कोई। उत्तम मार्दव विनय प्रकासै। नाना भेद ज्ञान सब भासै ॥२॥ उत्तम आर्जव कपट मिटावै। दुरगति त्यागि सुगति उपजावै॥ उत्तम सत्य बचन मुख बोलै। सो प्रानी संसार न डोलै ॥ ३ ॥ उत्तमशौचलोभ परिहारी। संतोषी गुण रतन भंडारी ॥ उत्तम संयम पालै ज्ञाता। नरभव सफल करै ले साता ॥४॥ उत्तम तप निरवांछित पाले। सो नर करम-शत्रुको टाले ॥ उत्तम त्याग करै जो कोई।

भोगभूमि सुर शिवसुख होई ॥५॥ उत्तम आकिंचन व्रतधारै। परमसमाधिदशा विसतारै॥ उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै। नरसुर सहित मुकतिफल पावै ॥६॥

दोहा।

करे करमकी निरजरा, भवपींजरा विनाशि।
अजर अमरपदको लहै, 'द्यानत' सुखकी राशि

ओं ह्रीं उत्तमक्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षण धर्माय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति

रत्नत्रय पूजा।

दोहा।

चहुंगतिफणिविषहरनमणि, दुख पावक जलधार। शिवसुखसुधासरोवरी; सम्यक्त्रयी निहार ॥ १ ॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय। अत्रावतरावतर। संवौषट्। ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ। ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा।

क्षीरोदधि उनहार, उज्वल जल अति सोहना।
जनम रोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों॥१॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय जन्मरोगविनाशनाय जलं नि०।

चंदन केशर गार, परिमल महा सुगन्धमय।
जनम रोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों॥२॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय भवातापविनाशनाय चन्दनं नि०।

तंदुल अमल चितार, वासमती सुखदासके।
जनम रोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों॥३॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०।

महकैं फूल अपार, अलि गुंजे ज्यों थुति करैं।
जनम रोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों॥४॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय कामवाणविध्वंशनाय पुष्पं नि०।

लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुगंधयुत।
जनम रोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों॥५॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य नि०।

दीप रतनमय सार, जोत प्रकाशै जगतमें।
जनम रोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजौं॥६॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि० ।

धूप सुवास विथार, चन्दन अगर कपूरकी ।
जनम रोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों ॥७॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि० ।

फल शोभा अधिकार, लौंग छुहारे जायफल ।
जनम रोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों ॥८॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ।

आठ दरब निरधार, उत्तमसों उत्तम लियो ।
जनम रोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों ॥९॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि० ।

सम्यकदर्शनज्ञान, व्रत शिवमग तीनों मयी ।
पार उतारण जान, 'द्यानत' पूजों व्रत सहित ॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय पूर्णार्घ्यं नि० ।

दर्शन पूजा ।

दोहा ।

सिद्ध अष्टगुनमय प्रगट, मुक्तजीवसोपान ।
जिहं बिन ज्ञानचरित्र अफल, सम्यकदर्श प्रमान ॥ १ ॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन । अत्र अवतर अवतर ! संवौषट् । ओं ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

सोरठा ।

नीर सुगन्ध अपार, त्रिषा हरै मल छय करै ।
सम्यकदर्शनसार, आठ अंग पूजौं सदा ॥१॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय जलं, नि० ॥

जल केशर घनसार, ताप हरै शीतल करै ।
सम्यकदर्शनसार, आठ अंग पूजौं सदा ॥२॥

ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनाय चंदनं, नि० ।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख करै ।
सम्यकदर्शनसार; आठ अंग पूजौं सदा ॥३॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अक्षतं नि० ।

पुहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै ।
सम्यकदर्शनसार, आठ अंग पूजौं सदा ॥४॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय पुष्पं नि० ।

नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरै थिरता करै ।
सम्यकदर्शनसार, आठ अंग पूजौं सदा ॥५॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय नैवेद्यं नि० ।

दीप ज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा।
सम्यकदर्शनसार, आठ अंग पूजों सदा ॥६॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय दीपं नि०।

धूप घ्रानसुखकार, रोग विघन जड़ता हरै।
सम्यकदर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥७॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय धूपं नि०।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुरशिवफल करै।
सम्यकदर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥८॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय फलं नि०।

जल गन्धाक्षत चारु; दीप धूप फल फूल चरु।
सम्यकदर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ॥६॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्व० ॥६॥

जयमाला। दोहा।

आप आप निहचै लखै, तत्त्वप्रीति व्योहार।
रहित दोष पच्चीस है, सहित अष्टगुन सार ॥१॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द।

सम्यकदरसन रतन गहीजै। जिनवचमें संदेह न कीजै। इहभव विभव चाह दुखदानी। पर-

भव भोग चहै मत प्रानी। प्रानी गिलान न करि अशुचि लखि, धरमगुरु प्रभु परखिये। परदोष ढकिये धरम चिगतेको, सुथिर कर हरखिये। चउसंघको वात्सल्य कीजै; धरमकी परभावना। गुण आठसों गुन आठ लहिकै, इहां फेर न आवना ॥२॥

ओं ह्रीं अष्टांगसहितपञ्चविंशतिदोषरहिताय सम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान पूजा।

दोहा।

पंचभेद जाके प्रकट, ज्ञेय प्रकाशन भान।
मोह-तपन-हर-चंद्रमा, सोई सम्यकज्ञान ॥१॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञान अत्र अवतर अवतर संवौषट्। ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञान अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञान अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा।

नीर सुगंध अपार, त्रिषा हरै मल छय करै।
सम्यकज्ञान विचार, आठभेद पूजौं सदा ॥१॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलकेशर घनसार, ताप हरे शीतल करे।
सम्यकज्ञान विचार, आठभेद पूजौं सदा ॥२॥
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै।
सम्यकज्ञान विचार, आठभेद पूजौं सदा ॥३॥
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुहुप सुवास उदार, खेद हरे मन शुचि करै।
सम्यकज्ञान विचार; आठभेद पूजौं सदा ॥४॥
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरै थिरता करै।
सम्यकज्ञान विचार, आठभेद पूजौं सदा ॥५॥
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा।
सम्यकज्ञान विचार; आठभेद पूजौं सदा ॥६॥
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घ्रानसुखकार, रोगविघन जड़ता हरै।
सम्यकज्ञान विचार, आठभेद पूजौं सदा ॥७॥
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफलआदि विथार, निहचै सुरशिवफल करै।
सम्यकज्ञान विचार, आठभेद पूजौं सदा ॥८॥
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गन्धाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु।
सम्यकज्ञान विचार, आठभेद पूजौं सदा ॥९॥
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला। दोहा।

आप आप जानै नियत, ग्रन्थपठन व्योहार।
संशय विभ्रम मोह बिन अष्टअङ्ग गुनकार ॥१॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द।

सम्यकज्ञानरतन मन भाया। आगम तीजा नैन बताया ॥ अच्छर अरथ शुद्ध पहिचानौ। अच्छर अरथ उभय संग जानौ ॥ जानौ सुकाल पठन जिनागम, नाम गुरु न छिपाइये। तपरीति गहि बहु मान देकै, बिनय गुन चित लाइये ॥ ए आठ भेद करम उछेदक ज्ञानदर्पण देखना। इस ज्ञानहीसों भरत सीझा, और सब पट पेखना ॥१॥
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित्र पूजा।

दोहा।

विषयरोग औषधि महा, दवकषाय जलधार।
तीर्थंकर जाकों धरैं, सम्यकचारितसार ॥१॥

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र। अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा।

नीर सुगन्ध अपार, त्रिषा हरे मल छय करे।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥१॥

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय जलं निर्व०

जलकेसर घनसार, ताप हरै शीतल करै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥२॥

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय चंदनं०।

अछत अनूप निहार; दारिद नासै सुख भरै।
सम्यक्चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥३॥

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अक्षतान् नि०

पुहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै।

सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा॥४॥
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यकचारित्राय पुष्पं नि०
नेवज विविधप्रकार, क्षुधा हरै थिरता करै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा॥५॥
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यकचारित्राय नैवेद्यं नि०
दीपजोति तमहार, घटपट परकाशै महा।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा॥६॥
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यकचारित्राय दीपं नि०
धूप घ्राण सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा॥७॥
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यकचारित्राय धूपं निर्वपामी०
श्रीफलआदि विथार, निश्चय सुरशिवफल करै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा॥८॥
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यकचारित्राय फलं निर्वपामीति
जल गन्धाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजौं सदा॥९॥
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यकचारित्राय अर्घं निर्व०

जयमाला। दोहा।

आप आप थिर नियत नय, तपसंजम व्योहार।

स्वपर दया दोनों लिये, तेरहविध दुखहार॥१०॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द।

सम्यकचारित रतन संभालो। पांच पाप तजि कै व्रत पालो। पंचसमिति त्रय गुपति गहीजै। नर भव सफल करहु तन छीजै॥१॥ छीजै सदा तनको जतन यह; एक संयम पालिये। बहु रुल्यो नरक गिनोद मांहीं, कषाय विषयनि टालिये। शुभकरम जोग सुघाट आया, पार हो दिन जात है। 'द्यानत' धरमकी नाव बैठो, शिवपुरी कुशलात है॥१॥

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय महार्घं निर्व०

समुच्चय जयमाला। दोहा।

सम्यकदरशन ज्ञानव्रत, इन बिन मुकत न होय।
अंध पंगु अरु आलसी, जुदे जलैं दवलोय॥१॥

चौपाई।

तापै ध्यान सुथिर बन आवै। ताके करमबंध कट जावैं। तासौं शिवतिय प्रीति बढ़ावै। जो सम्यक रतनत्रय ध्यावै॥२॥ ताकौं चहुंगति

पूजों शुभ धरों। श्री बृषभ० ॥३॥

ओं ह्रीं श्रीबृषभादिअनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो अक्षतं०

चंपा चमेली केतकी पुनि मोगरो शुभ लाय
के। केवड़ो कमल गुलाब गैंदा जुही सुमाल
बनायके। श्रीबृषभ० ॥४॥

ओं ह्रीं श्रीबृषभादिअनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो पुष्पं०

ड्डू कलाकंद सेव घेवर और मोतीचूर ले।
जा सुपेड़ा क्षीर व्यंजन थालमें भरपूर ले॥
बृषभ० ॥५॥

श्रीबृषभादिअनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं०

जड़ित सुआरती तामांहि दीप संयोज
नराज तुम पद आरती कर मिथ्या-
ोयके॥ श्रीबृषभ० ॥६॥

अनन्त... पर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो दीपं०

...रकी करि धूपको।
... निकट जिन-

...शजिनेन्द्रेभ्यो धूपं०

संवौषट ठः ठः सुवषट यह उच्चरूं।
आह्वानन स्थापन मम सन्निधि करूं॥

ओं ह्रीं श्रीवृपभादि अनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रा अत्र अवतर अवतर, संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

गीता छन्द।

गंगादि तीरथको सुजल भर कनकमय भृंगार मैं। चउदश जिनेश्वर चरणयुगपरि धार डारौं सार मैं॥ श्रीबृषभ आदि अनंत जिन पर्यंत पूजों ध्यायके। करि अनंतब्रत तप कर्म हनि के लहों शिव सुख जायके॥१॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिअनन्तनाथपर्यंतचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो जलं०

चंदन अगर घनसार आदि, सुगंध द्रव्य घसायके। सहजहिं सुगंध जिनेन्द्रके पद चर्च हों सुखदायके॥ श्रीवृषभ० ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिअनन्तनाथपर्यंतचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो चंदनं०

तंदुल अखंडित अति सुगंध सुमिष्ट लेके कर धरों। जिनराज तुम चरनन निकट भविपाय

पूजों शुभ धरों। श्री वृषभ० ॥३॥

ओं ह्रीं श्रीबृषभादिअनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो अक्षतं०

चंपा चमेली केतकी पुनि मोगरो शुभ लाय के। केवड़ो कमल गुलाब गैंदा जुही सुमाल बनायके। श्रीबृषभ० ॥४॥

ओं ह्रीं श्रीबृषभादिअनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो पुष्पं०

लाडू कलाकंद सेव घेवर और मोतीचूर ले। गूजा सुपेड़ा क्षीर व्यंजन थालमें भरपूर ले॥ श्रीवृषभ० ॥५॥

ओं ह्रीं श्रीबृषभादिअनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं०

ले रत्नजड़ित सुआरती तामांहि दीप संयोज के। जिनराज तुम पद आरती कर मिथ्या-तिमिर सुखोयके॥ श्रीवृषभ० ॥६॥

ओं ह्रीं श्रीबृषभादिअनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो दीपं०

चंदन अगरतर सिलारस कर्पूरकी करि धूपको। तागंधतें मधु चकित सो खेऊं निकट जिन-भूपको॥ श्रीवृषभ० ॥७॥

ओं ह्रीं श्रीबृषभादिअनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेन्द्रेभ्यो धूपं०

नारंग केला दाख दाड़िम बीजपूर मंगायके। पुनि आम्र और बिदाम खारिक कनक थार भरायके ॥ श्रीवृषभ० ॥८॥

ओं ह्रीं श्रीबृषभादिअनन्तनाथपर्यंतचतुर्दशजिनेंद्रेभ्यो फलं नि०

जल सुचंदन अखत पुष्प सुगंध बहुविध लायके। नैवेद्य दीप सुधूप फल इनको जु अर्घ बनायके ॥ श्रीवृषभ० ॥९॥

ओं ह्रीं श्रीबृषभादिअनंतनाथपर्यंतचतुर्दशजिनेंद्रेभ्यो अर्घं नि०

जयमाला। पद्धरी छंद।

जय वृषभनाथ वृषको प्रकाश। भविजनको तारे पाप नाश ॥ जय अजितनाथ जीते सुकर्म। ले क्षमा खड्ग भेदे जु मर्म ॥१॥ जय संभव जग सुखके निधान। जग सुखकरता तुम दियो ज्ञान ॥ जय अभिनन्दन पद धरो ध्यान। तासों प्रगटे सुभज्ञान भान ॥२॥ जय सुमति सुमतिके देनहार। जासों उतरे भव उदधि पार ॥ जय पद्म पद्म पदकमल तोहि।

भविजन अति सेवैं मगन होहिं ॥३॥ जय जय सुपार्श्व तुम नमत पांय। क्षय होत पाप वहु पुन्य थाय॥ जय चन्द्रप्रभ शशिकोट भान। जगका मिथ्यातम हरो जान ॥४॥ जय पुष्पदंत जग मांहि सार। पुष्पकको मास्यो अति सुमार॥ करि धर्मभाव जगमें प्रकास। हरि पाप तिमिर दियो मुक्तिवास ॥५॥ जय शीतलजिन हरभव प्रवीन। हरि पाप ताप जग सुखी कीन॥ श्रेयांस कियो जगको कल्यान। दे धर्म दुखित तारे सुजान ॥६॥ जय वासुपूज्य जिन नमों तोहि। सुर नर मुनि पूजत गर्व खोहि॥ जय विमल विमल गुण लीन मेय। भवि करे आप सम सुगुण देय॥ ८॥ जय अनंतनाथ करि अनंतवीर्य। हरि घातिकर्म धरि अनंत धीर्य॥ उपजायो केवलज्ञान भान। प्रभु लखे चराचर सब सुजान॥

दोहा।

यह चतुर्दश जिनजगतमें, मंगलकरन प्रवीन।

पापहरन बहु सुखकरन, सेवक सुखमय कीन ६॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिअनन्तनाथपर्यन्तचतुर्दशजिनेंद्रेभ्यो अर्घं०

इसके बाद ५४ वें पृष्ठमें छपी हुई समुच्चयचौबीसी पूजा करें।

आदिनाथ पूजा।

अडिल्ल छन्द।

कर्मभूमिकी आदि रिषभ जिनवर भये,
धर्मपंथ दरशाय सकल जग सुख दये।
तिनके पद उर ध्याइ हरष मनमें धरूं,
अत्र तिष्ठ जिनराज चरण हिरदे धरूं॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर। संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः। स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्। सन्निधिकरणं।

सुन्दरी छंद।

परम पावन उज्ज्वल लायके, जल जिनेश्वर चरण चढ़ायके। जन्म मरण त्रिदोष सबै हरूं, रिषभदेव चरण पूजा करूं॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस चंदन गंध सुहावनो, परम शीतल गुण मन भावनो। जन्मतापत्रषादुखको हरूं, रिषभदेव चरण पूजा करूं॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय चंदनं निर्व०

सरदइन्दु समान सुहावनो, अमलअक्षत स्वक्ष प्रभावनो। सहजरूप सुधीरमनी वरूं, रिषभदेव चरण पूजा करूं॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अक्षतं निर्व०

कुसुमरत्न सुवर्णमई करों, कनक भाजनमें बहुते भरों। मदनवान महा दुखको हरूं, रिषभदेव चरन पूजा करूं॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय पुष्पं निर्व०

सरस मोदन पावक लीजिये, चरु अनेक प्रकार सु कीजिये। असदवैद्य क्षुधा दुखको हरूं, रिषभदेव चरन पूजा करूं॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्व०

रतन दीप अमौलिक लीजिये, जिन सुयोग्य मनोहर कीजिये। अतुल मोहमहातमको हरूं,

रिषभदेव चरन पूजा करूं ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय दीपं निर्व०

सरस धूप सुगंध सुहावनी, अगरआदिक द्रव्य सुपावनी। धूप खेय दुखद विधिको हरूं, रिषभदेव चरन पूजा करूं ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय धूपं निर्व०

सरस मिष्ट फलावलि लीजिये, चरण जिनवर भेट करीजिये। सहज रूप सुधी रमणी वरूं, रिषभदेव चरन पूजा करूं ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय फलं निर्व०

जल फलादिक द्रव्य मिलायके, कनकथाल सु अर्घ बनायके। निज स्वभाव अरी विधिको हरूं, रिषभदेव चरन पूजा करूं ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०

पंचकल्याणक।

मोतियादाम छंद।

असाढ़ वदी द्वितीया दिन जान, तजो सरवारथसिद्धि विमान। भयौ गरभागम मंगल

सोय, नमूं जिनको नित हर्षित होय ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अषाढ़वदीद्वितीयायां गर्भकल्याणप्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

सुचैतवदी नवमी दिन जान, भयौ शुभ तादिन जन्मकल्यान। सुरासुर इन्द्र शचीजुत आय, करौ गिरशीस महोत्सव जाय ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय चैतवदीनवम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घं निर्व०

वदी नवमी शुभ चैत बताय, प्रभू ढिंग देवरिषीश्वर आय। करी बहु भक्ति नवाय सुभाल, लयौ तप तादिन श्रीजिन हाल ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय चैतवदीनवम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय अर्घं निर्वं०

वदी शुभ ग्यारस फाल्गुण जान, सु तादिन घाति हने भगवान। करौ वरकेवल ज्ञानप्रकाश, हरे जगको भ्रममोहविलास ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय फाल्गुणवदी एकादशम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घं निर्वं०

वदी शुभ माघचतुर्दसि जान, लयौ प्रभूने

शिवथान महान । करौ बहु उत्सव इन्द्रमहिंद्र,
भरौ मम आस सदा जिनचंद्र ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय माहवदी चतुर्दश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय अर्घं निर्व०

जयमाला दोहा

आदि धर्म करता प्रभू, आदि ब्रह्म जगदीश।
तीर्थंकर पद जिहि लयौ, प्रथम नवाऊं शीस ॥

भुजंगप्रयात छन्द ।

नमों देव देवेंद्र तुम चर्ण ध्यावैं, नमों देव इन्द्रादि सेवक रहावैं । नमों देव तुमको तुम्हीं सुक्खदाता, नमों देव मेरी हरौ दुख असाता ॥१॥ तुम्हीं ब्रह्मरूपी सुब्रह्मा कहावो, तुम्हीं विष्णु स्वामी चराचर लखावो । तुम्हीं देव जगदीश सर्वज्ञ नामी, तुम्हीं देव तीर्थेश नामी अकामी ॥२॥ सुशंकर तुम्हीं हौ तुम्ही सुक्खकारी, सुजन्मादि त्रयपुर तुम्ही हौ विदारी । धरै ध्यान जो जीव जगके मझारी, करै नास विधिकौ लहै ज्ञान भारी ॥३॥ स्वयंभू तुम्ही

हौ महादेव नामी, महेश्वर तुम्ही हौ तुम्ही लोकस्वामी। तुम्हें ध्यानमें जो लखै पुन्यवंता, वही मुक्तिको राज विलसै अनंता ॥४॥ तुम्ही हो विधाता तुम्ही नंददाता, नमै जो तुम्हैं सो सदानंद पाता। हरौ कर्मके फंद दुखकंद मेरे, निजानंद दीजै नमों चर्ण तेरे ॥५॥ महा मोहको मारि निजराज लीनौ, महाज्ञानको धारि शिव वास कीनौ। सुनों अर्ज मेरी रि-षभदेव स्वामी, मुझे वास निजपास दीजै सुधामी ॥ ६ ॥

दोहा।

नाभिराय मरुदेवि सुत, सदा तुम्हारी आस।
मनवचकायलगायके, नमैं जिनेश्वरदास ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्व०

अडिल्ल छंद।

वर्तमान जिनराय भरतके जानिये,
पंचकल्याणक धारि गये शिव थानिये।

जो नर मनवचकाय प्रभू पूजै सही,
सो नर दिवसुखपाय लहै अष्टम मही ॥

इत्याशीर्वादः। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।



श्रीचन्द्रप्रभ पूजा।

चारित चन्द्र चतुष्टय मंडित चारि प्रचंड अरी चकचूरे। चंद्र विराजत चर्णविषै यह चंद्रप्रभा सम है अनुपूरे॥ चारु चरित्र चकोरनके चित चोरन चन्द्रकला बहुसूरे। सो प्रभु चंद्र समंत गुरू चिंत चिंततही सुख होय हुजूरे॥

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्र। अत्रावतरावतर संवौषट्।
ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्र। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथाष्टक, चाल जोगीरासा।

पद्म द्रह सम उज्ज्वल जल ले शीतलता अधिकाई। जन्म जरा दुख दूर करनको जिनवर पूज रचाई॥ चंचल चितको रोकि चतुर्गति चक्रभ्रमण निरवारो। चारु चरण आर्च-

रण चतुर नर चंद्रप्रभू चित धारो ॥

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्ममृत्युरोगविनाशनाय जलं०

मलियागिर वर आवन चंदन केसरि संग घसाओ। भव आताप निवारन कारन श्रीजिन चरन चढ़ाओ॥ चंचल० ॥

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं०

चंद्रकिरन सम श्वेत मनोहर खंडविवर्जित सोहै। ऐसे अच्छतसों प्रभु पूजौं जग जीवन मन मोहै॥ चंचल० ॥

ओं ह्रीं श्रीचद्रप्रभजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं०

सुरतरुके शुचि पुष्प मनोहर बरन बरनके लावौ। कामदाह निरवारन कारण श्रीजिनचरण चढ़ावौ॥ चंचल० ॥

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय कामवाणविध्वंशनाय पुष्पं०

नानाविधिके व्यंजन ताजे स्वच्छ अदोष बनावौ। रोग क्षुधादुःख दूरकरनको श्रीजिनचरण चढ़ावौ॥ चंचल० ॥

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं०

कनक रतनमय दीप मनोहर उज्ज्वल ज्योति जगावौ। मोहमहातम नाश करनको जिनवर चरण चढ़ावौ॥ चंचल०॥

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीप०

दसविधि धूप हुतासन मांहीं खेय सुगंध बढ़ावौ। अष्टकर्मके नाशकरनको श्रीजिनचरण चढ़ावौ॥ चंचल०॥

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय अष्टकर्मविध्वंशनाय धूपं०

नानाविधिके उत्तम फल लै तनमनको सुखदाई। दुःख निवारन शिवफलकारन पूजौं श्री जिनराई॥ चंचल०॥

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं०

वसुविधि अर्घ बनाय मनोहर श्रीजिनमंदिर जावौ। अष्टकर्मके नासकरनको श्रीजिनचरन चढ़ावौ॥ चंचल०॥

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं०

पंच कल्याणक ।

कुसुमलता छन्द ।

चैत प्रथम पंचम दिन जानों, गर्भागम मंगल गुणखान । मात लक्ष्मणाके उर आए, तजि दिवलोक चंद्र भगवान ॥ षट नवमास रतन वरषाए, इन्द्र हुकुमतें धनद महान । तिनके चरनकमल मैं पूजूं, अर्घ चढ़ाय करूं नित ध्यान ॥

ओंह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय अर्घं०

पूसवदी ग्यारसिको जन्मे, चंद्रपुरी जिन चंद्र महान । महासेन राजाके प्यारे, सकल सुरासुर मानें आन । सुर गिरिपर अभिषेक किया हरि, चतुरनिकाय देव सब आन । सो जिनचंद्र जयौ जगमांही, अर्घ चढ़ाय करूं नित ध्यान ॥

ओं ह्रीं पौषकृष्णएकादश्या जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूसवदी ग्यारसि तप लीनों, जानों जगत अथिर दुखदान । राजत्यागि वैराग धरौ बन, जाय कियौ आतम कल्यान ॥ सुरनर मिलि खग पूज

रचाई, मनमें अतिही आनंद मान। ऐसे चंद्र-
नाथ जिनवरको, अर्घ चढ़ाय करूं नित ध्यान॥

ओं ह्रीं पौषकृष्णएकादश्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुनवदि सप्तमि दिन जानों, चार घातिया घा-
ति महान। सकल सुरासुरपूजि जगतपति, पायौ
तिहिदिन केवलज्ञान। समवसरन महिमा हरि
कीनी, दीनी दृष्टिचरण निजआन। ऐसे चंद्रनाथ
जिनवरको, अर्घ चढ़ाय करूं नित ध्यान॥

ओं ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सातें वदि फागुनके महिना, संमेदाचल शृङ्ग म-
हान। ललितकूट ऊपर जगपतिने, पायौ आतम
शिव कल्यान॥ सुर सुरेश मिलि पूज रचाई,
गायौ गुण हर्षित जिय ठान, सुगुरु समन्तभद्र
के स्वामी, देहु जिनेश्वरको सतज्ञान॥

ओं ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला दोहा।

अष्टम क्षितिपति तुम धनी, अष्टम तीरथराय।
अष्टम पृथ्वी कारने, नमूं अंग वसु नाय ॥१॥

चाल 'अहो जगतगुरु'की।

अहो चंद्र जिनदेव तुम जगनायक स्वामी।
अष्टम तीरथराज, हो तुम अंतरयामी ॥१॥
लोकालोक मझार, जड़ चेतन गुणधारी।
द्रव्य छहुं अनिवार पर्यय शक्ति अपारी ॥२॥
तिहिं सबको इकबार जानें ज्ञान अनंता।
ऐसो ही सुखकार दर्शन है भगवन्ता ॥३॥
तीनलोक तिहुंकाल ज्ञायक देव कहावौ।
निरबाधा सुखसार तिहिं शिवथान रहावौ ॥४॥
हे प्रभु ! या जगमांहि मैं बहुते दुख पायौ।
कहन जरूरति नाहिं तुम सबही लखि पायौ ॥५॥
कबहूं नित्य निगोद कबहूं नर्क मझारी।
सुरनर पशुगति मांहि दुक्ख सहे अतिभारी ॥६॥
पशुगतिके दुख देव कहत बढै दुख भारी।
छेदन भेदन त्रास शीत उष्ण अधिकारी ॥७॥

भूख प्यासके जोर सबल पशू हनि मारै ।
तहां वेदना घोर हे प्रभु कौन समारै ॥८॥
मानुष गतिके मांहि यद्यपि है कछु साता ।
तोहू दुख अधिकाय क्षणक्षण होत असाता ॥९॥
धन जोवन सुत नारि संपति और घनेरी ।
मिलत हरष अनिवार विछुरत विपत घनेरी ॥१०॥
सुरगति इष्टवियोग पर संपति लखि झूरै ।
मरन चिन्ह संयोग उर विकलप बहु पूरै ॥११॥
यों चारों गति मांहि दुख भरपूर भरौ है ।
ध्यान धरौ मनमांहि यातैं काज सरौ है ॥१२॥
कर्म महा दुख साज याको नास करोजी ।
वड़े गरीबनिवाज मेरी आश भरोजी ॥१३॥
समंतभद्र गुरुदेव ध्यान तुमारो कीनों ।
प्रगटभयौ जिनवीर जिनवर दर्शन कीनो ॥१४॥
जबतक जगमें वास तबतक हिरदै मेरे ।
कहत जिनेश्वरदास सरन गहों मैं तेरे ॥१५॥

दोहा ।

जग जयवंते होहु जिन, भरौ हमारी आस ।

जय लक्ष्मी निज दीजिये, कहत जिनेश्वरदास॥

ओं ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छन्द।

वर्तमान जिनराय भरतके जानिये,
पंचकल्याणक मानि गये शिवथानिये।
जो नर मन वच काय प्रभू पूजै सही,
सो नर दिव सुख पाय लहै अष्टम मही॥

इत्याशीर्वादः। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्रीवासुपूज्य स्वामी पूजा

कुसुमलता छन्द।

श्रीमत वासपूज पद जिनपद, भक्ति सहित निज शीस नवाय। बालब्रह्मचारी जगतारी जिनकी पाटल देव्या माय॥ अरुन वरन मन हरन जिन्होंका, दिव्य देह लखि सुर हर्षाय। सो जिनवासुपूज सुखदाई, अत्र तिष्ठ मम करौ सहाय॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्र अत्रावतरावतर। संवौषट्

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः । स्थापनं । ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । सन्निधिकरणं । परि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

शिखरिणी छंद ।

महा गंगा नीर विमल गुणगण शीत अधिको ।
करौं पूजा स्वामी मम दुख हरो ताप त्रषको ॥
सुरासुर गुण गावैं सुगुरु मुनि ध्यावैं चरणको ।
सुनो वासंपूजै हरो दुख स्वामी मरनको ॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति

सुगंधै गंभीरै मलयचलजातै अनुपमं ।
करौं भक्ती सेती तुम चरण पूजा स्वहितदं ॥
सुरासुर गुण गावैं सुगुरु मुनि ध्यावैं चरनको ।
सुनो वासंपूजै हरो दुख स्वामी मरनको ॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

महा स्वक्षै सुभ्रै अक्षत शुचि आगे सुजिनके ।
करौं पूजा पदकी अक्षय गुण गावैं सुतिनके ॥
सुरासुर गुण गावैं सुगुरु मुनि ध्यावैं चरनको ।
सुनो वासंपूजै हरो दुख स्वामी मरनको ॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

सहा जाता नाहीं अतन दुख भारी जगतमें।
प्रभूपद पूजौं मैं कुसुम वर लेके भगतिसें॥
सुरासुर गुण गावैं सुगुरु मुनि ध्यावै चरनको।
सुनो वासंपूजै हरौ दुख स्वामी मरनको॥
ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
क्षुधा मोको पीडै जगत बस याके सुनि प्रभू।
तुम्हें चरुसौं पूजौं विपति सब मेरी हरि प्रभू॥
सुरासुर गुण गावैं सुगुरु मुनि ध्यावैं चरनको।
सुनो वासंपूजै हरो दुख स्वामी मरनको॥
ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दुखी हूआ भारी चतुर गति माही भ्रमणसे।
महा भक्त्या पूजौं चरन नित तेरे सुमनसे॥
सुरासुर गुण गावैं सुगुरु मुनिध्यावैं चरनको।
सुनो वासंपूजै हरौ दुख स्वामी मरनको॥
ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय दीपं नि०।
भ्रमायौ जग भारी चतुर्गति माहीं करमने।
चढ़ाऊं मैं धूपं चरण प्रभु आगे स्वहितने॥
सुरासुर गुण गावैं सुगुरु मुनि ध्यावैं चरनको।

सुनो वासंपूजै हरौ दुख स्वामी मरनको ॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय धूपं नि० ।

सुनो स्वामी मेरे मुकति फल दाता जगतमें।
करूं पूजा थारी सुफल करले भक्ति भरकें ॥
सुरासुर गुणगावैं सुगुरु मुनि ध्यावैं चरनको ।
सुनो वासंपूजै हरौ दुख स्वामी मरनको ॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय फलं नि० ।

करो पूजा चित दै अरघ कर लैके सुजिनजी।
हरो बाधा मेरी अरज यह मानो सुप्रभुजी ॥
सुरासुर गुणगावैं सुगुरु मुनि ध्यावैं चरनको ।
सुनो वासंपूजै हरो दुख स्वामी मरनको ॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचकल्याणक, चाल दोहा।

वदि अषाढ छठिके विषे, भयौ गर्भकल्याण।
चंपापुर नगरी विषै, वरषे रत्न महान ॥१॥

ओं ह्रीं आषाढकृष्णषष्ठ्या गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि चौदस दिवस, वासपूज महाराज।

जन्म लयौ त्रयज्ञानयुत, नमूं चरन हितकाज ॥२॥

ओं ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्य-जिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जन्म दिवस जिनराजने, तजो राजको साज ।
लौकान्तिक सुर बोधियो, तपलीनो हितकाज ॥

ओं ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्य-जिनेंद्राय अर्घ्यं निर्व०

भादव वदिके दोज दिन, घातिकर्म करि दूर ।
पाया केवलज्ञान प्रभु; सुखी भये भरपूर ॥४॥

ओं ह्रीं भाद्रकृष्णद्वितीयायां ज्ञानकल्याणप्राप्ताय श्रीवासुपूज्य-जिनेंद्रायअर्घ्यं निर्व०

सुदि चौदस भादवतनी, चंपापुर उद्यान ।
सुरनर पूजत देवने, पद पायौ निरवान ॥५॥

ओं ह्रीं भाद्रशुक्लचतुर्दश्या मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजि-नेंद्राय अर्घ्यं निर्व०

जयमाला, विद्युन्माला छंद ।

पूजै ध्यावै जो त्रयकाला, निश्चै रच्चै भक्ति विशाला । उरतैं रागरु द्वेष निकाला, सोई पावै मुक्ति रसाला ॥१॥

मोतियादाम छन्द।

जयौ जगमें जिनराज महान, जयौ तुम देव महाव्रत दान। सुजन्मविषें सुर चारनिकाय, कियौ बहु उत्सव पुन्य बढ़ाय॥ सुरेंद्र नरेंद्र नवावत शीस, मुनेंद्र तुम्हें नित ध्यावत ईश। सु बालहितें प्रभु शीलस्वरूप, विराग सदा उर भाव अनूप॥ भये जब जोवनवंत महान, न काम विकार भयौ गुनखान। कियौ नहिं राज, धरे वृतसार, सुरासुर पूज कियौ तिहिंवार॥ सुघाति महारिपु चार प्रकार, भये वर केवलज्ञान अपार। समवश्रुत की विधि इन्द्र बनाय, भए सुर हर्षित चार निकाय॥ कहौ जिनधर्म स्वरूप महान, गहा भवि जीव सुधा सम जान॥ रहौ नहिं किंचित दुक्ख विकार, लहौ भवि जीवन सुक्ख अपार॥ सुलक्षण धर्मतनों दशभेद, करौ प्रभु ने धुनि दिव्य अर वेद। महाअरि क्रोध तजो दुखदाय, क्षमा उरधारहु शांत स्वभाव॥ सु-

कोमल भाव करौ सुखदाय। तजौ विष मान महा दुखदाय। सजौ रिजुभाव त्रिजोगन मांहि, तजौ छलछिद्र दगा मनमांहि॥ कहौ सतवैन गहौ उर तोष, चहौ नित संजमभाव अदोष। करौ तपसार तजौ परभाव, अकिंचन होहु लखौ निजभाव॥ सुवस्तु स्वभाव करौ पहिचान, करौ निज आतम ध्यान महान॥ यही शिवमारग रत्न महान, गहा भवि जीव सदा हितदान॥ इत्यादि अनेक सुभेद बताय, सुभव्य दिये शिवपंथ लगाय। सुजोग निरोध कियौ शिववास, करौ हमरो निजपास निवास॥

दोहा।

चंपापुर जिनके भये, पंचकल्यानक सार।
जिनपदपद्म सरोजको प्रणमूं बारम्बार॥१॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं निर्व०

अडिल्ल छंद।

वर्तमान जिनराय भरतके जानिये,

पंचकल्याणक मानि गये शिवथानिये ॥
जो नर मन वच काय प्रभू पूजै सही,
सो नर दिव सुख पाय लहै अष्टम मही ॥

इत्याशीर्वादः। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्रीशांतिनाथ जिनपूजा।

अडिल्ल

शांति जिनेस्वर नमूं तीर्थ वसु दुगुण ही,
पंचमचक्री अनंग दुविध षट् सुगुण ही।
तृणवत रिधि सब छारि धारि तप सिव वरी,
आह्वाननविधि करूं वारत्रय उच्चरी ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर! संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

नाराच छन्द

सैल हेमतैं पतंत आपिका सुव्यौमही।
रत्नभृङ्गधारि नीर सीत अंग सोमही ॥
रोग सोग आधि व्याधि पूजते नसाय हैं।

अनंत सौख्यसार शांतिनाथ सेय पाय हैं ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं०।

चंदनादि कुंकमादि गन्धसार ल्यावही। भृङ्ग
वृन्द गुंजतै समीर संग ध्यावही॥ रोग० ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीशातिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं।

इन्दु कुंद हारतैं अपार स्वेत साल ही। दुर्ति
खंडकार पुंज धारिये बिसाल ही ॥ रोग० ॥३॥

ओं ह्रीं श्रीशातिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्०।

पंचवर्ण पुष्पसार ल्याइये मनोग्य ही। स्वर्ण
थाल धारिये मनोज नास जोग्यही॥ रोग० ॥४॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंशनाय पुष्पं०।

खण्ड घृतकार चारु सद्य मोदकादि ही। सुष्ट
मिष्ट हेमथाल धारि भव्य स्वादि ही ॥रोग० ॥५॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य०।

दीप जोतिको उद्योत धूम होत ना कदा।
रत्नथाल धारि भव्य मोहध्वांत ह्वै विदा॥ रोग०

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं०।

अगर चंदनादि द्रव्य सार सर्व धार ही। स्वर्ण

धूप दानमें हुतास संग जार ही ॥ रोग० ॥७॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं०।

घोटकेन श्रीफलेन हेमथालमें भरै। जिनेसके

गुणौघ गाय सर्व एनकूं हरै ॥ रोग० ॥८॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं०।

छप्पय

सरद इन्दुसम अंबुतीर्थ उद्भव तृपहारी।

चंदन दाह निकन्द सालि शसितैं दुति भारी॥

सुर तरुके वर कुसुम सद्य चरु पावन धारैं।

दीप रतनमय जोति धूपतैं मधु झंकारैं॥

लहि फल उत्तम करि अरघ शुभ 'रामचंद'

कनक थाल भरि। श्रीशांतिनाथके चरण जुग

वसु विधि अरचैं भाव धरि ॥९॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं०।

पंचकल्याणक।

दोहा।

सर्वारथ सिधितैं चये, भाद्रव सत्तमि स्याम।

ऐरादे उर अवतरे जजूं गर्भ अभिराम ॥ १ ॥

ओं ह्रीं भाद्रपदकृष्णसप्तम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०।

जैठ चतुरदसि कृस्नही, जनमे श्रीभगवान।
सनपन करि सुरपति जजे, मैं जजहूं धरि ध्यान

ओं ह्रीं जेष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घं०।

जेठ असित चउदसि धर्यो, तप तजि राज महान। सुर नर खगपति पद जजैं, मैं जजहूं भगवान ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं जेष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घं०।

पोस सुकल दशमी हने, घाति कर्म दुखदाय।
केवल लहि बृष भाखियौ, जजूं शांति पद ध्याय ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं पौषशुक्ल दशम्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घं०।

कृष्ण चतुरदसि जेठकी, हनि अघाति शिवथान।
गये समेदाचल थकी, जजूं मोक्ष कल्यान ॥५॥

ओं ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घं०।

जयमाला।

सोरठा।

शांति जिनेस्वर पाय, वंदूं मन वच कायतैं। देहु सुमति जिनराय, ज्यौं विनती रुचिसौं करौं॥

चाल—संसार सासरियो माई दोहिलौ।

शांति करम वसुहानिकैं, सिद्ध भये शिवजाय। शांति करो सव लोकमें, अरज यहै सुखदाय॥ शांति करो जगशांतिजी॥ १॥

धन्य नयरि हथनापुरी, धन्य पिता विस्वसेन। धन्य उदर अयरा सती, शांति भये सुखदेन॥ शांति०॥२॥ भादव सप्तमि स्यामही, गर्भकल्याणक ठानि। रतन धनद वरषाइयो, षट नव मास महान॥ शांति०॥३॥ जेठ असित चउदस विषै, जनम कल्याणक इन्द। मेरु कऱ्यो अभिषेककैं, पूजि नचे सुरबृन्द॥ शांति०॥४॥ हेम वरन तन सोहनो, तुङ्ग धनुष, चालीस। आयुबरसलख नरपती, सेवत सहस वतीस॥ शांति०॥५॥ षटखंड नवनिधि तियसवै, चउ-

दहरतन भंडार। कछुकारण लखिकैं तजे षण-चव असिय अगार ॥ शांति० ॥६॥ देव रिषी सब आयकैं, पूजि चले जिन बोधि। लेय सुरां सिविका धरी, बिरछ नंदीस्वर सोधि ॥ शांति० ॥७॥ कृष्ण चतुरदसि जेठकी, मनपरजै लहि ज्ञान। इन्द्र कल्याणक तप कर्यौ, ध्यान धर्यौ भगवान॥ शांति० ॥८॥ षष्टम करि हित असनकै, पुर सो मनस मझार। गये दयो पय मित्तजी, वरषे रतन अपार ॥ शांति ॥ ६ ॥ मौनसहित वसु दुगुणही; बरस करे तप ध्यान। पौष सुकल दशमी हने, घाति लह्यौ प्रभुज्ञान ॥ शांति० ॥१०॥ समवसरन धनपति रच्यौ, कमलासनपर देव। इन्द्र नरा षटद्रव्य-की, सुनि थिति थुति करि एव ॥ शांति० ॥११॥ धन्य जुगलपद मोतनौ, आयो तुम दरवार। धन्य उभै चखि ये भये, वदन जिनन्द निहारि ॥ शांति० ॥ १२ ॥ आज सफल कर ये भये,

पूजत श्रीजिन पाय। शीस सफल अब ही भयो, धोक्यो तुम प्रभु आय॥ शांति० ॥१३॥ आज सफल रसना भई, तुम गुणगान करंत। धन्य भयौ हिय मो तनौ, प्रभुपद्ध्यान धरंत॥ शांति० ॥१४॥ आज सफल जुग मो तनौ, श्रवण सुनत तुम वैन। धन्य भये बसु अंग ये, नमत लयो अति चैन ॥ शांति० ॥१५॥ राम कहै तुम गुणतणा, इन्द्र लहै नहीं पार। मैं मति अलप अजान हूं, होय नहीं विस्तार ॥ शांति० ॥१६॥ वरष सहस पच्चीसही, षोड़स क्रम उपदेश। देय समेद पधारिये, मास रहे इक शेष॥ शांति० ॥१७॥ जेठ असित चउदसि गये, हनि अघाति शिवथान। सुरपति उत्सव अति करे, मंगल मोक्ष कल्यान॥ शांति० ॥१८॥ सेवक अरज करैं सुनो, हो करुणानिधि देव। दुखमय भवदधि तैं मुझै, तारि करूं तुम सेव॥ शांति० ॥१९॥

घत्ता छन्द।

इति जिन गुणमाला, अमल रसाला जो भवि-
जन कंठै धरई। हुय दिवि अमरेस्वर, पुहमि
नरंस्वर, शिवसुंदरि ततछिन वरई ॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशार्वादः।



श्रीनेमिनाथ पूजा।

जोगीरासा।

श्रीहरिवंश उजागर नागर नेमीश्वर जिनराई।
बालब्रह्मचारी जगतारी, श्याम शरीर सुहाई॥
जादवबंश महानभ पूरन चंद्रकला सुखदाई।
अत्र विराज हरो दुख हमरो शिवसुख द्यो
जिनराई ॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव
वषट् सन्निधिकरणं। परिपुष्पाजलिं क्षिपेत।

गीता छन्द।

पद्मद्रहको नीर मनोहर कंचन झारी मांहि धरो। जनमजरा दुख दूर करनको, श्रीजिन सन्मुख धार करो॥ बालब्रह्मचारी जगतारी नेमीश्वर जिनराज महान। मैं नितध्यान धरूं प्रभु तेरा मोकूं दीजो अविचल थान॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्रायजन्ममृत्युविनाशनाय जलं०

मलयागिर करपूर मिलाया केशर रंग अनोपम जान। भव आतापरहित जिनवरके चरनकमलको पूजैं आन॥ बालब्रह्म०॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय भवातापविनाशनाय चंदनं०

चंद किरन सम उज्वल लीजे अक्षतस्वच्छसरल गुणखान। अक्षय पदके नायक प्रभुको, पूजैं हर्ष सहित हितमान। बाल०

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं

बरन बरनके कुसुम मंगावै, कुसुमायुध अरि जीतन काज। कुसुमायुध विजयी जिनवरके चरन कमलको पूजै आज॥ बाल०॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामवाणविनाशनाय पुष्पं निर्व

मनमोहन पकवान बनावो, हरषसहित प्रभुके गुणगाय। क्षुधारोगके नाश करनको, श्रीजिन चरनन देत चढ़ाय ॥ बाल० ॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं०

मणिमय दीप अमोलक लेके, रतन रकेबीमें धर लाय। मोहमहातम नासक प्रभुके, चरणाम्बुजमें देत चढ़ाय ॥ बाल० ॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्रायमोहांधकारविनाशनाय दीप निर्व०

कृष्णागर करपूर मिलाकर, धूप सुगंध मनोहर आन। कर्मकलंक निवारक प्रभुके, चरन कमलको पूजौं आन। बाल० ॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्रायअष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व०

श्रीफल लोंग सुपारी पिस्ता, एला केला आदि महान। मुक्ति श्रीफलदायक प्रभुके, चरणाम्बुज पूजौं गुनखान ॥ बाल० ॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व०

जल फल द्रव्य मिलाय गाय गुन, रतनथार भरिये सुखदान। अष्टकर्मके नासक प्रभुको

पूजौं निज गुणदायक जान ॥ चाल० ॥

ओ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व०

पंचकल्याणक। चाल छन्द।

छठि कार्तिक सित सुखदाई, गर्भागम मंगल भाई। इन्द्रादिक पूज रचाई, हम पूजें अर्घ चढ़ाई ॥

ओं ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठ्या गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सित श्रावण छठि सुभ जानौं, जन्मे जिन-राज महानो। पितु समदविजय सुख पायो, जिनको हम शीस नवायो ॥

ओ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्याजन्ममंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

सावन सुदि छठि शुभ जानों, तजिराज महा वृत ठानों। सिव नार हरष बहु कीनों, हम तिनके पद चित दीनों ॥

ओ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित एकैं आश्विन भाई, चउघाति हने दुख-
दाई। वर केवलज्ञान सुलीनों, जिनके पदमें
चित दीनों ॥

ओं ह्रीं आश्विन शुक्लप्रतिपदायाज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमि-
नाथ जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सित साढ़ सप्तमी जानों, जब जोग निरोध
प्रमानों। गिर नार सिखर सिव पाई, बन्दौं
मैं शीस नवाई ॥

ओं ह्रीं अषाढ़शुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजि-
नेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला दोहा

बाल ब्रह्मचारी प्रभू, नेमीश्वर महाराज।
मेरो नेम निभाइयो, यह अरजी सुनि आज॥

चाल ख्यालकी।

हरि पार न पावै जिनके गुण गावैं सुरनरशेष
जी ॥ टेर ॥ स्याम सरीर धनुष दस ऊंचौ
संख चिन्ह पग मांहि ॥ समदविजय राजाके
प्यारे मात शिवा सुखदाय। श्रीयदुवंश अका-
श चन्द्रमा नेमीश्वर जिनराय ॥

रेखता।

जाके चरन आराधैं वलिहरि देवजी, जिनके गर्भ जन्म सुर आई। धारा रतननकी वरषाई, जाके चरन आराधैं वलि हरि देवजी। भविजन सरस चकोर चन्द्रमा सुख सागर भरपूर, स्व-हित निस दीस वढ़ावैजी जिनके गुण गावैं सुर नर शेषजी॥ मति श्रुति अवधि सहित प्रभु जन्मे वल अनन्त तनधार। वाल समैं मकरध्वज मारो सूरनमैं सिरदार। बलि हरि पांडव भूप भुलाये कर अंजुलिमें सार।

रेखता।

बलको पार न पायो सुरनर शेषजी। हरिको सुरसें शंख बजायो, सय्या दलि मलि धनुष चढ़ायो, बलको पार न पावै सुरनर शेषजी। धनु टंकोर सुनत बलि केशव जिनवरके ढिग आय, विनय कर शीस नवायोजी जिन०॥ बाल ब्रह्मचारी जगतारी सदा विराग सरूप। व्याहसमें पशुदीन निरखिकें राज तजो दुख

कूप। बारह भावना भावै नेमिजी भये दिग-
म्बर रूप॥

रेखता।

जिनके हिरदेमें आई करुना जीवकी, छोड़ी राजमतीसी नारी, जाके तप लीनों गिरनारी, जिनके हिरदेमें आई करुना जीवकी। छप्पन दिन छद्मस्थ रहे जिन चारघातिया चूर, ज्ञान लहि सर्व लखायोजी जिनके गुण०॥ समवसरनकी महिमा राजै श्रीमंडप सुखकार। रतन सिंहासन ऊपर प्रभुजी पद्मासन निरधार। तीन छत्र सिर ऊपर राजै चौसठि चामर सार॥

रेखता।

जिनके हाजिर ठाढे इन्द्र नरेन्द्रजी नभमें दुंदुभिकी धुनि भारी; बरषें फूल सुगंध अपारी जिनके हाजिर ठाडे इन्द्र नरेन्द्रजी। वृक्ष अशोक शोक सब नासै वाणी दिव्य प्रकाश, स्वहित वृष निज निधि पावैजी जिनके०॥

श्रीगिरनार सिखरतें स्वामी पायो पद निर्वान। कर्मकलंक रहित अविनाशी सिद्ध भये भगवान। पंचकल्याणक पूजा कीनी सकल सुरासुर आन॥

रेखता।

अपनो विरद निवाहो दीन दयालजी, मोकों दीजै निजकी माया, कारज कीजै मन ललचाया, अपनो विरद निवाहो दीन दयालजी॥ अरज जिनेश्वरकी सुन स्वामी, नेमीश्वर महाराज, हृदयमें तुम पद ध्याऊंजी जिनके गुण गावैंजी॥

दोहा।

चरणन शीस नवाइके, पूजाकर गुनगाय।
अरज करूं यह एक मैं, भव भव होहु सहाय॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छन्द।

वर्तमान जिनराय भरतके जानिये;
पंचकल्याणक मानि गये शिवथानिये।

जो नर मनवचकाय प्रभु पूजै सही,
सो नर दिवसुख पाय लहै अष्टम मही ॥

इत्याशीर्वादः, परिपुष्पाजलि क्षिपेत्।

श्रीपार्श्वनाथ पूजा।

गीता छन्द।

वर स्वर्ग प्राणतको विहाय, सुमात वामा, सुत भये। अश्वसेनके पारस जिनेश्वर, चरन जिनके सुर नये॥ नवहाथ उन्नत तन विराजै, उरग लच्छन पद लसैं। थापूं तुम्हें जिन आय तिष्ठो, करम मेरे सब नसैं ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट्।
ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथाष्टक-नाराच छंद।

क्षीरसोमके समान अंबुसार लाइये। हेमपात्र धारिकैं सु आपको चढाइये। पार्श्वनाथदेव सेव आपकी करूं सदा। दीजिये निवास मोक्ष

भूलिये नहीं कदा ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

चंदनादि केशरादि स्वच्छ गंध लीजिये। आप
चर्न चर्च मोहतापको हनीजिये। पार्श्व० ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रायभवातापविनाशनाय चंदनं०।

फेन चंदके समान अक्षतान् लाईकैं, चर्नके
समीप सार पुंजको रचाईकें ॥ पार्श्व० ॥३॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं०।

केवड़ा गुलाव और केतकी चुनायकैं, धार चर्न
के समीप कामको नसाइकैं ॥ पार्श्वनाथ० ॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रायकामवाणविध्वंसनाय पुष्पं०।

घेवरादि वावरादि मिष्ट सद्यमैं सने, आप चर्न
चर्चते क्षुधादिरोगको हनैं। पार्श्वनाथ० ॥५॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्रायक्षुद्रोगविनाशनाय नैवेद्यं०

लाय रत्नदीपको सनेहपूरके भरूं, वातिका
कपूर वारि मोह ध्वांतकूं हरूं ॥ पार्श्वनाथ०॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय मोहांधकार विनाशनायदीपं।

धूपगंध लेयकैं सु अग्निसंग जारिये, तास धूपके

सुसंग अष्टकर्म बारिये। पार्श्वनाथ० ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं०।

खारिकादि चिरभटादि रत्नथालमैं भरूं, हर्ष धारिकैं जजूं सुमोक्ष सुक्खको वरूं ॥ पार्श्व०॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं०।

नीरगंध अक्षतान् पुष्प चारु लीजिये, दीप धूप श्रीफलादि अर्घतैं जजीजिये। पार्श्व० ॥९॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं०।

पंच कल्याणक। छन्दचाल।

शुभप्राणत स्वर्ग विहाये, वामा माता उर आये। वैशाखतनी दुतिकारी, हम पूजैं विघ्न निवारी

ओं ह्रीं बैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय अर्घं०।

जनमे त्रिभुवन सुखदाता, एकादशि पौष वि-ख्याता। श्यामा तन अद्भुत राजै, रवि कोटिक तेज सु लाजै ॥२॥

ओं ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममङ्गलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं०।

कलि पौष इकादशि आई, तब बारह भावना

भाई। अपने कर लौंच सु कीना, हम पूजैं चरन जजीना ॥३॥

ओं ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

कलि चैत चतुर्थी आई, प्रभु केवलज्ञान उपाई। तब प्रभु उपदेश जु कीना, भवि जीवनको सुख दीना ॥४॥

ओं ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थी दिने केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय अर्घं।

सित सातैं सावन आई, शिवनारि वरी जिनराई। सम्मेदाचल हरि माना, हम पूजैं मोक्ष कल्याना ॥५॥

ओं ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय अर्घं।

जयमाला। छंद।

पारसनाथ जिनेन्द्रतने वच, पौनभखी जरतैं सुन पाये, कर्यो सरधान लह्यो पद आन भयो पद्मावति शेष कहाये, नाम प्रताप टरै संताप सु, भव्यनको शिवशरम दिखाये, हैं विश्वसेनके

नंद भले, गुणगावत हैं तुमरे हरखाये ॥१॥

दोहा ।

केकी-कंठ समान छवि, वपु उतंग नव हाथ ।
लक्षण उरग निहारपग, बंदौं पारसनाथ ॥

पद्धरि छंद ।

रची नगरी छहमास अगार, बने चहुंगोपुर शोभ अपार । सुकोटतनी रचना छवि देत, कंगूरनपैं लहकैं बहुकेत ॥३॥ बनारसकी रचना जु अपार, करी बहुभांति धनेश तयार । तहां विश्वसेन नरेंद्र उदार, करैं सुख वाम सु दे पटनार ॥४॥ तज्यो तुम प्रानत नाम विमान भये तिनके वर नंदन आन । तबै सुरइन्द्र नियोगन आय, गिरिंद करी विधि न्हौन सु जाय ॥५॥ पिता-घर सौंपि गये निज धाम, कुवेर करै वसु जाम सु काम । बढै जिन दोज मयंक समान, रमैं बहु बालक निर्जर आन ॥६॥ भये जब अष्टम वर्ष कुमार, धरे अणुव्रत्त महासुखकार । पिता जब आन करी अरदास,

करौ तुम व्याह वरै मम आस ॥७॥ करी तव नाहिं रहे जगचंद, किये तुम काम कषाय जु मंद। चढे गजराज कुमारन संग, सु देखत गंगतनी सु तरंग ॥८॥ लख्यो इक रंक करै तप घोर, चहुंदिशि अगनि बलै अति जोर। कहै जिननाथ अरे सुन भ्रात, करै वहु जीवनकी मत घात ॥९॥ भयो तव कोप कहै कित जीव, जले तब नाग दिखाय सजीव। लख्यो यह कारण भावन भाय, नये दिव ब्रह्मरिषीसुर आय ॥१०॥ तबहि सुर चारप्रकार नियोग। धरी शिविका निज कंध मनोग। कियो वनमाहि निवास जिनंद, धरे व्रत चारित आनंद कंद ॥११॥ गहे तहँ अष्टमके उपवास, गये धनदत्त तने जु अवास। दयो पयदान महासुखकार, भयी पनवृष्टि तहां तिहिं वार ॥१२॥ गये तब काननमाहिं दयाल, धरयो तुम योग सबहिं अघटाल। तबै वह धूम सुकेत अयान,

भयो कमठाचरको सुर आन ॥१३॥ करै नभ गौन लखे तुम धीर, जु पूरव वैर विचार गहीर। कियो उपसर्ग भयानक घोर, चली बहु तीक्ष्ण पवन झकोर ॥१४॥ रह्यो दसहूं दिशिमैं तप छाय, लगी बहु अग्नि लखी नहिं जाय । सुरुंडनके बिन मुंड दिखाय । पड़ै जल मूसलधार अथाय ॥१५॥ तबै पद्मावति-कंथ धनिंद, चले जुग आय जहां जिनचंद । भग्यो तब रंक सु देखत हाल, लह्यो तब केवल ज्ञान विशाल ॥१६॥ दियो उपदेश महा हितकार, सुभव्यन बोधि समेद पधार । सुवर्णभद्र जहँ कूट प्रसिद्ध, वरी शिव नारि लही वसुरिद्ध ॥१७॥ जजूं तुम चरन दुहूं कर जोर, प्रभू लखिये अव ही मम ओर । कहै 'बखतावर' रत्न वनाय । जिनेश हमें भवपार लगाय ॥१८॥

घत्ता ।

जय पारस देवं सुरकृत सेवं, वंदत चर्न सुनागपती । करुणाके धारी परउपगारी, शिवसुख-

कारी कर्महती ॥१६॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल।

जो पूजै मनलाय भव्य पारस प्रभु नितही,
ताके दुख सब जांय भीत व्यापै नहिं कितही।
सुख संपति अधिकाय पुत्र मित्रादिक सारे,
अनुक्रमसों शिव लहै, रतन इमि कहै पुकारे।२०

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं)

इसके बाद ५८ वें पृष्ठ मे छपी हुई निर्वाणक्षेत्र पूजा करनी चाहिये।

सप्तऋषि पूजा संस्कृत

विशद् बोध महामति दायकं, विशद् वाद् घना-घन वर्षकं। विशद् दानदया कृति पूर्वकं, ऋषिगणं गुणरत्न महंस्तुवे ॥१॥ विविध ताप निवारण चन्द्रकं, विषय सौख्य पराङ्मुख वैभवं। कलित काल कला कमनीयकं, ऋषिगणं गुणरत्न महंस्तुवे ॥ २ ॥ परम भाव सुधारस भोक्तृकं,

सकल जीवदया हित योजकं। प्रचुर दुःख भवार्णव नाशकं, ऋषिगणं गुणरत्न महं-स्तुवे॥ ३ ॥ कलुष कानन कन्द दवाग्निकं विजित मोह मदोत्कट सत्वकं। वर तपोबल साधित मुक्तिकं, ऋषिगणं गुणरत्न महंस्तुवे।४। अखिल नाकधराधिप वन्दितं, मनुजनाथ नता-नत मस्तकं। द्विगुण षट्क तपोवन रक्षकं, ऋषिगणं गुणरत्न महंस्तुवे ॥ ५ ॥ भवसमुद्र सुतारण नौसमं, नव तरैर्जिन मार्ग सुदीपकं। समिति पंच सदा हृदि धारकं, ऋषिगणं गुणरत्न महंस्तुवे ॥ ६ ॥ कनक कांति समं दृढ़ देहकं, कुमति जाड्य विनाशन भा-नुकं। मदनमानगिरे घन वज्रकं, ऋषिगणं गुणरत्न महंस्तुवे ॥७॥ कठिन कर्म कठोर कु-ठारकं, युगल वर्ण कषाय विवर्जितं। द्विगुण पंच सुधर्म महाधनं, ऋषिगणं गुणरत्न महंस्तुवे।८। मथित शास्त्र जलाब्धि समस्तकं, कथित पंच

महाभव कूपकं। विगत काल्ुष भाव भवात्मकं। ऋषिगणं गुणरत्न महंस्तुवे ॥९॥ निविड़विघ्न विनाशक दक्षकं, जिनवरेन्द्र गुणस्तव तत्परं। सुगति वीर सुशील गुणार्णवं, ऋषिगणं गुण-रत्न महंस्तुवे ॥१०॥

शार्दूल विक्रीड़ित छन्द

श्रीमद्योग पदारविंदं विशदं संसेव्य मानोजनः। संसारोरग कालकूट विषकै नाक्राम्यते कर्हिचित्। डाकिन्यादि महाग्रहादि विविधैः पीड़ादिभि र्मुच्यते, तच्छ्रीपाद सरोजकं शिवकरं श्रीसोम सेनैःस्तुतम् ॥११॥

एतत् पठित्वा प्रणमयेत् परि पुष्पांजलिं च क्षिपेत्

श्री सप्तर्द्धि गुणोपेतान् संसारा ताप वारकान् संस्थापयेऽहं महा भक्त्या सप्तर्षीन् शील सागरान् ।

ओं ह्रीं ह सर्व ग्रहारि मारि व्याघ्रादिक पीड़ा नाशकराः सप्तर्षि देवाः अत्र अवरत अवतरत संवोषट् आह्वाननं अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठ ठ स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट्। सन्निधि करणं, सन्निधापनं यंत्र स्थापनच।

जीव बोध दान मान भुक्तिमुक्ति दायकं, सार-
तार सौख्यकार बुद्धि भार धारकं। हेम कुंभ
रत्ननील नीर पूर धारकं, पूजयामि योगिपाद
युग्म पंकजं मुदा ॥१॥

ओं ह्रीं ह्रः सप्तर्द्धि युक्त सप्तर्षि मुनिभ्य. सर्वोपद्रव निवारकेभ्यः
जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जरा जन्म मृत्यु रोग शोक ताप नाशकं, जीव
राशि दुःख पाशि मोहकर्म वारकं। चारुचंद्र
कुंकुमांक सौरभाभिचंदनैः, पूजयामि योगि-
पाद युग्म पंकजं मुदा ॥२॥ गंधं

गुप्तियुक्त काममुक्त मुक्तिसौख्य वाच्छकं, क्रूर
पाप दुष्टभार रागरोष वर्जितं। पूर्णचन्द्रकांति
रूप निर्मलैः सुतन्दुलै, पूजयामि योगिपाद
युग्म पंकजं मुदा ॥३॥ अक्षतं

ख्याति कीर्ति कान्ति बुद्धि शुद्धिभाव दायकं,
कर्मवृक्ष मूलवह्नि शीलभाव भावकं। सारपुष्प
पारिजात चम्पकैः सुगन्धिकैः, पूजयामि योगि-
पाद युग्म पंकजं मुदा ॥४॥ पुष्पं

क्रोधमानलोभमोह वैरिभाव भेदकं शुद्धचित्त धर्मवित्त नित्यानित्य दर्शकं। सार्पिपक्क दुग्ध युक्त तुष्टि पुष्टि दायकैः, पूजयामि योगिपाद युग्म पंकजं मुदा ॥५॥ चरुं

ज्ञानरत्न दीप कान्ति भाषितं सुतीव्रकं सप्त तत्व काल षट्क काय षट्क दर्शितं। हेमजात शुद्धपात्र चन्द्र दीप्ति भासुरैः, पूजयामि योगि-पाद युग्म पंकजं मुदा ॥६॥ दीपम्

अष्टकर्म काष्ठभार शुक्लवह्नि भस्मितं, गन्ध-लुब्ध भव्यभृङ्ग पाद युग्म सेवितं। देवदारु गंध सार धूप धूम्र सद्घ घटैः पूजयामि योगिपाद युग्म पंकजं मुदा ॥७॥ धूपम्

मोक्ष सौख्य सत्स्वरूप लब्ध पार वर्जितं, नित्य तृप्ति चित्ततृप्ति यस्य मौन निर्भरं। नारिकेल चोचमोच पुंग दाड़िमैः फलैः पूजयामि योगिपाद युग्म पंकजं मुदा ॥८॥ फलं०

पाथेय गंधाक्षत चारु पुष्पै नैवेद्यकै दीपफला-

दि धूपै रर्घं प्रदेयं मुनि सोमसेनैः कुर्वन्तु शांतिं सततं जनानाम् ॥६॥ अर्घं

प्रत्येक पूजा

विगत कलुष भारस्त्यक्त नारी प्रसंगो विशद ललित वाचा छिन्न मोहारि पाशः। शिवद सुर समन्यु स्तस्य पादारविन्दौ विमल कमल मुख्यैः पूजये चारु भक्त्या ॥१॥

ओं ह्रीं ह्रः सर्वोपद्रवारि मारि शाकिनी डाकिनी कुशावह्नि भगंदरो द्भवाल्य मृत्यु विनाशनाय सुर मन्यवे समृद्धि संप्राप्तये जलं गंध मित्यादि अर्घम्।

सकल गुण समेता सार सिद्धान्त वेत्ता कलि-मल कलि मुक्ता सौख्यकर्ता श्री मन्युः। विषम मदन हर्ता तस्य पादारविन्दौ विमल कमल मुख्यैः पूजये चारु भक्त्या ॥२॥

ओं ह्री ह्रः सर्वोपद्रवारि मारि शाकिनी डाकिनी कुशावह्नि भगन्दरोद्भवाल्य मृत्यु विनाशनाय विपुल विमल युक्त श्रीमन्यवे मुनये जल गंध मित्यादि अर्घम्।

कनक सदृश कायः श्री निचयः प्रात नाम.

विषय वन सुवह्नि धर्म वर्षाधिकारी। कुमति वचनहर्ता तस्य पादारविन्दौ विमल कमल मुख्यैः पूजये चारु भक्त्या ॥३॥

ओं ह्रीं ह्रः निष्ठीवनोद्रावित सर्वोपद्रव कुष्ठादि पिशाचादि विघ्न विनाशनाय श्री निचयाय मुनये जलगंध मित्यादि अर्घं।

विमल तर सुवोधात् प्राप्त वैराग्य भारः कनक तृण समानं यस्य चित्ते वभूव। सकल वचन रूपस्तस्य पादार विन्दौ विमल कमल मुख्यैः पूजये चारु भक्त्या ॥४॥

ओं ह्रीं ह्रः सर्वाङ्गोत्थमलहत सर्वोपद्रवारि मारि बिनाशने सर्व सुन्दर मुनये जलमित्यादि अर्घम्।

अमर नर सुरेन्द्रै सेव्यमानो यतीन्द्रः शिवपद पदधारी श्रीजय ज्ञान दानी। विकट मदन दण्ड स्तस्य पादार विन्दौ, विमल कमल मुख्यैः पूजये चारु भक्त्या ॥५॥

ओं ह्रीं ह्रः विप्रसोपद्रव निवारक सर्व शान्ति प्रकाशक श्रीजय दानिने मुनये जल मित्यादि अर्घम।

भवकुशानिध पोतं पापपंकादि दूरं जयति विष्ठं

त कीर्ति ध्वानि दग्धाष्ट कर्म्माः। पुरुष विनय लोभ स्तस्य, पादार विन्दौ विमल कमल मुख्यैः पूजये चारु भक्त्या ॥६॥

ओं ह्रीं ह्रः मित्रर्द्धि कृत्स्नंतोषकस्नोपद्रव निवारण विनय लालसाय मुनये जलमित्यादि अर्घम्।

परमत मत भेत्ता ज्ञान दीप्त्या समेत ललित वचन बक्ता-क्रोध दावाग्नि मेघः। शिव सुख जय मित्र स्तस्य पादार विन्दौ विमल कमल मुख्यैः पूजये चारु भक्त्या ॥७॥

ओं ह्रीं ह्रः क्षय युक्कुनखादि सर्वोपद्रव विनाशन तत्पर जय मित्राय मुनये जलमित्यादि अर्घम्।

श्रीदेवमन्युर्जय मित्र नाम्ना श्रीमन्युवाक् श्रीनिचये विधानो, जयादि दानो विनयादि लोलः सर्वादिरन्ते वर सुन्दराख्यः॥ एते विशिष्ठाः मुनयः पवित्रा सप्तर्द्धि युक्ताः शिवदान दक्षाः। गृह्णन्तु पुष्पांजलि मर्घ्य युक्तं कुर्वन्तु शान्तिं सततं जनानाम्॥ जलधारा॥

ओं ह्रीं ह्रः सर्वोपद्रव विघ्न विनाशकेभ्यः श्री सुरमन्यु श्रीमन्यु

श्री निचय जय विनयलालस सर्वसुन्दर जयमित्राख्येभ्यः सप्तर्द्धि युक्तेभ्यः सप्तर्षिभ्यः पूर्णार्घ्यं।

श्री मूल संघे वरपुष्कराख्ये गच्छे सुजातो गुणभद्र सूरिः। तस्येह पट्टे यति सोमसेनः, करोतु वारम्वर शान्ति धारा॥

इति शान्तिधारा।

आरोग्यं धनधान्य कीर्ति विशदं राज्यं च सौख्यं यशः। कल्याणं शुभ गोत्र पुत्र वनिता ज्ञानं तपो भावना॥ चक्रित्वं सुर राज्य राज पदवी सर्वज्ञ मोक्षास्पदं। भूयात् सप्त महर्षि पूजन तया सप्तर्द्धि यो वैभवः॥

पुष्पांजलि।

जयमाला

देवाधीश किरीट कोटि जटिता प्रोत्तुङ्ग रत्नप्रभाः। जालाभिः प्रतियस्य युग्म चरणे वृक्षा विवा शोकजा॥ प्रात र्वादि नत· स एव भगवान्ये षामृषीणां सदा। चित्ते तिष्ठति पाद पद्म युगलं ते आप्त पूजे मुदा॥१॥ मुनि सुव्रत जिन देव

दयाला, हरिकुल कमल विनय जग पाला। विघ्नहर पाटन नयर मझारा, सुर नर असुर पशुपसुख कारा ॥२॥ तदअवसर दशरथ सुत रामा, दश मुख कन्दन जय गत सुधामा। मथुरापुरि अरिधन सुगत राया, अति बल छल कृत हंत मथुराया ॥३॥ गरुड़पति मन-सिज नत विकोपाः, तद् क्षण समया पात बिरुपा। प्रतिपुर बितरित दुष्ट विरोगा, प्रलय कृतसकल सजन सुभोगा ॥४॥ द्वादश वत्सर जात निवासा, हाहा करे जनति विलासा। तत्पुरे ब्रह्म मुनीश्वर सारा, वर्षा काले स्थिति गुण धारा ॥५॥ सप्त ऋषीश्वर ऋद्धिवर युक्ता, विषय विमान विमत्सर मुक्ता। पंच महाव्रत पालन वीरा, पंचाश्चर्य सुकारक धीरा ॥६॥ पंचमगति साधन बल सेना, पंचाचार विचार विधाना। जन्म जरामय मरण विहीना, शिव-पद साधन साध्य विलीना ॥७॥ डाकिनि

शाकिनि रोग विनाशा, स्वजन सुपरिजनैर मृदासा॥ प्रथम सुरमन्यु मुनिवर चंदा, शीतल संस्पर्द्धिक अर विन्दा ॥८॥ श्री मन्यु नयनन शुभ नामा, विपुल तनुक्रत सुख कामा। श्री निचय तृतीय परम सुयोगा। निष्ठीवन द्रवित मद रोगा ॥९॥ सर्व सुन्दर यतीश चतुर्थः हनति व्याधि सह्मल तनुस्थ। पंचम श्रीजय शुभ ध्यानी, विषय रोग हरै सुख ज्ञानी ॥१०॥ विनय विलास बहु पाप विनिष्ठा, बहु वेद विनाशक सम पुष्ठाः। सप्तम जय मित्र गुण विशाला, क्षयनिधि दान सु धनमाला ॥११॥ येषां दर्शन पाप विनाशाः, येषां दर्शन सौख्य विधाना। पूजा येषां व्याधि विधाता। पूजा येषां मुक्ति विधाता ॥१२॥ पूजा येषां सुरपद दाता, पूजा येषां ज्ञान सुमाता। येषां स्तुति कलि मल वलि टाला। येषां स्तुति शिवपद सुख वाला ॥१३॥ येषां स्तुति दुर्गतिहि निवारी।

येषां स्तुति अमरज सुखकारी ॥ मूर्ति येषां पीड़ा हर्ता । मूर्ति येषां सिद्धिं कर्ता ॥१४॥ मूर्ति येषां शोके पूज्या, मूर्ति येषां मुक्ति-योज्या। शान्ति र्याता तत्र महान्ता,लोकैः पूर्णा नगर सुधामता ॥१५॥ सप्त ऋषीश्वर पूजा यंत्रं, तस्योपरि नहि अवर सुमंत्रं । चरण कमल सेवक जन मान्या, इन्द्र नरेन्द्र गणाधर पुण्या ॥१६॥ येषां पूजा परम पवित्रा, नित्यं साध्या पाप लवित्रा । विमल गुण निधानं, प्राप्त कल्याण भारं । गुरु तरु हत मारा लब्ध सौख्य प्रकारा । अमर पद सुरंगा, सोमसें नोथ भंगा, तव चरण तरंगा , सेव्यते प्राप्त भंगा ॥१७॥

इति श्री सप्तर्षि पूजा समाप्त । इत्याशीर्वादः ।

अथ महार्घं ।

गीता छन्द ।

मैं देव श्री अर्हंत पूजूं सिद्ध पूजूं चाव सों ।

आचार्य श्रीउवज्झाय पूजूं साधु पूजूं भाव सों॥ अर्हंत भाषित वैन पूजूं द्वादशांग रची गनी। पूजूं दिगम्बर गुरुचरन शिवहेत सब आशा घनी॥ सर्वज्ञ भाषित धर्म दश विधि दया मय पूजूं सदा। जजि भावना षोड़शरतनत्रय जा बिना शिव नहिं कदा॥ त्रैलोक्यके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं। पंचमेरु नंदीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूं॥ कैलाश श्री सम्मेद गिर गिरनार मैं पूजूं सदा। चंपापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा॥ चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र बिदेह के। नामावली इक सहस बसु जयहोय पति शिव गेहके॥

दोहा।

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज पद पूजहूं, बहु विध भक्ति बढ़ाय॥

ओं ह्रीं अर्हन्तजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी द्वादशांग जिनवाणी, दशलाक्षणिक धर्म सोलहकारण भावना

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्ररत्नत्रय, तीनलोक संबंधि कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय, नंदीश्वर द्वीप सम्बन्धि बावन जिन चैत्यालय, श्रीसम्मेदशिखर कैलाशगिर गिरनार चंपापुर पावापुर आदि सिद्ध क्षेत्र अतिशय क्षेत्र, विद्यमान बीस तीर्थंकर, भगवानके एक हजार आठ नाम श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जलाद्यर्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयंभू स्तोत्र भाषा।

चौपाई।

राजविषै जुगलनि सुख कियो, राज त्याग भवि शिवपद लियो। स्वयंबोध स्वंभू भगवान, बंदौं आदिनाथ गुणखान ॥१॥ इन्द्र छीरसागर जल लाय, मेरु न्हवाये गाय बजाय। मदन विनाशक सुख करतार, बंदौं अजित अजितपदकार ॥२॥ शुकल ध्यानकरि करमविनाशि, घाति अघातिसकल दुखराशि। लह्यो मुकतिपदसुख अधिकार, बंदौं संभव भवदुख टार ॥३॥ माता पच्छिम रयनमंझार; सुपने सोलह देखे सार। भूप पूंछि फल सुनि हरषाय, बंदौं

अभिनंदन मनलाय ॥४॥ सब कुवादवादी सरदार, जीते स्याद्वादधुनिधार। जैनधरम-परकाशक स्वाम, सुमतिदेवपद करहुं प्रनाम ॥५॥ गर्भ अगाऊ धनपति आय, करी नगर शोभा अधिकाय। वरसे रतन पंचदश मास। नमौं पदमप्रभु सुखकी रास ॥६॥ इंद फनिंद नरिंद त्रिकाल, बानी सुनि सुनि होहिं खुस्याल। द्वादशसभा ज्ञानदातार, नमौं सुपारसनाथ निहार ॥७॥ सुगुन छियालिस हैं तुम माहिं, दोष अठारह कोऊ नाहिं। मोह महातमनाशक दीप, नमौं चंद्रप्रभ राख समीप ॥८॥ द्वादश विध तप करम विनाश, तेरहभेद चरित परकाश। निज अनिच्छ भवि इच्छकदान, बंदौं पहुपदंत मनआन ॥९॥ भविसुखदाय सुरगतैं आय, दशविध धरम कह्यो जिनराय। आप समान सबनि सुख देह। बंदौं शीतल धर्मसनेह ॥१०॥ समता सुधा कोपविष नाश,

द्वादशांग वानी परकाश। चारसंघ-आनंद-दातार, नमौं श्रेयांस जिनेश्वर सार ॥११॥ रतनत्रय-चिरमुकुटविशाल, सोभै कंठ सुगुन मनिमाल। मुक्तिनार भरता भगवान, वासुपूज्य वंदौं धर ध्यान ॥१२ परम समाधि-स्वरूप जिनेश, ज्ञानी ध्यानी हित उपदेश। कर्मनाशि शिवसुख विलसंत, वंदौं विमलनाथ भगवंत ॥१३॥ अंतर बाहिर परिग्रह डारि, परम दिगंबरव्रतको धारि। सर्वजीवहित-राह दिखाय। नमों अनंत वचनमनलाय ॥१४॥ सात तत्त्व पंचासतिकाय, अरथ नवों छ दरब बहुभाय। लोक अलोक सकल परकास। वंदौं धर्मनाथ अविनाश ॥१५॥ पंचम चक्रवरति निधिभोग, कामदेव द्वादशम मनोग। शांतिकरन सोलम जिनराय, शांति-नाथ बंदौं हरषाय ॥१६॥ बहुथुति करे हरष नहिं होय, निंदे दोष गहैं नहिं कोय। शील वान परब्रह्मस्वरूप, बंदौं कुंथु नाथ शिवभूप

॥१७॥ द्वादशगण पूजैं सुखदाय, थुति वंदना करैं अधिकाय। जाकी निजथुति कबहुं न होय, वंदौं अरजिनवर-पद दोय ॥१८॥ पर-भव रतनत्रय-अनुराग, इह भव ब्याह समय वैराग। बालब्रह्मपूरनव्रतधार, वंदौं मल्लिनाथ जिनसार ॥१६॥ बिन उपदेश स्वयं वैराग। थुति लौकांत करै पगलाग। नमः सिद्ध कहि सब व्रत लेहिं। वंदौं मुनिसुव्रत व्रत देहिं ॥२०॥ श्रावक विद्यावंत निहार, भगतिभावसौं दियो अहार। बरसी रतनराशि ततकाल, वंदौं नमिप्रभु दीनदयाल ॥२१॥ सब जीवन की बंदी छोर, रागद्वेष द्वै बंधन तोर॥ रजमति तजि शिवतियसौं मिले, नेमिनाथ वंदौं सुख निले ॥२२॥ दैत्यकियो उपसर्ग अपार, ध्यान देखि आयो फनिधार। गयो कमठ शठ मुख कर श्याम, नमों मेरुसम पारसस्वाम ॥२३॥ भवसागरतैं जीव अपार, धरमपोतमें धरे

निहार। डूबत काढे दया विचार, वर्द्धमान वंदौं बहुबार ॥२४॥

दोहा।

चौबीसौं पदकमलजुग, वंदौं मनवचकाय।
'द्यानत' पढ़ै सुनै सदा, सो प्रभु क्यों न सहाय।

स्वयंभूस्तोत्र संस्कृत

येन स्वयंबोध मयेनलोका आश्वासिताकेचन चित्तकार्ये। प्रबोधिता केचन मोक्षमार्गे तमादि नाथं प्रणमामि नित्यं॥१॥ इन्द्रादिभिः क्षीरसमुद्रतोयैः संस्नापितो मेरुगिरौ जिनेंद्रः। यः कामजेता जनसौख्यकारी तं शुद्धभावादजितं नमामि ॥२॥ ध्यानप्रबंधप्रभवेन येन निहत्य कर्मप्रकृतीः समस्ताः। मुक्तिस्वरूपां पदवीं प्रपेदे तं संभवं नौमि महानुरागात् ॥३॥ स्वप्ने यदीया जननी क्षपायां गजादिवह्न्यं तमिदं ददर्श। यत्तात इत्याह गुरुः परोयं नौमि प्रमोदादभिनंदनं तं ॥४॥ कुवादिवादं जयता महांतं

नयप्रमाणैर्वचनैर्जगत्सु। जैनंमतं विस्तरितं च येन तं देवदेवं सुमतिं नमामि ॥५॥ यस्याव-तारे सति पितृधिष्ण्ये ववर्ष रत्नानि हरेर्निदे-शात्। धनाधिपः षण्णवमासपूर्वं पद्मप्रभं तं प्रणमामि साधुं ॥६॥ नरेंद्रसर्पेश्वरनाकनाथैर्वा-णी भवंती जगृहे स्वचित्ते। यस्यात्म बोधः प्रथितः सभायामहं सुपार्श्वं ननु तं नमामि ॥७॥ सत्प्रातिहार्यातिशयप्रपन्नो गुणप्रवीणो हतदोषसंगः। यो लोकमोहांधतमः प्रदीपश्चं-द्रप्रभं तं प्रणमामि भावात् ॥८॥ गुप्तित्रयं पंच महाव्रतानि पंचोपदिष्टाः समितिश्च येन। बभाण यो द्वादशधा तपांसि तं पुष्पदंतं प्रणमामि देवं॥९॥ ब्रह्मव्रतांतो जिन नायकेनोत्तमक्षमादिर्दशधापि धर्मः। येन प्रयुक्तो व्रतबंधबुद्ध्या तं शीतलं तीर्थकरं नमामि ॥१०॥ गणे जनानंदकरे धरांते विध्वस्तकोपे प्रशमैकचित्ते। यो द्वाद्वशांगं श्रुत-मादिदेश श्रेयांसमानौमि जिनं तमीशं ॥११॥

मुक्त्यंगनाया रचिता विशाला रत्नत्रयीशेखरता च येन। यत्कंठमासाद्य बभूव श्रेष्ठा तं वासुपूज्यं प्रणमामि वेगात् ॥१२॥ ज्ञानी विवेकी परमस्वरूपी ध्यानी व्रती प्राणिहितोपदेशी। मिथ्यात्वघाती शिवसौख्यभोजी बभूव यस्तं विमलं नमामि ॥१३॥ आभ्यंतरं वाह्यमनेकधा यः परिग्रहं सर्वमपाचकार। यो मार्गमुद्दिश्य हितं जनानां वंदे जिनं तं प्रणमाम्यनंतं ।१४। सार्द्धं पदार्था नव सप्त तत्वैः पंचास्तिकायाश्च न कालकायाः। षड्द्रव्यनिर्णीतिरलोकयुक्ति-र्येनोदिता तं प्रणमामि धर्मं ॥१५॥ यश्चक्रवर्ती भुवि पंचमोभूच्छ्रीनंदनो द्वादशको गुणानां। निधिप्रभुः षोड़शको जिनेंद्रस्तं शांतिनाथं प्रणमामि भेदात् ॥१६॥ प्रशंसितो यो न विभर्ति हर्षं विराधितो यो न करोति रोषं। शीलव्रताद् ब्रह्मपदं गतो यस्तं कुंथुनाथं प्रणमामि हर्षात् ॥१७॥ यः संस्तुतो यः प्रणतः

सभायां यः सेवितोंतर्गणपूरणाय। पदच्युतैः केवलिभिर्जिनस्य देवाधिदेवं प्रणमाम्यरं तं ॥१८॥रत्नत्रयं पूर्वभवांतरे यो व्रतं पवित्रं कृतवानशेषं। कायेन वाचा मनसा विशुद्ध्या, तं मल्लिनाथं प्रणमामि भक्त्या ॥१९॥ ब्रुवन्नमः सिद्धपदाय वाक्य, मित्यग्रहीद्यः स्वयमेव लोचं। लौकांतिकेभ्यः स्तवनं निशम्य, वंदे जिनेशं मुनिसुव्रतं तं ॥२०॥ विद्यावतं तीर्थकराय तस्मायाहारदानं ददतो विशेषात्। गृहे नृपस्याजनि रत्नवृष्टिः स्तौमि प्रणामान्नयतो नमिं तं ॥२१॥ राजीमतीं यः प्रविहाय मोक्षे, स्थितिं चकारपुनरागमाय। सर्वेषु जीवेषु दयां दधानस्तं नेमिनाथं प्रणमामि भक्त्या।२२। सर्पाधिराजः कमठारितोयै,-र्ध्यानस्थितस्यैव फणावितानैः। यस्योपसर्गं निरवर्तयत्तं, नमामि पार्श्वं महतादरेण ॥२३॥ भवार्णवे जंतुसमूहमेन, माकर्षयामास हि धर्मपोतात्। मज्जंतमुद्वीक्ष्य य एनसापि,

श्रीवर्द्धमानं प्रणमाम्यहंतं ॥२४॥ यो धर्मं दशधा करोति पुरुषः स्त्री वा कृतोपस्कृतं सर्वज्ञध्वनिसंभवं त्रिकरणव्यापारशुद्धयानिशं । भव्यानां जयमालया विमलया पुष्पांजलिं दापयन्नित्यं संश्रियमातनोति सकलं स्वर्गापवर्गस्थितिं ॥२५॥

शांतिपाठ संस्कृत

(शांतिपाठ बोलते समय दोनों हाथोंसे पुष्पवृष्टि करते रहें)

दोधकवृत्तं

शांतिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शीलगुणव्रतसंयमपात्रं । अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं, नौमि जिनोत्तममंबुजनेत्रं ॥१॥ पंचममीप्सितचक्रधराणां, पूजितमिन्द्रनरेन्द्रगणैश्च । शांतिकरं गणशांतिमभीप्सुः षोड़शतीर्थंकरं प्रणमामि ॥२॥ दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिर्दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ । आतपवारणचामरयुग्मे यस्य वि-

भाति च मंडलतेजः ॥३॥ तं जगदर्चितशां-
तिजिनेन्द्रं शांतिकरं शिरसा प्रणमामि। सर्व-
गणाय तु यच्छतु शांतिं मह्यमरं पठते परमां
च ॥ ४ ॥

वसंततिलका छंद।

येऽभ्यर्चिता मुकुटकुंडलहाररत्नैः, शक्रादिभिः
सुरगणैः स्तुतपादपद्माः। ते मे जिनाः प्रवर-
वंश जगत्प्रदीपा स्तीर्थंकराः सततशांतिकरा
भवन्तु ॥ ५ ॥

इन्द्रवज्रा।

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्यत-
पोधनानां। देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु
शांतिं भगवान् जिनेन्द्रः ॥६॥

स्रग्धरावृत्तं।

क्षेमं सर्व प्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको
भूमिपालः। काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा
व्याधयो यांतु नाशं। दुर्भिक्षं चौरमारी क्षण-

मपि जगतां मास्मभूज्जीवलोके, जैनेन्द्रं धर्म-चक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ॥७॥

अनुष्टुप्।

प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञान भास्कराः।
कुर्वंतु जगतः शांतिं वृषभाद्या जिनेश्वराः ॥८॥

प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः।

अथेष्ट प्रार्थना।

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः
सद्वृत्तानां गुणगणकथादोषवादे च मौनं।
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्त्वे
संपद्यंतां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः ॥९॥

आर्यावृत्तं।

तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पदद्वये लीनं। तिष्ठतु जिनेंद्र! तावद्यावन्निर्वाणसंप्राप्तिः ॥१०॥ अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं। तं खमउ णाणदेव य मज्झवि दुक्खक्खयं दिंतु ॥११॥ दुःक्खक्खओ कम्म-क्खओ, समाहिमरणं च बोहिलाहो य। मम

होउ जगतबान्धव तव, जिणवर चरणसरणेण ॥

संस्कृत प्रार्थना।

त्रिभुवनगुरो! जिनेश्वर! परमानन्दैककारणं कुरुष्व। मयि किंकरेत्र करुणा यथा तथा जाय ते मुक्तिः ॥१३॥ निर्विण्णोहं नितरामर्हन् बहुदुक्खया भवस्थित्या। अपुनर्भवाय भवहर कुरु करुणामत्र मयि दीने ॥ १४ ॥ उद्धर मां पतितमतो विषमाद्‌ भवकूपतः कृपां कृत्वा। अर्हन्नलमुद्धरणे त्वमसीति पुनः पुनर्वच्मि ॥ १५॥ त्वं कारुणिकः स्वामी त्वमेव शरणं जिनेश! तेनाहं। मोहरिपुदलितमानं फूत्करणं तव पुरः कुर्वे ॥१६॥ ग्रामपतेरपि करुणा परेण केनाप्युपद्रुते पुंसि। जगतां प्रभो! न किं तव, जिन! मयि खलु कर्मभिः प्रहते ॥१७॥ अपहर मम जन्म दयां, कृत्वैत्येकवचसि वक्तव्यं। तेनातिदग्ध इति मे देव! बभूव प्रलापित्वं ॥ १८॥ तव जिनवर चरणाब्जयुगं करुणामृतशी-

तलं यावत्। संसारतापतप्तः करोमि हृदि तावदेव सुखी ॥१९॥ जगदेकशरण भगवन्! नौमि श्रीपद्मनंदितगुणौघ! किं बहुना कुरु करुणामत्र जने शरणमापन्ने ॥२०॥

परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

भाषा प्रार्थना।

पं० पन्नालाल विशारद महरोनी कृत।

हे त्रिभुवन गुरु जिनवर, परमानन्दैकहेतु हितु हितकारी। करहु दया किंकर पर प्राप्ती ज्यों होय मोक्ष सुखकारी ॥१॥ हे अर्हन् भवहारी, भवथितिसे मैं भयो दुःखी भारी। दया दीन पर कीजे, फिर नहिं अब वास होय दुखकारी ॥२॥ जग उद्धार प्रभो! मम करि उद्धार विषमभव ज़लसे। बारबार यह विनती करता हूं मैं पतित दुःखी दिलसे ॥३॥ तुम प्रभु करुणा सागर, तुम ही अशरण शरण जगत स्वामी। दुःखित मोहरिपुसे मैं, यातैं करता

पुकार जिन नामी ॥ ४ ॥ एक गांव पति भी जब, करुणा करता प्रबल दुःखित जनपर। तब हे त्रिभुवनपति तुम करुणा क्या नहीं करोगे फिर मुझपर ॥५॥ विनती यही हमारी, मेटो संसार भ्रमण भयकारी। दुःखी भयो मैं भारी, तातैं करता पुकार बहुबारी ॥६॥ करुणामृतकर शीतल, भवतप हारी चरण कमल तेरे। रहैं हृदयमें मेरे जबतक हैं कर्म मुझे जगघेरे॥७॥ पद्मनंदि गुण वंदित, भगवन्! संसार शरण उपकारी। अंतिम विनय हमारी, करुणा कर करहु भव जलधि पारी ॥८॥

विसर्जन संस्कृत।

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया।
तत्सर्वंपूर्णमेवास्तु त्वत्प्रासादाज्जिनेश्वर ॥१॥
आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनं।
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥२॥
मंत्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च।

तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥३॥
आहूता ये पुरा देवा लब्धभागा यथाक्रमं।
ते मयाऽभ्यर्चिता भक्त्या सर्वे यांतु यथास्थितिं।४॥
सर्वमंगल मांगल्यं सर्व कल्याणकारकम्।
प्रधानं सर्व धर्माणां जैनं जयतु शासनम् ॥५॥

शास्त्र-पूजा विधान

शास्त्रजीको उच्चासन पर विराजमान करके पर्युषण पर्वमें निम्न प्रकार पूजा करनी चाहिये।

सरस्वती पूजा

जनम जरा मृतु छय करै, हरै कुनय जड़रीति॥
भसागरसों ले तिरै, पूजै जिनवचप्रीति ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि। अत्र अवतर अवतर। संवौषट्। ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

छीरोदधिगंगा, विमल तरंगा, सलिल-अभंगा, सुखसंगा। भरि कंचन झारी, धार निकारी,

तृषा निवारी, हितचंगा ॥ तीर्थंकरकी धुनि, गणधरने सुनि, अंग रचे चुनि, ज्ञानमई। सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै जलं निर्वपामीति स्वाहा

करपूर मंगाया, चंदन आया, केशर लाया, रंग भरी। शारदपद वंदों मन अभिनंदों, पापनिकंदों दाह हरी ॥ तीर्थंकर० ॥

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै चंदनं निर्वपामीति०

सुखदास कमोदं, धारकमोदं, अति अनुमोदं चंदसमं। बहुभक्ति बढ़ाई, कीरति गाई, होहु सहाई, मात ममं ॥ तीर्थंकर० ॥

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अक्षतान् निर्वपामीति०

बहुफूलसुवासं, विमलप्रकाशं, आनंदरासं लाय धरे। मम काम मिटायो, शील बढ़ायो, सुख उपजायो, दोष हरे ॥ तीर्थंकर० ॥

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

पकवान बनाया, बहुघृत लाया, सब विध भाया,

मिष्ट महा। पूजूं थुति गाऊं, प्रीति बढ़ाऊं,
क्षुधा नशाऊं हर्ष लहा॥ तीर्थं०॥

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै नैवेद्यं निर्वपामीति

करि दीपक जोतं, तमछय होतं, ज्योति उदोतं,
तुमहिं चढ़ै। तुम हो परकाशक, भरमविना-
शक हम घट भासक ज्ञान बढ़ै॥ तीर्थं०॥

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै दीपं निर्व०

शुभगंध दशोंकर, पावकमें धर, धूप मनोहर
खेवत हैं। सब पाप जलावें, पुण्य कमावें, दास
कहावैं सेवत हैं॥ तीर्थं०॥

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै धूपं निर्वपामीति स्वाहा

बादाम छुहारी, लोंग सुपारी, श्रीफल भारी,
ल्यावत हैं। मनवांछित दाता, मेट असाता,
तुम गुन माता ध्यावत हैं॥ तीर्थं०

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै फलं निर्व०

नयननसुखकारी. मृदुगुनधारी. उज्ज्वलभारी.
मोलधरें। शुभगंधसम्हारा, वसन. निहारा, तुम

तनधारा ज्ञान करै ॥ तीर्थं० ॥

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै वस्त्रं निर्व०

जलचंदन अच्छत, फूल चरू चत, दीप धूप अति फल लावैं। पूजाको ठानत, जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुख पावैं ॥ तीर्थं०॥

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्व०

जयमाला, सोरठा।

ओंकार धुनिसार, द्वादशांगवाणी विमल।
नमों भक्ति उर धार, ज्ञान करै जड़ता हरै॥

पहलो आचारांग बखानो। पद अष्टादश सहस प्रमानो। दूजो सूत्रकृतं अभिलाषं। पद छत्तीस सहस गुरु भाषं ॥१॥ तीजो ठाना अंग सुजानं। सहस वियालिस पदसरधानं॥ चौथो समवायांग निहार। चौसठ सहस लाख इक धारं ॥२॥ पंचम व्याख्याप्रज्ञपति दरसं। दोय लाख अट्ठाइस सहस। छट्ठो ज्ञातृकथा विसतारं। पांचलाख छप्पन हज्जार ॥३॥ सप्तम उपासकाध्ययनंगं। सत्तर सहस ग्यारलख भंगं।

अष्टम अंतकृत दस ईसं। सहस अट्ठाइस लाख तेईस ॥४॥ नवम अनुत्तरदश सुविशालं। लाख बानवै सहस चवालं ॥ दशम प्रश्नव्याकरण विचार। लाख तिरानव सोल हजार ॥५॥ ग्यारम सूत्रविपाक सु भाखं। एक कोड चौरासी लाख॥ चार कोडि अरु पन्द्रह लाख। दो हजार सब पद गुरुशाखं ॥६॥ द्वादश दृष्टिवाद पनभेद। इकसौ आठ कोडिपनवेदं। अडसठ लाख सहस छप्पन हैं। सहित पंचपद मिथ्याहन हैं ॥७॥ इक सौ बारह कोडि बखानो। लाख तिरासी ऊपर जानो ॥ ठावन सहस पंच अधिकाने। द्वादश अंग सर्व पद माने ॥ ८ ॥ कोडि इकावन आठ हि लाखं। सहस चुरासी छहसौ भाखं॥ साढ़े इकीस शिलोक बताये। एक एक पदके ये गाये ॥९॥

दोहा।

जा बानीके ज्ञानमें. सूझै लोक अलोक।

'द्यानत' जग जयवत हो, सदा देत हौं धोक॥

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै महार्घं निर्व०

तत्त्वार्थ सूत्र पूजा।

त्रैकाल्य द्रव्यषट्कं नवपदसहित जीवषट्कायलेश्याः।
पंचान्ये चास्तिकाया व्रतसमितिगतिज्ञानचारित्रभेदा॥
इत्येतन्मोक्षमूलं त्रिभुवनमहितैः प्रोक्तमर्हद्भिरीशैः।
प्रत्येति श्रद्दधाति स्पृशति च मतिमान् यः स वै शुद्धदृष्टिः॥१
सिद्धे जयप्पसिद्धे, चउविहाराहणाफलं पत्ते।
वंदित्ता अरहंते, वोच्छं आराहणा कमसो॥ २॥
उज्जोवणमुज्जवणंणिव्वाहणं साहणं च णित्थरणं।
दंसणणाणचरित्तं तवाणमाराहणा भणिया॥ ३॥
मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृतां।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वंदे तद्गुणलब्धये॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ॥१॥ तत्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनं ॥२॥ तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥३॥ जीवाजीवास्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वं ॥४॥ नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ॥५॥ प्रमाणनयैरधिगमः ॥६॥ निर्देश-

स्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानतः ॥७॥
सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालांतरभावाल्पबहुत्वैश्च ॥
॥८॥ मतिश्रुतावधिमनः पर्ययकेवलानि ज्ञानं
॥९॥ तत्प्रमाणे ॥१०॥ आद्ये परोक्षं ॥११॥
प्रत्यक्षमन्यत् ॥१२॥ मतिः स्मृतिः संज्ञा चिंता-
भिनिबोध इत्यनर्थांतरं ॥१३॥ तदिंद्रियानिंद्रि-
यनिमित्तं ॥१४॥ अवग्रहेहावायधारणाः ॥१५॥
बहुवहुविधक्षिप्रानिःसृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां
॥१६॥ अर्थस्य ॥१७॥ व्यंजनस्यावग्रहः ॥१८॥
न चक्षुरनिंद्रियाभ्यां ॥१९॥ श्रुतं मतिपूर्वं द्व्य-
नेकद्वादशभेदं ॥२०॥ भवप्रत्ययोवधिर्देवनार
काणां ॥२१॥ क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः
शेषाणां ॥२२॥ ऋजुविपुलमती मनः पर्ययः
॥२३॥ विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ॥२४॥
विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधिमनः पर्यययोः
॥२५॥ मतिश्रुतयोर्निबंधो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु
॥२६॥ रूपिष्ववधेः ॥२७॥ तदनंतभागे मनः

पर्ययस्य ॥२८॥ सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य॥२९॥ एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ॥३०॥ मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च ॥३१॥ सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥ ३२ ॥ नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरूढैवंभूता नयाः ॥३३॥

ज्ञान दर्शनयोस्तत्त्वं नयाना चैव लक्षणम्।
ज्ञानस्य च प्रमाणत्त्व मध्यायेऽस्मिन्निरूपितम् ॥१॥

उदक चदनतंदुलपुष्पकै श्चरुसुदीप सुधूप फलार्घकैः। धवल मंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिन सूत्र महंयजे ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्री मदुमास्वामि विरचिते तत्त्वार्थसूत्रे प्रथम सूत्राय अर्घं।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिकपारिणामिकौ च ।१। द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथाक्रमं ।२। सम्यक्त्वचारित्रे ।३। ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च ।४। ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपंचभेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंय-

माश्च ।५। गतिकषायलिंगमिथ्यादर्शनाज्ञाना-
संयतासिद्धलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकषड्भेदाः
।६। जीवभव्याभव्यत्वानि च ।७। उपयोगो
लक्षणं ।८। स द्विविधोऽष्टचतुर्भेदः ।९। संसा-
रिणो मुक्ताश्च ।१०। समनस्कामनस्काः ।११।
संसारिणस्त्रसस्थावराः ।१२। पृथिव्यप्तेजोवायु-
वनस्पतयः स्थावराः ।१३। द्वींद्रियादयस्त्रसाः
।१४। पंचेंद्रियाणि ।१५। द्विविधानि ।१६। निर्वृ-
त्त्युपकरणे द्रव्येंद्रियं ।१७। लब्ध्युपयोगौ भावें-
द्रियं ।१८। स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्राणि ।१९।
स्पर्शरसगंधवर्णशब्दास्तदर्थाः ।२०। श्रुतमनिं-
द्रियस्य ।२१। वनस्पत्यंतानामेकं ।२२। कृमिपि-
पीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ।२३।
संज्ञिनःसमनस्काः ।२४। विग्रहगतौ कर्मयोगः
।२५। अनुश्रेणि गतिः ।२६। अविग्रहा जीवस्य
।२७। विग्रहवती च संसारिणः प्राक्चतुर्भ्यः
।२८। एकसमयाऽविग्रहा ।२९। एकं द्वौ त्रीन्वा-

नाहारकः ।३०। संमूर्छनगर्भोपपादा जन्म ।३१। सचित्तशीतसंवृताःसेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ।३२। जरायुजांडजपोतानां गर्भः ।३३। देवनारकाणामुपपादः ।३४। शेषाणां सम्मूर्च्छनं ।३५। औदारिकवैक्रियिकाहारकतैजसकार्मणानि शरीराणि ।३६। परं परं सूक्ष्मं ।३७। प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक्तैजसात् ।३८। अनंतगुणे परे ।३९। अप्रतीघाते ।४०। अनादिसंबंधे च ।४१। सर्वस्य ।४२। तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ।४३। निरुपभोगमंत्यं ।४४। गर्भसंमूर्च्छनजमाद्यं ।४५। औपपादिकं वैक्रियिकं ।४६। लब्धिप्रत्ययं च ।४७। तैजसमपि ।४८। शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव ।४९। नारकसंमूर्च्छिनो नपुंसकानि ।५०। न देवाः ।५१। शेषास्त्रिवेदाः ।५२। औपपादिकचरमोत्तमदेहाऽसंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ।५३।

उदक चदनतंदुलपुष्पकै श्चरु सुदीप सुधूप फलार्घकै धवलमंग-

लगानरवा कुले जिनगृहे जिनसूत्र महंयजे ॥ २॥
ओं ह्रीं श्रीमदुमास्वामि विरचिते तत्त्वार्थसूत्रे द्वितीय सूत्राय अर्घं।

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

रत्नशर्कराबालुकापंकधूमतमोमहातमःप्रभाभूमयो घनांबुवाताकाशप्रतिष्ठाः सप्ताऽधोऽधः ।१। तासु त्रिंशत्पंचविंशतिपंचदशदशत्रिपंचोनैक नरकशतसहस्राणि पंच चैव यथाक्रमं ।२। नारका नित्याऽशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रियाः ।३। परस्परोदीरितदुःखाः ।४। संक्लिष्टाऽसुरोदीरितदुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः ।५। तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्त्वानांपरा स्थितिः ।६। जंबूद्वीपलवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ।७। द्विर्द्विर्विष्कंभाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतयः ।८। तन्मध्येमेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रविष्कंभो जंबूद्वीपः ।९। भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ।१०। तद्विभाजिनः पूर्वापरायता

हिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वताः ।११। हेमार्जुनतपनीयवैडूर्यरजतहेममयाः ।१२। मणिविचित्रपार्श्वा उपरिमूले च तुल्यविस्ताराः ।१३। पद्ममहापद्मतिगिंछकेशरिमहापुंडरीकपुंडरीकाह्रदास्तेषामुपरि ।१४। प्रथमो योजनसहस्रायामस्तदर्द्धविष्कंभो ह्रदः ।१५। दशयोजनावगाहः ।१६। तन्मध्ये योजनं पुष्करं ।१७। तद्द्विगुणद्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च ।१८। तन्निवासिन्यो देव्यः श्रीह्रीधृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिकपरिषत्काः ।१९। गंगासिंधुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकांतासीतासीतोदानारीनरकांतासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदाः सरितस्तन्मध्यगाः ।२०। द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः । २१ । शेषास्त्वपरगाः । २२ । चतुर्दशनदीसहस्रपरिवृता गंगासिंध्वादयो नद्यः। २३ । भरतः षड्विंशतिपंचयोजनशतविस्तारः षट्चैकोनविंशतिभागा योजनस्य

। २४। तद्‌द्विगुणद्विगुणविस्तारा वर्षधरवर्षा विदेहांताः। २५। उत्तरा दक्षिणतुल्याः।२६। भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्यां। २७। ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिताः। २८। एकद्वित्रिपल्योपमस्थितयो हैमवतकहारिवर्षकदैवकुरवकाः। २९। तथोत्तराः। ३०। विदेहेषु संख्येयकालाः।३१। भरतस्य विष्कंभो जंबूद्वीपस्य नवतिशतभागः। ३२। द्विर्धातकीखंडे। ३३। पुष्करार्द्धे च। ३४। प्राङ्मानुषोत्तरान्मनुष्याः। ३५। आर्याम्लेच्छाश्च। ३६। भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः। ३७। नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमांतर्मुहूर्ते। ३८। तिर्यग्योनिजानां च। ३९।

उदक चंदनतंदुलपुष्पकै श्चरुसुदीप सुधूप फलार्घकैः। धवल मंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिन सूत्र महंयजे॥ १॥

ओंह्रीं श्री मदुमास्वामि विरचिते तत्त्वार्थसूत्रे तृतीय सूत्राय अर्घं।

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

देवाश्चतुर्णिकायाः॥१॥ आदितस्त्रिषु पीतांतलेश्याः॥२॥ दशाष्टपंचद्वादशविकल्पाः कल्पो-

पपन्नपर्यंताः ॥३॥ इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशत्पारिषदात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्णकाभियोग्यकिल्विषिकाश्चैकशः ॥४॥ त्रायस्त्रिंशल्लोकपालवर्ज्या व्यंतरज्योतिष्काः ॥५॥ पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ॥६॥ कायप्रवीचारा आ ऐशानात् ॥७॥ शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनः प्रवीचाराः ॥८॥ परेऽप्रवीचाराः ॥९॥ भवनवासिनोसुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीपदिक्कुमाराः ॥१०॥ व्यंतराः किन्नरकिंपुरुषमहोरगगंधर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः ॥११॥ ज्योतिष्काः सूर्याचंद्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश्च ॥१२॥ मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके ॥१३॥ तत्कृतः कालविभागः ॥१४॥ वहिरवस्थिताः ॥ १५ ॥ वैमानिकाः ॥१६॥ कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च ॥१७॥ उपर्युपरि ॥१८॥ सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मब्रह्मोत्तरलांतवकापिष्टशुक्रमहाशुक्रशतारसहस्रारेष्वानतप्राणतयोरारणाच्युतयोर्न-

वसु ग्रैवेयकेषु विजयवैजयंतजयंतापराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥१९॥ स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्या विशुद्धींद्रियावधिविषयतोधिकाः ॥२०॥ गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतो हीनाः ॥२१॥ पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु ॥२२॥ प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ॥२३॥ ब्रह्मलोकालया लौकांतिकाः ॥२४॥ सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधारिष्टाश्च ॥२५॥ विजयादिषु द्विचरमाः ॥२६॥ औपपादिकमनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः ॥२७॥ स्थितिरसुरनागसुपर्णद्वीपशेषाणां सागरोपम त्रिपल्योपमार्द्धहीनमिताः ॥२८॥ सौधर्मैशानयोः सागरोपमेऽधिके ॥२९॥ सानत्कुमारमाहेन्द्रयोः सप्त ॥३०॥ त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपंचदशभिरधिकानि तु ॥ ३१ ॥ आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥३२॥ अपरा पल्योपमधिकं ॥३३॥ परतः परतः पूर्वापूर्वानंतराः ॥

३४॥ नारकाणां च द्वितीयादिषु ॥३५॥ दशवर्षसहस्राणि प्रथमायां ॥३६॥ भवनेषु च ॥३७॥ व्यंतराणां च ॥३८॥ परापल्योपममधिकं॥३९॥ ज्योतिष्काणां च ॥ ४० ॥ तदष्टभागोऽपरा ॥ ४१ ॥ लौकांतिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषां ॥४२॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकै. ।
धवलमगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥४॥
ओं ह्रीं श्रीमदुमास्वामि विरचिते तत्त्वार्थसूत्रे चतुर्थसूत्राय अर्घं ।
इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

अजीवकाया धर्माधर्माकाशपुद्गलाः ॥१॥ द्रव्याणि ।२। जीवाश्च ।३। नित्यावस्थितान्यरूपाणि । ४ । रूपिणः पुद्गलाः । ५ । आ आकाशादेकद्रव्याणि । ६ । निष्क्रियाणि च । ७ । असंख्येयाः प्रदेशाधर्माधर्मैकजीवानां । ८ । आकाशस्यानंताः । ९। संख्येयासंख्येयाश्च पुद्गलानां । १० । नाणोः । ११ । लोकाकाशेऽवगाहः । १२। धर्माधर्मयोः कृत्स्ने । १२ । एक-

प्रदेशादिषुभाज्यः पुद्गलानां । १४ । असंख्येय-भागादिषु जीवानां । १५ । प्रदेश संहारविस-र्पाभ्यां प्रदीपवत् । १६ । गतिस्थित्युपग्रहो ध-र्माधर्मयोरुपकारः । १७ । आकाशस्यावगाहः । १८ । शरीरवाङ्मनः प्राणापानाः पुद्गलानां । १६ । सुखदुःखजीवितमरणोपग्रहाश्च । २० । परस्परोपग्रहो जीवानां । २१ । वर्तनापरिणा-मक्रियापरत्वापरत्वे च कालस्य । २२ । स्पर्श-रसगंधवर्णवंतः पुद्गलाः ।२३। शब्दबंधसौक्ष्म्य-स्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छायातपोद्योतवंतश्च । २४। अणवःस्कंधाश्च । २५ । भेदसंघातेभ्य उत्पद्यंते । २६। भेदादणुः । २७। भेदसंघा-ताभ्यां चाक्षुषः । २८। सद्द्रव्यलक्षणं ।२६। उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् । ३०। तद्भावाव्ययं नित्यं । ३१ । अर्पितानर्पितसिद्धेः। ३२। स्नि-ग्धरूक्षत्वाद्बंधः । ३३ । न जघन्यगुणानां । ।३४। गुणसाम्ये सदृशानां ।३५। द्व्यधिका-

दिग्गुणानां तु ॥३६॥ बंधेऽधिकौपारिणामिकौ च ॥ ३७ ॥ गुणपर्ययवद्द्रव्यं ॥३८॥ कालश्च ॥३९॥ सोऽनंतसमयः ॥ ४० ॥ द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः ॥४१॥ तद्भावः परिणामः ॥ ४२ ॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकै। ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥५॥
ओं ह्रीं श्रीमदुमास्वामि विरचिते तत्त्वार्थसूत्रे पंचमसूत्राय अर्घं ।
इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे पंचमोऽध्यायः ॥५॥

कायवाङ्मनः कर्मयोगः ॥१॥ स आस्रवः ॥ २ ॥ शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य ॥३॥ सकषायाकषाययोः सांपरायिकेर्यापथयोः ॥४॥ इन्द्रियकषायाव्रतक्रियाः पंच चतुः पंच पंचविंशतिसंख्याः पूर्वस्यभेदाः ॥५॥ तीव्रमंदज्ञाताज्ञातभावाधिकरणवीर्यविशेषेभ्यस्तद्विशेषः ॥६॥ अधिकरणं जीवाजीवाः ॥ ७ ॥ आद्यं संरंभसमारंभारंभयोगकृतकारितानुमतकषायविशेषै - स्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः ॥८॥ निर्वर्तनानिक्षेपसंयोगनिसर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदाः परं ॥९॥ त-

त्प्रदोषनिह्नवमात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावरणयोः। १०। दुःखशोकतापाक्रन्दनवधपरिदेवनान्यात्मपरोभयस्थानान्यसद्वेद्यस्य। ॥११॥ भूतवृत्त्यनुकंपादानसरागसंयमादियोगः क्षांतिः शौचमिति सद्वेद्यस्य ॥१२॥ केवलिश्रुतसंघधर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ॥१३॥ कषायोदयात्तीव्रपरिणामश्चारित्रमोहस्य ॥१४॥ बह्वारंभपरिग्रहत्वं नारकस्यायुषः ॥१५॥ माया तैर्यग्योनस्य ॥१६॥ अल्पारंभपरिग्रहत्वं मानुषस्य ॥ १७ ॥ स्वभावमार्दवं च ॥१८॥ निःशीलव्रतित्वं च सर्वेषां ॥१९॥ सरागसंयमसंयमासंयमाकामनिर्जराबालतपांसि दैवस्य ॥२०॥ सम्यक्त्वं च ॥२१॥ योगवक्रताविसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः ॥ २२ ॥ तद्विपरीतं शुभस्य। ॥२३॥ दर्शनविशुद्धिर्विनयसंपन्नता शीलव्रतेष्वनतीचारोऽभीक्ष्णज्ञानोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी साधुसमाधिर्वैयावृत्यकरणमर्हदा-

चार्यबहुश्रुतप्रवचनभक्तिरावश्यकापरिहाणिर्मा-
र्गप्रभावना प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थंकरत्व-
स्य ॥२४॥ परात्मनिंदाप्रशंसे सदसद्गुणो-
च्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ॥२५॥ तद्वि-
पर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य । २६ । वि-
घ्नकरणमंतरायस्य ॥२७॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥६॥
ओं ह्रीं श्रीमदुमास्वामि विरचिते तत्त्वार्थसूत्रे षष्ठमसूत्राय अर्घं
इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे षष्ठोऽध्याय ॥६॥

हिंसानृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतं ॥१॥
देशसर्वतोणुमहती ॥२॥ तत्स्थैर्यार्थं भावना
पंच पंच ॥३॥ वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपणस-
मित्यालोकितपानभोजनानि पंच ॥४॥ क्रोध-
लोभभीरुत्वहास्यप्रत्याख्यानान्यनुवीचिभाषणं
च पंच ॥५॥ शून्यागारविमोचितावासपरोपरो-
धाकरणभैक्ष्यशुद्धिसद्धर्माविसंवादाः पंच ॥६॥
स्त्रीरागकथाश्रवणतन्मनोहरांगनिरीक्षणपूर्वरता-

नुस्मरणवृष्येष्टरसस्वशरीरसंस्कारत्यागाः पंच ॥७॥ मनोज्ञामनोज्ञेंद्रियविषयरागद्वेषवर्जनानि पंच ॥८॥ हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनं ॥ ६॥ दुःखमेव वा ॥१०॥ मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थानि च सत्वगुणाधिकक्लिश्यमानाविनयेषु ॥११॥ जगत्कायस्वभावौ वा संवेगवैराग्यार्थं ॥१२॥ प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा ॥ १३॥ असदभिधानमनृतं ॥१४॥ अदत्तादानं स्तेयं ॥१५॥ मैथुनमब्रह्म ॥१६॥ मूर्छा परिग्रहः ॥१७॥ निःशल्यो व्रती ॥१८॥ अगार्यनगारश्च ॥१६॥ अणुव्रतोऽगारी ॥२०॥ दिग्देशानर्थदंडविरतिसामायिकप्रोषधोपवासोपभोगपरिभोगपरिमाणातिथिसंविभागव्रतसंपन्नश्च ॥२१॥ मारणांतिकीं सल्लेखनां जोषिता ॥२२॥ शंकाकांक्षाविचिकित्सान्यदृष्टिप्रशंसासंस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतीचाराः ॥२३॥ व्रतशीलेषु पंच पंच यथाक्रमं ॥२४॥ बंधवधच्छेदातिभारारोपणान्नपा-

ननिरोधाः ॥२५॥ मिथ्योपदेशरहोभ्याख्यानकूटलेखक्रियान्यासापहारसाकारमंत्रभेदाः ॥२६॥ स्तेन प्रयोगतदाहृतादानविरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानोन्मानप्रतिरूपकव्यवहाराः ॥२७॥ परविवाहकरणेत्वरिकापरिगृहीतापरिगृहीतागमनानंगक्रीडाकामतीव्राभिनिवेशाः ॥२८॥ क्षेत्र वास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यप्रमाणातिक्रमाः ॥२९॥ ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रमक्षेत्रवृद्धिस्मृत्यंतराधानानि ॥३०॥ आनयनप्रेष्यप्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलक्षेपाः ॥३१॥ कंदर्प कौत्कुच्यमौखर्यासमीक्ष्याधिकरणोपभोगपरिभोगानर्थक्यानि ॥ ३२ ॥ योगदुःप्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ॥३३॥ अप्रत्यवेक्षिता प्रमार्जितोत्सर्गादानसंस्तरोपक्रमणानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ॥३४॥ सचित्तसंबंधसंमिश्राभिषवदुःपक्वाहाराः ॥३५॥ सचित्तनिक्षेपापिधानपरव्यपदेशमात्सर्यकालातिक्रमाः ॥३६॥ जीवि

तमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबंधनिदानानि ॥३७॥ अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानं ॥३८॥ विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात्तद्विशेषः ॥३९॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥७॥
ओं ह्रीं श्रीमदुमास्वामि विरचिते तत्त्वार्थसूत्रे सप्तमसूत्राय अर्घं।
इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाययोगा बंधहेतवः ॥१॥ सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते स बंधः ॥२॥ प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशास्तद्विधयः ॥३॥ आद्यो ज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनीयायुर्नामगोत्रांतरायाः ॥४॥ पंचनवद्व्यष्टाविंशतिचतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपंचभेदा यथाक्रमं ॥५॥ मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानां ॥६॥ चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धयश्च ॥७॥ सदसद्वेद्ये ॥८॥ दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विनवषोड़शभेदाः सम्यक्त्वमिथ्या-

त्वतदुभयान्यकषायकषायौ हास्यरत्यरतिशोकभ-
यजुगुप्सास्त्रीपुन्नपुंसकवेदा अनंतानुवंध्यप्रत्या-
ख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रो-
धमानमायालोभाः ॥९॥ नारकतैर्यग्योनमानुष-
दैवानि ॥१०॥ गतिजातिशरीरांगोपांगनिर्माण-
बंधनसंघातसंस्थानसंहननस्पर्शरसगंधवर्णानुपू-
र्व्यगुरुलघूपघातपरघातातपोद्योतोच्छ्वासविहा-
योगतयः प्रत्येकशरीरत्रससुभगसुस्वरशुभसू-
क्ष्मपर्याप्तिस्थिरादेययशःकीर्तिसेतराणि तीर्थ-
करत्वं च ॥११॥ उच्चैर्नीचैश्च ॥१२॥ दानला-
भभोगोपभोगवीर्याणां ॥१३॥ आदितस्तिसृ-
णामंतरायस्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोट्यः
परा स्थितिः ॥१४॥ सप्ततिर्मोहनीयस्य ॥१५॥
विंशतिर्नामगोत्रयोः ॥१६॥ त्रयस्त्रिंशत्सागरो-
पमाण्यायुषः ॥१७॥ अपरा द्वादशमुहूर्ता वेद-
नीयस्य ॥१८॥ नामगोत्रयोरष्टौ ॥१९॥ शेषा-
णामंतर्मुहूर्ता ॥२०॥ विपाकोनुभवः ॥२१॥ स

यथानाम ॥२२॥ ततश्च निर्जरा ॥२३॥ नामप्रत्यया: सर्वतो योगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिता: सर्वात्मप्रदेशेष्वनंतानंतप्रदेशा: ॥२४॥ सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यं ॥२५॥ अतोऽन्यत्पापं ॥२६॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥८॥
ओं ह्रीं श्रीमदुमास्वामि विरचिते तत्त्वार्थसूत्रे अष्टमसूत्राय अर्घं
इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे अष्टमोऽध्याय: ॥८॥

आश्रवनिरोध: संवर: ॥१॥ सगुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरीषहजयचारित्रैः ॥२॥ तपसा निर्जरा च ॥३॥सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः ॥४॥ ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गा: समितय: ॥५॥ उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्याणि धर्मः ॥६॥ अनित्याशरणसंसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्रवसंवरनिर्जरालोकबोधिदुर्ल्लभधर्मस्वाख्याततत्त्वानुचिंतनमनुप्रेक्षाः ॥७॥ मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषो-

ढव्याः परीषहाः ॥८॥ क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंश-मशकनाग्न्यारतिस्त्रीचर्यानिषद्याशय्याक्रोशव-धयाच्ञालाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कार-प्रज्ञाज्ञानादर्शनानि ॥९॥ सूक्ष्मसांपरायच्छद्म-स्थवीतरागयोश्चतुर्दश ॥१०॥ एकादश जिने ॥११॥ वादरसांपराये सर्वे ॥१२॥ ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ॥१३॥ दर्शनमोहांतराययोरदर्शना-लाभौ ॥१४॥ चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्रीनिष-द्याक्रोशयाच्ञासत्कार पुरस्काराः ॥१५॥ वेद-नीये शेषाः ॥१६॥ एकादयो भाज्या युगपदे-कस्मिन्नेकोनविंशतिः ॥१७॥ सामायिकच्छे-दोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसांपराययथा-ख्यातमिति चारित्रं ॥१८॥ अनशनावमौदर्य-वृत्तिपरिसंख्यानरसपरित्यागविविक्तशय्यासन-कायक्लेशा वाह्यं तपः ॥१९॥ प्रायश्चित्तविन-यवैयावृत्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरं ॥२०॥ नवचतुर्दशपंचद्विभेदाययथाक्रमं प्राग्ध्यानात् ॥

२१॥ आलोचनाप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्स-
र्गतपश्छेदपरिहारोपस्थापनाः ॥२२॥ ज्ञानदर्श-
नचारित्रोपचाराः ॥२३॥ आचार्योपाध्यायतप-
स्विशैक्ष्यग्लानगणकुलसंघसाधुमनोज्ञानां ॥२४॥
वाचनापृच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशाः ॥२५॥
बाह्याभ्यंतरोपध्योः ॥२६॥ उत्तमसंहननस्यैका-
ग्रचिंतानिरोधो ध्यानमांतर्मुहूर्तात् ॥२७॥ आ-
र्त्तरौद्रधर्म्यशुक्लानि ॥२८॥ परे मोक्षहेतू ॥२९॥
आर्त्तममनोज्ञस्य संप्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृ-
तिसमन्वाहारः ॥३०॥ विपरीतं मनोज्ञस्य ॥
३१॥ वेदनायाश्च ॥३२॥ निदानं च ॥३३॥ त-
दविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानां ॥३४॥ हिंसा-
नृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेशवि-
रतयोः ॥३५॥ आज्ञापायविपाकसंस्थानविच-
याय धर्म्यं ॥३६॥ शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ॥३७॥
परे केवलिनः ॥३८॥ पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्म-
क्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रियानिवर्तीनि ॥३९॥

ऽयेकयोगकाययोगायोगानां ॥ ४० ॥ एकाश्रये सवितर्कवीचारे पूर्वे ॥४१॥ अवीचारं द्वितीयं ॥४२॥ वितर्कः श्रुतं ॥४३॥ वीचारोर्थव्यंजन-योगसंक्रांतिः ॥४४॥ सम्यग्दृष्टिश्रावकविरता-नंतवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशांत - मोहक्षपकक्षीणमोहजिनाः क्रमशोऽसंख्येयगु-णनिर्जराः ॥४५॥ पुलाकवकुशकुशीलनिर्ग्रंथ-स्नातका निर्ग्रंथाः ॥४६॥ संयमश्रुतप्रतिसेव-नातीर्थलिंगलेश्योपपादस्थानविकल्पतः सा-ध्याः ॥ ४७ ॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥६॥
ओ ह्रीं श्रीमदुमास्वामि विरचिते तत्त्वार्थसूत्रे नवमसूत्राय अर्घं।
इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे नवमोऽध्याय. ॥६॥

मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शनावरणांतरायक्षयाच्च केवलं ॥१॥ बंधहेत्वभावनिर्जराभ्यां कृत्स्नकर्मविप्र-मोक्षो मोक्षः ॥२॥ औपशमिकादिभव्यत्वानां च ॥३॥ अन्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शनसि-

छत्वेभ्यः ॥४॥ तदनंतरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकांतात् ॥५॥ पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्बंधच्छेदात्तथागति परिणामाच्च ॥६॥ आविद्धकुलालचक्रवद्व्यपगतलेपालाबुवदेरंडबीजवदग्निशिखावच्च ॥७॥ धर्मास्तिकायाभावात् ॥८॥ क्षेत्रकालगतिलिंगतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनांतर संख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ॥९॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥१॥
ओं ह्रीं श्रीमदुमास्वामि विरचिते तत्त्वार्थसूत्रे दशमसूत्राय अर्घं।
इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्यायः ॥१०॥

अक्षरमात्रपदस्वरहीनं व्यंजनसंधिविवर्जितरेफम्। साधुभिरत्र मम क्षमितव्यं को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ॥१॥ दशाध्याये परिच्छिन्ने तत्वार्थे पठिते सति। फलं स्यादुपवासस्य भाषितं मुनिपुंगवैः ॥२॥ तत्वार्थसूत्रकर्त्तारं गृध्रपिच्छोपलक्षितम्। वन्दे गणीन्द्रसंजातमुमास्वामिमुनीश्वरम् ॥३॥ पढमं चउक्के

पढमं पंचमे जाणि पुग्गलं तच्च ।। छह सत्तमे हि आस्सव अट्ठमे वंधणायव्वा ॥४॥ णवमे संवर णिज्जर दहमे मोक्खं वियाणे हि। इह सत्त तच्च भणियं दह सुत्तेण मुणिं देहिं ॥५॥ जं सक्कइ तं कीरइ, जं चण सक्कइ तं च सद्दहणं। सद्दहमाणो जीवो पावइ अयरामरं ठाणं ॥६॥ तव यरणं वयधरणं, संयमसरणं च जीवदयाकरणम्। अंते समाहिमरणं, चाउगइ दुक्खं णिवारेई ॥७॥ अरहंत भासियत्थं गणहरदेवेहिं गुंथियं सव्वं। पणमामि भत्तिजुत्तो, सदणाणमहोव्वयं सिरसा ॥८॥ गुरवो पांतु वो नित्यं ज्ञानदर्शननायकाः। चारित्रार्णव गंभीराः मोक्षमार्गोपदेशकाः ॥९॥

कोटिशतं द्वादश चैव कोट्यो लक्ष्याण्यशीतिस्त्र्यधिकानि चैव। पंचाशदष्टौ च सहस्रसंख्यमेतद्दुश्रुतं पंचपदं नमामि ॥१०॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥११॥

ओं ह्रीं श्रीमदुमास्वामि विरचिताय तत्त्वार्थसूत्राय महार्घम्।
इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रं समाप्तम्।

जिनवाणी भजन

जिनवाणी माता दर्शनकी बलिहारियां ॥ टेर॥
प्रथम देव अरहंत मनाऊं, गणधरजी को ध्याऊं। कुन्दकुन्द आचारज स्वामी तिनप्रति शीश नवाऊं ॥ ए जिनवाणी० ॥ १ ॥
योनिलाख चौरासी मांहीं घोर महा दुःख पायो। ऐसी महिमा सुनकर माता शरण तिहारी आयो ॥ ए जिनवाणी० ॥ २ ॥
ज्ञानी थारो शरणों लीनों अष्टकर्म क्षय कीनों। जामन मरण मेटके माता मोक्ष महाफल दीनों॥ ए जिनवाणी० ॥ ३ ॥
बारबार मैं बिनऊं माता महरजु मोपर कीजे॥ पार्श्वदासकी अरज यही है चरण शरण मोहि दीजै ॥ ए जिनवाणी० ॥ ४ ॥

शास्त्र-भक्ति।

अकेला ही हूं मैं करम सब आये सिमटिकें।
लिया है मैं तेरा शरण अब माता सटकिकें॥
भ्रमावत है मोको-करम दुख देता जनमका।
करों भक्ती तेरी, हरो दुख माता भ्रमनका॥१॥
दुखी हुआ भारी, भ्रमत फिरता हूं जगतमें।
सहा जाता नाहीं अकल घबराई भ्रमनमें॥
करों क्या मा मोरी, चलत वश नाहीं मिटनका।
करों भक्ती तेरी, हरो दुख माता भ्रमनका॥२॥
सुनो माता मोरी, अरज करता हूं दरदमें।
दुखी जानों मोको; डरप कर आयो शरनमें॥
कृपा ऐसी कीजे, दरद मिटजावै मरनका।
करों भक्ती तेरी हरो दुख माता भ्रमनका॥३॥
पिलावै जो मोकों, सुबुधिकर प्याला अमृतका।
मिटावै जो मेरा सरव दुख सारा फिरनका॥
पडूं पावां तेरं हरो दुख सारा फिकरका।
करों भक्ती तेरी,हरो दुख माता भ्रमनका॥४॥

सवैया

मिथ्या-तम नाशवेको ज्ञानके प्रकाशवेको आपा-परभासवेको भानुसी बखानी है। छहों द्रव्य जानवेको वसुविधि भानवेको स्वपर पिछानवेको परम प्रमानी है ॥ अनुभौ बतायवेको जीवके जतायवेको काहू न सतायवेको भव्य उर आनी है। जहांतहां तारवेको पारके उतारवेको सुख विसतारवेको ऐसी जिनवानी है ॥ ५ ॥

दोहा।

जिनवानी की स्तुति करै अल्प बुद्धि परमान।
पनालाल विनती करै दे माता मोहि ज्ञान ॥६॥
जा वानीके ज्ञानतैं सूझै लोकालोक।
सो वानी मस्तक चढ़ो सदा देत हों धोक॥७॥
हे जिनवाणी भारती, तोहि जपूं दिन रैन।
जो तेरा शरणा गहै, सुख पावै दिन रैन ॥८॥

जिनवाणी स्तुति।

वीर हिमाचलतैं निकसी गुरु गौतमके मुख-कुण्ड ढरी है, मोह महाचल भेद चली जगकी जड़ता तप दूर करी है। ज्ञान पयोनिधि मांहि रली वहु भंग तरंगनि सौं उछरी है, ता शुचि शारद गंग नदी प्रति मैं अंजुरी निज शीश धरी है॥ १॥ या जग मंदिरमें अनिवार अज्ञान अंधेर छयौ अति भारी, श्रीजिनकी धुनि दीपशिखा सम जो नहिं होति प्रकाशन हारी। तौ किस भांति पदारथ पांति कहां लहते रहते अविचारी, या विधि संत कहैं धनि हैं धनि हैं जिन वैन वड़े उपगारी॥२॥

क्षमावणी पूजा भाषा।

आसोज वदी प्रतिपदाके दिन भगवानको मेरु पर विराजमान करके पंचमंगल और अभिषेक पाठ बोलकर नित्य नियम पूजा करनेके बाद निम्नलिखित क्षमावणी पूजा करना चाहिये। पश्चात् सोलह कारणका अभिषेक करके भगवानको वेदीमें यथास्थान विराजमान करना चाहिये।

छप्पय।

अंग क्षमा जिन धर्म तनों दृढ़ मूल बखानो।
सम्यक रतन संभाल हृदयमें निश्चय जानो॥
तज मिथ्या विष मूल और चित निर्मल ठानो।
जिन धर्मी सों प्रीत करो सब पातिग भानो॥
रत्नत्रय गह भविक जन जिन आज्ञा सम चालिये
निश्चय कर आराधना करम रासको जालिये॥

ओं ह्रीं सम्यक् रत्नत्रयाय नमः अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

अथाष्टक।

नीर सुगंध सुहावनो पद्म द्रह को लाय।
जन्म रोग निरवारिये सम्यक् रतन लहाय॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा जिनवर बचन गहाय।

ओं ह्रीं निःशंकितांगाय, निःकांक्षितांगाय, निर्विचिकित्सितांगाय, निर्मूढतांगाय, उपगूहनांगाय, सुस्थितिकरणांगाय, वात्सल्यतांगाय, प्रभावनांगाय, जन्म मृत्यु विनाशनाय सम्यग्दर्शनाय जलं॥ ओं ह्रीं व्यंजन व्यंजिताय, अर्थ समग्राय, तदुभय समग्राय, कालाध्ययनाय, उपध्यानोपहिताय, विनय लब्धि-

प्रभावनाय, गुरबाधपन्हव, वहुमानोन्मान, अष्टांग सम्यग्ज्ञानाय जलं, ओं ह्रीं अहिंसा व्रताय, सत्य व्रताय, अचौर्यव्रताय, ब्रह्म चर्य व्रताय, अपरिग्रह महाव्रताय, मनो गुप्तये, वचन गुप्तये काय गुप्तये, ईर्य्या समिति, भाषा समिति, एषणा समिति, आदान निक्षेपण, प्रतिष्ठापना समिति, त्रयोदश विध सम्यक् चारित्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ॥ १ ॥

केसर चंदन लीजिये, संग कपूर घसाय।
अलि पंकति आवत घनी, वास सुगंध सुहाय ॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर०। चंदनं ॥२॥
शालि अखंडित लीजिये, कंचन थाल भराय।
जिनपद पूजौं भावसौं, अक्षय पदको पाय ॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा जिनवर०। अक्षतं ॥३॥
पारिजात अरु केतकी, पहुप सुगंध गुलाव।
श्रीजिन चरण सरोज कूं, पूज हरष चितचाव ॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा जिनवर०। पुष्पं ॥४॥
शक्कर घृत सुरभी तनो, व्यंजन षट्रस स्वाद।
जिनके निकट चढ़ायकर हिरदे धरि अहलाद ॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर०। नैवेद्यं ॥५॥
हाटक मय दीपक रचो, बाति कपूर सुधार।

शोधित घृत कर पूजिये, मोह तिमिर निरवार॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा जिनवर० । दीपं ॥६॥
कृष्णागर करपूर हो, अथवा दस विधि जान ।
जिन चरणन ढिग खेइये, अष्ट करमकी हान॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा जिनवर० । धूपं ॥७॥
केला अम्ब अनार ही, नारिकेल ले दाख ।
अग्र धरो जिनपद तने, मोक्ष होय जिन भाख॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा जिनवर० । फलं ॥८॥
जलफल आदि मिलायके, अरघ करो हरषाय ।
दुःख जलांजलि दीजिये, श्रीजिन होय सहाय॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा जिनवर० । अर्घं ॥९॥

जयमाला ।

दोहा ।

उनतिस अङ्ग की आरती, सुनो भविक चितलाय
मन वच तन सरधा करो, उत्तम नर भव पाय।१।

चौपाई ।

जैनधर्ममें शंक न आनै, सो निःशंकित गुण
चित ठानै । जप तप कर फल बांछै नाहीं,

धारै ॥ ८ ॥ पंचम अङ्ग उपधान बतावै, पाठ सहित तब बहु फल पावैं। षष्टम विनय सुलब्धि सुनीजै, बाणी बहुत विनय सु पढ़ीजै ॥ ९ ॥ जापै पढ़ै न लोपै जाई, अङ्ग सप्तम गुरु बाद् कहाई। गुरु की बहुत विनय जु करीजै, सो अष्टम अङ्ग धर सुख लीजै ॥१०॥ यह आठों अङ्ग ज्ञान बढ़ावै, ज्ञाता मन वच तन कर ध्यावै। अब आगै चारित्र सुनीजै, तेरह विधि धर शिव सुख लीजै ॥ ११ ॥ छहों कायकी रक्षा करहैं, सोई अहिंसा व्रत चित धर हैं। हित मित सत्य बचन मुख कहिये, सो सतवादी केवल लहिये ॥ १२ ॥ मन वच काय न चौरी करिये, सोई अचौर्य व्रत चित धरिये। मन'मथ भयःमन रंच न आनै, सो मुनि ब्रह्मचर्य व्रत ठानै ॥ १३ ॥ परिग्रह देख न मूर्छित होई, पंच महाव्रत धारक सोई। महाव्रत ये पांचों खरे हैं, सब तीर्थंकर इनको

करै हैं ॥ १४ ॥ मन में विकलप रंच न होई, मनोगुप्ति मुनि कहिये सोई। वचन अलीक रंच नहिं भाखैं, वचन गुप्ति सो मुनिवर राखैं ॥ १५ ॥ कायोत्सर्ग परीषह सहि हैं, ता मुनि काय गुप्त्त जिन कहि हैं। पंच समिति अब सुनिये भाई, अर्थ सहित भाखों जिन राई ॥ १६ ॥ हाथ चार जब भूमि निहारैं, तब मुनि इर्य्या पथ पद धारैं। मिष्ट वचन मुख बोलैं सोई, भाषा समिति तास मुनि होई ॥ १७ ॥ भोजन छयालिस दूषण टारैं, सो मुनि एषण शुद्ध विचारैं। देखकै पोथी ले अरु धर हैं, सो आदान निक्षेपण वर हैं ॥१८॥ मल मूत्र एकान्त जु डारैं, परतिष्ठापन समिति संभारैं। यह सब अङ्ग उनतीस कहे हैं, जिन भाखै गणधर ने गहे हैं ॥ १९ ॥ आठ आठ तेरह विधि जानों, दर्शन ज्ञान चरित्र सु ठानौं तातैं शिवपुर पहुंचो जाई, रत्नत्रय की यह

विधि भाई ॥ २० ॥ रतनत्रय पूरण जब होई, क्षिमा क्षिमा करियौ सब कोई। चैत माघ भादों त्रय बारा, क्षिमा क्षिमा हम उर में धारा ॥ २१ ॥

दोहा।

यह क्षमावणी आरती, पढ़ै सुनै जो कोय।
कहे "मल्ल" सरधा करो, मुक्ति श्री फल होय।२२।

ओं ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शनाय, अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय, त्रयोदश विध सम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय अनर्घ पदप्राप्तये महार्घं।

सोरठा।

दोष न गहिये कोय, गुणगह पढ़िये भाव सौं।
भूल चूक जो होय, अर्थ बिचारि जु शोधिये॥

इत्याशीर्वादः।

पञ्चपरमेष्ठी आदिकी आरती

इहविधि मंगल आरति कीजै, पंच परमपद भज सुख लीजै ॥ टेक ॥ पहली आरती श्री-जिनराजा। भव-दधिपारउतारजिहाजा ॥ इह-

विधि० ॥ १॥ दूसरि आरति सिद्धनकेरी। सुमरन करत मिटै भवफेरी ॥ इहविधि० ॥२॥ तीजी आरति सूर मुनिंदा। जनम मरन दुख दूर करिंदा ॥ इहविधि० ॥ ३ ॥ चौथी आरति श्रीउवझाया। दर्शन देखत पाप पलाया ॥ इहविधि० ॥४॥ पांचमि आरति साधु तिहारी। कुमति-विनाशन शिव-अधिकारी ॥ इहविधि० ॥५॥ छट्ठी ग्यारहप्रतिमा धारी। श्रावक वदौं आनँदकारी ॥ इहविधि० ॥६॥ सातमि आरति श्रीजिनवाणी 'द्यानत' सुरगमुकति सुखदानी ॥ इहविधि० ॥ ७ ॥

दीप मालिका विधान।

निर्वाणोत्सव।

श्री शुभ मिती कार्तिक वदी अमावस्याके प्रात काल करीब ४ बजे शौचादिसे निवृत्त होकर स्नानादि प्रात कालीन क्रियायें करके श्रीमहावीर स्वामीका निर्वाण कल्याणक उत्सव मनानेके लिये श्रीमंदिरजी में जाना चाहिये। वहां पर खूब ठाठवाटसे नृत्य महोत्सव, गायनवादित्रादिके साथ नित्य नियम पूजा

करके श्री महावीरस्वामी की पूजा करनी चाहिये। महावीर स्वामीकी पूजामें गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान कल्याणकका अर्घ चढ़ानेके बाद प्रिय मधुर ध्वनिसे निर्वाण काण्ड बोले, फिर मोक्ष कल्याणक का पद्य बोलकर उपस्थित सभी स्त्री-पुरुषों को अर्घ सहित निर्वाणजीका लाड्डू चढ़ाना चाहिये। इस वक्त वादित्रादिकी ध्वनिसे मंदिरको गुञ्जायमान कर देना चाहिये।

श्री महावीर स्वामी पूजा।

मत्तगयंद।

श्रीमतवीरहरैभवपीर, भरैसुखसीरअनाकुलताई। केहरि अंक अरीकरदंक, नये हरिपंकति मौलि सु आई॥ मैं तुमको इत थापतुहौं प्रभु भक्ति समेत हिये हरखाई। हे करुणाधनधारक देव, इहां अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई॥

ओं ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ओं ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेंद्र। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ओं ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

अष्टक।

(द्यानतरायकृत नंदीश्वराष्टकादिक अनेक रागोंमें बनती है)

क्षीरोदधिसम शुचि नीर, कंचनभृङ्ग भरों।

प्रभु वेग हरो भवपीर, यातैं धार करों ॥
श्रीवीर महा अतिवीर, सन्मतिनायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो ॥१॥
ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं० ॥
मलयागिरचंदनसार, केसरसंग घसों। प्रभु
भवआतापनिवार, पूजत हिय हुलसों। श्रीवी०।
ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं नि०
तंदुलसित शशिसम शुद्ध, लीनों थार भरी।
तसुपुंजधरों अविरुद्ध, पावों शिवनगरी। श्रीवी०।
ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्०।
सुरतरुके सुमन समेत, सुमन सुमनप्यारे। सो
मनमथभंजनहेत, पूजों पद थारे॥ श्रीवीर० ॥
ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंशनाय पुष्पं०।
रसरज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी। पद
जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी। श्रीवी०।
ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य०।
तमखंडित मंडितनेह, दीपक जोवत हों। तुम
पदतर हे सुखगेह. भ्रमतम खोवत हों॥ श्रीवी०॥

ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं०।

हरिचंदन अगर कपूर, चूर सुगंध करा। तुम पदतर खेवत भूरि,आठों कर्म जरा।श्रीवीर०।

ओं ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं नि०॥

रितुफल कलवर्जित लाय, कंचनथार भरों। शिवफलहित हे जिनराय, तुमढिग भेट धरों॥ श्रीवीर०॥

ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०।

जलफल वसु सजि हिमथार, तनमनमोद धरों। गुण गाऊँ भवदधितार, पूजत पाप हरों।श्रीवीर०।

ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०।

पंचकल्यणक। रागटप्पा।

मोहि राखो हो सरना, श्रीवर्द्धमान जिनरायजी, मोहि राखो०॥ गरभ साढ़ सित छट्ठ लियो तिथि, त्रिशलाउरअघ हरना। सुरसुरपति तितसेव करी नित, मैं पूजों भवतरना। मोहि राखो हो०॥ १॥

ओं ह्रीं असाढ़ शुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम चैतसित तेरसके दिन, कुंडलपुर कन-
वरना। सुरगिर सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजों
भवहरना॥ मोहिराखो हो० ॥ २ ॥

ओं ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनें-
द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप
आचरना। नृप कुमारघर पारन कीनों, मैं
पूजों तुम चरना। मोहिराखो हो० ॥३॥

ओं ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्या तपोमंगलमंडिताय श्रीमहावीर
जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

शुकलदशैं वैशाखदिवस अरि, घात चतुक
छयकरना। केवललहि भवि भवसर तारे, जजों
चरन सुख भरना। मोहि० ॥ ४ ॥

अ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्या ज्ञानकल्याणप्राप्ताय श्रीमहावीर-
जिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक श्याम अमावस शिवतिय, पावापुरतैं
वरना। गनफनिवृंद जजे तित वहुविध, मैं
पूजों भयहरना। मोहि० ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्या मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमहावीरं-
जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला। छन्द हरिगीता २८ मात्रा।

गनधर अशनिधर, चक्रधर, हरधर, गदाधर वरवदा। अरु चापधर, विद्यासुधर तिरसूलधर सेवहिं सदा॥ दुखहरन आनँदभरन तारन, तरन चरन रसाल हैं। सुकुमाल गुनमनिमाल उन्नत,-भालकी जयमाल हैं॥ १॥

छंद घत्तानन्द।

जय त्रिशलानंदन, हरिकृतवंदन, जगदानंदन, चंदवरं। भवतापनिकंदन, तनमनवंदन, रहित सपंदन नयन धरं॥ २॥

छंद त्रोटक।

जय केवलभानुकलासदनं। भविकोकविकाशन कंजवनं॥ जगजीतमहारिपुमोहहरं। रज ज्ञान-दृगावरचूरकरं॥ १॥

गर्भादिकमंगलमंडित हो। दुखदारिदकोनित-खंडित हो॥ जगमाहिंतुमी सतपंडित हो। तुमहीभवभाव-विहंडित हो॥ ॥ हरिवंश-सरोजनकों रवि हो। बलवंतमहंततुमी कवि

हो॥ लहि केवलधर्मप्रकाशकियो। अबलौं सोइमारगराजति यो॥ ३॥ पुनि आपतने गुण माहिंसही। सुरमग्नरहैंजितने सवही॥ तिनकी वनिता गुनगावत हैं। लयमाननिसों मनभावत हैं॥ ४॥ पुनि नाचत रंग उमंग-भरी। तुअ भक्ति विषै पग एम धरी॥ झननं झननं झननं झननं। सुरलेत तहां तननं तननं॥ ५॥ घननं घननं घनघंट वजै। द्रुमदं द्रुमदं मिरदंग सजै॥ गगनांगनगर्भगता सुगता। ततता ततता अतता वितता॥ ६॥ धृगतां धृगतां गति वाजत है। सुरताल रसाल जु छाजत है॥ सननं सननं सननं नभमैं। इक-रूप अनेक जु धारि भ्रमैं॥ ७॥ कई नारि-सुवीनवजावति हैं। तुमरो जस उज्वल गावति हैं॥ करतालविषै करताल धरैं। सुरताल वि-शाल जु नाद करैं॥ ८॥ इन आदि अनेक उछाह भरी। सुरभक्ति करैं प्रभुजी तुमरी॥

तुमही जगजीवनके पितु हो। तुमही विन- कारनतैं हितु हो ॥ ९ ॥ तुमही सब विघ्न विनाशन हो। तुमही निज आनँद्भासन हो॥ तुमही चित चिंतित दायक हो, जग मांहि तुम्हीं सब लायक हो ॥१०॥ तुमरे पन मङ्गल मांहि सही, जिय उत्तम पुण्य लियो सब ही। हमको तुमरी शरनागत है, तुमरे गुणमें मन पागत है ॥ ११ ॥ प्रभु मो हिय आप सदा बसिये, जब लौं वसु कर्म नहीं नसिये। तब लौं तुम ध्यान हिये वरतो, तबलों श्रुत चिंतन चित्त रतो ॥ १२ ॥ तबलौं व्रत चारित चाहतु हों, तबलों शुभ भाव सुगाहतु हों। तबलों सतसंगति नित्त रहौ, जबलों मम संजम चित्त गहौ ॥ १३॥ जबलौं नहिं नाश करौं अरिको, शिव नारि वरों समता धरिको। यह द्यो तब लौं हमको जिन जी, हम जाचतु हैं इतनी सुन जी ॥ १४ ॥

घत्ता।

श्री वीर जिनेशा नमित सुरेशा नाग नरेशा भगति भरा। 'वृन्दावन' ध्यावै विघन नशावै, वांछित पावै शर्मवरा॥ १५॥

ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय महार्घं।

दोहा।

श्री सनमतिके जुगल पद, जो पूजैं धरि प्रीति।
वृन्दावन सो चतुर नर, लहै मुक्ति नवनीत॥

इत्याशीर्वादः।

निर्वाणकांड भाषा।

दोहा।

वीतराग बंदौं सदा, भावसहित सिरनाय।
कहूं कांड निर्वाणकी भाषा सुगम बनाय॥१॥

चौपाई।

अष्टापद आदीश्वर स्वामि। वासुपूज्य चंपापुरिनामि॥ नेमिनाथ स्वामी गिरनार। बंदौं भावभगति उर धार॥२॥ चरम तीर्थंकरचरम शरीर। पावापुरि स्वामी महावीर॥ शिखर-

समेद जिनेसुर बीस। भावसहित बंदौं निश दीस ॥३॥ वरदत्तराय रु इन्द मुनिंद। सायर दत्त आदिगुणवृंद॥ नगरतारवर मुनि उठ कोडि। बंदौं भावसहित कर जोड़ि ॥४॥ श्री गिरनार शिखर विख्यात। कोडि बहत्तर अरु सौ सात॥ संबु प्रदुम्न कुमर द्वै भाय। अनिरुध आदि नमूं तसु पाय ॥५॥ रामचंद्रके सुत द्वै वीर। लाडनरिंद आदि गुणधीर॥ पांचकोडि मुनि मुक्तिमझार। पावागिरि बंदौं निरधार ॥६॥ पांडव तीन द्रविड़राजान। आठकोडि मुनि मुकति पयान॥ श्रीशत्रुंजयगिरिके सीस। भावसहित बंदौं निशदीस ॥७॥ जे बलभद्र मुकतिमें गये। आठकोडि मुनि औरहु भये॥ श्रीगजपंथ शिखर सुविशाल। तिनके चरण नमूं तिहुंकाल ॥८॥ राम हनू सुग्रीव सुडील। गवयगवाख्य नील महानील॥ कोडि निन्याणवै मुक्ति पयान। तुंगीगिरि

बंदौं धरि ध्यान ॥९॥ नंग अनंग कुमार सु-
जान। पांचकोडि अरु अर्ध प्रमान॥ मुक्ति
गये सोनागिरि शीस। ते बंदौं त्रिभुवनपति
ईस ॥१०॥ रावणके सुत आदिकुमार। मुक्ति
गये रेवातट सार। कोटि पंच अरु लाख प-
चास। ते वंदौं धरि परम हुलास ॥११॥ रेवा
नदी सिद्धवर कूट। पश्चिम दिशा देह जहँ
छूट॥ द्वै चक्री दश कामकुमार। ऊठकोडि
बंदौं भव पार ॥१२॥ बडवानी बडनयर सु-
चंग। दक्षिण दिशि गिरिचूल उतंग॥ इंद्र-
जीत अरु कुम्भ जु कर्ण। ते वंदौं भवसागर
तर्ण ॥१३॥ सुवरण भद्र आदि मुनि चार।
पावागिरिवर शिखर मँझार॥ चेलना नदीतीर
के पास। मुक्ति गये वंदौं नित तास ॥१४॥
फलहोड़ी वडगाम अनूप। पश्चिम दिशा द्रो-
णगिरि रूप॥ गुरुदत्तादि मुनीसुर जहां। मु-
क्ति गये वंदौं नित तहां ॥१५॥ वाल महावाल

मुनि दोय। नागकुमार मिले त्रय होय॥
श्रीअष्टापद मुक्तिमँझार। ते बंदौं नित सुरत
सँभार॥१६॥ अचला पुरकी दिश ईसान।
तहां मेढ़्रगिरि नाम प्रधान॥ साढे तीन कोडि
मुनिराय। तिनके चरण नमूं चितलाय॥१७॥
वंसस्थल वनके ढिग होय। पश्चिमदिशा कुं-
थुगिरि सोय॥ कुलभूषण दिशभूषण नाम।
तिनके चरणनि करूं प्रणाम॥१८॥ जसरथ
राजाके सुत कहे। देश कलिंग पांचसौ लहे।
कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान। बंदन करूं
जोर जुगपान॥१९॥ समवसरण श्रीपार्श्वजि-
नंद। रेसिंदीगिरि नयनानंद॥ वरदत्तादि पंच
ऋषिराज। ते बंदौं नित धरम जिहाज॥२०॥
मथुरापुर पवित्र उद्यान। जंबूस्वामीजी निर्वा-
न॥ चरम केवली पंचम काल। ते वंदौं नित
दीन दयाल॥२१॥ तीनलोकके तीरथ जहां।
नित प्रति वंदन कीजै तहां॥ मनवचकायस-

हित सिर नाय । वंदन करहिं भविक गुणगाय ॥२२॥ संवत सतरहसौ इकताल । आश्विन सुदि दशमी सुविशाल । 'भैया' वंदन करहिं त्रिकाल । जय निर्वाणकांड गुणमाल ॥२३॥ इति

महावीराष्टकस्तोत्र

छंद शिखरिणी ।

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः समं भांति ध्रौव्यव्ययजनिलसंतोंतरहिताः । जगत्साक्षी मार्गप्रकटनपरो भानुरिव यो महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः) ॥१॥ अताम्रं यच्चक्षुः कमलयुगलं स्पंदरहितं जनान्कोपापायं प्रकटयति वाभ्यंतरमपि । स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला. महावी० ॥ २ ॥ नमन्नाकेंद्राली मुकुटमणिभाजालजटिलं लसत्पादांभोजद्वयमिह यदीयं तनुभृतां। भवज्ज्वालाशांत्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि, महावीर० ॥ ३ ॥ यदर्चाभावेन प्रमुदितमना

दर्दुर इह क्षणादासीत्स्वर्गी गुणगणसमृद्धः सुखनिधिः। लभंते सद्भक्ताः शिवसुखसमाजं किमुतदा, महावीर० ॥ ४ ॥ कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगततनुर्ज्ञाननिवहो विचित्रात्माप्येको नृपतिवरसिद्धार्थतनयः। अजन्मापि श्रीमान् विगतभवरागोद्भुतगतिर्, महावीर० ॥ ५ ॥ यदीया वाग्गंगा विविधनयकल्लोलविमला, बृहज्ज्ञानांभोभिर्जगति जनतां या स्नपयति। इदानीमप्येषा बुधजनमरालैः परिचिता, महावीर० ॥ ६ ॥ अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवनजयी काम सुभटः कुमारावस्थायामपि निजबलाद्येन विजितः। स्फुरन्नित्यानंदप्रशमपदराज्याय स जिनः महावीर० ॥ ७ ॥ महामोहातंकप्रशमनपराकस्मिकभिषङ् निरापेक्षो बंधुर्विदितमहिमा मंगलकरः। शरण्यः साधूनां भवभयभृतामुत्तमगुणो, महावीर० ॥ ८ ॥

महावीराष्टकं स्तोत्रं भक्त्या भागेंदुना कृतं।

यः पठेच्छ्रणुयाच्चापि स याति परमां गतिं।६।

दिवाली-पूजा।

जिस दिन दिवाली हो उस दिन सायंकालमे शुभ वेला शुभ नक्षत्रमे निम्न प्रकार पूजा करके नई वहीका मुहूर्त करें। तथा दीपमालिकाकी रोशनी करे।

एक ऊंची चौकी पर थाल या रकेबी रखकर उसमें केशर से ॐ लिखना चाहिये, उसी चौकीके आगे दूसरी चौकी पर शास्त्रजी या जिनवाणी की पुस्तक विराजमान करना चाहिये। इन दोनों चौकियोंके आगे एक छोटी चौकी पर पूजाकी सामग्री तैयार रखना चाहिये और इसीके पास एक दूसरी छोटी चौकी पर थाल रखकर उसमें पूजाकी सामग्री चढ़ाना चाहिये। पूजा करने वालेको पूर्व या उत्तर मुख करके पूजा करना चाहिये। जो कुटुम्बमें बड़ा हो या दूकानका मालिक हो वह चित्तमे एकाग्रता करके पूजा करै और उपस्थित सब लोग पूजा बोलै तथा शांतिसे सुनै। यहां पर व्यापारकी बहीमे केशर से स्वस्तिक लिखकर तथा दवात कलमके मौली बांधकर सामने रख लेना चाहिये। पूजा प्रारम्भ करनेके पहले उपस्थित सब सज्जनों को नीचे लिखा श्लोक बोलकर केशरका तिलक कर लेना चाहिये।

तिलक मंत्र।

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमोगणी।

मंगलं कुंद कुंदाद्यो, जैनधर्मोऽस्तु मंगलं॥१॥

तिलक करनेके बाद साधारण नित्य नियम पूजा करके ३३१ वें पृष्ठमें छपी हुई महावीरस्वामी की और २८६ वें पृष्ठमें छपी हुई सरस्वती पूजा करना चाहिये। सरस्वती पूजामे फल चढ़ाने के बाद आगेका पद्य बोलकर शास्त्रजीके लिये एक शुद्ध वस्त्र या वेष्टन चढ़ाना चाहिये। पूजा कर चुकनेके पश्चात रकेबीमें कपूर प्रज्वलित करके सबको खड़े होकर खूब ललित ध्वनिसे नीचे लिखी आरती बोलना चाहिये।

जिनवाणी माता की आरती।

जय अम्बे वाणी, माता जय अम्बे वाणी। तुमको निश दिन ध्यावत सुरनर मुनी ज्ञानी ॥ टेर ॥ श्रीजिन गिरतैं निकसी, गुरु गौतम वाणी। जीवन भ्रम तम नाशन दीपक दरशाणी ॥ जय० ॥ १ ॥ कुमत कुलाचल चूरण, बज्र सु सरधानी। नव ,नियोग निक्षेपण, देखन दरपाणी ॥ जय० ॥ २ ॥ पातक पंक पखालन, पुण्य परम पाणी। मोहमहार्णव डूबत, तारण नौकाणी ॥जय० ॥ ३ ॥ लोकालोक निहारण, दिव्य नेत्र स्थानी। निज पर

भेद दिखावन, सूरज किरणानी ॥ जय० ॥४॥
श्रावक मुनिगण जननी, तुमही गुणखानी ।
सेवक लख सुखदायक, पावन परमाणी ॥जय०॥

पश्चात् नीचे लिखे अनुसार बहियोंमे स्वतिकादि लिखकर वीर संवत, विक्रम सवत, इस्वीसन्, मिती, वार, तारीख आदि लिखना चाहिये ।

श्री महावीर स्वामिने नमः ।



श्री

श्री लाभ श्री श्री श्री शुभ

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्री ऋषभायनमः श्री महावीर स्वामिने नमः

श्री गौतमगणधराय नमः श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै नमः

श्री केवलज्ञान लक्ष्मी देव्यै नमः ।



विशेष पूजा-संग्रह

श्री सम्मेदशिखर पूजा।

दोहा।

सिद्धक्षेत्र तीरथ परम, है उत्कृष्ट सुथान।
शिखर समेद सदा नमूं, होय पापकी हानि ॥१॥
अगनित मुनि जहंतैं गये, लोक शिखरके तीर।
तिनके पद पंकज नमूं, नाशैं भवकी पीर ॥२॥

अडिल्ल छंद।

है उज्ज्वल यह क्षेत्र सु अति निरमल सही।
परम पुनीत सुठौर महागुणकी मही ॥
सकल सिद्धि दातार, महा रमणीक है।
बंदूं निज सुख हेत, अचल पद देत है ॥३॥

सोरठा।

शिखर समेद महान, जगमें तीर्थ प्रधान है।
महिमा अद्भुत जान, अल्पमती मैं किम कहूं ॥४॥

चाल सुन्दरी छन्द।

सरस उन्नत क्षेत्र प्रधान है, अति सु उज्ज्वल
तीर्थ महान है। करहिं भक्तिसु जे गुण गायकें,
लहहिं सुर शिवके सुख जायकैं ॥५॥

अडिल्ल छन्द।

सुर नर हरि इन आदि और वंदन करैं।
भव सागरसे तिरैं नहीं भवमें परैं॥
जन्म जन्मके पाप सकल छिनमें टरैं।
सुफल होय तिन जन्म शिखर दरशन करैं॥६॥

स्थापना, अडिल्ल छन्द।

गिरि सम्मेद तैं बीस जिनेश्वर शिव गये।
और असंख्या मुनी तहां ते सिध भये॥
बंदूं मन वच काय नमूं शिर नायकैं।
तिष्ठो श्रीमहाराज सबै इत आयकै॥१॥

दोहा।

श्रीसम्मेद शिखर सदा पूजूं मन वच काय।
हरत चतुरगति दुःखको मन वांछित फलदाय॥२॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती श्री बीस तीर्थ-

कर और असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरणारविन्दकी पूजा अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनं। परि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथाष्टक, गीता छंद।

सोहन झारी रतन जड़िये मांहि गंगा जल भरो। जिनराज चरण चढ़ाय भविजन जन्म मृत्यु जरा हरो॥ संसार उदधि उबारनेको लीजिये सुध भावसों। सम्मेद गिरपर बीस जिन मुनि पूज हरष उछाव सों॥१॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनिमुक्ति पधारे, तिनके चरणकमलकी पूजा जन्ममृत्युरोगविनाशनाय जलं०

जाकी सुगंध थकी अहो अलि गुंजते आवे घने। सो मलय संग घसाय केसर पूज पद जिनवर तने॥ भव आताप निवारनेको लीजिये सुध भावसों। सम्मेद० ॥२॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती बीस तीथंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरण कमलकी पूजा भव आताप विनाशनाय चंदनं० ॥२॥

अक्षत अखंडित अतिहि सुन्दर जोति शशि सम लीजिये । शुभ शाल उज्ज्वल तोय धोय सु पूज प्रभु पद कीजिये ॥ पद अक्षय कारण लेय भविजन शुद्ध निरमल भावसों । सम्मेद०॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरण कमलकी पूजा अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं० ॥३॥

है मदन दुष्ट अत्यंत दुर्जय हते सबके प्रान ही। ताके निवारण हेत कुसुम मंगाय रंज न घ्रान ही ॥ जाकी सुवास निहार षटपद दौरि आवै चावसों । सम्मेदगिर पर बीस जिनमुनि पूज हरष उछाव सों ॥४॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरण कमलकी पूजा काम वाण विध्वंसनाय पुष्पं० ॥४॥

रस पूर रसना घ्रान रंजन चक्षु प्रिय अति मिष्ट ही । जिनराज चरण चढ़ाय उत्तम क्षुधा होवै नष्ट ही ॥ भरि थाल कंचन विविध व्यंजन लीजिये सुध भावसों । सम्मेद० ॥५॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरण कमलकी पूजा क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्य० ॥५॥

त्रैलोक्यगर्भित ज्ञान जाको मोह निजवस कर लियो। अज्ञान तममें पड़्यो चेतन चतुरगति भरमन कियो। छिन मांहि मोह विध्वंस होवै आरती कर चाव सों। सम्मेद० ॥६॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती बीस तीथकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरण कमलकी पूजा मोहांधकार विनाशनाय दीप० ॥६॥

शुभ अगर अम्बर वास सुन्दर धूप प्रभु ढिग खेवही। ए दुष्टकर्म प्रचण्ड तिनको होय तत छिन छेवही॥ सो धूप वसु विधि जरत कारण लीजिये सुध भावसों। सम्मेद० ॥७॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती वीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरण कमलकी पूजा अष्टकर्म विध्वंशनाय धूपं० ॥७॥

बादाम श्रीफल लौंग पिस्ता लेय शुद्ध सम्हालही। सैकार दाख अनार केला तुरत टूटे

डाल ही॥ भवि लेय उत्तम हेत सिवके छूट
त्रिधिके दावसों। सम्मेदगिरपर वीस जिनमुनि
पूज हरष उछाव सों॥८॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती वीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरण कमलकी पूजा मोक्षफल प्राप्तये फलं० ॥८॥

छप्पय चाल।

जन्म मृत्यु जल हरैं, गंध आताप निवारै।
तंदुल पदके अक्षय मदन कूं सुमन विदारै॥
क्षुधा हरन नैवेद्य दीप ते ध्वान्त नसावै।
धूप दहै वसु कर्म मोक्ष सुख फल दरसावै॥
ए वसु द्रव्य मिलायकै अर्घ रामचन्द्र कीजिये।
कर पूजा गिरशिखरकी नरभवका फल लीजिये॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती वीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरण कमलकी पूजा अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं० ॥९॥

आगे प्रत्येक अर्घ

सोरठा।

सकल कर्म हनि मोक्ष, परिवा सित वैसाख ही।

जजौं चरण गुण धोख, गये समेदाचल थकी ॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती ज्ञानधर कूटके दरशन एक कोड़ उपवास और श्रीकुंथुनाथ तीर्थंकरादि छानवै कोड़ा कोड़ी छानवे कोड़ बत्तीस लाख छानवे हजार सात सै वैयालिस मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरणकमलकी पूजा अर्घं०

दोहा ।

जैठ सुकल चउदस दिवस मोक्ष गये गुणनाह ।
जजौं मोक्ष जिनके चरण कर करि बहु उत्साह ॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती सुदत्तवर कूटके दरशन फल एक कोड़ उपवास श्री धरमनाथ तीर्थङ्करादि गुण तीस कोड़ा कोड़ी उन्नीस कोड़ नौ लाख नौ हजार सात सै पंचानवे मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरण कमलकी पूजा अर्घं०

दोहा ।

चैत सुकल एकादशी शिवपुरमें प्रभु जाय ।
लहि अनंत सुख थिर भये आतमसूं लव ल्याय ॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती अविचल कूटके दरशन फल एक कोड़ि उपवास और श्री सुमतनाथ तीर्थंकरादि एक कोड़ाकोड़ी चौरासी कोड़ बहत्तर लाख इक्यासी हजार सात स मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरणकमलकी पूजा अर्घं०

दोहा।

जैठ सुकल चउदस दिना सकल कर्म क्षय कीन।
सिद्ध भये सुखमय रहैं हुए अष्टगुण लीन॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती प्रभास कूटके दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्रीशान्तिनाथ तीर्थङ्करादि नौ कोड़ा कोड़ी नौ लाख नौ हजार नौ सौ निन्यानवे मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरणकमलकी पूजा अर्घं०

दोहा।

बदि अषाढ़ अष्टमि दिवस मोक्ष गये मुनि ईश।
जजूं भक्तितें विमल प्रभु अर्घ लेय नमि शीश॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती सुवीर कुल कूट के दरशन एक कोड़ उपवास और विमलनाथ तीर्थङ्करादि सत्तर कोड़ा कोड़ी साठ लाख छः हजार सात सै बयालिस मुनिमुक्ति पधारे, तिनके चरणकमलकी पूजा अर्घं०

दोहा।

फागुन सुदि सतमि दिना हनि अघातिया राय।
जगत फांस कूं काटकै मोक्ष गये जिनराय॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती प्रभास कूटके दर्शन फल एक कोड़ उपवास और श्रीसुपार्श्वनाथ तीर्थङ्करादि उनचास कोड़ा कोड़ चौरासी कोड़ बहत्तर लाख सात हजार

सात सै वयालिस मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरणकमलकी पूजा अर्घं०

दोहा।

चैत सुकल पंचम दिना हनि अघातिया राय।
मोक्ष भये सुरपति जजैं मैं जजहूं गुण गाय॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परबत सेती सिद्धवर कूटके दर्शन फल बत्तीस कोड़ उपवास और श्रीअजितनाथ तीर्थङ्करादि एक अरब अस्सो कोड़ चौपन लाख मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरण कमलकी पूजा अर्घं०

दोहा।

जुगल नाग तारे प्रभु पार्श्वनाथ जिनराय।
सावन सुदि सातैं दिवस लहे मुक्ति शिव जाय॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती सुवरनभद्र कूटके दरशन फल सोलह कोड़ उपवास और श्रीपार्श्वनाथ तीर्थङ्करादि बयासी करोड़ चौरासी लाख पैंतालीस हजार सात सै बयालिस मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरण कमलकी पूजा अर्घं०

सोरठा।

हनि अघाति शिव थान, चतुर्दशी वैसाख वदि।
जजूं मोक्ष कल्यान, गये समेदाचल थकी॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती मित्रधर कूटके दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्री नमिनाथ तीर्थङ्करादि नौ सै कोड़ा कोड़ी एक अरब पैंतालिस लाख सात हजार नौ सै बयालिस मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरणकमलकी पूजा अर्घं०

सोरठा।

सरव करम हनि मोक्ष, चैत अमावस शिव गये।
मैं जजहूं वसु धोक, चतुर निकाय सुरा जजैं॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती नाटक नामा कूटके दरशन फल छ्यानवे कोड़ उपवास और श्रीअरहनाथ तीर्थंकरादि निन्यानवे कोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवै हजार नौ सै निन्यानवे मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरण कमलकी पूजा अर्घं०

दोहा।

फागुन पंचमि सुकल ही शेष कर्म हनि मोक्ष।
गए समेदाचल थकी, शिवपद हित गुण धोक॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती संवल कूटके दरशन फल एक कोड उपवास और श्रीमल्लिनाथ तीर्थङ्करादि छ्यानवे कोड मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरणकमलकी पूजा अर्घं०

सोरठा।

हनि अघाति शिवथान सावन सुदि पूनम गए।
जजूं मोक्षकल्यान सुरनर खगपति मिलि जजैं॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती संकुल नामा कूट के दरशन फल एक कोड़ि उपवास और श्रेयांसनाथ तीर्थंकरादि छानवे कोड़ा कोड़ छानवे कोड़ छानवे लाख नौ हजार पांच सौ बयालिस मुनिमुक्ति पधारे तिनके चरणकमलकी पूजा अर्घं०

सोरठा।

गये पुष्प निरवान भादव सुदि अष्टम दिना।
पूजूं मोक्ष कल्यान सब सुर मिल पूजा करी॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती सुप्रभु कूटके दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्रीपुष्पदंत तीर्थंकरादि एक कोड़ा कोड़ी निन्यानवे लाख सात हजार चार सौ अस्सी मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरण कमलकी पूजा अर्घं०

सोरठा।

हनि अघाति जिनराय, चौथ कृष्ण फागुन विषै।
जजूं चरन गुणगाय, मोक्ष समेदाचल थकी॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती मोहन कूटके दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्रीपद्मप्रभु तीर्थंकरादि निन्यानवे कोड़ि सत्यासी लाख तितालिस हजार सात सैं सत्ताइस मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरण कमलकी पूजा अर्घं०

सोरठा।

हनि अघाति निरवान फागुन द्वादशि कृष्ण ही।

जजूं मोक्षकल्यान. गए सुरासुर पद जजों ॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती निर्जर नामा कूटके दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्रीमुनिसुव्रतनाथ तीर्थङ्करादि निन्यानवे कोड़ा कोड़ सत्यानवे कोड़ि नौ लाख नौ सौ निन्यानवे मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरण कमलकी पूजा अर्घं।

सोरठा।

शेषकर्म हनि मोक्ष फागुन सुकल जु सप्तमी।
जजूं गुणनिके धोक, गये समेदाचल थकी ॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती ललित कूटके दरशन फल सोलह लाख उपवास और श्रीचन्द्रप्रभु तीर्थंकरादि नौसौ चौरासी अरब बहत्तर कोडि अस्सी लाख चौरासी हजार पाच सौ पंचानवे मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरणकमलकी पूजा अर्घं।

सोरठा।

गये मोक्ष भगवान अष्टम सित आसौजकी।
देहु देहु शिवथान. वसुविधि पदपंकज जजूं ॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र परवत सेती विद्युतवर कूट के दर्शन फल एक कोड उपवास और श्री शीतलनाथ तीर्थंकरादि अठारह कोडा कोडि बयालीस कोड बत्तीस लाख बया-

लिस हजार नौ सौ पांच मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरन कमल की पूजा अर्घम्०

दोहा।

चैतकृष्ण पूनम दिवस निज आतमको चीन।
मुक्ति स्थानक जायकैं हुए अष्ट गुण लीन॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती स्वयंभू कूटके दर्शन फल एक कोड़ उपवास और श्री अनन्तनाथ तीर्थंकरादि छानवे कोड़ा कोड़ सत्तर कोड़ सत्तर लाख सत्तर हजार सात से मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरन कमलकी पूजा अर्घम्०

सोरठा।

शेष कर्म निरवान चैत शुकल षष्टम विषैं।
जजों गुणोघ उचार मोक्ष वरांगन पति भये॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती धवल कूटके दर्शन फल बयालीस लाख उपवास और श्री सम्भवनाथ तीर्थंकरादि नौ कोड़ा कोड़ बहत्तर लाख बयालीस हजार पाच सौ मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरन कमलकी पूजा अर्घम्०

दोहा।

अष्टम सित वैशाख की गए मोक्ष हनि कर्म।
जजूं चरन उर भक्ति कर देहु देहु निज धर्म॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती आनन्द कूटके

दर्शन फल एक लाख उपवास और श्री अभिनन्दन तीर्थंकरादि बहत्तर कोड़ा कोड़ि सत्तर कोड़ सत्तर लाख बयालीस हजार सात सै मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरन कमलकी पूजा अर्घम्०

चौपाई छन्द ।

माघ असित चउदश विधि सैन। हनि अघाति पाई शिव दैन॥ सुर नर खग कैलाश सुथान। पूजैं मैं पूजूं धर ध्यान ॥

दोहा ।

रिषभ देव जिन सिध भये गिर कैलाशसे जोय। मन वच तन कर पूज हूं शिखर नमूं पद सोय ॥

ओं ह्रीं श्री कैलाश सिद्धक्षेत्र परवत सेती माघ सुदी १४ को श्री आदिनाथ तीर्थंकरादि असंख्य मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरण कमलकी पूजा अर्घम्०

दोहा ।

वासु पूज्य जिनकी छवी अरुन वरन अविकार।
देहु सुमति विनती करूं ध्याऊं भवदधितार॥
वासु पूज्य जिन सिध भये चम्पापुरसे जेह ।
मन वच तन कर पूज हूं शिखर सम्मेद यजेह

ओं ह्रीं श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्र परवत सेती भादवा सुदी १४ श्री वासुपूज्य तीर्थंकरादि असंख्य मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरन कमलकी पूजा अर्घम्०

सुकल षाढ़ सप्तमि दिवस शेष कर्म हनि मोक्ष। शिव कल्याण सुरपति कियो जजूं चरण गुण धोख ॥ नेमनाथ जिन सिद्ध भये सिद्ध क्षेत्र गिरनार। मन वच तन कर पूज हूं भवदधि पार उतार ॥

ओं ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्र परवत सेती असाढ़ सुदि सातैंको श्री नेमिनाथ तीर्थंकरादि बहत्तर कोड़ सात से मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरन कमलकी पूजा अर्घम्०

दोहा।

कार्तिक वदि मावस गये शेष कर्म हनि मोक्ष।
पावापुरतें वीर जी जजूं चरण गुण धोक ॥
महावीर जिन सिद्ध भये पावापुरसे जोय।
मन वच तन कर पूजहूं शिखर नमूं पद दोय।

ओं ह्रीं पावापुर सिद्धक्षेत्र परवत सेती कार्तिक वदी अमावसको श्री वर्द्धमान तीर्थंकरादि असंख्य मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरन कमलकी पूजा अर्घम्०

दोहा।

सुधर्मादि गणेश गुरु अंतम गौतम नाम।
तिन सबकूं लै अर्घ तैं पूजूं सब गुण धाम॥

ओं ह्रीं श्री सुधर्मादि गौतम गणधर देव गुणावा ग्रामके उद्यान आदि भिन्न भिन्न स्थानोंसे निरवान पधारे तिनके चरणार विदकी पूजा अर्घम्।

दोहा।

या विधि तीर्थ जिनेश के वंदूं शिखर महान।
और असंख्य मुनीश जे पहुंचे शिवपद थान।
सिद्ध क्षेत्र जे और हैं भरत क्षेत्रके मांहि।
और जे अतिशय क्षेत्र हैं कहे जिनागम मांहि॥
तिनके नाम सु लेत ही पाप दूर हो जाय।
ते सब पूजूं अर्घ ले भव भवको सुखदाय॥

ओं ह्रीं श्री भरत क्षेत्र सम्बन्धी सिद्धक्षेत्र और अतिशय क्षेत्रेभ्यो अर्घम्०

सोरठा।

द्वीप अढाई मांहि सिद्धक्षेत्र जे और हैं।
पूजूं अर्घ चढ़ाय भव भवके अघ नाश हैं॥

अडिल्ल छंद।

पूजूं तीस चौबीसि महासुख दाय जू।
भूत भविष्यत वर्तमान गुण गाय जू॥
कहे विदेह के बीस नमूं सिरनाय जू।
और अर्घ बनाय सु विघन पलाय जू॥

ओं ह्रीं श्री तीस चौबीसी और भूत भविष्यत् वर्त्तमान और विदेह क्षेत्रके वीस जिनेश्वर तिनके चरन कमलकी पूजा अर्घम्

दोहा।

कृत्याकृत्यम जे कहे तीन लोकके मांहि।
ते सब पूजूं अर्घ ले हाथ जोर सिरनाय॥

ओं ह्रीं श्री ऊर्ध्वलोक मध्यलोक पाताल लोक सम्बन्धी जिन मंदिर जिन चैत्यालयेभ्यो नमः अर्घम्०

दोहा।

तीरथ परम सुहावनूं शिखर सम्मेद विसाल।
कहत अल्प बुधि युक्ति सैं सुखदाई जयमाल।

अथ जयमाला।

छंद पद्धडी।

जय प्रथम नमूं जिन कुंथदेव, जय धर्म तनी
नित करत सेव। जय सुमति सुमति सुध

वुद्धि देत, जय शांति नमूं नित शांति हेत ॥ १ ॥ जय विमल नमूं आनन्द कन्द, जय सुपार्स नमूं हनि पास फंद। जय अजित गये शिव हानि कर्म, जय पार्स करी जुग उग्र सर्म ॥ २ ॥ पश्चिम दिस जानूं टोंक एव, वंदे चहुंगतिको होय छेव। नर सुर पदकी तो कौन वात, पूजे अनुक्रमतैं मुक्ति जात ॥ ३ ॥ जय नेमि तनूं नित धरूं ध्यान, जय अरि हर लीनों मुक्ति थान। जय मल्लि मदन जय शील धार, जय हंस गये भव पार पार ॥ ४ ॥ जय सुमति सुमति दाता महेश, जय पद्म नमूं तम हर दिनेश। जय मुनि सुव्रत गुण गण गरिष्ठ, जय चन्द्र करै आताप नष्ट॥ ५ ॥ जय शीतल जय भवकी आताप। जय अनंत नमूं नस जात पाप। जय सभव भव की हरो पीर,जय अभय करो अभिनंद वीर॥ ६॥ पूरव दिस द्वादस कूंट जान, पूजत होवत

है असुभ हान ॥ फिर मूल मंदिर कूं करूं प्रनाम। पावै शिव रमनी वेग धाम ॥७॥

घत्ता छन्द।

श्री सिद्ध सु क्षेत्रं अति सुख देतं तुरतं भव दधि पार करं। अरि कर्म बिनासन शिव सुख कारन जय गिरवर जगता तारं ॥ ८ ॥

चाल छप्पय।

प्रथम कुंथ जिन धर्म सुमति अरुशांति जिनंदा, विमल सुपारस अजित पार्श्व मेटै भवफंदा। श्री नमि अरह जु मल्लि श्रेयांस सुविधि निधि कंदा। पद्म प्रभु महाराज और मुनि सुव्रत चन्दा। शीतलनाथ अनंत जिन सम्भव जिन अभिनंदनजी। वीस टोंक पर वीस जिनेश्वर भाव सहित नित वंदनजी ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र परवत सेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरण कमल की पूजा अर्घम्०

चाल कवित्त।

शिखर सम्मेदजी के बीस टोंक सब जान

तासों मोक्ष गये ताकी संख्या सब जानिये।
चउदासै कोड़ा कोड़ि पैंसठ ता ऊपर जोड़ि
छियालीस अरब ताको ध्यान हिये आनिये।
बारा सै तिहत्तर कोड़ि लाख ग्यारा सै बैया-
लीस और सातसै चौतीस सहस बखानिये।
सैंकड़ा है सात सै सत्तर एते हुए सिद्ध तिनकूं
सु नित्य पूज पाप कर्म हानिये ॥१॥

दोहा।

बीस टोंकके दरश फल, प्रोषध संख्या जान।
एकसौ तेहत्तर मुनी, गुण सठ लाख महान ॥

घत्ता छंद।

ए बीस जिनेश्वर नमत सुरेसुर मघवा पूजन
कूं आवैं। नरनारी ध्यावैं सब सुख पावैं राम-
चंद्र नित सिर नावैं ॥

इति परिपुष्पांजलि।

सम्मेद शिखरजीका भजन

सांवलिया पारसनाथ शिखर पर भले विराजे
जी। हुकम हुआ सांवलियाजीका बांह पकड़

मंगवाया। शिखर पर० ॥ टेर ॥ देश देशका जातरी आया पूजा भाव रचाया। आठ द्रब ले पूजन कीनो मन बांछित फल पाया ॥ शिखर पर० ॥१॥ टोंक टोंक पर ध्वजा विराजै झालर घंटा बाजे। झालरके झनकार सेती अनहद् बाजा बाजे ॥ शिखर पर० ॥२॥ तीनों नाले तेरह चौकी मन वांछित फल पाया। मन चित सेती पूजा कीनी सफल मनोरथ भाया ॥ शिखर पर० ॥३॥ कोई मांगै नाती पोता कोई मांगै दान। जातरी मांगै प्रभुके दरशन महा परसाद ॥ शिखर पर० ॥४॥ नरनारी सब बंदन आया, महा सुक्ख फल पाया। खुशाल चंदने चरण कमलका हरष हरष गुण गाया॥ शिखर पर० ॥५॥

श्री भक्तामर स्तोत्र पूजा

ओं जय,जय,जय। नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु।

अनुष्टुप्।

परमज्ञान वाणासि, घातिकर्म प्रघातिनं।
महा धर्म प्रकर्त्तारं, वंदेहमादि नायकं ॥१॥
भक्तामर महास्तोत्रं, मंत्रपूजां करोम्यहं।
सर्वजीव हितागारं, आदिदेवं महाम्यहं ॥२॥

ओं ह्रीं श्री आदिदेव अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। ओं ह्रीं श्री आदिदेव अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ओं ह्रीं श्री आदिदेव अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अथाष्टकं।

सुरसुरीनद्संभृत जीवनैः सकल ताप हरैः सुख कारणैः। वृषभनाथ वृषांक समन्वितं, शिवकरं प्रयजे हत किल्विषं ॥१॥

ओ ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेंद्राय जलं

मलय चंदन मिश्रित कुंकुमैः सुरभितागत षट् पद नंदनैः॥ वृषभ० ॥२॥ चंदनं

कमल जाति समुद्भवतंदुलैः परम पावन पंच

सु पुंजकैः। बृषभ० ॥३॥ अक्षतं

जलज चंपक जाति सुमालती, वकुल पाड़ल कुंद सु पुष्पकैः। बृषभ० ॥४॥ पुष्पं

वटक खज्जक मंडक पायसै विंविध मोदक व्यंजन सद्रसैः। बृषभ० ॥५॥ नैवेद्यं

रविकर द्युति सन्निभ दीपकैः प्रवल मोह घनांध निवारकैः। बृषभ० ॥६॥ दीपं

स्वगुरु धूप भरैर्घटनिष्टतैः प्रतिदिशं मिलितालि समूहकैः। बृषभ० ॥७॥ धूपं

नविन लिंबुकलांगलि दाड़िमैः कदलि पूंग कपिच्छ शुभैः फलैः। बृषभ० ॥८॥ फलं

कमल गंध शुभाक्षतपुष्पकैश्चरुभि दीप सु धूप फलार्घकैः। जिनपतिं च यजै सुखकारकं, वदति मेरु सु चंद्र यतीश्वरं ॥९॥ अर्घं

प्रत्येक पूजा

वसत तिलका छंद।

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा-

मुद्योतकं दलितपापतमोवितानं।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगंयुगादा,
वालंवनं भवजले पततां जनानां ॥१॥

ओं ह्रीं प्रणतदेव समूह मुकुटाग्रमणि महापापांधकार विनाशकाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घं ॥१॥

यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा-
दुद्भूत वुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः॥
स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेंद्रं ॥२॥

ओं ह्रीं गणधरचारणसमस्त रूपींद्रचंद्रादित्यसुरेंद्रनरेंद्रव्यंतरनागेंद्र चतुर्विधमुनींद्रस्तवितचरणारविंदाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घं ॥२॥

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चितपादपीठ-
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहं।
वालं विहाय जलसंस्थितमिंदुविंव,
मन्यः क इच्छति जनः सहसा गृहीतुं ॥३॥

ओं ह्रीं विगतवुद्धिगर्व्वोपहारसहित श्रीमानतुंगाचार्य भक्तिसहिताय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घं ॥३॥

वक्तुं गुणान्गुणसमुद्रशशांककांतान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपिबुद्ध्या।
कल्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं,
को वा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्यां ॥४॥

ओं ह्रीं त्रिभुवनगुणसमुद्र चंद्रकांतमणितेजशरीरसमस्त सुरनाथ स्तवित श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घं ॥४॥

सोहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश,
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थं ॥५॥

ओं ह्रीं समस्त गणधरादि मुनिवर प्रतिपालक मृगवालवत्त श्री आदिनाथ परमेश्वराय अर्घं ॥५॥

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरी कुरुते वलान्माम्।
यत्कोकिलः किलमधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्रचारुकलिकानिकरैकहेतु ॥६॥

ओं ह्रीं श्रीजिनंद्र चंद्रभक्ति सर्वसौख्यं तुच्छभक्ति बहु सुखदाय-काय श्रीजिनेंद्राय आदि परमेश्वराय अर्घं ॥६॥

त्वत्संस्तवेन भवसंततिसन्निबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजां।
आक्रांतलोकमलिनीलमशेषमाशु,
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंधकारं ॥७॥

ओं ह्रीं अनंत भव पातक सर्व विघ्नविनाशकाय तव, स्तुतिसौख्यदायकाय श्रीआदि परमेश्वराय अर्घं ॥७॥

मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु,
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदविंदुः ॥८॥

ओं ह्रीं श्रीजिनेंद्र स्तवन सत्पुरुष चित्त चमत्काराय श्रीआदि परमेश्वराय अर्घं ॥८॥

आस्तां तवस्तवनमस्तसमस्त दोषं,
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हंति।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकासभांजि ॥९॥

ओं ह्रीं जिनपूजनस्तवन कथाश्रवणेन समस्त पाप विनाशनाय जगत्त्रय भव्यजीव भवविघ्ननाशसमर्थाय च श्रीआदि परमेश्वराय अर्घं ॥९॥

नात्यद्भुतं भुवनभूषण भूतनाथ !
भूतैर्गुणैर्भुविभवंतमभिष्टुवंतः।
तुल्या भवंति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥१०॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यगुण मंडित समस्तोपमा सहिताय श्रीआदि परमेश्वराय अर्घं ॥१०॥

दृष्ट्वाभवंतमनिमेषविलोकनीयं,
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्यचक्षुः।
पीत्वापयः शशिकरद्युतिदुग्धसिंधोः,
क्षारं जलं जलनिधे रसितुं क इच्छेत् ॥११॥

ओं ह्रीं श्रीजिनेंद्र दर्शनेन अनंत भव संचित अघसमूह विनाशकाय श्रीप्रथम जिनेंद्राय अर्घं ॥११॥

यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं.
निर्मापित स्त्रिभुवनैक ललामभूत।
तावंत एव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥१२॥

ओं ह्रीं त्रिभुवन शात स्वरूपाय त्रिभुवन तिलकाय मानाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥१२॥

वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि,
निश्शेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानं।
बिंबं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पं ॥१३॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यविजयरूप अतिशय अनंतचंद्र तेजजित सदातेज पूजमानाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घं ॥१३॥

संपूर्ण मंडलशशांककलाकलाप-
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं,
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टं ॥१४॥

ओं ह्रीं शुभगुणातिशयरूप त्रिभुवनजीत जिनेंद्र गुण विराजमानाय श्रीप्रथमजिनेंद्राय अर्घं ॥१४॥

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि-
र्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गं।
कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन,
किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥

ओं ह्रीं मेरुचंद्र अचलशील शिरोमणि व्रतोधराजमंडित चतुर्विध वनिता विरहित शीलसमुद्राय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घं ॥१५॥

निर्धूम वर्तिरपवर्जिततैलपूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥१६॥

ओं ह्रीं धूम्रस्नेह वातादि विघ्नरहिताय त्रैलोक्य परम केवलदीपकाय श्रीप्रथमजिनेंद्राय अर्घं ॥१६॥

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टी करोषि सहसा युगपज्जगंति।
नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः,
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र लोके ॥१७॥

ओं ह्रीं राहु चन्द्र पूजित कर्म प्रकृति क्षयति निरावरण ज्योतिरूप लोकद्वयावलोकी सदोदयादिपरमेश्वराय अर्घं ॥१७॥

नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं,
गम्यं न राहु वदनस्य न वारिदानां।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकांति,
विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबं ॥१८॥

ओं ह्रीं नित्योदय रूप और राहु करके हू ना ग्रसे जाय ऐसे त्रिभुवन सर्वकला सहित विराजमानाय श्रीआदि परमेश्वराय अर्घं ॥१८॥

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ !
निष्पन्न शालिवनशालिनि जीवलोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥१६॥

ओं ह्रीं चन्द्र सूर्योदयास्त रजनी दिवस रहित परम केवलोदय सदादीप्ति विराजमानाय श्री आदि देवाय आदि परमेश्वराय अर्घं ॥१६॥

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।
तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेपि ॥२०॥

ओं ह्रीं हरि हरादि ज्ञानरहिताय सर्वज्ञ परम ज्योति केवलज्ञान सहिताय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥२०॥

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ भवांतरेपि ॥२१॥

ओं ह्रीं त्रिभुवन मनमोहन जिनेंद्ररूप अन्य दृष्टान्त रहित परम बोध मंडिताय श्री आदि जिनाय अर्घं ॥२१॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वादिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालं ॥२२॥

ओं ह्रीं त्रिभुवन वनितोपमारहित श्रीजिनवर माताजनिजजिनेंद्र पूर्व दिग् भास्कर केवल ज्ञान भास्कराय श्रीआदिब्रह्म जिनाय अर्घं ॥२२॥

त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्यवर्णममलं तमसः पुरस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति मृत्युं,
नान्यः शिवश्शिवपदस्य मुनींद्र पंथाः ॥२३॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्य पावनादित्यवर्ण परमोष्ठोत्तर शत लक्षण नव शत व्यंजनाय समुदाय एक सहस्र अष्ट मंडिताय श्री आदिजिनेंद्राय अर्घं ॥२३॥

त्वामव्ययं विभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं,
ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुं।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥२४॥

ओं ह्रीं ब्रह्माविष्णुश्रीकण्ठ गणपति त्रिभुवन दैवत्व सेवित्ताय सेविकाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥२४॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्,
त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात्।
धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानाद्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन्पुरुषोत्तमोसि ॥२५॥

ओं ह्रीं बुद्धिदर्शक शेषधर ब्रह्मादि समस्तानंतनामसहिताय श्री आदिजिनेन्द्राय अर्घं ॥२५॥

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ,
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिनभवोदधिशोषणाय ॥२६॥

ओं ह्रीं अधो मध्योर्द्ध लोकत्रय कृताहोरात्रि नमस्कार समस्तार्ति रौद्रविनाशक त्रिभुवनेश्वर भवोदधि तरणतारणसमर्थाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥२६॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश।
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः,

स्वप्नांतरेपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥

ओं ह्रीं परमगुणाश्रित एकादि अवगुणरहिताय श्रीआदि परमेश्वराय अर्घं ॥२७॥

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितांतं।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं,
विंबं रवेरिवपयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥२८॥

ओं ह्रीं अशोक वृक्ष प्रातिहार सहिताय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥२८॥

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातं।
बिंबं वियद्विलसदंशुलतावितानं,
तुंगोदयाद्रिशिरसीवसहस्ररश्मेः ॥२९॥

ओं ह्रीं सिंहासन प्रातिहार्य सहिताय श्री प्रथम जिनेंद्राय अर्घं

कुंदावदातचलचामरचारुशोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतं।
उद्यच्छशांकशुचिनिर्भरवारिधार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौंभं ॥३०॥

ओं ह्रीं चतुःषष्टि चामर प्रातिहार्य सहिताय श्री प्रथम जिनेंद्राय अर्घं ॥३०॥

छत्रत्रयं तव विभाति शशांककांत-
मुच्चैःस्थितं स्थगितभानुकरप्रतापं ।
मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं,
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वं ॥३१॥

ओं ह्रीं छत्रत्रय प्रातिहार्य सहिताय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं

गंभीरताररवपूरितदिग्विभाग-
स्त्रैलोक्यलोकशुभसंगमभूतिदक्षः ।
सद्धर्मराजजयघोषणघोषकः सन्,
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ॥३२॥

ओं ह्रीं अष्टादश कोटि वादित्र प्रातिहार्य सहिताय श्री परमादि जिनाय अर्घं ॥३२॥

मंदारसुन्दरनमेरुसुपारिजात-
संतानकादिकुसुमोत्करवृष्टिरुद्धा ।
गंधोदबिंदुशुभमंदमरुत्प्रयाता,
दिव्यादिवः पतति ते वयसां ततिर्वा ॥३३॥

ओं ह्रीं समस्त पुष्प जाति वृष्टि प्रातिहार्य सहिताय श्री आदि जिनेंद्राय अर्घं ॥३३॥

शुम्भत्प्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते,
लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपंती।
प्रोद्यद्दिवाकरनिरंतरभूरिसंख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसोम्यां ॥३४॥

ओं ह्रीं कोटि भास्कर प्रभा मंडित भामंडल प्रातिहार्यसहिताय श्री परमादि जिनाय अर्घं ॥३४॥

स्वर्गापवर्गगममार्गविमार्गणेष्टः,
सद्धर्मतत्त्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्याः।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थ सर्व,
भाषास्वभावपरिणामगुणैः प्रयोज्यः ॥३६॥

ओं ह्रीं सलिल जलधर पटलगर्जित ध्वनि योजन प्रमान प्रातिहार्य सहिताय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥३५॥

उन्निद्रहेमनवपंकजपुञ्जकांती,
पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्र! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥३६॥

ओं ह्रीं हेम कमलोपरि गमन देवकृतातिशय सहिताय श्रीआदि परमेश्वराय अर्घं ॥३६॥

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेंद्र,
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य।
यादृक्प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोपि ॥३७॥

ओं ह्रीं धर्मोपदेश समये समवसरण विभूति मंडिताय श्रीआदि परमेश्वराय अर्घं ॥३७॥

श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल-
मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपं।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतंतं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानां ॥३८॥

ओं ह्रीं मस्तकगलितरग सुर गजेंद्र महादुर्द्धर भय विनाशकाय श्रीजिनादि परमेश्वराय अर्घं ॥३८॥

भिन्नेभकुम्भगलदुज्ज्वलशोणिताक्त-
मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोपि,
नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥३९॥

ओ ह्रीं आदिदेव नाम प्रसादान्महासिंह भय विनाशकाय श्री युगादि परमेश्वराय अर्घं ॥३९॥

कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पं,
दावानलंज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगं ।
विश्वं जिघित्सुमिव संमुखमापतंतं,
त्वन्नामकीर्त्तनजलं शमयत्यशेषं ॥४०॥

ओं ह्रीं महावह्नि विश्वभक्षण समर्थ जिननाम जल विनाशकाय श्री आदि ब्रह्मणे अर्घं ॥४०॥

रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं,
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतंतं ।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्तशंक-
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥४१॥

ओं ह्रीं रक्तनयन सर्प जिन नागदमन्योषधि समस्त भय विनाशकाय श्रीजिनादि परमेश्वराय अर्घं ॥४१॥

बल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनाद-
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनां ।
उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं,
त्वत्कीर्त्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥४२॥

ओं ह्रीं महासंग्राम भय विनाशकाय सर्वांग रक्षणकराय श्री प्रथम जिनेंद्राय अर्घं ॥४२॥

कुंताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह-
वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ।
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षास्,
त्वत्पादपंकजवना श्रयिणो लभंते ॥४३॥

ओं ह्रीं महारिपुयुद्धे जयदायकाय श्रीआदि परमेश्वराय अर्घं ४३॥

अंभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र-
पाठीनपीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ ।
रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रास्,
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजंति ॥४४॥

ओं ह्रीं महासमुद्र चलित वात महादुर्जय भय विनाशकाय श्री जिनादि परमेश्वराय अर्घं ॥४४॥

उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः,
शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ।
त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा,
मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥४५॥

ओं ह्रीं दश प्रकार ताप जलंधराष्टादश कुष्ट सन्निपात महद्रोग विनाशकाय परम कामदेवरूप प्रकटाय श्रीजिनेश्वराय अर्घं ४५॥

आपादकंठमुरुशृङ्खलवेष्टितांगा,
गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः ।

त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः,

सद्यः स्वयं विगतबंधभयाभवंति ॥४६॥

ओं ह्रीं महाबन्धन आपाद कंठ पर्यन्त वैरिकृतोपद्रव भय विनाशकाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥४६॥

मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवानलाहि-

संग्रामवारिधि महोदरबंधनोत्थं ।

तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव,

यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४७॥

ओं ह्रीं सिंह गजेंद्र राक्षस भूत पिशाच शाकिनी रिपु परमोपद्रव भय विनाशकाय श्री जिनादि परमेश्वराय अर्घं ॥४७॥

स्तोत्र स्रजं तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां,

भक्त्या मया विविधवर्णविचित्रपुष्पां ।

धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं,

तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४८॥

ओं ह्रीं पठक पाठक श्रोता वा श्रद्धावान मानतुंगाचार्यादि समस्त जीव कल्याणदाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥४८॥

वन सुगंध सु तंदुल पुष्पकैः,

प्रवर मोदक दीपक धूपकैः ।

फल वरैः परमात्म पद प्रदं,

प्रवियजै श्री आदिनाथ जिनेश्वरं ॥१॥

ओं ह्रीं अष्ट चत्वारिंशत्कमलेभ्यः पूर्णार्घं ।

जयमाला

श्लोक ।

प्रमाणद्वय कर्त्तारं स्यादस्ति वाद वेदकं ।
द्रव्यतत्व नयागारमादिदेवं नमाम्यहं ॥१॥

छंद ।

आदि जिनेश्वर भोगागारं, सर्व जीववर दया सुधारं। परमानंदरमासुखकंदं, भव्यजीवहित करणममंदं ॥२॥ परम पवित्र वंशावर मंडण,दुख दारिद्र काम वल खंडन । वेदकर्म दुज्जय वल दंडण, उज्जल ध्यान प्रति शुभ मंडण ॥३॥ चतु अस्सीलक्ष पूरव जीवित पर, धनुष पंच शत मानस जिनवर । हेमवर्ण रूपौघ विमल कर, नगर अयोध्या स्थानक व्रत धर ॥४॥ नाभिराज परमात्म सुवेता, माता मरुदेवी गुणणेता । सोल स्वप्न पर भेद विख्याता, त्रिभुवननायक पुत्र विधाता ॥५॥ गर्भकल्याणक सुरपति कीधा । जन्मकल्याणक मेरुसिर सीधा।

स्वयं स्वयंभू दीक्षा धारी। केवल बोध सु त्रि-भुवन प्यारी ॥६॥ अष्ट गुणाकर सिद्ध दिवा-कर, परम धर्म विस्तारण जय भर। शीततताप रहित भव हारी, सर्व सौख्य निरुपम गुण धारी ॥ ७ ॥

घत्ता।

जय आदि सु ब्रह्मा, त्रिभुवन ब्रह्मा, ब्रह्मस्वात्म स्वरूप पर। जय बोध सु ब्रह्मा, पंच सु ब्रह्मा, ब्रह्म सुमति जलधि निकर।

ओं ह्रीं श्रीआदि परमदेवाय जयमालार्घं नि०

शार्दूल विक्रीडित।

देवोऽनेक भवार्जितो गत महा पापः प्रदीपा-नलः। देवः सिद्धवधू विशाल हृदयालंकार हारोपम ॥ देवोष्टादश दोष सिंधुर घटा दुर्भेद पंचाननो। भव्यानांविदधातु वांछित फलं श्री आदिनाथो जिनः ॥

श्लोक।

लक्ष्मीचंद्रगुरुर्जीतो मूलसंघ विदाग्रणी।

पट्टाभयचंद्रो देवो दयानंदि विदांवरः ॥
रत्नकीर्त्ति कुमुदेंदु सुमतिः सागरोदितः।
भक्तामर महास्तोत्र पूजा चक्री गुणाधिका ॥
इति श्री मानतुङ्गाचार्य विरचित भक्तामरस्तोत्र पूजा समाप्ता।

पंच बालयति तीर्थंकर पूजा।

दोहा।

श्रीजिन पंच अनंग जित, वासु पूज्य मलि नेमि। पारसनाथ सुवीर अति, पूजूं चित धरि प्रेम ॥ १ ॥

ओं ह्रीं पंच बालयति तीर्थंकरा अत्रावत्रावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं, पुष्पांजलिं क्षिपेत्!

अथाष्टक।

शुचि शीतल सुरभि सुनीर लायो भर झारी॥
दुख जामन मरन गहीर, याको परिहारी ॥
श्री वासु पूज्य मलि नेम, पारस वीर अति।
नमूं मन वच तन धरि प्रेम पांचों वालयति ॥

ओं ह्रीं श्री वासु पूज्यजी, मल्लिनाथजी, नेमनाथजी, पारस-

नाथजी, महावीर स्वामीजी, श्री पंच बालयती तीर्थंकरेभ्यो नमः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर करपूर, जल में घसि आनौ।
भव तप भंजन सुखपूर, तुमको मैं जानौ॥
श्री वासुपूज्य०। नमूं मनवचतन०। चंदनं॥
वर अक्षत विमल बनाय, सुवरण थाल भरे।
बहु देश देशके लाय, तुमरी भेंट धरे॥
श्री वासुपूज्य०। नमूं मनवचतन०। अक्षतं॥
यह काम सुभट अतिसूर, मनमें क्षोभ करौ।
मैं लायो सुमन हजूर, याको बेग हरौ॥
श्री वासुपूज्य०। नमूं मनवचतन०। पुष्पं॥
षट् रस पूरित नैवेद्य, रसना सुख कारी।
द्वय करम वेदनी छेद, आनन्द ह्वै भारी॥
श्री वासुपूज्य०। नमूं मनवचतन०। नैवेद्यं॥
धरि दीपक जगमग ज्योति, तुम चरणन आगे
मम मोहतिमिर क्षय होत, आतम गुण जागे॥
श्री वासुपूज्य०। नमूं मनवचतन०। दीपं॥
ले दशविधि धूप अनूप, खेऊं गंध मई।

दशबंध दहन जिन भूप. तुमहो कर्म जई ॥
श्री वासुपूज्य०। नमूं मनवचतन०। धूपं ॥
पिस्ता अरु दाख बदाम, श्रीफल लेय घने।
तुम चरन जजूं गुणधाम, द्यौ सुख मोक्ष तने॥
श्री वासुपूज्य०। नमूं मनवचतन०। फलं ॥
सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अरघ बनावत हैं।
वसुकर्म अनादि संयोग, ताहि नसावत हैं ॥
श्री वासुपूज्य०। नमूं मनवचतन०। अर्घं ॥

जयमाला।

दोहा।

बाल ब्रह्मचारी भये, पांचों श्री जिनराज।
तिनकी अब जयमालिका, कहूं स्वपर हितकाज॥

पद्धड़ि छन्द।

जय जय जय जय श्री वासु पूज्य, तुम सम
जग में नहीं और दूज। तुम महा लक्ष सुर
लोक छार, जब गर्भ मात माहीं पधार ॥२॥
षोड़श स्वपने देखे सुमात, बल अवधि जान
तुम जन्म तात। अति हर्ष धार दंपति सुदान'

बहु दान दियो जाचक जनान ॥ ३ ॥ छप्पन कुमारिका कियो आन, तुम मात सेव बहु भक्ति ठान। छः मास अगाऊ गर्भ आय, धनपति सुवरन नगरी रचाय ॥ ४ ॥ तुम तात महल आंगन मंझार, तिहुं काल रतन धारा अपार। वरषाए षट् नव मास सार, धनि जिन पुरुषन नयनन निहार ॥ ५ ॥ जय मल्लिनाथ देवन सुदेव, शत इन्द्र करत तुम चरण सेव। तुम जन्मत ही त्रय ज्ञान धार, आनन्द भयो तिहं जग अपार ॥ ६ ॥ तब ही ले चहं विधि देव संग, सौ धर्म इन्द्र आयो उमङ्ग। सजि गज ले तुम हरि गोद आप, बन पांडुक शिल ऊपर सुथाप ॥ ७ ॥ क्षीरोदधि तैं बहु देव जाय, भरि जल घट हाथों हाथ लाय। करि न्हवन वस्त्र भूषण सजाय, दे मात नृत्य तांडव कराय ॥ ८ ॥ पुनि हर्ष धार हिरदय अपार, सब निर्जर तब जय

जय उचार। तिस अवसर आनंद हे जिनेश, हम कहिवे समरथ नाहिं लेश ॥ ६ ॥ जय जादोपति श्री नेमनाथ, हम नमत सदा जुग जोरि हाथ। तुम ब्याह समय पशुवन पुकार, सुनि तुरत छुड़ाये दया धार ॥ १० ॥ कर कंकण अरु सिर मौर बंद, सो तोड़ भये छिन मैं स्वच्छन्द। तब ही लौकान्तिक देव आय, वैराग्य वर्द्धनी थुति कराय ॥ ११ ॥ ततक्षिण शिवका लायो सुरेन्द्र, आरूढ़ भये तापर जिनेन्द्र। सो शिवका निज कंधन उठाय, सुर नर खग मिल तप वन ठराय ॥ १२ ॥ कच लौंच वस्त्र भूषण उतार, भये जती नगन मुद्रा सुधार। हरि केश लेय रतनन पिटार,सो क्षीर उदधि मांही पधार ॥ १३ ॥ जय पारशनाथ अनाथ नाथ, सुर असुर नमत तुम चरण माथ। जुग नाग जरत कीनी सुरक्ष, यह बात सकल जगमें प्रत्यक्ष ॥ १४ ॥ तुम सुर धनु सम

लखि जग असार, तप तपत भये तन ममत क्षार। शठ कमठ कियो उपसर्ग आय, तुम मन सुमेरु नहिं डगमगाय॥ १५॥ तुम शुक्ल ध्यान गहि खड्ग हाथ, अरि च्यारि घातिया कर सुघात। उपजायो केवल ज्ञान भानु, आयो कुवेर हरि बच प्रमाण॥ १६॥ की समोशरण रचना विचित्र, तहां खिरत भई बाणी पवित्र। मुनि सुर नर खग तिर्यंच आय, सुनि निज निज भाषा बोध पाय॥ १७॥ जय वर्द्धमान अन्तिम जिनेश, पायो न अंत तुम गुण गणेश। तुम च्यारि अघाती करम हान, लियो मोक्ष स्वयं सुख अचलथान॥१८॥ तब ही सुरपति बल अवधि जान, सब देवन युत बहु हर्ष ठान। सजि निज बाहन आयो सुतीर, जहं परमौदारिक तुम शरीर॥ १९॥ निर्वाण महोत्सव कियो भूर, ले मलयागिर चंदन कपूर। बहु द्रव्य सुगंधित सर सम्भार,

तामें श्री जिनवर वपु पधार ॥ २० ॥ निज अगनि कुमारिन मुकुट नाय, तिहं रतनन शुचि ज्वाला उठाय। तिस सर माहीं दीनी लगाय, सो भस्म सबन मस्तक चढ़ाय॥ २१ ॥ अति हर्ष थकी रचि दीप माल, शुभ रतन मई दश दिश उजाल। पुनि गीत नृत्य बाजे वजाय, गुण गाय ध्याय सुरपति सिधाय॥ २२ ॥ सो थान अबै जगमें प्रत्यक्ष, नित होत दीप माला सुलक्ष। हे जिन तुम गुण महिमा अपार, वसु सम्यक् ज्ञानादिक सु सार ॥ २३ ॥ तुम ज्ञान माहिं तिहुं लोक दर्व, प्रति विम्बित हैं चर अचर सर्व। लहि आतम अनुभव परम ऋद्धि, भये बीतराग जगमें प्रसिद्ध ॥ २४ ॥ ह्वै वाल यती तुम सवन एम, अचिरज शिव कांता वरी केम। तुम परम शांति मुद्रा सुधार, किम अष्ट कर्म रिपु को प्रहार ॥ २५ ॥ हम करत वीनती वार वार. कर जोर स्व मस्तक

धार धार। तुम भये भवोदधि पार पार, मोको सुबेग ही तार तार ॥ २६ ॥ अरदास दास ये पूर पूर, बसु कर्म शैल चक चूर चूर। दुख सहन राम अब शक्ति नाहिं, गही चरण शरण कीजे निवाह ॥ २७ ॥

चौपाई।

पांचों बाल यति तीर्थेश। तिनकी यह जय-माल विशेष। मन बच काय त्रियोग सम्हार। जे गावत पावत भव पार ॥ २८ ॥

ओं ह्रीं श्री पंच बालयति तीर्थंकर जिनेंद्रायनमः पूर्णार्घं ॥

दोहा।

ब्रह्मचर्य सों नेह धरि, रचियो पूजन ठाठ।
पांचों बाल यतीनको, कीजे नित प्रतिपाठ ॥

इत्याशीर्वादः।

बाहुवलि स्वामीकी पूजा।

दोहा।

कर्म अरिगण जीतिके, दरशायो शिव पंथ।
प्रथम सिद्ध पद जिन लयो भोग भूमिके अंत

॥ १ ॥ समर दृष्टि जल जीत लहि, मल्ल युद्ध जय पाय। वीर अग्रणी बाहुबलि, वंदों मन वच काय ॥ २ ॥

ओं ह्रीं श्रीमत गोमटेश्वर अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथ अष्टकं चाल जोगीरासा।

जन्म जरा मरनादि तृषा कर, जगत जीव दुःख पावै। तिहि दुःख दूर करन जिनपद को पूजन जल ले आवै॥ परम पूज्य वीराधिवीर जिन बाहुबलि बलधारी। जिनके चरण कमलको नित प्रति धोक त्रिकाल हमारी ॥१॥

ओं ह्रीं वर्तमानावसर्पिणी समये प्रथम मुक्ति स्थान प्राप्ताय कर्मारि विजयी वीराधिवीर वीराग्रणी श्री बाहुबलि परम योगीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ॥ १ ॥

यह संसार मरुस्थल अटवी तृष्णा दाह भरी है। तिहि दुःख वारन चंदन लेकें जिन पद पूज करी है॥ परम० ॥ २ ॥ चंदनं ॥

स्वक्ष सालि शुचि नीरज रजसम गंध अखंड

प्रचारी। अक्षय पद्के पावन कारन पूजै भवि जगतारी॥ परम०॥ अक्षतं॥ ४॥

हरिहर चक्रपति सुर दानव मानव पशु बस याकै। तिहि मकरध्वज नासक जिनकों पूजों पुष्प चढ़ाकै॥ परम०॥ पुष्पं॥ ४॥

दुखद् त्रिजग जीवनको अति ही दोष क्षुधा अनिवारी। तिहि दुःख दूर करनको चरु वर ले जिन पूज प्रचारी॥ परम०॥ नैवेद्यं॥५॥

मोह महातम में जग जीवन सिव मग नाहिं लखावै। तिहि निरवारन दीपक करले जिन-पद् पूजन आवै॥ परम०॥ दीपं०॥ ६॥

उत्तम धूप सुगंध बनाकर दश दिशमें महकावै। दश विधि बंध निवारन कारण जिनवर पूज रचावै॥ परम०॥ धूपं०॥ ७॥

सरस सुवरण सुगंध अनूपम स्वक्ष महासुचि लावै। शिव फल कारण जिनवर पदकी फल-सों पूज रचावै॥ परम०॥ फलं॥ ८॥

वसु विधिके वस वसुधा सब ही परवश अति दुख पावै। तिहि दुःख दूर करनको भविजन अर्घ जिनाग्र चढ़ावै ॥ परम० ॥ अर्घं० ॥६॥

जयमाला दोहा।

आठ कर्म हनि आठगुण प्रगट करे जिन रूप।
सो जयवंतो भुजवली प्रथम भये शिव भूप ॥

कुसुमलता छंद।

जै जै जै जगतार शिरोमणि क्षत्रिय वंस असंस महान, जै जै जै जग जन हितकारी दीनौ जिन उपदेश प्रमाण। जै जै चक्रपति सुत जिनके सतसुत जेष्ठ भरत पहिचान, जै जै जै श्री ऋषभदेव जिनसों जयवंत सदा जग जान ॥ १ ॥ जिनके द्वितीय महादेवी सुचि नाम सुनंदा गुण की खान। रूप शील सम्पन्न मनोहर तिनके सुत भुजवली महान॥ सवापंच शत धनु उन्नत तनु हरितवरण सोभा असमान। वैडूरजमणि पर्वत मानों नील कुलाचल सम थिर जान ॥ २ ॥ तेजवंत परमाणु

जगतमें तिन करि रचो शरीर प्रमाण। सत वीरत्व गुणाकर जाको निरखत हरि हरषै उर आन॥ धीरज अतुल बज्र सम नीरज सम वीराग्रणि अति बलवान। जिन छबि लखि मनु शशि छबि लाजै कुसुमायुध लीनों सुपुमान॥ ३॥ बालसमै जिन बाल चन्द्रमा शसि से अधिक धरे दुतिसार। जो गुरुदेव पढ़ाई विद्या शस्त्र शास्त्र सब पढ़ी अपार॥ ऋषभदेव ने पोदन पुरके नृप कीने भुजवली कुमार। दई अयोध्या भरतेश्वरको आप बने प्रभुजी अनगार॥ ४॥ राजकाज षटखंड महीपति सब दल लै चढ़ि आये आप। वाहुवलि भी सन्मुख आये मंत्रिन तीन युद्ध दिये थाप। दृष्टि नीर अरु मल्ल युद्धमें दोनों नृप कीजो बलधाप। वृथा हानि रुक जाय सैन्यकी यातैं लड़िये आपों आप॥ ५॥ भरत भुजवली भूपति भाई उतरे समर भूमिमें जाय। दृष्टि

नीर रण थके चक्रपति मल्लयुद्ध तव करो अ-
घाय ॥ पगतल चलत चलत अचला तव
कंपत अचल शिखर ठहराय। निषध नील
अचलाधर मानौं भये चलाचल क्रोध वसाय
॥ ६ ॥ भुज विक्रमवलवाहुवलीनें लये चक्र-
पति अधर उठाय। चक्र चलायो चक्रपति
तव सोभी विफल भयो तिहि ठाय ॥ अति
प्रचंड भुजदंड सुंड़ सम नृप सार्दूल वाहुवलि
राय। सिंहासन मंगवाय जासपै अग्रजको
दीनों पधराय ॥ ७ ॥ राजरमा रामासुर धनुमें
जोवन दमक दामिनी जान। भोग भुजंग
जंग सम जगको जान त्याग कीनों तिहि
थान ॥ अष्टापद पर जाय वीरनृप वीर व्रती-
धर कीनों ध्यान। अचल अंग निरभंग संग-
तज संवतसरलों एक स्थान ॥ ८ ॥ विषधर
वंवी करी चरनतल ऊपर वेल चढ़ी अनिवार।
युगजघा कटि वाहुवेढ़ि कर पहुंची वक्षस्थल

परसार॥ सिरके केश बढ़े जिस मांहीं नभचर पक्षी वसे अपार। धन्य धन्य इस अचल ध्यानको महिमा सुर गावै उरधार॥ ९॥ कर्मनासि शिव जाय वसे प्रभु ऋषभेश्वरसे पहले जान। अष्ट गुणांकित सिद्ध शिरोमणि जगदीश्वर पद लयो पुमान॥ वीरव्रती वीराग्रगन्य प्रभु बाहुबली जगधन्य महान। वीरवृत्तिके काज जिनेश्वर नमें सदा जिन बिंब प्रमान॥ १०॥

दोहा।

श्रवनबेलगुल विंध्य गिरि जिनवर बिंब प्रधान।
छप्पन फुट उतंगतनो खड़गासन अमलान॥१॥
अतिशयवंत अनंत बल धारक बिंब अनूप।
अर्घ चढ़ाय नमों सदा जै जै जिनवर भूप॥

ओं ह्रीं वर्तमानावसर्पिणी समये प्रथम मुक्तिस्थान प्राप्ताय कर्मारि विजयो वीराधिवीर वीराग्रणी श्री वाहुवलि स्वामिने अनर्घपद प्राप्ताय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः।

बाहुबलि भजन ।

बाहुबलि स्वामी चालो, दरशन करस्यां जी
शुध मन भावसों ॥ टेर ॥
गोमट स्वामी का सुहावना, रपटन है वह पहाड़।
पांचसौ तो पैड़ी जापै, मोटा है महाराज ॥
जी बाहुबलि० ॥ १ ॥
मोटा पहाड़ का दरशन करके छोटा पहाड़ पर
आया। छोटा पहाड़ पर सतरा मंदिर चंपाका
है झाड़। जी बाहुबलि ॥ २ ॥
दरशन करके नीचे उतरया नारेलां का रूंख।
काचा खोपरा मिलै राह में, चढ़सी चौबीसी
महाराज। जी बाहुबलि० ॥ ३ ॥
गोमट स्वामी में छह मंदिर सातवां चैत्याला।
गांव गांव का आवै जातरी, पूजा भाव रचाय।
जी बाहुबलि० ॥ ४ ॥
हीरा रतनन की प्रतिमा जी, दीपक ले दरसावैं।
भक्त 'दास' की यही बीनती बहुबिध भेंट

चढाय। जी बाहुबलि० ॥ ५ ॥

श्री चांदन गांव महावीर स्वामी पूजा।

छन्द।

श्री वीर सन्मति गांव चांदनमें प्रगट भये आय कर। जिनको वचन मन कायसे मैं पूजहूं शिर नाय कर ॥ हूये दयामय नार नर लखि, शांतिरूपी भेषको। तुम ज्ञानरूपी भानसे कीना सुशोभित देशको ॥ सुर इन्द्र विद्याधर मुनी नरपति नवावें शीसको। हम नवत हैं नित चावसों महावीर प्रभु जगदीशको ॥

ओं ह्रीं श्री चांदनगांव महावीर स्वामिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ओं ह्रीं श्री चादन गाव महावीर स्वामिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ओं ह्रीं श्री चादन गांव महावीर स्वामिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टकं।

क्षीरोदधिसे भरि नीर कंचन के कलशा।
तुम चरणनि देत चढ़ाय आवागमन नशा ॥

चांदनपुरके महावीर तोरी छवि प्यारी ।
प्रभु भव आताप निवार तुम पद बलिहारी ॥१॥
ओं ह्रीं श्री चादनपुर महावीर स्वामिने जलं नि०
मलयागिर और कपूर केशर ले हरषों ।
प्रभु भव आताप मिटाय तुम चरननि परसों ॥
चांदनपुरके महा० । चंदनं
तंदुल उज्ज्वल अति धोय थारा में लाऊं ।
तुम सन्मुख पुञ्ज चढ़ाय अक्षय पद पाऊं ॥
चांदनपुरके महा० । अक्षतं
बेला केतुकी गुलाब चंपा कमल लऊं ।
जे कामबाण करि नाश तुम्हरे चरण दऊं ॥
चांदनपुरके महावीर० । पुष्पं
फैनी गुञ्जा अरु स्वांर मोदक ले लीजे ।
करि क्षुधा रोग निरवार तुम सन्मुख कीजे ॥
चांदनपुरके महावीर० । नैवेद्यं
घृतमें करपूर मिलाय दीपकमें जारो ।
करि मोहतिमिरको दूर तुम सन्मुख वारो ॥

चांद्नपुरके महावीर०। दीपं
दशविधि ले धूप बनाय तामें गंध मिला।
तुम सन्मुख खेऊं आय आठों कर्म जला॥
चांद्नपुरके महा०। धूपं
पिस्ता किसमिस बादाम श्रीफल लौंग सजा।
श्री वर्द्धमान पद राख पाऊं मोक्ष पदा।
चांद्नपुरके महा०। फलं
जल गंध सु अक्षत पुष्प चरुवर जोर करों।
ले दीप धूप फल मेलि आगे अर्घ करों॥
चांद्नपुरके महावीर०। अर्घं

टोंकके चरणोंका अर्घ

जहां कामधेनु नित आय दुग्ध जु बरसावै।
तुम चरननि दरशन होत आकुलता जावै॥
जहां छतरी बनी विशाल तहां अतिशय भारी।
हम पूजत मन वच काय तजि संशय सारी॥
चांद्नपुरके महावीर तोरी छवि प्यारी।
प्रभु भव आताप निवार तुम पद बलिहारी॥
ओं ह्रीं टोंकमें स्थापित श्री महावीर चरणेभ्यो अर्घं।

टोलेके अंदर विराजमान समयका अर्घ

टोलेके अन्दर आप सोहैं पद्मासन।
जहां चतुर निकाई देव आवें जिन शासन॥
नित पूजन करत तुम्हार करमें ले झारी।
हम हूं वसु द्रव्य बनाय पूजें भरि थारी॥
चांदनपुरके महावीर तोरी छवि प्यारी।
प्रभु भव आताप निवार तुम पद बलिहारी॥

ओं ह्रीं श्री चांदनपुर महावीर जिनेंद्राय टोलेके अंदर विराजमान समयका अर्घं।

पंचकल्याणक

कुंडलपुर नगर मंझार त्रिशला उर आयो।
सुदि छठि असाढ़ सुर आई रतनजु बरसायो॥
चांदनपुरके महावीर०

ओ ह्रीं श्री महावीर जिनेंद्राय अषाढ सुदि छठि गर्भ मंगल प्राप्ताय अर्घं।

जनमत अनहद भई घोर आये चतुर निकाई।
तेरस शुक्लाकी चैत्र सुर गिरि ले जाई॥
चांदनपुरके महावीर०॥

ओं ह्रीं श्रीमहावीर जिनेंद्राय चैत सुदि तेरस जन्म मंगल प्राप्ताय अर्घं।

कृष्णा मंगसिर दश जान लौकांतिक आये।
करि केश लौंच ततकाल झट वनको धाये॥
चांदनपुरके महावीर०॥

ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेंद्राय मंगसिर वदी दशमो तपमंगल प्राप्ताय अर्घं।

वैसाख सुदी दशमांहि घाती क्षय करना।
पायौ तुम केवल ज्ञान इन्द्रनिकी रचना॥
चांदनपुरके महावीर०॥

ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेंद्राय वैसाख सुदी दशमी केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घं।

कार्तिक जु अमावस कृष्ण पावापुर ठाहीं।
भयो तीनलोकमें हर्ष पहुंचे शिव माहीं॥
चांदनपुरके महावीर०॥

ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेंद्राय कार्तिक वदी अमावस मोक्षमंगल प्राप्ताय अर्घं।

जयमाला, दोहा।

मंगलमय तुम हो सदा श्रीसन्मति सुखदाय।

चांदनपुर महावीरकी कहूं आरती गाय ।

पद्धडी छन्द ।

जय जय चांदनपुर महावीर, तुम भक्तजनों की हरत पीर । जड़ चेतन जगके लखत आप, दई द्वादशांग वानी अलाप ॥ १ ॥ अव पंचम काल मझार आय, चांदनपुर अतिशय दई दिखाय । टीलेके अंदर वैठि वीर, नित हरा गायका तुमने क्षीर ॥२॥ ग्वालाको फिर आगाह कीन, जब दरशन अपना तुमने दीन । मूरति देखी अति ही अनूप, है नग्न दिगंवर शांति रूप ॥३॥ तहां श्रावक जन बहु गये आय, किये दरशन करि मनवचनकाय । है चिह्न शेरका ठीक जान, निश्चय है ये श्रीवर्द्धमान ॥४॥ सब देशनके श्रावक जु आय, जिन भवन अनूपम दियो वनाय । फिर शुद्ध दई वेदी कराय, तुरतहिं गजरथ फिर लयो सजाय ॥५॥ ये देख ग्वाल मनमें अधीर, मम ग्रह

को त्यागो नहीं वीर। तेरे दरशन बिन तजूं प्राण, सुनि टेर मेरी किरपा निधान ॥६॥ कीने रथमें प्रभु विराजमान, रथ हुआ अचल गिरके समान। तब तरह तरहके किये जोर, बहुतक रथ गाड़ी दिये तोड़ ॥७॥ निशिमांहि स्वप्न सचिवहिं दिखात, रथ चलै ग्वालका लगत हाथ। भोरहि झट चरण दियो बनाय, संतोष दियो ग्वालहिं कराय ॥८॥ करि जय जय प्रभु से करी टेर, रथ चल्यो फेर लागी न देर। बहु निरत करत बाजे बजाई, स्थापन कीने तहँ भवन जाइ ॥६॥ इक दिन मंत्रीको लगा दोष, धरि तोप कही नृप खाइ रोष। तुमको जब ध्याया वहां वीर, गोलासे झट बच गया वजीर ॥१०॥ मंत्री नृप चांदन गांव आय, दरशन करि पूजा की बनाय। करि तीन शिखर मंदिर रचाय, कंचन कलशा दीने धराय ॥११॥ यह हुक्म कियो जयपुर नरेश, सालाना मेला

हो हमेश। अब जुड़न लगै वहु नर उ नार, तिथि चैत सुदी पूनों मंझार ॥१२॥ मीना गूजर आवै विचित्र, सब वरण जुड़े करि मन पवित्र। बहु निरत करत गावें सुहाय, कोई २ घृत दीपक रह्यो चढ़ाय ॥१३॥ कोइ जय जय शब्द करै गंभीर, जय जय जय हे श्री महावीर। जैनी जन पूजा रचत आन, कोई छत्र चंवरके करत दान ॥१४॥ जिसकी जो मन इच्छा करंत, मन वांछित फल पावै तुरंत। जो करै वंदना एकबार, सुख पुत्र संपदा हो अपार ॥१५॥ जो तुम चरणोंमे रखै प्रीत, ताको जगमें को सकै जीत। है शुद्ध यहांका पवन नीर, जहां अति विचित्र सरिता गंभीर ॥१६॥ पूरनमल पूजा रची सार, हो भूल लेउ सज्जन सुधार। मेरा है शमशावाद ग्राम, त्रय काल करूं प्रभुको प्रणाम ॥१७॥

घत्ता।

श्री वर्द्धमान तुम गुण निधान उपमा न बनी

तुम चरनन की। है चाह यही नित बनी रहै
अभिलाष तुम्हारे दरशन की ॥

ओं ह्रीं श्री चादन गाव महावीर जिनेन्द्राय अर्घं ।

दोहा।

अष्टकर्मके दहनको पूजा रची विशाल।
पढ़े सुनें जो भावसे छूटे जग जंजाल ॥१॥
संवत जिन चौबीस सौ है वासठकी साल।
एकादश कार्तिक वदी पूजा रची सम्हाल ॥२॥

इत्याशीर्वाद.।

महावीर स्वामीका भजन।

चाल—रसिया।

चांदनपुरके महावीर हमारी पीर हरो ॥ टेर ॥
जयपुर राज्य गांव चांदनपुर, तहां वनो उन्नत जिन मंदिर। तट नदी गम्भीर, हमारी पीर हरो ॥ चांदनपुरके० ॥१॥
पूरव बात चली यों आवे, एक गाय चरनेको जावे। झर जाय उसका क्षीर. हमारी पीर हरो ॥ चांदनपुरके० ॥२॥

एक दिवस मालिक संग आयो, देख गाय टीलो खुदवायो । खोदत भयो अधीर, हमारी पीर हरो ॥ चांदनपुरके० ॥३॥

रैन मांहि तब सुपनो दीनों, धीरे धीरे खोद जमीनो । है इसमें तस्वीर, हमारी पीर हरो ॥ चांदनपुरके० ॥४॥

प्रात होत फिर भूमि खुदाई, वीर जिनेश्वर प्रतिमा पाई । भई इकट्ठी भीड़, हमारी पीर हरो ॥चांदनपुरके० ॥५॥

तब ही से हुआ मेला जारी, होय भीड़ हर-साल करारी । चैत मास आखीर, हमारी पीर हरो ॥ चांदनपुरके० ॥६॥

लाखों मीना गूजर आवें, नाचें गावें गीत सुनावें । जय बोलें महावीर, हमारी पीर हरो ॥ चांदनपुरके० ॥७॥

जुड़े हजारों जैनी भाई, पूजन पाठ करें सुखदाई । मनवचतन धरि धीर, हमारी पीर हरो ॥

चांद्नपुरके० ॥८॥

छत्र चमर सिंहासन लावें, भरि भरि घृतके दीप जलावें। बोलें जै गम्भीर, हमारी पीर हरो॥ चांद्नपुरके० ॥९॥

जो कोई सुमरे नाम तुम्हारा, धन संतान बढ़े व्यौपारा। होय निरोग शरीर, हमारी पीर हरो॥ चांद्नपुरके० ॥१०॥

मक्खन शरण तुम्हारी आयो, पुण्य योगसे दर्शन पायो। खुली आज तकदीर, हमारी पीर हरो॥ चांद्नपुरके० ॥११॥

स्तुति पाठ-संग्रह।

निर्वाणकांड (गाथा)

अट्ठावयम्मि उसहो चंपाए वासुपुज्जजिणणाहो। उज्जंते णेमिजिणो पावाए णिब्बुदो महावीरो॥ १॥ वीसं तु जिणवरिंदा अमरासुर

वंदिदा धुदकिलेसा। सम्मेदे गिरि सिहरे णि-
व्वाण० ॥ २ ॥ वरदत्तो य वरंगोसायरदत्तोय
तारवरणयरे। आहुट्ठयकोडीओ णिव्वाण० ॥३॥
णेमिसामि पज्जण्णो संबुकुमारो तहेव अणि-
रुद्धो। वाहत्तरिकोडीओ उज्जंते सत्तसया सिद्धा
॥ ४ ॥ रामसुआवेण्णि जणा लाडणरिंदाण
पंचकोडीओ। पावागिरिवरसिहरे णिव्वाण०
पंडुसुआतिण्णिजणा दविडणरिंदाण अट्ठको-
डीओ। सत्तुंजयगिरिसिहरे णिव्वाण० ॥ ६ ॥
संते जे बलभद्दा जदुबणरिंदाण अट्ठकोडीओ।
गजपंथे गिरि सिहरे णिव्वाण० ॥ ७ ॥ राम-
हणू सुग्गीओ गवयगवाक्खो य णीलमहणी-
लो। णवणवदीकोडीओ तुंगीगिरिणिव्वुदे वंदे
॥ ८ ॥ णंगाणंगकुमारा कोडीपंचद्धमुणिवरा
सहिया। सुवणागिरिवरसिहरे णिव्वाण० ॥९॥
दहमुहरायस्स सुआ कोडीपंचद्धमुणिवरा सहिया
रेवाउहयतडग्गे णिव्वाण० ॥ १० ॥ रेवाणइए

तीरे पच्छिमभायम्मि सिद्धवरकूडे । दो चक्की दह कप्पे आहुट्ठ य कोडिणिव्वुदे वंदे ॥ ११ ॥

वडवाणीवरणयरे दक्खिणभायम्मि चूलगिरि-सिहरे । इंदजीदकुंभयणो णिव्वाण० ॥ १२ ॥

पावागिरिवरसिहरे सुवण्णभद्दाइमुणिवरा चिउ-रो। चलणाणईतडग्गे णिव्वाण० ॥ १३ ॥

फलहोडीवरगामे पच्छिमभायम्मि दोणगिरि-सिहरे । गुरुदत्ताइमुणिंदा णिव्वाण० ॥ १४ ॥

णायकुमारमुणिंदो बालि महाबालि चेव अज्झे-या। अट्ठावयगिरिसिहरे णिव्वाण० ॥ १५ ॥

अच्चलपुरवरणयरे ईसाणे भायमेढगिरिसिहरे । आहुट्ठयकोडीओ णिव्वाण० ॥ १६ ॥ वंसत्थ-लवणणियरे पच्छिम भायम्मि कुंथुगिरिसिहरे। कुलदेसभूषणमुणी णिव्वाण० ॥ १७ ॥ जस-रहरायस्स सुआ पंचसायाइं कलिंगदेसम्मि । कोडिसिलाकोडिमुणी णिव्वाण० ॥ १८ ॥

पासस्स, समवसरणे सहिया वरदत्तमुणिवरा

पंच। रिस्सिंदे गिरिसिहरे णिव्वाण गया णमो तेसिं ॥ १६ ॥

अइसयखेत्तकंड—अतिशयक्षेत्रकाडं।

पासं तह अहिणंदण णायद्दहि मंगलाउरे वंदे। अस्सारम्मे पट्टणि मुणिसुव्वओ तहेव वंदामि ॥ १ ॥ बाहूबलि तह वंदमि पोयणपुरहत्थिणा-पुरे वंदे। सांति कुंथव अरिहो वाणारसिए सुपासपासं च ॥ २ ॥ महुराए अहिछित्ते वीरं पासं तहेव वंदामि। जंबुमुणिंदो वंदे णिब्बुइ-पत्तोवि जंबुवणगहणे ॥ ३ ॥ पंचकल्लाणठाणइं जाणवि संजादमज्झलोयम्मि। मणवयणका-यसुद्धी सव्वं सिरसा णमस्सामि ॥ ४ ॥ अग्ग-लदेवं वंदमि वरणयरे णिवडकुंडली वंदे। पासं सिवपुरि वंदमि होलागिरिसंखदेवम्मि ॥ ५ ॥ गोमटदेवं वंदमि पंचसयं धणुहदेहउच्चंतं। देवा कुणंति बुट्ठी केसरिकुसुमाण तस्स उवरि-म्मि ॥ ६ ॥ णिव्वाण ठाण जाणिवि अइस-

यठाणाणि अइसए सहिया। संजादमिच्चलोए सव्वे सिरसा णमस्सामि॥ ७॥ जो जण पढइ तियालं णिव्वुइकंडंपि भावसुद्धीए। भुंजदि णरसुरसुक्खं पच्छा सो लहइणिव्वाणं॥



आलोचना पाठ।

यह आलोचनापाठ सामायिक पाठमे प्रथमकर्म प्रतिक्रमण कर्म है उस कर्मके आदि वा अन्तमें बोलना चाहिये।

दोहा।

वंदों पांचों परमगुरु, चौबीसों जिनराज।
करूं शुद्ध आलोचना, शुद्धिकरनके काज॥१॥

सखी छंद चौदह मात्रा।

सुनिये जिन अरज हमारी। हम दोष किये अति भारी॥ तिनकी अब निर्वृत्ति काजा। तुम सरन लही जिनराजा॥ २॥ इक वे ते चउ इन्द्री वा, मनरहित सहित जे जीवा। तिनकी नहिं करुणा धारी, निरदइ ह्वै घात विचारी॥ ३॥ समरंभ समारंभ आरंभ, मन

वच तन कीने प्रारंभ, कृत कारित मोदन करि
कैं। क्रोधादि चतुष्टय धरिकैं ॥ ४ ॥ शत आठ
जु इमि भेदनतैं, अघ कीने परछेदनतैं। तिन-
की कहुं कोलौं कहानी, तुम जानत केवल-
ज्ञानी ॥ ५ ॥ विपरीत एकांत विनयके, संशय
अज्ञान कुनयके। वश होय घोर अघ कीने,
वचतैं नहिं जाय कहीने ॥ ६ ॥ कुगुरनकी
सेवा कीनी, केवल अदयाकरि भीनी। या-
विधि मिथ्यात भ्रमायो, चहुंगति मधि दोष
उपायो ॥ ७ ॥ हिंसा पुनि झूठ जु चोरी,
परवनितासों दृग जोरी। आरंभपरिग्रह भीनो,
पनपाप जु या विधि कीनो ॥ ८ ॥ सपरस
रसना घ्राननको, चखु कान विषयसेवनको।
वहुकरम किये मनमाने। कछु न्याय अन्याय
न जाने ॥ ९ ॥ फल पंच उदंवर खाये। मधु
मांस मद्य चितचाहे। नहिं अष्टमूलगुणधारी,
सेये कुविसन दुखकारी ॥१०॥ दुइवीस अभख

जिनगाये। सो भी निशदिन भुंजाये॥ कछु भेदाभेद न पायो। ज्यों त्योंकरि उदर भरायो ॥११॥ अनंतानु जु बंधी जानो। प्रत्याख्यान अप्रत्याख्यानो॥ संज्वलन चौकरी गुनये। सब भेद जु षोड़श मुनिये॥१२॥ परिहास अ-रतिरति शोग। भय ग्लानि तिवेद संयोग॥ पनवीस जु भेद भये इम। इनके वश पाप किये हम ॥१३॥ निद्रावश शयन कराई। सुप-नेमधिदोष लगाई। फिर जागि विषयवन धा-यो। नानाविध विषफल खायो ॥१४॥ किये-ऽहार निहारविहारा। इनमें नहिं जतन विचा-रा॥ बिन देखी धरी उठाई। बिन शोधी वस्तु जो खाई ॥१५॥ तब ही परमाद सतायो। बहु विध विकलप उपजायो॥ कछु सुधिबुधि नाहिं रही है। मिथ्यामति छाय गयी है ॥१६॥ मर-जादा तुमढिग लीनी। ताहूमें दोष जु कीनी॥ भिन भिन अब कैसे कहिये। तुम ज्ञानविषैं

सब पइये ॥१७॥ हा हा! मैं दुठ अपराधी। त्रस जीवनराशि विराधी। थावरकी जतन न कीनी। उरमें करुणा नहिं लीनी ॥१८॥ पृथिवी बहु खोद कराई। महलादिक जागां चिनाई॥ पुनि विनगाल्यो जल ढोल्यो। पंखातैं पवन विलोल्यो ॥१९॥ हा हा! मैं अदयाचारी। बहु हरितकाय जु विदारी॥ तामधि जीवनके खंदा। हम खाये धरि आनंदा ॥२०॥ हा हा! मैं परमाद बसाई। बिन देखे अगनि जलाई॥ तामधि जे जीव जु आये। ते हू परलोक सिधाये ॥२१॥ बीध्यो अनराति पिसायो। ईंधन बिन सोधि जलायो॥ झाड़ू लै जागां बुहारी। चिवटी आदिक जीव विदारी ॥२२॥ जल छानि जिवानी कीनी। सो हू पुनि डारि जु दीनी॥ नहि जलथानक पहुंचाई। किरिया विन पाप उपाई ॥२३॥ जल मल मोरिन गिरवायो। कृमिकुल बहु घात करायो॥ नदियन विच

चीर धुवाये। कोसनके जीव मराये ॥२४॥ अन्नादिक शोध कराई। तामैं जु जीव निसराई ॥ तिनका नहिं जतन कराया। गरियालैं धूप डराया ॥२५॥ पुनि द्रव्य कमावन काजै। बहु आरंभ हिंसा साजै ॥ कीये अघ तिसनावश भारी। करुणा नहिं रंच विचारी ॥२६॥ इत्यादिक पाप अनंता। हम कीने श्रीभगवंता॥ संतति चिरकाल उपाई। बाणीतैं जात न गाई ॥२७॥ ताको जु उदय अब आयो। नानाविध मोहि सतायो ॥ फल भुंजत जियदुख पावै। वचतैं कैसे करि गावै ॥२८॥ तुम जानत केवल ज्ञानी। दुख दूर करो शिवथानी ॥ हम तो तुम शरण लही है। जिन तारनविरद सही है॥२९॥ इक गांवपती जो होवै। सो भी दुखिया दुख खोवै ॥ तुम तीनभुवनके स्वामी। दुख मेटहु अंतरजामी ॥३०॥ द्रोपदिको चीर बढ़ायो। सीताप्रति कमल रचायो ॥ अंजनसे किये अ-

कामी । दुखमेटो अंतरजामी ॥३१॥ मेरे अवगुन न चितारो । प्रभु अपनो विरद सम्हारो ॥ सब दोषरहित करि स्वामी। दुखमेटहु अंतरजामी ॥३२॥ इन्द्रादिक पदवी न चाहूं । विषयनिमें नाहिं लुभाऊं ॥ रागादिक दोष हरीजे। परमातम निजपद दीजै ॥३३॥

दोहा ।

दोषरहित जिनदेवजी. निजपद दीज्यो मोय।
सब जीवनके सुख बढ़ै. आनंद मंगल होय ॥
अनुभव माणिक पारखी, 'जौहरी' आप जिनंद।
ये ही वर मोहि दीजिये. चरणशरण आनंद ॥

इत्याशीर्वादः ।

सामायिक पाठ भाषा

१ प्रतिक्रमण कर्म ।

काल अनंत भ्रम्यो जगमें सहिये दुख भारी ।
जन्ममरण नित किये पापको ह्वै अधिकारी ॥

कोटि भवांतरमांहि मिलन दुर्लभ सामायिक। धन्य आज मैं भयो जोग मिलियो सुखदा-यक ॥१॥ हे सर्वज्ञजिनेश ! किये जे पापजु मैं अब। ते सब मनवचकाय योगकी गुप्ति बिना लभ ॥ आप समीप हजूर मांहि मैं खड़ो खड़ो सब। दोष कहूं सो सुनो करो नठ दुःख देहिं जब ॥२॥ क्रोध मान मद लोभ मोह माया-वशि प्रानी। दुःखसहित जे किये दया तिनकी नहिं आनी ॥ बिना प्रयोजन एकेंद्रिय बिति चउपंचेंद्रिय। आप प्रसादहिं मिटै दोष जो लग्यौ मोहि जिय ॥३॥ आपसमें इकठौर थाप करि जे दुख दीने। पेलि दिए पगतलैं दावि-करि प्राण हरीने ॥ आप जगतके जीव जिते तिन सबके नायक। अरज करूं मैं सुनो दोष मेटो दुःखदायक ॥ ४ ॥ अंजन आदिक चोर महा घनघोर पापमय। तिनके जे अपराध भये ते क्षमा क्षमा किय ॥ मेरे जे अब दोष भये

ते क्षमहु दयानिधि। यह पडिकोणो कियो आदि षटकर्म मांहि विधि ॥५॥

२ द्वितीय प्रत्याख्यान कर्म।

इसके आदि वा अन्तमे आलोचना पाठ बोलकर फिर तीसरे सामायिक कर्मका पाठ करना चाहिये।

जो प्रमादवशि होय विराधे जीव घनेरे। तिनको जो अपराध भयो मेरे अघ ढेरे॥ सो सब झूठो होउ जगतपतिके परसादै। जा प्रसादतैं मिलै सर्व सुख दुःख न लाधै॥६॥ मैं पापी निर्लज्ज दया करि हीन महाशठ। किये पाप अघ ढेर पापमति होय चित्त दुठ॥ निंदूं हूं मैं वार वार निज जियको गरहूं। सबविधि धर्म उपाय पाय फिर पापहिं करहूं॥७॥ दुर्लभ है नरजन्म तथा श्रावक कुल भारी। सतसंगति संजोग धर्म जिन श्रद्धा धारी॥ जिन वचनामृत धार समावर्तें जिनवानी। तोहू जीव संहारे धिक धिक धिक हम जानी॥८॥ इन्द्रियलंपट होय खोय निज ज्ञान जमा सब।

अज्ञानी जिमि करै तिसी विधि हिंसक ह्वै अब ॥ गमनागमन करंतो जीव विराधे भोले। ते सब दोष किये निंदूं अब मन वच तोले॥ ६॥ आलोचनविधि थकी दोष लागे जु घनेरे। ते सब दोष विनाश होउ तुम तैं जिन मेरे ॥ बारबार इस भांति मोहमद दोष कुटिलता। ईर्षादिकतैं भये निंदिये जे भयभीता ॥१०॥

३ तृतीय सामायिक भावकर्म।

सब जीवनमें मेरे समताभाव जग्यो है। सब जिय मोसम समता राखो भाव लग्यो है॥ आर्त्त रौद्र द्वय ध्यान छांड़ि करिहूं सामायिक। संजम मो कब शुद्ध होय यह भावबधायक॥ ११॥ पृथिवी जल अरु अग्नि वायु चउकाय वनस्पति। पंचहि थावरमांहि तथा त्रस जीव वसैं जित॥ वेइन्द्रिय तिय चउ पंचेंद्रियमांहि जीव सब। तिनतें क्षमा कराऊं मुझपर क्षमा करो अब ॥१२॥ इस अवसरमें मेरे सब सम

कंचन अरु तृण। महल मसान समान शत्रु अरु मित्रहिं सम गण॥ जामन मरण समान जानि हम समता कीनी। सामायिकका काल जितै यह भाव नवीनी॥ १३॥ मेरो है इक आतम तामैं ममत जु कीनो। और सबै मम भिन्न जानि समता रस भीनो॥ मात पिता सुत वंधु मित्र तिय आदि सबै यह। मोतैं न्यारे जानि जथारथ रूप कर्यो गह॥१४॥ मैं अनादि जगजालमांहि फंसि रूप न जाण्यो। एकेंद्रिय दे आदि जंतुको प्राण हराण्यो॥ ते सब जीवसमूह सुनो मेरी यह अरजी। भवभवको अपराध छिमा कीज्यो कर मरजी॥१५॥

४ चतुर्थ स्तवनकर्म।

नमौं ऋषभ जिनदेव अजित जिन जीति कर्मको। संभव भवदुःखहरण करण अभिनंद शर्म को॥ सुमति सुमति दातार तार भवसिंधु पार कर। पद्मप्रभ पद्माभ भानि भवभीति प्रीति

धर ॥ १६ ॥ श्रीसुपार्श्व कृतपाश नाश भव जास शुद्धकर। श्रीचंद्प्रभ चंद्रकांतिसम देह कांतिधर ॥ पुष्पदंत दमि दोषकोश भविपोष रोषहर। शीतल शीतल करण हरण भवताप दोषकर ॥१७॥ श्रेयरूप जिनश्रेय ध्येय नित सेय भव्यजन। वासुपूज्य शतपूज्य वासवादिक भवभयहन॥ विमल विमलमति देन अंतगत है अनंत जिन। धर्मशर्मशिवकरण शांतिजिन शांतिविधायिन॥१८॥ कुंथ कुंथुमुख जीवपाल अरनाथ जाल हर। मल्लि मल्लसम मोहमल्लमारण प्रचार धर। मुनिसुव्रत व्रतकरण नमत सुर-संघहिं नमि जिन। नेमिनाथ जिन नेमि धर्म-रथमांहि ज्ञानधन॥१९॥ पार्श्वनाथ जिन पार्श्व उपलसम मोक्ष रमापति। वर्द्धमान जिन नमूं वमूं भवदुःख कर्मकृत॥ या विधि मैं जिन संघ-रूप चउवीस संख्यधर। स्तवूं नमूं हूं बारबार वंदूं शिव सुखकर ॥२०॥

५ पंचम वंदनाकर्म।

वंदूं मैं जिनवीर धीर महावीर सुसनमति। वर्द्ध-मानअतिवीर वंदि हूं मनवचतनकृत॥ त्रिश-लातनुज महेश धीश विद्यापति वंदूं। वंदौंनित प्रति कनकरूप तनु पापनिकंदूं॥२१॥ सिद्धा-रथ नृपनंद दुंदुख दोष मिटावन, दुरित दवा-नल ज्वलित ज्वाल जगजीव उधारन॥ कुंडल पुर करि जन्म जगत जिय आनँदकारन। वर्ष वहत्तर आयु पाय सबही दुख टारन॥ २२॥ सप्तहस्त तनु तुङ्ग भंगकृतजन्ममरणभय। बाल-ब्रह्ममय ज्ञेय हेय आदेय ज्ञानमय॥ दे उपदेश उधारि तारि भवसिंधु जीवघन। आप बसे शिव-मांहि ताहि वंदौं मन वच तन॥ २३॥ जाके वंदनथकी दोष दुखदूरहि जावै। जाके वंदन थकी मुक्तितिय सन्मुख आवै॥ जाके वंदनथकी वंद्य होवें सुरगनके, ऐसे वीर जिनेश वन्दि हूं क्रमयुग तिनके॥२४॥ सामयिक षटकर्ममाहिं बंदन यह पंचम। वंदों वीरजिनेंद्र इंद्रशतवंद्य

वंद्य मम ॥ जन्ममरणभय हरो करो अघशांति शांतिमय। मैं अघकोष सुपोष दोषको दोष विनाशय ॥२५॥

६ छठा कायोत्सर्ग कर्म।

कायोत्सर्ग विधान करूं अंतिम सुखदाई। काय-त्यजनमय होय काय सबको दुखदाई॥ पूरब दक्षिण नमूं दिशा पश्चिम उत्तर मैं। जिनगृह वंदन करूं हरूं भवपापतिमिर मैं।२६। शिरोनती मैं करूं नमूं मस्तक कर धरिकैं। आवर्तादिक क्रिया करूं मन वच मद हरिकैं॥ तीनलोक जिनभवनमाहिं जिन हैं जु अकृत्रिम। कृत्रिम हैं द्वय अर्द्ध द्वीप माहीं वन्दों जिम।२७। आठकोडि परि छप्पन लाख जु सहस सत्याणूं। च्यारि शतक पर असी एक जिनमंदिर जाणूं॥ व्यंतर ज्योतिषमाहिं सख्यरहिते जिनमंदिर। ते सब वंदन करूं हरहु मम पाप संघकर॥२८॥ सामायिकसम नाहिं और कोउ वैरमिटायक।

सामायिक सम नाहिं और कोउ मैत्रीदायक॥ श्रावक अणुव्रत आदि अन्तसप्तम गुणथानक। यह आवश्यक किये होय निश्चय दुखहानक ॥२९॥ जे भवि आतमकाज-करण उद्यमके धारी। ते सब काज विहाय करो सामायिक सारी॥ राग रोष मद्मोह्क्रोध लोभादिक जे सब। बुध महाचन्द्र विलाय जाय तातैं कीज्यो अब॥ ३०॥

इति सामायिक पाठ समाप्त

भक्तामर स्तोत्र भाषा।

आदिपुरुष आदीश जिन,आदि सुविधिकरतार।
धरमधुरंधर परमगुरु, नमों आदि अवतार ॥१॥

चौपा।

सुरनतमुकुट रतन छवि करैं। अन्तर पाप-तिमिर सब हरैं॥ जिनपद वंदों मनवचकाय। भवजलपतित-उधरनसहाय ॥ १ ॥ श्रुतपारग

इंद्रादिक देव। जाकी थुति कीनी कर सेव॥ शब्द मनोहर अरथ विशाल। तिस प्रभुकी वरनों गुनमाल॥ २॥ विबुधवंद्यपद मैं मति-हीन। होय निलज्ज थुति-मनसा कीन। जल-प्रतिविंब बुद्धको गहै। शशिमंडल बालक ही चहै॥३॥ गुनसमुद्र तुमगुन अविकार। कहत न सुरगुरु पावैं पार॥ प्रलयपवनउद्धत जल-जंतु। जलधि तिरैको भुजबलवंतु॥४॥ सो मैं शक्तिहीन थुति करूं। भक्तिभाववश कछु नहिं डरूं॥ ज्यों मृगि निजसुतपालन हेत। मृगपतिसन्मुख जाय अचेत॥ ५॥ मैं शठ सुधीहंसनको धाम। मुझ तव भक्ति-बुलावै राम॥ ज्यों पिक अंबकलीपरभाव। मधुऋतु मधुर करै आराव॥ ६॥ तुमजस जंपत जन छिनमाहिं। जनम जनमके पाप नशाहिं॥ ज्यों रवि उगै फटै ततकाल। अलिवत नील निशातमजाल॥ तुव प्रभावतैं कहूं विचार।

होसी यह थुति जनमनहार॥ ज्यों जलकमल-पत्रपै परै। मुक्ताफलकीद्युति विस्तरै ॥८॥ तुम गुनमहिमा हतदुखदोष। सो तो दूर रहो सुख-पोष। पापविनाशक है तुम नाम। कमल-विकाशी ज्यों रविधाम ॥९॥ नहिं अचंभ जो होहिं तुरंत। तुमसे तुमगुण वरणत संत॥ जो अधीनको आपसमान। करै न सो निंदित धनवान ॥ १० ॥ इकटक जन तुमकों अवि-लोय। अवरविषैरति करै न सोय॥ कोकरि क्षीरजलधिजल पान। क्षारनीर पीवै मतिमान ॥ ११ ॥ प्रभु तुम वीतराग गुणलीन। जिन परमाणु देह तुम कीन। हैं तितने ही ते पर-माण। यातैं तुम सम रूप न आन॥ १२ ॥ कहँ तुम मुख अनुपम अविकार। सुरनरनाग-नयनमनहार। कहां चंद्रमंडल सकलंक। दिनमें ढाकपत्र सम रंक॥ १३ ॥ पूरनचन्द जोति छविवंत। तुमगुन तीनजगत लंघंत॥

एक नाथ त्रिभुवन आधार। तिन विचरतको करै निवार ॥१४॥ जो सुरतिय विभ्रम आरम्भ। मन न डिग्यो तुम तौ न अचंभ॥ अचल चलावै प्रलय समीर। मेरुशिखर डगमगैं न धीर ॥१५॥ धूमरहित वाती गत नेह। परकाशै त्रिभुवन घर एह॥ वातगम्य नाहीं परचंड। अपर दीप तुम बलो अखंड॥१६॥ छिपहु न लुपहु राहुकी छांहि। जगपरकाशक हो छिन मांहि॥ घन अनवर्त्त दाह विनिवार। रवितैं अधिक धरो गुणसार ॥१७॥ सदा उदित विदलित मनमोह। विघटित मेघराह अविरोह॥ तुम मुखकमल अपूरवचंद। जगतविकाशी जोति अमंद ॥१८॥ निशदिन शशि रविको नहिं काम। तुम मुखचंद हरै तम धाम॥ जो स्वभावतैं उपजै नाज। सजल मेघ तो कौनहु काज ॥१६॥ जो सुबोध सोहै तुममांहि। हरि हर आदिकमैं सो नाहिं॥ जो द्युति

महारतनमैं होय। काचखंड पावै नहिं सोय ॥२०॥

नाराच छन्द ।

सराग देव देख मैं भला विशेष मानिया ।
स्वरूप जाहि देख वीतराग तू पिछानिया ॥
कछू न तोहि देखके जहां तुही विशेखिया ।
मनोग चित्तचोर और भूलहू न पेखिया ॥२१॥
अनेक पुत्रवंतिनी नितंबिनी सपूत हैं। न तो समान पुत्र और माततैं प्रसूत हैं॥ दिशा धरंत तारिका अनेक कोटि को गिनै। दिनेश तेजवंत एक पूर्व ही दिशा जनै ॥२२॥ पुरान हो पुमान हो पुनीत पुन्यवान हो। कहैं मुनीश अन्धकारनाशको सुभान हो॥ महंत तोहि जान के न होय वश्य कालके। न और मोहि मोखपंथ देय तोहि टालके ॥२३॥ अनंत नित्य चित्तकी अगम्य रम्य आदि हो। असंख्य सर्वव्यापि विष्णु ब्रह्म हो अनादि हो॥ महेश कामकेतु योग ईश योग ज्ञान हो। अनेक एक ज्ञानरूप शुद्ध संतमान हो ॥२४॥ तुही जिनेश

बुद्ध है सुबुद्धिके प्रमानतैं। तुही जिनेश शंकरो जगत्त्रयी विधानतैं॥ तुही विधात है सही सुमोखपंथ धारतैं। नरोत्तमो तुही प्रसिद्ध अर्थके विचारतैं ॥ २५ ॥ नमों करूं जिनेश तोहि आपदा निवार हो। नमों करूं सुभूरि भूमिलोकके सिंगार हो॥ नमों करूं भवाब्धि नीरराशिशोष हेतु हो। नमों करूं महेश तोहि मोखपंथ देतु हो ॥ २६ ॥

चौपाई १५ मात्रा।

तुम जिन पूरनगुनगन भरे। दोष गर्वकरि तुम परिहरे॥ और देवगण आश्रय पाय। स्वप्न न देखे तुम फिर आय ॥२७॥ तरु अशोकतर किरन उदार। तुमतन शोभित है अविकार। मेघनिकट ज्यों तेज फुरंत। दिनकर दिपै तिमिर निहनंत ॥२८॥ सिंहासन मणिकिरन विचित्र। तापर कंचनवरण पवित्र॥ तुम तन शोभित किरनविथार। ज्यों उदयाचल रवितमहार ॥२९॥ कुंदपुहुप सितचमर ढुरंत। कन-

क वरन तुमतन शोभंत॥ ज्यों सुमेरुतट नि-
र्मल कांति। झरना झरै नीर उमगांति ॥३०॥
ऊंचे रहैं सूर दुति लोप। तीन छत्र तुम दिपैं
अगोप॥ तीन लोककी प्रभुता कहैं। मोती
झालरसों छवि लहैं ॥३१॥ दुंदुभि शब्द गहर
गंभीर। चहुंदिशि होय तुम्हारे धीर॥ त्रिभु-
वनजन शिवसंगम करै। मानूं जय जय रव
उच्चरै ॥३२॥ मंद पवन गंधोदक इष्ट। विविध
कल्पतरु पुहुप सुवृष्ट॥ देव करैं विकसित द-
ल सार। मानों द्विजपंकति अवतार ॥३३॥
तुम तन भामंडल जिनचंद। सब दुतिवंत
करत है मंद॥ कोटिशंख रवितेज छिपाय।
शशि निर्मल निशि करै अछाय ॥३४॥ स्वर्ग
मोक्ष मारग संकेत। परम धरम उपदेशन हे-
त। दिव्य वचन तुम खिरैं अगाध। सब भा-
षा गर्भित हितसाध ॥३५॥

दोहा।

विकसित सुवरन कमलदुति, नखदुति मिलि

चमकाहिं। तुम पद पदवी जहँ धरो, तहँ सुर कमल रचाहिं ॥३६॥ ऐसी महिमा तुम विषै, और धरै नहिं कोय। सूरजमें जो जोत है, नहिं तारागण होय ॥३७॥

षट्पद।

मदअवलिप्तकपोल-मूल अलिकुल झंकारैं।
तिन सुन शब्द प्रचंड क्रोध उद्धत-अति धारैं॥
कालवरन विकराल, कालवत सन मुख आवै।
ऐरावत सो प्रबल, सकल जन भय उपजावै॥
देखि गयंद न भय करै तुम पदमहिमा लीन।
विपतिरहित संपतिसहित, वरतैं भक्त अदीन ॥ ३८ ॥ अति मदमत्तगयंद कुंभथल नखन विदारै। मोती रक्त समेत डारि भूतल सिंगारै ॥ बांकी दाढ बिशाल, वदनमें रसना लोलै। भीमभयानकरूप देखि जन थरहर डोलै॥ ऐसे मृगपति पगतलैं, जो नर आयो होय। शरण गये तुम चरणकी, बाधा करै न सोय ॥ ३९ ॥ प्रलयपवनकर उठी आग जो तास

पटंतर। वमैं फुलिंग शिखा उतंग परजलैं निरंतर॥ जगत समस्त निगल्ल भस्मकर हैगी मानों। तड़तड़ाट दवअनल, जोर चहूंदिशा उठानों॥ सो इक छिनमें उपशमैं, नामनीर तुम लेत। होय सरोवर परिनमैं विकसित कमल समेत ॥ ४० ॥ कोकिलकंठसमान, श्याम तन क्रोध जलंता। रक्तनयन फुंकार, मारविषकण उगलंता॥ फणको ऊंचो करै, वेग ही सन्मुख धाया। तब जन होय निःशंक, देख फणिपतिको आया॥ जो चांपै निज पगतलैं, व्यापै विष न लगार। नागदमनि तुम नामकी है जिनके आधार॥ ४१ ॥ जिस रनमाहिं भयानक रवकर रहे तुरंगम। घनसे गज गरजाहिं मत्त मानों गिरि जंगम॥ अति कोलाहलमाहिं बात जहं नाहिं सुनीजै। राजन को परचंड, देख बल धीरज छीजै॥ नाथ तिहारे नामतैं अघ छिनमांहि पलाय। ज्यों

दिनकर परकाशतैं अन्धकार विनशाय ॥ ४२॥
मारै जहां गयंद कुंभ हथियार विदारै। उमगै
रुधिर प्रवाह वेग जलसम विस्तारै॥ होय ति-
रन असमर्थ महाजोधा बलपूरे। तिस रनमें
जिन तोय भक्त जे हैं नर सूरे॥ दुर्जय अरि-
कुल जीतके, जय पावैं निकलंक। तुम पद
पंकज मन बसै ते नर सदा निशंक॥ ४३॥
नक्र चक्र मगरादि मच्छकरि भय उपजावै।
जामैं वड़वा अग्नि दाहतैं नीर जलावै॥ पार
न पावै जास थाह नहिं लहिये जाकी। गरजै
अतिगंभीर, लहरकी गिनति न ताकी॥ सुख
सौं तिरै समुद्रको, जे तुमगुनसुमराहिं। लोल-
कलोलनके शिखर, पार यान ले जाहिं॥४४॥
महा जलोदर रोग, भार पीड़ित नर जे हैं।
वात पित्त कफ कुष्ट आदि जो रोग गहै हैं॥
सोचत रहैं उदास नाहिं जीवनकी आशा।
अति घिनावनी देह, धरैं दुर्गंधि निवासा॥

तुम पदपंकजधूलको, जो लावैं निज अंग। ते नीरोग शरीर लहि, छिनमें होय अनंग ॥ ४५ ॥ पांव कंठतैं जकर बांध सांकल अति भारी। गाढी बेड़ी पैरमांहि, जिन जांघ विदारी ॥ भूख प्यास चिन्ता शरीर दुख जे विललाने। सरन नाहिं जिन कोय भूपके बंदीखाने ॥ तुम सुमरत स्वयमेव ही बन्धन सब खुल जांहि। छिनमें ते सम्पति लहैं, चिन्ता भय बिनसाहिं ॥४६॥ महामत्त गजराज और मृग राज दवानल। फनपति रण परचण्ड नीरनिधि रोग महाबल ॥ बन्धन ये भय आठ डरपकर मानों नाशै। तुम सुमरत छिनमाहिं, अभय थानक परकाशै ॥ इस अपार संसारमें, शरन नाहिं प्रभु कोय ॥ यातैं तुम पदभक्तको भक्ति सहाई होय ॥४७॥ यह गुनमाल विशाल नाथ तुम गुणन सवारी, विविध वर्णमय पुहुप, गूंथ मैं भक्ति विथारी। जे नर पहिरें कण्ठ भावना

मनमें भावै। मानतुंग ते निजाधीन, शिव-लक्ष्मी पावै॥ भाषा भक्तामर कियौ हेमराज हितहेत। जे नर पढ़े सुभावसों ते पावै शिव-खेत॥ ४८॥

इति।

दुःखहरण स्तुति।

श्रीपति जिनवर करुणायतनं, दुखहरन तुमारा बाना है। मत मेरी बार अबार करो, मोहि देहु विमल कल्याना है॥ टेक॥ त्रैकालिक वस्तु प्रत्यक्ष लखो, तुमसौं कछु बात न छाना है। मेरे उर आरत जो वरतैं, निहचै सब सो तुम जाना है॥ अवलोक विथा मत मौन गहो नहिं मेरा कहीं ठिकाना है। हो राजिव-लोचन सोचविमोचन, मैं तुमसौं हित ठाना है॥ श्री०॥ १॥ सब ग्रन्थनिमें निरग्रन्थनि ने, निरधार यही गणधार कही। जिननायक ही सब लायक हैं, सुखदायक छायक ज्ञान-

मही ॥ यह बात हमारे कान परी, तव आन तुमारी सरन गही। क्यों मेरी वार विलंब करो, जिननाथ सुनो यह बात सही ॥ श्री० ॥ २ ॥ काहूको भोग मनोग करो, काहूको स्वर्गविमाना है। काहूको नागनरेशपती, काहूको ऋद्धि निधाना है। अब मोपर क्यों न कृपा करते, यह क्या अंधेर जमाना है। इनसाफ करो मत देर करो, सुखवृन्द भजो भगवाना है ॥ श्री० ॥ ३ ॥ खल कर्म मुझे हैरान किया, तव तुमसों आन पुकारा है। तुम ही समरत्थ न न्याय करो, तब बंदेका क्या चारा है। खल घायल पालक बालकका नृपनीति यही जगसारा है। तुम नीतिनिपुन त्रैलोकपती, तुमही लगि दौर हमारा है ॥ श्री० ॥४॥ जबसे तुमसे पहिचान भई, तबसें तुमही को माना है। तुमरे ही शासनका स्वामी, हमको शरना सरधाना है ॥ जिनको तुमरी शरनागत

है, तिनसौं जमराज डराना है। यह सुजस तुम्हारे सांचेका सब गावत वेद पुराना है। श्री० ॥ ५ ॥ जिसने तुमसे दिलदर्द कहा तिसका तुमने दुख हाना है। अघ छोटा मोटा नाशि तुरत सुख दिया तिन्हें मनमाना है॥ पावकसों शीतल नीर किया औ चीर बढा असमाना है। भोजन था जिसके पास नहीं सो किया कुबेर समाना है॥ श्री० ॥ ६ ॥ चिंतामन पारस कल्पतरू सुखदायक ये परधाना है। तव दासनके सब दास यही हमरे मनमें ठहराना है॥ तुम भक्तनको सुरइंद्रपदी फिर चक्रवर्तिपद पाना है। क्या बात कहौं विस्तार बढ़े वे पावैं मुक्ति ठिकाना है॥ श्री० ॥ ७ ॥ गति चार चौरासी लाखविषैं चिन्मूरत मेरा भटका है। हो दीनबंधु करुणानिधान अबलौं न मिटा वह खटका है॥ जब जोग मिला शिवसाधनका तब बिघन कर्मने हटका

है। अब विघन हमारे दूर करो सुख देहु निराकुल घटका है ॥ श्री० ॥ ८ ॥ गजग्राहग्रसित उद्धार लिया, ज्यों अंजन तस्कर तारा है ॥ ज्यों सागर गोपदरूप किया। मैनाका संकट टारा है ॥ ज्यों शूलीतें सिंहासन औ बेडीको काट विडारा है। त्यों मेरा संकट दर करो प्रभु मोकूं आश तुम्हारा है ॥ श्री० ॥९॥ ज्यों फाटक टेकत पांय खुला औ सांप सुमन कर डारा है। ज्यों खड्ग कुसुमका माल किया। बालकका जहर उतारा है ॥ ज्यों सेठ विपत चकचूर पूर घर लक्ष्मीसुख विस्तारा है। त्यों मेरा संकट दूर करो प्रभु मोकूं आस तुम्हारा है ॥ श्री० ॥ १० ॥ यद्यपि तुमको रागादि नहीं यह सत्य सर्वथा जाना है। चिन्मूरति आप अनंतगुनी नित शुद्धदशा शिवथाना है। तद्दपि भक्तनकी भीड़ हरो सुखदेत तिन्हें जु सुहाना है। यह शक्ति अचिन्त तुम्हारीका क्या

पावै पार सयाना है ॥ श्री० ॥ ११ ॥ दुःख-खंडन श्रीसुखमंडनका तुमरा प्रन परम प्रमाना है। बरदान दया जस कीरतका तिहुं लोक-धुजा फहराना है ॥ कमलाधरजी ! कमलाकर जी, करिये कमला अमलाना है। अब मेरि विथा अवलोकि रमापति, रंच न बार लगाना है ॥ श्री० ॥ १२ ॥ हो दीनानाथ अनाथ हितू जन दीन अनाथ पुकारी है। उदयागत कर्म-विपाक हलाहल, मोह विथा विस्तारी है। ज्यों आप और भवि जीवनकी, ततकाल विथा निरवारी है। त्यों 'वृंदावन' यह अर्ज करै प्रभु आज हमारी बारी है ॥ १३ ॥

पं० दौलतराम कृत स्तुति

सफल ज्ञेय ज्ञायक तदपि, निजानंद रसलीन।
सो जिनेंद्र जयवंत नित, अरिरज रहसि विहीन ॥

पद्धरि छन्द।

जय वीतराग विज्ञानपूर, जय मोहतिमिरको हरन सूर। जय ज्ञान अनन्तानन्तधार, दृग सुख वीरजमंडित अपार॥ जय परमशांत मुद्रासमेत, भविजनको निज अनुभूति हेत। भवि भागनवश जोगेवशाय, तुम धुनि ह्वै सुनि विभ्रम नशाय॥ तुम गुण चिन्तत निज पर विवेक, प्रगटैं विघटैं आपद अनेक। तुम जगभूषण दूषण वियुक्त, सब महिमायुक्त विकल्प मुक्त॥ अविरुद्ध शुद्ध चेतन स्वरूप, परमात्म परम पावन अनूप। शुभ अशुभ विभाव अभाव कीन, स्वाभाविक परिणति मय अछीन॥ अष्टादश दोष विमुक्त धीर, स्वचतुष्टयमय राजत गंभीर। मुनि गणधरादि सेवत महंत, नवकेवललब्धि रमा धरंत॥ तुम शासन सेय अमेय जीव, शिव गये जाहिं जैहैं सदीव। भवसागरमें दुखछार वारि, तारनको और न आप टारि॥ यह लखि निज दुःखगद हरण

काज, तुमही निमित्तकारण इलाज। जाने तातैं मैंशरण आय,उचरौं निज दुख जो चिर लहाय॥ मैं भ्रम्यो अपनपो विसरि आप, अपनाये विधि फल पुण्य पाय। निजको परको करता पिछान, परमें अनिष्टता इष्ट ठान। आकुलित भयो अज्ञान धारि, ज्यों मृग मृगतृष्णा जानि वारि। तन परिणतिमें आपो चितार, कबहूं न अनुभवो स्वपद सार। तुमको बिन जाने जो कलेश,पाये सो तुम जानत जिनेश। पशु नारक नर सुरगति मंझार, भव धर धर मर्यो अनन्तवार। अब काललब्धि बलतैं दयाल, तुम दर्शन पाय भयो खुशाल। मन शान्त भयो मिटि सकल द्वंद, चाख्यो स्वातमरस दुखनिकंद॥ तातैं अब ऐसी करहु नाथ, बिछुरै न कभी तुव चरण साथ। तुम गुणगण को नहिं छेव देव, जगतारनको तुव विरद एव॥ आतमके अहित विषय कषाय. इनमें

मेरी परिणति न जाय। मैं रहूं आपमें आप लीन, सो करो होहुं ज्यों निजाधीन॥ मेरे न चाह कछु और ईश, रत्नत्रय निधि दीजे मुनीश। मुझ कारजके कारण सु आप, शिव करहु हरहु मम मोहताप॥ शशि शांति करन तपहरण हेत, स्वयमेव तथा तुम कुशल देत। पीवत पियूष ज्यों रोग जाय, त्यों तुम अनुभवतैं भव नशाय॥ त्रिभुवन तिहुंकालमंझार कोय, नहिं तुम बिन निज सुखदाय होय। मो उर यह निश्चय भयो आज, दुखजलधि उतारन तुम जिहाज॥

तुमगुणगणमणि गणपती, गणत न पावहिं पार।
'दौल' स्वल्पमति किमि कहै, नमूं त्रियोग संभार॥

इति पं॰ दौलतराम कृत स्तुति।

पं॰ बुधजन कृत स्तुति।

प्रभु पतितपावन मैं अपावन, चरन आयो शरणजी। यो विरद आप निहार स्वामी, मेट जा-

मन मरण जी ॥ तुम ना पिछान्या आन मा
न्या देव विविध प्रकारजी। या बुद्धिसेती नि-
ज न जाण्या भ्रम गिण्या हितकारजी ॥ भव
विकट वनमें करम बैरी. ज्ञान धन मेरो हर्यो।
तब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो
फिर्यो। धन घड़ी यो धन दिवस यो ही धन
जनम मेरो भयो। अब भाग मेरो उदय आ-
यो, दरश प्रभुको लखि लयो॥ छवि वीतरागी
नगन मुद्रा दृष्टि नाशा पै धरैं। वसु प्रातिहार्य
अनंत गुण जुत कोटि रवि छविको हरैं ॥ मि-
ट गयो तिमिर मिथ्यात मेरो, उदय रवि आ-
तम भयो। मो उर हरष ऐसो भयो, मनु
रंक चिन्तामणि लयो ॥ मैं हाथ जोड़ नमाय
मस्तक बीनऊं तुव चरनजी। सर्वोत्कृष्ट
त्रिलोकपति जिन, सुनहु तारन तरनजी ॥
जाचूं नहीं सुरवास पुनि नरराज परिजन सा-
थजी। 'बुध' जाचहूं तुव भक्ति भव भव, दी-
जिये शिवनाथजी ॥

पं० भूधरकृत स्तुति।

हरिगीतिका।

पुलकंत नयन चकोर पक्षी, हंसत उर इन्दीवरो। दुर्बुद्धि चकवी विलख बिछस्यो, निबिड़ मिथ्यातम हरो॥ आनन्द अम्बुज उमग उछस्यो, अखिल आतम निरदले। जिन बदन पूरनचन्द्र निरखत सकल मनवांछित फले। मम आज आतम भयो पावन, आज विघन बिनाशिया। संसार सागर नीर निवस्यो अखिल तत्व प्रकाशिया॥ अब भई कमला किंकरी मम उभय भव निर्मल ठये। दुखजस्यो दुर्गति वास निवस्यो, आज नव मंगल भये॥ मन हरन मूरति हेरि प्रभुकी, कौन उपमा लाइये। मम सकल तनके रोम हुलसे, हर्ष और न पाइये॥ कल्याण काल प्रतच्छ प्रभुको, लखे जो सुर नर घने। तिह समयकी आनन्द महिमा, कहत क्यों मुखसों बने॥

भर नयन निरखे नाथ तुमको, और वांछा ना रही । मम उर मनोरथ भये पूरन, रंक मानो निधि लही ॥ अब होउ भव भव भक्ति तुम्हरी, कृपा ऐसी कीजिये । कर जोर 'भूधर-दास' बिनवै, यही वर मोहि दीजिये ॥

पं० भूधरकृत दूसरी स्तुति

अहो ! जगतगुरु एक, सुनियो अरज हमारी। तुम हो दीनदयालु, मैं दुखिया संसारी ॥ इस भव बनमें वादि, काल अनादि गमायो । भ्र-मत चहूंगति माहिं, सुख नहिं दुख बहु पायो ॥ कर्म महारिपु जोर, एक ना कान करैं जी । मन मान्या दुख देहिं काहूसों नाहिं डरैजी ॥ कबहूं इतर निगोद, कबहूं नर्क दिखावें । सु-रनर पशुगति माहिं, बहुविधि नाच नचावें ॥ प्रभु ! इनके परसंग, भव भव माहिं बुरे जी । जे दुख देखे देव ! तुमसों नाहिं दुरे जी ॥ एक जनमकी बात, कहि न सकों सुनि स्वा-

मी। तुम अनन्त परजाय, जानत अन्तरयामी
मैं तो एक अनाथ, ये मिलि दुष्ट घनेरे।
कियो बहुत बेहाल, सुनियो साहिब मेरे।ज्ञान
महानिधि लूटि रंक निबल करि डार्यो। इन
ही तुम मुझ माहिं, हे जिन! अन्तर पार्यो॥
पाप पुण्यकी दोइ, पायनि बेड़ी डारी। तन
कारागृह माहिं मोहि दिये दुख भारी॥ इनको
नेक विगार, मैं कछु नाहिं कियो जी। बिन
कारन जगवंद्य! बहुविधि बैर लियो जी॥
अब आयो तुम पास सुनि कर, सुजस ति-
हारो। नीति निपुन महाराज कीजे न्याय ह-
मारो॥ दुष्टन देहु निकार, साधुनको रख ली-
जै। विनवै भूधरदास हे प्रभु! ढील न कीजै॥

पं० भूधरकृत गुरु स्तुति

(१)

वन्दौं दिगम्बर गुरु चरन, जग तरन तारन
जान। जे भरम भारी रोगको हैं राज वैद्य-

महान ॥ जिनके अनुग्रह बिन कभी नहिं कटैं कर्म जंजीर। ते साधु मेरे उर बसहु, मेरी हरहु पातक पीर। यह तन अपावन अथिर है, संसार सकल असार। ये भोग विष पकवान से, यह भांति शोच विचार ॥ तप विरचि श्रीमुनि वन बसे सब छांड़ि परिग्रह भीर, ते साधु मेरे उर बसौ मेरी हरहु पातक पीर॥ जे कांच कंचन सम गिनहिं, अरि मित्र एक स्वरूप। निन्दा बड़ाई सारिखी, बनखंड शहर अनूप ॥ सुख दुःख जीवन मरनमें नहिं खुशी नहिं दिलगीर। ते साधु मेरे उरबसो मेरी हरहु पातक पीर॥ जे बाह्य परवत बन बसैं, गिरिगुफा महल मनोग। सिलसेज समतासहचरी, शशिकिरन दीपक जोग ॥ मृगमित्र, भोजन तपमई विज्ञान निरमल नीर। ते साधु मेरे उर बसो मेरी हरहु पातक पीर ॥ सूखहिं सरोवर जल भरे, सूखहिं तरंगिनि तोय। बाटहि व-

टोही ना चलैं, जहं घाम गरमी होय ॥ तिहं-काल मुनिवर तपतपहिं, गिरिशिखर पर धर धीर। ते साधु मेरे उर बसो. मेरी हरहु पातक पीर ॥ घनघोर गरजहिं घनघटा, जल परहिं पावस काल। चहुंओर चमकइ वीजुरी. अति चलै सीरीव्याल ॥ तरु हेठ तिष्ठहिं तब जती एकांत अचल शरीर। ते साधु मेरे उर वसो. मेरी हरहु पातक पीर ॥ जब शीत मास तुषारसों दाहै सकल वनराय। जब जमै पानी पोखरां, थरहरै सबकी काय ॥ तब नगन निवसैं चौहटे, अथवा नदीके तीर। ते साधु मेरे उर वसो, मेरी हरहु पातक पीर ॥ करजोर 'भूधर' वीनवै कब मिलहिं वे मुनिराज। यह आश मनकी कब फले, मम सरहिं सगरे काज॥ संसार विषम विदेशमें जे विना कारण वीर। ते साधु मेरे उरवसो, मेरी हरहु पातक पीर॥



पं० भूधरकृत गुरु स्तुति

राग भरथरी—दोहा

(२)

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज। आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥ ते गुरु० ॥ मोह महारिपु जानिकै छांड्यो सब घरबार। होय दिगम्बर वन बसे, आतम शुद्ध विचार ॥ ते गुरु० ॥ रोग उरग बिल वपु गिण्यो, भोग भुजङ्ग समान। कद्ली तरु संसार है, त्याग्यो सब यह जान ॥ ते गुरु० ॥ रतनत्रय निधि उर धरैं, अरु निरग्रन्थ त्रिकाल। माऱ्यो काम खबीसको, स्वामी परम द्याल ॥ ते गुरु० ॥ पंच महाब्रत आचरैं, पांचों समिति समेत। तीन गुपति पालैं सदा, अरज अमर पद हेत ॥ ते गुरु० ॥ धर्म धरैं दश लक्षणी भावैं भावनासार। सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार ॥ ते गुरु० ॥ जैठ तपै रवि

आकरो सूखे सरवर नीर । शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझै नगन शरीर ॥ ते गुरु० ॥ पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार । तरुतल निवसैं साहसी चालै झंझावार ॥ ते गुरु० ॥ शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय । ताल तरंगनिके तटै, ठाड़े ध्यान लगाय ॥ ते गुरु० ॥ इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार । लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार ॥ ते गुरु० ॥ पूरव भोग न चिन्तवै, आगम वांछा नाहिं । चहुंगतिके दुखसों डरै , सुरति लगी शिवमाहिं ॥ ते गुरु०॥ रंगमहलमें पोढ़ते, कोमल सेज विछाय । ते पश्चिम निशि भूमिमें सोवै संवरि काय ॥ ते गुरु० ॥ गज चढ़ि चलते गरबसों, सेना सजि चतुरङ्ग ॥ निरखि निरखि पग ते धरैं, पालैं करुणा अंग ॥ ते गुरु० ॥ वे गुरु चरण जहां धरैं, जगमें तीरथ जेह । सो रज मम मस्तक चढ़ो, 'भूधर' मांगै एह ॥

मेरी भावना

(जुगलकिशोरजी मुखतारकृत)

जिसने राग द्वेष कामादिक जीते, सबजग जान लिया, सब जीवोंको मोक्षमार्गका निस्पृह हो उपदेश दिया। बुद्ध, वीर, जिन, हरि, हर, ब्रह्मा या उसको स्वाधीन कहो, भक्ति-भावसे प्रेरित हो यह चित्त उसीमें लीन रहो ॥ १ ॥ विषयोंकी आशा नहिं जिनके साम्य-भाव धन रखते हैं, निजपरके हित-साधनमें जो निश-दिन तत्पर रहते हैं। स्वार्थत्यागकी कठिन तपस्या विना खेद जो करते हैं, ऐसे ज्ञानी साधु जगतके दुःख समूहको हरते हैं॥२॥ रहै सदा सत्संग उन्हींका, ध्यान उन्हींका नित्य रहै, उनही जैसी चर्यामें यह चित्त सदा अनुरक्त रहै। नहीं सताऊँ किसी जीवको, झूठ कभी नहिं कहा करूं, परधन वनिता/परनर पर न लुभाऊँ,

नोट—स्त्रिया 'वनिता' की जगह 'परनर' पढ़ा करें।

संतोषामृत पिया करूं ॥३॥ अहंकारका भाव न रक्खूं. नहीं किसीपर क्रोध करूं। देख दूसरोंकी बढ़तीको कभी न ईर्षा-भाव धरूं। रहै भावना ऐसी मेरी, सरल-सत्य व्यवहार करूं। बनै जहांतक इस जीवनमें औरोंका उपकार करूं ॥४॥ मैत्रीभाव जगतमें मेरा सब जीवोंसे नित्य रहै, दीन-दुःखी जीवोंपर मेरे उरसे करुणा-स्रोत बहै। दुर्जन-क्रूर-कुमार्गरतोंपर क्षोभ नहीं मुझको आवै, साम्यभाव रक्खूं मैं उनपर, ऐसी परिणति हो जावै ॥५॥ गुणीजनोंको देख हृदयमें मेरे प्रेम उमड़ आवै, बनै जहांतक उनकी सेवा करके यह मन सुख पावै। होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं द्रोह न मेरे उर आवै, गुण-ग्रहणका भाव रहै नित दृष्टि न दोषोंपर जावै ॥६॥ कोई बुरा कहो या अच्छा लक्ष्मी आवै या जावै, अनेक वर्षों तक जीऊँ या मृत्यु आजही आ जावै। अथवा कोई कैसा ही भय

या लालच देने आवै, तो भी न्यायमार्गसे मेरा कभी न पद डिगने पावै ॥ ७ ॥ होकर सुखमें मग्न न फूलै दुखमें कभी न घबरावै, पर्वत-नदी-श्मशान-भयानक अटवीसे नहीं भय खावै। रहै अडोल-अकंप निरंतर यह मन दृढ़तर बन जावै, इष्टवियोग-अनिष्टयोगमें सहनशीलता दिखलावै ॥८॥ सुखी रहैं सब जीव जगतके कोई कभी न घबरावै। बैर-भाव-अभिमान छोड जग नित्य नये मंगल गावै। घर घर चर्चा रहै धर्मकी दुष्कृत दुष्कर हो जावै,ज्ञान-चरितउन्नतकर अपने मनुजजन्मफल सब पावै ॥९॥ ईति-भीत व्यापै नहिं जगमें वृष्टि समय पर हुआ करै, धर्मनिष्ठ होकर राजा भी न्याय प्रजाका किया करै। रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले प्रजा शांतिसे जिया करै, परम अहिंसा-धर्म जगतमें फैल सर्वहित किया करै ॥ १० ॥ फैलै प्रेम परस्पर जगमें मोह दूर

ही रहा करै; अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहिं कोई मुखसे कहा करै। वनकर सव 'युगवीर' हृदयसे देशोन्नतिरत रहा करैं, वस्तुस्वरूप-विचार खुशीसे सब दुख-संकट सहा करैं ॥११॥

वैराग्यभावना।

दोहा।

वीज राख फल भोगवै, ज्यों किसान जगमाहिं
त्यों चक्री नृप सुख करै, धर्म विसारै नाहिं॥

जोगीरासा वा नरेंद्र छंद।

इहविध राज करै नरनायक, भोगै पुण्य विशालो। सुखसागरमैं रमत निरंतर, जात न जान्यो कालो॥ एक दिवस शुभ कर्मसंजोगे क्षेमंकर मुनि बंदे। देखि सिरीगुरुके पदपंकज लोचन अलि आनंदे॥ २॥ तीन प्रदक्षिण दे शिर नायो, कर पूजा थुति कीनी। साधुसमीप विनय कर बैठ्यो, चरननमैं दिठि दीनी॥ गुरु उपदेश्यो धर्मशिरोमणि, सुन राजा वैरागै।

राजरमा वनितादिक जे रस, ते रस बेरस लागे ॥ ३ ॥ मुनिसूरजकथनीकिरणावलि; लगत भरम बुधि भागी। भवतन भोगस्वरूप विचार्यो परम धरम अनुरागी ॥ इह संसार महावन भीतर, भ्रमते ओर न आवै। जामन मरन जरा दौं दाझै जीव महादुख पावै ॥ ४ ॥ कबहूं जाय नरक थिति भुंजै, छेदन भेदन भारी। कबहूं पशु परजाय धरै तहँ, बध बंधन भयकारी ॥ सुरगतिमें परसंपति देखे राग उदय दुख होई। मानुषयोनि अनेक विपतिमय, सर्व सुखी नहिं कोई ॥५॥ कोई इष्ट वियोगी विलखै, कोई अनिष्ट सँयोगी। कोई दीन दरिद्री विगूचे, कोई तनके रोगी ॥ किसही घर कलिहारी नारी कै वैरी सम भाई। किसहीके दुख बाहिर दीखै, किस ही उर दुचिताई ॥ ६ ॥ कोई पुत्र विना नित झूरै, होय मरै तब रोवै। खोटी संततिसों

दुःख उपजै, क्यों प्रानी सुख सोवै॥ पुण्य उदय जिनके तिनके भी नाहिं सदा सुख साता। यह जगवास जथारथ-देखे, सब दीखै दुखदाता ॥७॥ जो संसारविषै सुख होता, तीर्थंकर क्यों त्यागै। काहेको शिवसाधन करते, संजमसों अनुरागै॥ देह अपावन अथिर घिनावन यामैं सार न कोई। सागरके जलसों शुचि कीजै तो भी शुद्ध न होई॥ ८॥ सात कुधातुभरी मलमूरत चाम लपेटी सोहै। अंतर देखत या सम जगमैं अवर अपावन को है॥ नवमलद्वार स्रवें निशिवासर नाम लिये घिन आवै। व्याधि उपाधि अनेक जहां तहँ कौन सुधी सुख पावै ॥९॥ पोषत तो दुख दोष करै अति सोषत सुख उपजावै। दुर्जनदेहस्वभाव बराबर मूरख प्रीति बढ़ावै॥ राचनजोग स्वरूप न याको विरचनजोग सही है। यह तन पाय महातप कीजैयामैं सार यही है॥१०॥ भोग बुरे भवरोग

बढ़ावै बैरी हैं जग जीके। बेरस होंय विपाक समय अति सेवत लागै नीके॥ वज्रअगिनि विपसे विषधरसे ये अधिके दुखदाई। धर्मरतनके चोर चपल अति दुर्गतिपंथ सहाई॥ ११॥ मोहउदय यह जीव अज्ञानी भोग भले कर जानै। ज्यों कोई जन खाय धतूरा सो सब कंचन मानै॥ ज्यों ज्यों भोग संजोग मनोहर मनवांछित जन पावै। तृष्णा नागिन त्यों त्यों डंकै लहर जहरकी आवै॥ १२॥ मैं चक्रीपद पाय निरंतर भोगे भोग घनेरे। तौ भी तनक भये नहिं पूरन भोग मनोरथ मेरे॥ राजसमाज महा अघकारण वैरवढ़ावन हारा। वेश्यासम लछमी अति चंचल याका कौन पत्यारा॥१३॥ मोहमहारिपु वैर विचार्‌यो जगजिय संकट डारे। घरकारागृह वनिता वेड़ो परिजन जन रखवारे॥ सम्यकदर्शन ज्ञानचरण तप ये जिय के हितकारी। येही सार असार और सब यह

चक्री चितधारी ॥ १४ ॥ छोड़े चौदह रत्न नवोंनिधि अरु छोड़े संग साथी। कोड़ि अठारह घोड़े छोड़े चौरासी लख हाथी ॥ इत्यादिक संपति बहुतेरी जीरणतृणसम त्यागी। नीति विचार नियोगी सुतकों राज दियो वड़भागी ॥ १५ ॥ होय निःशल्य अनेक नृपति संग भूषण वसन उतारे। श्रीगुरु चरणधरी जिनमुद्रा पंच महाव्रत धारे। धनि यह समझ सुबुद्धि जगोत्तम; धनि यह धीरजधारी। ऐसी संपति छोड़ बसे वन, तिन पद धोक हमारी॥

दोहा।

परिग्रहपोट उतार सब, लीनों चारित पंथ।
निज स्वभावमें थिर भये, वज्रनाभि निरग्रंथ॥

इति श्री वज्रनाभि चक्रवर्तीकी वैराग्य भावना।



बारहभावना भूधरदासकृत।

दोहा।

राजा राणा छत्रपति, हाथिनके असवार।
मरना सबको एकदिन, अपनी अपनी बार॥
दलबलदेई देवता, मात पिता परिवार।
मरती विरियां जीवको, कोई न राखनहार॥
दामविना निर्धन दुखी तृष्णावश धनवान।
कहूं न सुख संसारमें, सब जग देख्यो छान॥
आप अकेलो अवतरै, मरै अकेलो होय।
यूं कबहूं इस जीवको, साथी सगा न कोय॥
जहां देह अपनी नहीं, तहां न अपनो कोय।
घर संपति पर प्रगट ये, पर हैं परिजन लोय॥
दिपै चामचादरमढ़ी, हाड़ पींजरा देह।
भीतर या सम जगतमें, अवर नहीं घिनगेह

सोरठा।

मोहनींदके जोर, जगवासी घूमै सदा।
कर्मचोर चहुंओर, सरबस लूटै सुध नहीं॥

सतगुरु देय जगाय, मोहनींद जब उपशमै।
तब कछु बनहिं उपाय, कर्मचोर आवत रुकै॥

दोहा।

ज्ञानदीपतपतेल भर; घर शोधै भ्रम छोर।
याविध बिन निकसै नहीं; पैठे पूरव चोर॥
पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच परकार।
प्रबल पंच इंद्री-विजय, धार निर्जरा सार॥
चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान।
तामैं जीव अनादितैं, भरमत हैं विन ज्ञान॥
धनकनकंचन राजसुख सबहि सुलभकर जान
दुर्लभ है संसारमें, एक जथारथ ज्ञान॥
जाचे सुरतरु देय सुख, चिंतत चिंतारैन।
विन जाचे बिन चिंतये धर्म सकल सुख दैन॥

मेरी द्रव्य पूजा।

(जुगलकिशोरजी मुखतार कृत)

कृमिकुल कलित नीर है जिसमें, मच्छ कच्छ मेंढक फिरते। हैं मरते औ वहीं जनमते,

प्रभो मलादिक भी करते ॥ दूध निकालें लोग छुड़ाकर, बच्चेको पीते पीते। हैं उच्छिष्ट अनीतिलब्ध यों, योग्य तुम्हारे नहिं दीखे ॥१॥

दही घृतादिक भी वैसे हैं; कारण उनका दूध यथा। फूलों को भ्रमरादिक सूंघें, वे भी हैं उच्छिष्ट तथा ॥ दीपक तो पतंग कालानल, जलते जिन पर कीट सदा। त्रिभुवन सूर्य! आपको अथवा दीप दिखाना नहीं भला॥२॥

फल मिष्टान्न अनेक यहां पर, उसमें ऐसे एक नहीं। मल प्रिया मक्खी ने जिसको, आकर प्रभुवर छुआ नहीं ॥ यों अपवित्र पदार्थ अरुचिकर, तू पवित्र सब गुण घेरा। किस विधि पूजूं क्याहि चढ़ाऊं, चित्त डोलता है मेरा॥३॥

औ आता है ध्यान तुम्हारे, क्षुधा तृषा का लेश नहीं। नाना रसयुत अन्न पानका, अतः प्रयोजन रहा नहीं ॥ नहिं वांछा न विनोद भाव नहिं, राग अंशका पता कहीं। इससे

व्यर्थ चढ़ाना होगा, औषध सम जब रोग नहीं ॥ ४ ॥

यदि तुम कहो रत्न वस्त्रादिक, भूषण क्यों न चढ़ाते हो। अन्य सदृश पावन हैं अर्पण, करते क्यों सकुचाते हो॥ तो तुमने निःसार समझ जब, खुशी खुशी उनको त्यागा। हो वैराग्य लीनमति स्वामिन! इच्छा का तोड़ा तागा॥५॥

तब क्या तुम्हें चढ़ाऊं वे ही; करूं प्रार्थना ग्रहण करो। होगी यह तो प्रकट अज्ञता, तव स्वरूपकी सोच करो॥ मुझे धृष्टता दीखे अपनी, और अश्रद्धा बहुत बड़ी। हेय तथा सत्यक्त वस्तु यदि, तुम्हें चढ़ाऊं घड़ी घड़ी॥६॥

इससे युगल हस्त मस्तक पर, रखकर नम्री भूत हुआ। भक्ति सहित मैं प्रणमूं तुमको वार बार गुण लीन हुआ॥ संस्तुति शक्ति समान करूं औ, सावधान हो नित तेरी। काय वचनकी यह परणति ही, अहो द्रव्य

पूजा मेरी ॥७॥ भाव भरी इस पूजा से ही, होगा आराधन तेरा। होगा तव सामीप्य प्राप्त औ, सभी मिटेगा जग फेरा ॥ तुझमें मुझमें भेद् रहेगा, नहिं स्वरूप से तब कोई ज्ञानानंद कला प्रकटेगी, थी अनादि से जो खोई ॥ ८ ॥

आराधना पाठ।

मैं देव नित अरहंत चाहूं सिद्धका सुमिरन करौं। मैं सुर गुरु मुनि तीनि पद, मैं साधु-पद हृदय धरौं ॥ मैं धर्मकरुणामयी चाहूं, जहां हिंसा रंच ना। मैं शास्त्रज्ञान विराग चाहूं जासु मैं परपंच ना ॥ १ ॥ चौवीस श्रीजिन-देव चाहूं और देव न मन वसैं। जिन वीस क्षेत्रविदेह चाहूं बंदिते पातिकनशैं ॥ गिरनार शिखर सम्मेद चाहूं चम्पापुरी पावापुरी कैलास श्रीजिनधाम चाहूं भजत भाजैं भ्रमजुरी ॥२॥ नवतत्वका सरधान चाहूं और तत्व न मन

धरों । षटद्रव्य गुण परजाय चाहूं ठीक तासों भय हरों ॥ पूजा परम जिनराज चाहूं और देव न हूं सदा । तिहुंकालकी मैं जाप चाहूं पाप नहिं लागै कदा ॥ ३ ॥ सम्यक्त दरशन ज्ञान चारित्र सदा चाहूं भावसों । दशलक्षणी मैं धर्म चाहूं महा हर्ष उछावसों । सोलह जु कारण दुखनिवारण सदा चाहूं प्रीतिसों । मैं चित्त अठाई पर्व चाहूं महा मंगल रीतिसों ॥ ४ ॥ मैं वेद चारों सदा चाहूं आदि अन्त निवाहसों । पाए धरमके चार चाहूं अधिक चित्त उछाहसों । मैं दान चारों सदा चाहूं भुवन वशि लाहो लहूं । आराधना मैं चारि चाहूं अन्तमें जेई गहूं ॥ ५ ॥ भावना बारह सदा भाऊं, भाव निरमल होत हैं । मैं व्रत जु बारह सदा चाहूं त्याग भाव उद्योत हैं । प्रतिमा दिगम्बर सदा चाहूं ध्यान आसन सोहना । वसुकर्मतैं मैं छुटा चाहूं शिव लहूं जहं

मोहना ॥ ६ ॥ मैं साधुजनको संघ चाहूं प्रीति तिन हीं सो करौं। मैं पर्वके उपवास चाहूं अरम्भै मैं परिहरौं। इस दुःख पंचमकाल माहीं कुल श्रावक मैं लह्यौं ॥ अरु महाव्रत धरि सकौं नाहीं निबल तन मैंने गह्यो ॥ ७ ॥ आराधना उत्तम सदा, चाहूं सुनो जिनरायजी। तुम कृपानाथ अनाथ द्यानत दयाकरना नाथ जी। बसुकर्मनाश विकाश ज्ञान प्रकाश मोको कीजिये। करि सुगति गमन समाधि मरन सुभक्ति चरनन दीजिए ॥ ८ ॥

लघु समाधिमरण भाषा

गौतम स्वामी बन्दोंनामी मरण समाधि भला है। मैं कब पाऊं निशदिन ध्याऊं गाऊं वचन कला है। देव धर्म गुरु प्रीति महा दृढ़ सप्त व्यसन नहिं जाने। त्यागि बाइस अभक्ष संयमी बारह व्रत नित ठाने॥१॥ चक्की उखरी चूला बुहारी पानी त्रस न विराधै। बनिज

करै पर द्रव्य हरै नहिं छहों करम इमि साधै। पूजा शास्त्र गुरुनकी सेवा संयम तप चहुं दानी। पर उपकारी अल्प अहारी सामायक बिधि ज्ञानी॥२॥ जाप जपै तिहुं योग धरै दृढ़ तनकी ममता टारै। अन्त समय वैराग्य सम्हारै ध्यान समाधि विचारै॥ आग लगै अरु नाव डुबै जब धर्म विघन जब आवै। चार प्रकार आहार त्यागिके मंत्र सु मनमें ध्यावै॥३॥ रोग असाध्य जहां बहु देखै कारण और निहारै। बात बड़ी है जो बनि आवै भार भवनको टारै। जो न बनै तो घरमें रह करि सबसों होय निराला। मात पिता सुत त्रियको सोंपै निज परिग्रह इहिकाला॥४॥ कुछ चैत्यालय कुछ श्रावकजन कुछ दुखिया धन देई। क्षमा क्षमा सबहीं सों कहिके मनकी शल्य हनेई॥ शत्रुन सों मिल निजकर जोरै मैं बहु करिहै बुराई। तुमसे प्रीतमको दुख

दीने ते सब बकसो भाई ॥५॥ धन धरती जो मुखसों मांगै सो सब दे संतोषै। छहों कायके प्राणी ऊपर करुणा भाव विशेषै ॥ नीचे घर बैठे इक जागह कुछ भोजन कुछ पैले। दूधाहारी क्रम क्रम तजिके छाछ अहार पहैले ॥ ६ ॥ छाछ त्यागिके पानी राखै पानी तजि संथारा। भूमि मांहि थिर आसन माड़ैं साधर्मी ढिग प्यारा॥ जब तुम जानो यह न जपै है तब जिनवाणी पढ़िये। यों कहि मौन लियो सन्यासी पंच परम पद गहिये॥७॥ चौ आराधन मनमें ध्यावै बारह भावन भावै। दशलक्षण मुनि धर्म बिचारै रत्नत्रय मन ल्यावै ॥ पैंतीस सोलह षटपन चारों दुइ इक बरन विचारै। काया तेरी दुखकी ढेरी ज्ञानमयी तूं सारै॥८॥ अजर अमर निज गुणसों पूरैं परमानन्द सुभावै। आनन्द कन्द चिदानन्द साहब तीन जगतपति ध्यावै॥ क्षुधातृषादिक होय परीषह सहै भाव

सम राखै। अतीचार पांचों सब त्यागै ज्ञान सुधारस चाखै॥६॥ हाड़ मांस सब सूख जाय जब धर्मलीन तन त्यागै। अद्भुत पुण्य उपाय स्वर्गमें सेज उठै ज्यों जागै॥ तहंतैं आवै शिव पद पावै विलसै सुक्ख अनंतो। द्यानत यह गति होय हमारी जैन धर्म जयवंतो॥१०॥

श्रीचौबीस तीर्थंकरोंके चिन्ह

वृषभनाथका 'वृषभ' जु जान। अजितनाथ के 'हाथी' मान॥ संभवजिनके 'घोड़ा' कहा। अभिनंदनपद 'बंदर' लहा॥१॥ सुमतिनाथके 'चकवा' होय। पद्मप्रभके 'कमल' जु जोय॥ जिनसुपासके 'सथिया' कहा। चंद्रप्रभपद 'चंद्र' जु लहा॥ २॥ पुष्पदंतपद 'मगर' पिछान। 'कल्पवृक्ष' शीतलपद मान॥ श्रीश्रेयांसपद 'गेंडा' होय। वासुपूज्यके 'भैंसा' जोय॥ ३॥ विमलनाथपद 'शूकर' मान। अनँतनाथके 'सेही' जान॥ धर्मनाथके 'वज्र' कहाय। शांति-

नाथपद 'हिरन' लहाय ॥ ४ ॥ कुंथुनाथके पद 'अज' चीन। अरजिनके पद चिह्न जु 'मीन'॥ मल्लि नाथ पद 'कलशा' कहा। मुनिसुव्रतके 'कछुआ' लहा ॥५॥ 'लालकमल' नमिजिनके होय। नेमिनाथ-पद 'शंख' जु जोय ॥ पार्श्व-नाथके 'सर्प' जु कहा। वर्द्धमानपद 'सिंह' हि लहा ॥६॥

बधाई

(१)

लिया ऋषभदेव अवतार निरत सुरपतिने कियो आके, निरत कियो आके हरषाके प्रभूजीके दश भव दरशाके,सरर सरर कर सारंगी तंबूरा बाजे नाचे पोरी पोरी मटकाके ॥टेर॥

प्रथम प्रकाशी बाने इन्द्रजाल विद्या ऐसी आजलौं जगतमें सुनी न कहूं देखी तैसी, आयो वह छबीलो चटकीलो है मुकुट बांध, छम्म देशी कूदो मानों आ कूदो पूनमको

चांद, मनको हरत गत भरत प्रभुको पूजै धरनीको शिर नाके ॥ १ ॥ भुजों पै चढ़ाये हैं हजारों देव देवी तानै, हाथोंकी हथेलीमें जमाये हैं अखाड़े तानै, ताधिन्ना ताधिन्ना तबला किट किट धित्ता उनकी प्यारी लागै, धुमकिट धुमकिट बाजा बाजै नाचे प्रभूके आगे, सैनामें रिझावै तिरछी ऐड़ लगावै उड़ जावे भजन गाके ॥२॥ छिनमें जा वंदे वो तो नंदीश्वर द्वीप जाय, पांचो मेर बंदे आमृदंग पै लगावै थाप । बंदे ढाई द्वीप तेरा द्वीपके सकल चैत्य तीनलोक मांहि विम्ब पूज आवै नित्य नित्य, आवै वो झपट समही पै दौड़ा लेने दम करे छम छम मन मोहन मुसकाके ॥३॥ अमृतकी लागी झड़ बरषै रतन धारा, सीरी सीरी चाले पौन बोले देव जय जय कारा, भर भर झोरी वरषावै फूल देदे ताल, महकै सुगन्ध चहक मुचंग षटताल, जन्मे यों जिनेन्द्र भयो

नाभिके आनन्द 'नयनानंद' यों सुरेन्द्र गये भक्तिको बतलाके ॥४॥

बधाई

(२)

आज तो बधाई राजा नाभिके दरबारजी ॥ टेर ॥ मोरांदेवी पुत्रजायो, जायो ऋषभकुमारजी । अजोध्यामें उत्सव कीनों, घर घर मंगलाचारजी ॥१॥ घननन घननन घंटा बाजै, देव करै जयकारजी । इन्द्राण्यां मिलि चौक पुरायो, भर भर मोतियन थारजी ॥ २ ॥ हाथ जोड़ मैं करूं बीनती प्रभु जीवो चिरकालजी। नाभि राजा दान देवे, बरषे रतन अपारजी ॥३॥ हस्ती दीना घोड़ा दीना, दीना रथ भंडारजी । नगर सरीसा पट्टण दीना, दीना सब सिणगारजी ॥ ४ ॥ तीन लोकमें दिन कर प्रगटे, घर घर मंगलाचारजी। केवल कमला रूप निरंजन आदीश्वर जयकारजी ॥५॥

नेमिनाथजी की लावणी ।

सैयो म्हारी नेमीसुर बनड़ा ने गिरनारी जातां राख लीजो ये ॥ टेर ॥

समद् विजयजीरा लाडला ये माय, सैयो म्हारी दो नूं छै हलधरलार पिताजीने जाय कहिजो ये ॥ १ ॥ नेमीसुर बनड़ो बण्यो हे माय सैयो म्हारी खूब बणी छै बरात । झरोखामें झांख लीजो ये ॥ २ ॥ तोरण पर जब आईया ये माय, सैयो म्हारी पशुवन सुणी पुकार । पाछो रथ फेरियो ये माय ॥ ३ ॥ तोड़्या छै कांकण डोरड़ा ये माय, सैयो म्हारी तोड़्या छै नवसर हार । दिक्षा उरधार लीनी हे माय ॥४॥ संजम अब मैं धारस्युं ये माय, सैयो म्हारी जास्यां गढ़ गिरनार । कर्म फंद् काटस्यां हे माय ॥ ५ ॥ मो सेवक की विनती ये मांय सैयो म्हारी मांगो छै शिवपुर वास । दया चित्त धार लीजो ये मांय ॥ ६ ॥

जैन झण्डा गायन

ये जैन धरमका प्यारा। झण्डा हो ऊंचा हमारा॥ स्वस्तिक चिह्न विभूषित पावन, अर्धचन्द्र शिव थल प्रकटावन। पुष्प त्रयान्वित है मन भावन। यह उज्ज्वल यश धारा, झण्डा हो ऊंचा हमारा॥ शांति सुधाका नीरव निर्झर, विश्व प्रेमका सुन्दरसा सर। शुभ सन्देशक नव साहसवर। है संस्कृति का प्यारा॥ झण्डा०॥ ऋषभ देवसे आदि विधायक, मूल मन्त्र ओंकार सहायक। बना जगतका है यह नायक गौरव ध्रुवतारा॥झण्डा०॥ स्याद्वाद संदेश सुनाया, परम अहिंसा धर्म बताया। वीरप्रभूने यह फहराया, अपने केवल द्वारा॥ झण्डा०॥ प्रिय भ्राताका शीश कटा कर, बौद्धिक वातावरण हटाकर। दिग्विजयी अकलंक दिवाकरने इसको परसारा॥ झण्डा०॥ दिव्य समन्त भद्र गुण मंडित खण्ड खण्ड शंकर कर खंडित। किया इसे जगमें अभि-

मंडित, अपने कौशल द्वारा॥ झण्डा हो ऊंचा हमारा। चन्द्रगुप्त सम्राट वीरने, दिव्य साहसी सुभट धीरने। इस झंडेको एक पीरने, मान शत्रुका मारा०॥ झण्डा हो ऊंचा हमारा॥ वीरो तुम भी तो बल शाली, रखना इसकी गौरव लाली। हो दुनियाँमें शान निराली, यह प्राणोंसे प्यारा॥ झण्डा हो ऊंचा हमारा॥ इसको निज करमें ले सत्वर, कार्य क्षेत्रमें बढ़ो अग्रसर। उन्नत रखना प्राण गवांकर आत्मज्योति उजियारा॥ झण्डा हो ऊंचा हमारा॥ बतलाता क्या फहर व्योमपर, सीखो तुम जीना भी मरकर। अमर रहा कोई न धरा पर, है यह विजय सितारा॥ झण्डा हो ऊंचा हमारा॥ वीरो इसके नीचे आना, विश्व शिखर पर यह फहराना। तुम कुमरेश इसे अपनाना, बहा प्रेमकी धारा॥ झण्डा हो०॥

* समाप्तोऽयं ग्रंथः *